तिर्याक़ुल क़ुलूब
(दिलों का विषनाशक)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : तिर्याक़ुल क़ुलूब (दिलों का विषनाशक)
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद-व-महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक : डॉ. अन्सार अहमद, एम. ए., एम.फिल, पी एच डी
पी.जी.डी.टी., आनर्स इन अरबिक
टायप सैटिंग : नादिया परवेज़ा
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) नवम्बर 2020 ई०
संख्या : 500
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)

Name of book : Tiryaqul Quloob
Author : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mouood & Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator : Ansar Ahmad, M.A., M.Phil, Ph. D
P.G.D.T., Hons in Arabic
Type Setting : Nadiya Parveza
Edition : 1st Edition (Hindi) November 2020
Quantity : 500
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी, मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "तिर्याक़ुल क़ुलूब" का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए., आदरणीय मुहम्मद नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय मोहियुद्दीन फ़रीद एम्. ए. और आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक़ एम्. ए. ने इसका रीव्यु किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत
हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़
नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से पैदा कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत[1] लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

---

1 **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अतः इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय
तिर्याक़ुल क़ुलूब

तिर्याक़ुल क़ुलूब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक अत्यन्त उच्च श्रेणी की रचना है। बाबू इलाही बख्श एकाउंटेण्ट जो पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के श्रद्धालुओं में से थे और बाद में आप से विमुख हो गए थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके भ्रम और आशंकाओं को दूर करने के लिए 1898 ई० में **"ज़रूरतुल इमाम"** पुस्तक लिखी, परन्तु वह उसके बाद अपना सुधार करने की बजाए सद्मार्ग और हिदायत के मार्ग से और भी दूर हो गए और अलहकम 2 अगस्त 1899 ई० के अनुसार उन्होंने अपने कुछ साथियों मुन्शी अब्दुल हक़ पेन्शनर एकाउंटेण्ट, खान बहादुर फ़तह अली शाह साहिब डिप्टी कलक्टर और हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ साहिब ज़िलेदार नहर से मिल कर एक फ़ित्ने की बुनियाद डाली। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें दो पत्र लिखे। दूसरा पत्र 16 जून 1899 ई० को भेजा जिसमें आप ने लिखा :-

> "फिर अन्त में आप को ख़ुदा तआला की क़सम देता हूं कि आप उन समस्त विरोधी भविष्यवाणियों को जो मेरे बारे में आप के दिल में हों, लिख कर छाप दें। अब दस दिन से अधिक मैं आप को मुहलत नहीं देता। जून महीने की 3 तारीख तक आप का विरोधात्मक भविष्यवाणियों का विज्ञापन मेरे पास आ जाना चाहिए अन्यथा यही काग़ज़ छाप दिया जाएगा और भविष्य में आप को कभी सम्बोधित करना भी बेफ़ायदा होगा।"

(तशहीज़ुल अज़्हान मार्च 1914, पृष्ठ-46)

इस पत्र के उत्तर में मुंशी इलाही बख्श साहिब ने जुलाई 1899 ई० के पहले सप्ताह में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक पत्र लिखा जिसमें हुज़ूर

और सिलसिला अहमदिया के विरुद्ध एक-दो भविष्यवाणियां भी दर्ज थीं। इस भय से कि लोगों पर सत्य और असत्य सन्दिग्ध न हो जाएं, जुलाई 1899 ई० के अन्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने '**तिर्याक़ुल क़ुलूब**' पुस्तक लिखना आरंभ किया। इसमें आप ने एक फ़ारसी क़सीद: में **मर्दे कामिल** की विशेषताएं वर्णन करके उन आकाशीय निशानों का ज़िक्र फ़रमाया जो अल्लाह तआला ने आपके समर्थन में प्रकट किए थे और समस्त अहले मज़ाहिब को **निशान दिखाने के लिए** मुक़ाबले की दावत देते हुए यह असल प्रस्तुत किया-

> "प्रत्येक धर्म जो ख़ुदा तआला की ओर से होकर अपनी सच्चाई पर स्थापित होता है उसके लिए आवश्यक है कि हमेशा उसमें ऐसे इन्सान पैदा होते रहें कि जो अपने पेशवा और पथप्रदर्शक और रसूल के नायब होकर यह सिद्ध करें कि वह नबी अपनी रूहानी बरकतों की दृष्टि से ज़िन्दा है मरा नहीं। क्योंकि आवश्यक है कि वह नबी जिस का अनुकरण किया जाए जिस को शफ़ी और मुक्ति देने वाला समझा जाए, वह अपनी रूहानी बरकतों की दृष्टि से हमेशा ज़िन्दा हो।"

(तिर्याक़ुल क़ुलूब, रूहानी खज़ायन जिल्द-15 पृष्ठ-138 उर्दू एडिशन)

और फ़रमाया -

> "ख़ुदा तआला ने एक ओर तो मुझे आकाशीय निशान प्रदान किए हैं और कोई नहीं जो उनमें मेरा मुक़ाबला कर सके तथा दुनिया में कोई ईसाई नहीं कि जो आकाशीय निशान मेरे मुकाबले पर दिखला सके।"

(तिर्याक़ुलूब रूहानी खज़ायन जिल्द 15, पृष्ठ 167,168 उर्दू एडिशन)

और मुसलमान फ़क़ीरों, सूफ़ियों और मशायख जो आप के दावे के सत्यापन कर्ता नहीं थे उनके लिए मुकाबला का यह सरल तरीका बताया कि-

> "एक सभा आयोजित करके कोई ऐसा व्यक्ति जो मेरे मसीह होने के दावे को नहीं मानता और अपने आप को मुल्हम

और साहिबे इल्हाम जानता है मुझे स्थान बटाला, अमृतसर या लाहौर में बुलाए और हम दोनों ख़ुदा के दरबार में दुआ करें कि हम दोनों में से जो व्यक्ति ख़ुदा के दरबार में सच्चा है एक साल में कोई महान निशान जो इन्सानी शक्तियों से श्रेष्ठतर और मामूली इन्सानों की पहुंच से बुलन्दतर हो उस से प्रकटन में आए .... फिर इस दुआ के बाद ऐसा व्यक्ति जिसकी कोई विलक्षण भविष्यवाणी या अन्य कोई महान निशान एक वर्ष के अन्दर प्रकटन में आ जाए और इस श्रेष्ठता के साथ प्रकटन में आए जो इस श्रेणी का निशान मुकाबले के प्रतिद्वन्दी से प्रकटन में न आ सके तो वह व्यक्ति सच्चा समझा जाएगा जिस से ऐसा निशान प्रकटन में आया। और फिर इस्लाम में से फूट दूर करने के लिए पराजित व्यक्ति पर अनिवार्य होगा कि उस व्यक्ति का विरोध त्याग दे और अविलम्ब एवं निस्संकोच उसकी बैअत कर ले और उस ख़ुदा से जिसका प्रकोप खा जाने वाली अग्नि है, डरे।"

(तिर्याक़ुल क़ुलूब, रूहानी खज़ायन जिल्द-15, पृष्ठ-170 उर्दू एडिशन)

फिर आप ने **शैतानी इल्हाम** और **रब्बानी इल्हाम** में यह अन्तर बताया कि :-

"अत: प्रत्येक व्यक्ति का इल्हाम जो निरे शब्द हों और कोई विलक्षण बात उन में न हो, ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हो सकता। तथा कोई इल्हाम कदापि स्वीकरणीय नहीं जब तक कि उस में ख़ुदाई शौक़त न हो। और ख़ुदाई शौक़त यह है कि विलक्षण और महान भविष्यवाणियां जो ख़ुदा की क़ुदरत और ज्ञान से भरी हुई हों उस इल्हाम में पाई जाएं या दूसरे इल्हामों में जो उसी व्यक्ति के मुख से निकले हों। और बावजूद इसके यह शर्त भी होगी कि उस सभा के आयोजित होने से दस दिन पूर्व मुझको सूचित किया जाए कि उन तीनों वर्णित स्थानों में

अमुक स्थान और अमुक तिथि और समय उस कार्य के लिए निर्धारित किया गया है। इस छपे हुए विज्ञापन पर बीस प्रतिष्ठित और नामचीन उलेमा और शहर के रईसों के हस्ताक्षर होने चाहिएं ताकि ऐसा न हो कि कोई कमीना केवल हंसी और शरारत से ऐसा विज्ञापन प्रकाशित कर दे।"

(तिर्याक़ुल क़ुलूब-रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-15,पृष्ठ-170,171 उर्दू एडिशन)

यह निबन्ध आप ने 1 अगस्त 1899 ई. तक लिख लिया (देखिए पृष्ठ-171 यही जिल्द, उर्दू एडिशन) इसके बाद आप ने पुस्तक तिर्याक़ुल क़ुलूब के परिशिष्ट के तौर पर लेखराम की भविष्यवाणी का वर्णन करके इसमें चार हज़ार सत्यापन कर्ताओं में से जिन्होंने अपने हस्ताक्षरों से इस भविष्यवाणी के पूरा होने की पुष्टि की थी। 279 नाम बतौर नमूना दर्ज किए। (देखिए पृष्ठ 172 से 191 यही जिल्द, उर्दू एडिशन) और तिर्याक़ुल क़ुलूब न० 2 के परिशिष्ट में उन निशानों का ज़िक्र किया जो 20 अगस्त 1899 तक प्रकटन में आ चुके थे। और परिशिष्ट न० 3 में उच्चतम सरकार में एक निवेदन 27 सितम्बर को लिखित 1899 और परिशिष्ट न० 4 में एक इल्हामी भविष्यवाणी का विज्ञापन लिखित 22 अक्टूबर 1899 ई० और परिशिष्ट न० 5 में इस ख़ाकसार ग़ुलाम अहमद क़ादियानी की आकाशीय गवाही मांगने के लिए एक दुआ और ख़ुदा तआला से अपने बारे में "आसमानी फैसले का निवेदन" लिखित 5 नवम्बर 1899 और इश्तिहार वाजिबुल इज़्हार लिखित 4 नवम्बर 1900 दर्ज किए। इस अन्तिम विज्ञापन में आपने अपनी जमाअत का नाम "**मुसलमान फ़िर्क़ा अहमदिया**" आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाली नाम अहमद[स.] के आधार पर रखा। (देखिए पृष्ठ 527 यही जिल्द, उर्दू एडिशन)

लिखने का समय

स्मरण रहे कि 'तिर्याक़ुल क़ुलूब' के लिखने का समय 1899ई० है न कि 1902 ई० सिवाए "इश्तिहार वाजिबुल इज़्हार" के जो 4 नवम्बर 1900 ई० का है, जैसा कि टायटल पृष्ठ और परिशिष्ट न० 2 के अन्त में लिखा गया है और मूल

वास्तविकता जैसा कि हज़रत खलीफ़तुल मसीह द्वितीय अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपनी पुस्तक 'हक़ीकतुन्नबुव्वत' में वास्तविक सच्चाइयों और अकाट्य तर्कों की दृष्टि से लिखा है, यह है -

> "तिर्याक़ुल क़ुलूब 1899 ई० से लिखी जानी शुरू हुई और जनवरी 1900 तक बिल्कुल तैयार हो चुकी थी। परन्तु चूंकि उन दिनों में एक प्रतिनिधि मंडल नुसैबीन जाने वाला था, इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अरबी पुस्तक लिखनी आरंभ कर दी और इस का प्रकाशन रुक गया। 1902 ई. में जबकि क़ुतुबखाने का चार्ज हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब स्वर्गीय के हाथ में था, आपने हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब प्रथम खलीफ़ा रज़ि० से निवेदन किया कि कुछ पुस्तकें बिल्कुल तैयार हैं परन्तु इस समय तक प्रकाशित नहीं हुईं। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से निवेदन करें कि उनके प्रकाशित करने की आज्ञा दे दें। अत: आप ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से चर्चा की और हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अनुमति दे दी। 'तिर्याक़ुल क़ुलूब' सारी छप चुकी थी और केवल एक पृष्ठ के लगभग निबन्ध हज़रत के हाथ का लिखा हुआ लिपिक के पास बचा पड़ा था। उसके साथ हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने एक पृष्ठ के लगभग निबन्ध और बढ़ा दिया और कुल दो पृष्ठ अन्त में लगा कर (अर्थात् परिशिष्ट 2 के अन्त में - शम्स) पुस्तक प्रकाशित कर दी गई।"

(हक़ीक़तुन्नुबुव्वत, अन्वारुल उलूम जिल्द 2, पृष्ठ 365 उर्दू एडिशन)

अत: तिर्याक़ुल क़ुलूब के लिपिक हज़रत पीर मन्ज़ूर मुहम्मद रज़ि० ने क़सम ख़ाकर यह गवाही दी कि तिर्याक़ुल क़ुलूब पृष्ठ 158 तक (इस जिल्द के पृष्ठ 483 तक - शम्स (उर्दू एडिशन) मेरे हाथ की लिखी हुई है। यहां तक लिखने और छपने के बाद तिर्याक़ुल क़ुलूब बहुत मुद्दत तक छपने और प्रकाशित होने

से रुकी रही। फिर इसके बाद 1902 में जब इस पुस्तक का प्रकाशन होने लगा तो अन्तिम कापी से बचा हुआ कुछ निबन्ध मेरे पास पड़ा हुआ था जो करीब एक पृष्ठ के था वह मैंने स्वर्गीय हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब को दे दिया जो दूसरे कातिब से लिखवाया गया। छपने के बाद जब मैंने देखा तो उस बचे हुए निबंध के साथ एक पृष्ठ और बढ़ा कर (अर्थात् पृष्ठ 160 और इस जिल्द का पृष्ठ 485, 486 - शम्स) पुस्तक को समाप्त कर दिया गया था। मैं क़सम खाकर कहता हूं कि सम्पूर्ण तिर्याक़ुल क़ुलूब में केवल टाइटल का पृष्ठ 159 और 160 अर्थात् कुल तीन पृष्ठ दूसरे लिपिक के लिखे हुए हैं और अन्य सम्पूर्ण तिर्याक़ुल क़ुलूब परिशिष्ट न. 3, 4 और परिशिष्ट न. 5 के साथ मेरे हाथ के लिखे हुए हैं।

(हक़ीक़तुन्नुबुव्वत, अन्वारुल उलूम जिल्द 2 पृष्ठ 369, 370 उर्दू एडिशन)

और हज़रत करम अली कातिब रज़ि. ने यह हल्फ़िय: गवाही दी -

''मैं हल्फ़िय: गवाही देता हूं कि तिर्याक़ुल क़ुलूब का टायटल पेज (Title Page) और अन्तिम पेपर अर्थात् पृष्ठ 159 और 160 मेरे हाथ का लिखा हुआ है और स्वर्गीय हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब ने मुझे निबन्ध दिया था क्योंकि उन दिनों मैं उनके अधीन काम किया करता था और इस से पहले तिर्याक़ुल क़लूब पृष्ठ 158 तक मुद्दत से छपी पड़ी थी। जब मैंने टायटल पेज और अन्तिम पेपर लिखा तक यह पुस्तक प्रकाशित हुई।''

(हक़ीक़तुन्नुबुव्वत, अन्वारुल अलूम जिल्द-2 पृष्ठ 370 उर्दू एडिशन)

और हज़रत मिर्ज़ा मुहम्मद इस्माईल बेग रज़ि. जो उस समय प्रेस में थे उनकी गवाही यह है कि

''तिर्याक़ुल क़ुलूब मैंने छापी और छप कर एक मुद्दत तक पड़ी रही। फिर अक्टूबर 1902 ई. में टायटल और केवल अन्तिम वर्क अर्थात् पृष्ठ 159 से पृष्ठ 160 तक छाप कर उसे प्राकशित कर दिया गया।''

विवरण देखिए पृष्ठ (हक़ीक़तुन्नबुव्वत, अन्वारुल उलूम जिल्द न. 2, पृष्ठ 370, 371, 372, 373 उर्दू एडिशन)

और इसी के अनुसार हज़रत मीर महदी हुसैन रज़ि. खादिमुल मसीह अल

मौऊद मुहाजिर क़ादियानी और हज़रत मौलवी सय्यद सर्वर शाह रज़ि. और हज़रत याक़ूब अली इर्फ़ानी रज़ि. एडीटर अलहकम ने गवाहियां दीं।

(हक़ीक़तुन्नबुव्वत, अन्वारुल उलूम जिल्द 2 पृष्ठ 370 से 373 उर्दू एडिशन)

इस दावे के सही होने पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय अय्यद हुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने और भी तर्क दिए हैं जिनमें से एक यह है कि **कश्ती नूह** जो 5 अक्टूबर 1902 को प्रकाशित हुई इसमें आप फ़रमाते हैं -

"मसीले मूसा, मूसा से बढ़कर और मसील इब्ने मरयम, इब्ने मरयम से बढ़कर।"

(कश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-19, पृष्ठ-14 उर्दू एडिशन)

और फ़रमाते हैं -

"ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि मसीह मुहम्मदी, मसीह मूस्वी से श्रेष्ठ है।"

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन जिल्द-19, पृष्ठ-17 उर्दू एडिशन)

इसी प्रकार अहलकम 10 अक्टूबर 1902, पृष्ठ 11 में "1 अक्टूबर की सैर" की डायरी में लिखा है -

"मुझे यह बताया गया है कि मुहम्मदी सिलसिले का ख़ातमुल ख़ुलफ़ा मूस्वी सिलसिले के खातमुल ख़ुलफ़ा से बढ़कर है।"

इसी प्रकार पुस्तक 'दाफ़िउल बला' में जो 23 अप्रैल 1902 ई० को प्रकाशित हुई थी आप ने अपने आप को मसीह नासरी से श्रेष्ठतम ठहराया है। परन्तु तिर्याक़ुल क़ुलूब पृष्ठ 157 प्रथम संस्करण और इस जिल्द के पृष्ठ 481 में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं -

"इस स्थान पर किसी को यह भ्रम न हो कि इस भाषण में स्वयं को हज़रत मसीह पर श्रेष्ठता दी है क्योंकि यह एक आंशिक श्रेष्ठता है जो ग़ैर नबी को नबी पर हो सकती है।"

फिर यदि यह मान लिया जाए कि आप ने यह लेख 25 अक्टूबर 1902 को लिखा था और कश्ती नूह में इससे बीस दिन पूर्व आप लिख चुके थे कि मसीह मुहम्मदी मसीह मूस्वी से श्रेष्ठतम है तो आप तिर्याक़ुल क़ुलूब में बीस

दिन बाद उसके विरुद्ध क्योंकर लिख सकते थे। तो सच्चाई यही है कि तिर्याक़ुल क़ुलूब का यह पृष्ठ भी 1899 ई० का लिखा हुआ था न कि 1902 ई० का।

और तिर्याक़ुल क़ुलूब से भी स्पष्ट है कि यह पुस्तक 1899 ई० में लिखी गई थी। असल पुस्तक जो इस जिल्द के पृष्ठ 171 पर समाप्त हुई है उसके अन्त में उसके लिखे जाने की तिथि 1 अगस्त 1899 ई. लिखी है और इस जिल्द के पृष्ठ 444 और प्रथम संस्करण के पृष्ठ 137 में आप लिखते हैं -

"अब इस समय तक कि 5 दिसम्बर 1899 ई० है।"

मानो 137 पृष्ठ प्रथम संस्करण के 5 दिसम्बर 1899 तक लिखे जा चुके थे और इस समय आप आगे लिख रहे थे और दूसरे परिशिष्टों की तिथियां ऊपर ज़िक्र की जा चुकी हैं। फिर तिर्याक़ुल क़ुलूब से आन्तरिक गवाही भी यही प्रकट करती है कि यह किताब दिसम्बर 1899 में पूर्ण हो चुकी थी। जब 1902 ई० में उसके प्रकाशन का समय आया तो उस समय केवल परिशिष्ट 2 का अन्तिम पृष्ठ आपने 25 अक्टूबर 1902 ई. को लिखा। चूंकि आप का इरादा तिर्याक़ुल क़ुलूब में सौ से अधिक निशान वर्णन करने का था। परन्तु इस बीच आप पुस्तक नुज़ूलुल मसीह को लिखना आरंभ कर चुके थे। इसलिए परिशिष्ट न. 2 की अन्तिम पंक्तियों में आप ने फ़रमाया -

"और स्पष्ट हो कि इस पुस्तक का वह भाग जिसमें भविष्यवाणियां हैं पूर्णरूप से प्रकाशित नहीं हुआ क्योंकि पुस्तक नुज़ूल मसीह ने उससे निःस्पृह कर दिया जिसमें डेढ़ सौ भविष्यवाणियाँ दर्ज हैं। ख़ुदा ने जो चाहा वही हुआ।"

(तिर्याक़ुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-15 पृष्ठ-486 उर्दू एडिशन)

तिर्याक़ुल क़ुलूब

(दिलों का विषनाशक)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

ख़ुदा के द्योतक सर्वोत्तम पुरुष के बारे में क़सीदः और विवाद करने वालों के साथ फ़ैसले का ढंग

ہماں ز نوعِ بشر کامل از خدا باشد   کہ با نشانِ نمایاں خدا نما باشد

अनुवाद - मनुष्यों में ख़ुदा की ओर से वही सम्पूर्ण होता है जो प्रकाशमान निशानों के साथ ख़ुदा को दिखाने वाला होता है।

بتابد از رخِ او نورِ عشق و صدق و وفا   ز خلقِ او کرم و غربت و حیا باشد

अनुवाद - उसके चेहरे से प्रेम, श्रद्धा तथा निष्ठा का प्रकाश चमकता है, उपकार, विनय और शर्म उसके शिष्टाचार होते हैं।

صفاتِ او ہمہ ظلِّ صفاتِ حق باشد   ہم استقامتِ او ہمچو انبیا باشد

अनुवाद - उसकी समस्त विशेषताएं ख़ुदा की विशेषताओं का प्रतिबिम्ब होती हैं और उसकी दृढ़ता भी नबियों की दृढ़ता के समान होती है।

رواں بچشمہء او بحرِ سرمدی باشد   عیاں در آئینہ اش روئے کبریا باشد

अनुवाद - उसके उद्गम से शाश्वत दानशीलता का समुद्र जारी होता है और उसके चेहरे में महान ख़ुदा का चेहरा नज़र आता है।

صعودِ او ہمہ سُوئے فلک بود ہردم   و جودِ او ہمہ رحمت چو مصطفیٰ باشد

अनुवाद - उसका उड़ना हर समय आकाश की ओर ही होता है और उसका अस्तित्व मुस्तफ़ा की तरह सर्वथा रहमत होता है।

خبر دہد ز قدومش خدا بمصحفِ پاک   ہم از رسول سلامے بصد ثنا باشد

अनुवाद - ख़ुदा उसके आगमन की सूचना पवित्र क़ुर्आन में देता है और रसूल की ओर से भी सैकड़ों यशोगान और सलाम भेजे जाते हैं।

نتابد از رہِ جانانِ خود سرِ اخلاص   اگرچہ سیلِ مصیبت بزورہا باشد

अनुवाद - वह अपने प्रियतम के मार्ग में कभी निष्कपटता में कमी नहीं आने देता चाहे संकटों का तूफ़ान कितने ही ज़ोरों पर हो।

براہِ یارِعزیز از بلا نہ پرہیزدا   گرچہ در رہِ آں یار اژدہا باشد

अनुवाद - उस सम्मान वाले दोस्त के मार्ग में वह किसी बला से नहीं डरता चाहे उस यार के मार्ग में अजगर बैठा हो।

کند حرام ہمہ عیش و خواب را برنفس   چو جملہ عارف و عامی دریں بلا باشد

अनुवाद -वह नींद और आराम को अपने ऊपर अवैध कर लेता है जबकि सब अच्छे-बुरे ऐश और भोग विलास में गिरफ़्तार होते हैं।

دل ازکف و کلہش باشداوفتادہ زفرق   فراغت از ہمہ خود بینی و ریا باشد

अनुवाद - उसका दिल हाथ से और टोपी सिर से गिरी हुई होती है और हर प्रकार के अहंकार और दिखावे से पवित्र होता है।

اصولِ اوہمہ برخلق رحم باشد و لطف   طریق اوہمہ ہمدردی و عطا باشد

अनुवाद - उसका सिद्धान्त प्रजा पर केवल दया एवं कृपा है और उसका तरीका पूर्णरूप से हमदर्दी और दानशीलता होता है।

ہمیشہ نفسِ شریفش بکاہد از حسرات   کہ چوں گروہِ بداں تابع ہُدیٰ باشد

अनुवाद - उसका शालीन हृदय हमेशा इस हसरत से शोकग्रस्त होता है कि बुरे लोगों की जमाअत किस प्रकार हिदायत पाएगी।

ہمیشہ محترز از صحبتِ بداں ماند   غیور از پئے دیں ہمچو اصفیا باشد

अनुवाद - वह हमेशा दुष्टों की संगत से पृथक रहता है और ख़ुदा के वलियों के समान धर्म के लिए स्वाभिमानी होता है।

پناہ دیں بود و ملجاء مسلماناں   بعقدِ ہمتِ خود دافعِ قضا باشد

अनुवाद - वह धर्म की शरण और मुसलमानों का रक्षा स्थल होता है और अपनी हिम्मत के ज़ोर से मौत को दूर कर देता है।

ہزار سرزنی و مشکلے نگردد حل   چو پیشِ او بروی کارِ یک دعا باشد

अनुवाद - तू हज़ार टक्करें मारता है परन्तु तेरी मुश्किल हल नहीं होती लेकिन जब तू उसके सामने जाता है तो उसकी एक दुआ पर्याप्त होती है।

چو شیر زندگی او بود دریں عالم   ز صیدِ او دگرانرا ہمہ غذا باشد

अनुवाद - इस संसार में उसका जीवन शेर के जीवन के समान होता है अर्थात् दूसरों को उसके शिकार से भोजन प्राप्त होता है।

گہے نشاں بنماید ز بہرِ دین قویم   گہے بمعرکہ جنگش باشقیا باشد ★

अनुवाद - कभी वह इस्लाम धर्म के लिए निशान दिखाता है और कभी दुर्भाग्यशालियों के साथ उसे लड़ाई का संग्राम करना पड़ता है।

بود مظفّر و منصور از خدائے کریم   ز معضلاتِ شریعت گرہ کشا باشد

अनुवाद - वह कृपालु ख़ुदा की ओर से विजयी और सहायता प्राप्त होता है और शरीअत की कठिनाइयों को हल करने वाला होता है।

ز مہرِ یارِ ازل بر رخش ببارد نور   ز شانِ حضرتِ اعلیٰ درو ضیا باشد

अनुवाद - उस अनादि यार के प्रेम का प्रकाश उसके चेहरे से बरसता है और उस महामान्य की प्रतिष्ठा की उसमें चमक होती है।

کشوفِ اہلِ کشوف از برائے او باشد   ہم از نجوم پئے مقدمش صدا باشد

अनुवाद - अहले कश्फ़ के कश्फ़ उसी के लिए होते हैं और सितारों से भी उसके पदार्पण की आवाज़ आती है।

غرض مقامِ ولایت نشان ہا دارد   نہ ہر کہ دلق بپوشد ز اولیا باشد

अनुवाद - अत: विलायत का पद बहुत से निशान रखता है यह नहीं कि जो गुदड़ी पहन ले वह वलियों में गिने जाने लगे।

★ **हाशिया -** युद्ध से अभिप्राय तलवार बन्दूक़ का युद्ध नहीं क्योंकि यह तो सर्वथा मूर्खता और क़ुर्आन की हिदायत के विरुद्ध है कि धर्म के प्रासरण के लिए युद्ध किया जाए। अपितु यहां युद्ध से हमारा अभिप्राय मौखिक मुबाहसे हैं जो नर्मी, इन्साफ़ और औचित्य की पाबन्दी के साथ किए जाएं अन्यथा हम उन समस्त धार्मिक युद्धों के कट्टर विरोधी हैं जो जिहाद के तौर पर तलवार से किए जाएं। इसी से

کلید ایں ہمہ دولت محبت ست و وفا　　خوشا کسیکہ چنیں دولتش عطا باشد

अनुवाद - इस समस्त दौलत की कुंजी प्रेम और वफ़ा है, भाग्यशाली है वह जिसे ऐसी दौलत मिल जाए।

سخن ز فقر بدزدی ہمی تواں گفتن　　ولے علامتِ مرداں رہِ صفا باشد

अनुवाद - दरिद्रता की बातें चोरी करके भी वर्णन की जा सकती हैं परन्तु इस मार्ग के मर्दों की निशानी श्रद्धा और निष्ठा है।

ز مشکلاتِ رہِ راستی چہ شرح دہم　　کہ شرطِ ہر قدمے گریہ و بکا باشد

अनुवाद - सद्मार्ग की कठिनाइयों का विवरण मैं क्या वर्णन करूं कि प्रत्येक क़दम के लिए रोना और गिड़गिड़ाना अनिवार्य है।

بسوزد آنکہ نسوزد بصدق در رہِ یار　　بمیرد آنکہ گریزندہ از فنا باشد

अनुवाद - ख़ुदा करे वह जल जाए जो दोस्त के मार्ग में नहीं जलता। ख़ुदा करे वह मर जाए जो फ़ना से भागता है।

کلاہِ فتح و ظفر ہیچ سر نمی یابد　　مگر سرے کہ پئے حفظ دیں فدا باشد

अनुवाद - कोई सर विजय और सफलता का ताज नहीं पहन सकता सिवाए उसके जो धर्म की रक्षा के लिए क़ुर्बान हो।

نشانہائے سماوی بہ ہیچکس ندہند　　مگر کسے کہ ز خود گم پئے خدا باشد

अनुवाद - किसी व्यक्ति को आकाशीय निशान नहीं मिलते परन्तु उसी को जो ख़ुदा के लिए फ़ना हो जाए।

کسے رسد بمقامِ خوارق و اعجاز　　کہ در مقامِ مصافات و اصطفا باشد

अनुवाद - वही व्यक्ति विलक्षण निशानों और चमत्कारों की श्रेणी पर पहुंचता है जो दोस्ती और चुने हुए स्थान पर हो।

ضرورت است کہ دردیں چنیں امام آید　　چو خلق جاہل و بیدین و مُردہ سا باشد

अनुवाद - आवश्यकता है कि धर्म में ऐसा इमाम आया करे कि जब जनता जाहिल, अधर्मी और मुर्दों के समान हो जाए।

جہانیاں ہمہ ممنونِ منتش باشند　　چراکہ او پنہ ملّت الہدیٰ باشد

अनुवाद - संसार के लोग सब उसके उपकार के बोझ के नीचे होते हैं क्योंकि वह इस्लाम धर्म की शरण होता है।

اگرچہ تیغ ندارد مگر بہ تیغِ دلیل ہے درد صف قومے کہ ناسزا باشد

अनुवाद - यद्यपि वह तलवार नहीं रखता परन्तु तर्क की तलवार से उस क़ौम की पंक्तियां उलट देता है जो गुमराह हो।

چو پہلواں بدر آید ز نزدِ ربِّ کریم بہر دمش مددِ صدقِ مدعا باشد

अनुवाद - कृपालु रब्ब के पास से वह एक पहलवान के समान आता है और प्रतिपल उस का उद्देश्य यही होता कि सच्चाई की सहायता करे।

چہ دستہا کہ نماید بروزِ کشتی و جنگ بایں امید کہ نفسے مگر رہا باشد

अनुवाद - कुश्ती और लड़ाई के दिन वह बढ़-बढ़ कर हाथ दिखाता है केवल इसी आशा पर कि कोई जान मुक्ति पा जाए।

ہمیں ست طائفہء برگزید گانِ خدا ہمیں علامت شاں از خدائے ما باشد

अनुवाद - यही ख़ुदा के चुने हुए लोगों की जमाअत है। हमारे ख़ुदा की ओर से इन की यही निशानियां निर्धारित हैं।

بجنگ و حرب گزارند ہر دمے کہ بود کہ تاحفاظتِ مردم ز فتنہ ہا باشد

अनुवाद - वे अपनी हर सांस युद्ध और लड़ाई में गुज़ारते हैं ताकि फ़ित्नों से लोगों की सुरक्षा हो।

بخیر و عافیتت بگذرد شب اندر خواب کہ پاسبانیٔ ایشاں بصد عنا باشد

अनुवाद - तेरी रात आराम से नींद में व्यतीत होती है इसलिए कि वे बड़ी सहानुभूति से तेरी निगरानी करते हैं।

غلامِ ہمتِ مردانِ کارزار بباش★ کہ امن مرد و زن از مردم وغا باشد

★**हाशिया -** युद्ध के योद्धाओं से अभिप्राय वे लोग नहीं जो धर्म फैलाने के बहाने से ख़ुदा की प्रजा पर तलवार उठाते, क़त्ल करते और एक संसार को संकट में डालते हैं अपितु ऐसे लोग जिन के पास धर्म फैलाने के लए केवल तलवार है वास्तव में दरिन्दों की तरह हैं और ये लोग किसी प्रशंसा के योग्य नहीं हैं। क्योंकि अकारण अनुचित रक्तपात करके

अनुवाद - तू उन युद्ध के शूरवीरों का दास बन जा कि युद्ध के योद्धाओं के कारण ही स्त्रियों और पुरुषों को अमन प्राप्त होता है।

پناہِ بیضۂ اسلام آں جوانمردے ست   کہ خوں بدل زپئے دینِ مصطفیٰ باشد

अनुवाद - वही योद्धा इस्लाम धर्म का सहायक और शरण होता है जिसका दिल मुस्तफ़ा के धर्म के लिए ख़ून होता है।

ازیں بود کہ ہمہ اہل و نیک طینت را   سر نیاز بدرگاہِ شاں فرا باشد

अनुवाद - यही कारण है कि योग्य और नेक स्वभाव लोगों का सर विनयपूर्वक उन लोगों की दरगाह पर झुका रहता है।

دماغ و کبر بمر دانِ حرب نادانی ست   کسے کہ کبر کند سخت بیحیا باشد

अनुवाद - इन बहादुर लोगों के सामने घमंड और बड़ाई करना मूर्खता है। जो घमंड करता है वह बहुत निर्लज्ज है।

چہ جائے کبر کہ ایشاں پناہِ ہر بشر اند   طفیلِ شاں ہمہ عمّامہ و قبا باشد

अनुवाद - अहंकार का क्या अवसर है कि वे तो हर इन्सान की शरण स्थली हैं उन्हीं के कारण समस्त सम्मान सुरक्षित हैं।

اگر ز مأمن شاں یکدمے جدا بشوی   متاع و مایۂ ایماں ز تو جدا باشد

अनुवाद - यदि तू उन की शरण स्थली से एक पल के लिए भी अलग हो तो ईमान की पूंजी और दौलत तुझ से अलग हो जाएगी।

سر است زیر تبر صادقانِ مخلص را   کہ تارہد سرِ قومے کہ در بلا باشد

अनुवाद - इन निष्कपट सत्यनिष्ठों का सिर कुल्हाड़ी के नीचे रहता है ताकि उस क़ौम का सिर बच जाए जो संकट में हो।

اصولِ شاں ہمہ ہمدردی ست و مہروکرم   طریقِ شاں رہِ عجز و سرِ رضا باشد

शेष हाशिया - विरोधियों को ऐतराज़ का अवसर देते हैं। अपितु इस स्थान पर मदीने कारज़ार से अभिप्राय वे ख़ुदा वाले मर्द हैं जिन को ख़ुदा तआला की ओर से चमत्कार दिखाने की शक्ति मिलती है। और उच्च तर्क प्रदान किए जाते हैं तथा ख़ुदा तआला की किताब का ज्ञान प्रदान किया जाता है तो वे निशान और प्रमाण से इन्कारियों को दोषी करते हैं और इस प्रकार से मुबाहसों के मैदान में स्पष्ट विजय पाते हैं। इसी से

अनुवाद - उन का सिद्धान्त केवल हमदर्दी, प्रेम और सहानुभूति है और उनका तरीक़ा विनय और ख़ुदा की प्रसन्नता की अभिलाषा है।

ہزار جانِ گرامی فدائے آں دل باد   کہ مست و محوِ رضاہائے کبریا باشد

अनुवाद - हज़ारों बहुमूल्य प्राण उस एक दिल पर क़ुर्बान हों जो ख़ुदा वन्द की प्रसन्नता में उन्मुक्त और आत्मविस्मृत रहता है।

بکنج خلوتِ پاکاں اگر گذر بکنی   عیاں شود کہ چہ نورے دراں سرا باشد

अनुवाद - पवित्र लोगों के एकान्तवास में यदि तेरा ग़ुज़र हो तो तुझे मालूम हो कि वहां कैसे-कैसे प्रकाश बरसते हैं।

بدولتِ دوجہاں سر فرو نے آرند   بعشقِ یاردلِ زار شاں دوتا باشد

अनुवाद - दोनों लोकों की दौलत की ओर भी ये लोग ध्यान नहीं देते उनका हमदर्द हृदय प्रियतम के प्रेम में चूर रहता है।

مناز باکلہ سبز و خرقۂ پشمیں   کہ زیر دلقِ ملمع فریب ہا باشد

अनुवाद - हरा क़ुलाह (जिस पर पगड़ी बाँधी जाती है) और ऊनी जुब्बे पर गर्व न कर कि प्रदर्शन वाली गुदड़ी के नीचे बहुत से छल होते हैं।

ز دست و بازوئے آں مرد خدمتے آید   کہ سوختہ دل و جاں از پئے ہدیٰ باشد

अनुवाद - वही मर्द ऐसे हाथ और बाज़ू के साथ सेवा कर सकता है जिसके दिल-व-जान हिदायत के लिए वेदना से भरपूर हों।

کسے کہ دل زپئے خلق سوز دش شب و روز   محقق است کہ او خادم الوریٰ باشد

अनुवाद - जिसका दिल सृष्टि के लिए दिन-रात बेचैन रहे, यह प्रमाणित बात है कि वही लोगों का सेवक हुआ करता है।

نہیبِ حادثہ بنیادِ دیں ز جا ببرد   اگر زملّت ما ظلشاں جدا باشد

अनुवाद - हादसों का ताण्डव धर्म की बुनियाद को हिला दे यदि हमारे धर्म से इन लोगों की छाया पृथक हो जाए।

ازیں بود کہ چو سالِ صدی تمام شود   برآید آنکہ بدیں نائبِ خدا باشد

अनुवाद - यही कारण है कि जब सदी के साल समाप्त होते हैं तो ऐसा

मर्द प्रकट होता है जो धर्म के लिए ख़ुदा का स्थानापन्न होता है।

رسید مژدہ ز غیبم کہ من ہماں مردم   کہ او مجدّدِ ایں دین و رہنما باشد

अनुवाद - मुझे ग़ैब से यह खुशख़बरी मिली है कि मैं वही इन्सान हूं जो इस धर्म का मुजद्दिद और मार्ग प्रदर्शक है।

لوائے ما پنہ ہر سعید خواہد بود   ندائے فتح نمایاں بنامِ ما باشد

अनुवाद - हमारा झण्डा हर भाग्यशाली इन्सान की शरण होगा और खुली-खुली विजय का सेहरा, हमारे नाम पर होगा।

عجب مدار اگر خلق سوئے ما بدوند   کہ ہر کجا کہ غنی ے بود گدا باشد

अनुवाद - यदि सृष्टि हमारी ओर दौड़ कर आए तो आश्चर्य न कर कि जहां धनवान होता है वहां फ़क़ीर एकत्र हो जाते हैं।

گلے کہ روئے خزاں راگہے نخواہد دید   بباغِ ماست اگر قسمتت رسا باشد

अनुवाद - वह फूल जो कभी पतझड़ का मुंह नहीं देखेगा वह हमारे बाग़ में है यदि तेरा भाग्य सहायक हो।

منم مسیح ببانگِ بلندے گویم   منم خلیفہء شاہے کہ بر سما باشد

अनुवाद - मैं बुलन्द आवाज़ से कहता हूं कि मैं ही मसीह हूं और मैं ही उस बादशाह का ख़लीफ़ा हूं जो आसमान पर है।

مقدر است کہ روزے بریں ادیم زمیں   ہزارہا دل و جاں بررہم فدا باشد

अनुवाद - यह बात निश्चित हो चुकी है कि एक दिन धरती पर हज़ारों जान-व-दिल मेरे मार्ग में क़ुर्बान होंगे।

زمینِ مردہ ہمی خواست عیسوی انفاس   زوعظِ بے عملاں خود اثر کجا باشد

अनुवाद - मरी हुई धरती भी ईसा की फूंक को चाहती है। जो स्वयं बेअमल (कर्महीन) हों उनके उपदेश का प्रभाव कहां होता है।

کشادہ اند درِ فضل گر کنوں نائی   زِ نامساعدیء بختِ نارسا باشد

अनुवाद - कृपा के दरवाज़े खोले गए हैं यदि तू अब भी न आए तो यह तेरे दुर्भाग्य की नहूसत है।

بہر زہ طالب آں مہدی و مسیح مباش   کہ کارِ شاں ہمہ خونریزی و وغا باشد

अनुवाद - तू बेहूदगी से उस मसीह और महदी का अभिलाषी न हो जिन का काम सर्वथा ख़ून बहाना और युद्ध होगा।

عزیز من رہ تائید دیں دگر راہے ست   نہ ایں کہ تیغ براری اگر ابا باشد

अनुवाद - हे मेरे अज़ीज़! धर्म के समर्थन का वही मार्ग है यह नहीं कि यदि कोई इन्कार करे तो तू तुरन्त तलवार निकाल ले।

چہ حاجت است کہ تیغ از برائے دیں بکشی   نہ دیں بود کہ بہ خونریزیش بقا باشد

अनुवाद - इस बात की क्या आवश्यकता है कि तू धर्म के लिए तलवार खींचे। वह धर्म, धर्म नहीं जिसकी नींव ख़ून बहाने पर हो।

چودیں مدلّل و معقول و باضیا باشد   کدام دل کہ ازاں مذہبش ابا باشد

अनुवाद - जबकि धर्म तार्किक, बुद्धिसंगत और रोशन हो तो वह कौन सा दिल होगा जिसे ऐसे धर्म से इन्कार हो?

چودیں درست بود خنجرے نمی باید   کہ زورِ قولِ موجّہ عجب نما باشد

अनुवाद - जब धर्म सही हो तो उसके लिए खंजर की आवश्यकता नहीं क्योंकि तर्क के साथ वर्णन की शक्ति चमत्कार दिखाने वाली होती है।

تو از سرائے طبیعت نیامدی بیروں   ازیں ہمہ ہوست جبر باجفا باشد

अनुवाद - चूंकि तू अभी कामवासना संबंधी इच्छाओं के चक्र से नहीं निकला इस कारण तेरी सम्पूर्ण इच्छा आत्याचारपूर्ण जब्र के लिए है।

زجبر حجّتِ حق بر جہاں نیاید راست   برو دلیل بدہ گر خرد ترا باشد

अनुवाद - सच्चाई को दुनिया में ज़बरदस्ती फैलाना उचित नहीं यदि तुझे बुद्धि है तो जा और उसके विरुद्ध प्रमाण प्रस्तुत कर।

زجبر کوکبہء صدق را شکست آید   ازیں بود کہ رہ جبرہاخطاباشد

अनुवाद - जब्र (बल प्रयोग) से तो सच्चों की जमाअत टूट जाती है। इसी लिए जब्र का तरीक़ा ग़लत है।

بہوش باش کہ جبراست خود دلیل گریز   تسلّیء دلِ مردم ازیں کجا باشد

अनुवाद - ख़बरदार हो कि जब्र तो स्वयं पराजय का सबूत है इस से लोगों के दिलों को सन्तुष्टि कहाँ होती है।

مرا بکفر کنی متّہم ازیں گفتار   کہ کفر نزدِ تو ابرار را سزا باشد

अनुवाद - तू इस बात के कारण मुझ पर कुफ्र का आरोप लगाता है क्योंकि तेरे नज़दीक नेकों को काफ़िर कहना सही है।

مگرچہ جائے عجب گر تو ایں چنیں گوئی   کہ ہر کہ بے ہنر افتاد ژاژ خا باشد

अनुवाद - यदि यह तेरा कथन है तो कुछ आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि जो बेहुनर होता है वह बकवासी होता है।

بگوہر آنچہ بگوئی چو خود نے دانی   کہ ساکنانِ درش را چہ اجتبا باشد

अनुवाद - जो चाहे कह, क्योंकि तुझे ज्ञान ही नहीं कि उसके दरवाज़े पर रहने वालों का कितना बड़ा पद है।

خوشم بجور کشیدن اگرچہ کشتہ شوم   ازیں کہ ہر عمل و فعل را جزا باشد

अनुवाद - मैं तो हर ज़ुल्म उठाने को तैयार हूं चाहे क़त्ल हो जाऊं इसलिए कि प्रत्येक कर्म और कार्य का प्रतिफल अवश्य मिलता है।

دو چشمِ خویش صفا کن کہ تا رخم بینی   و گرنہ پیشِ تو صد عدل ہم جفا باشد

अनुवाद - तू अपनी दोनों आंखें साफ कर ताकि मेरा चेहरा देख सके अन्यथा तेरी नज़र में तो हर इन्साफ (न्याय) भी ज़ुल्म (अन्यथा) दिखाई देगा।

مرا بریں سخنم آں فضول عیب کند   کہ بے خبر ز رہ و رسمِ دین ما باشد

अनुवाद - मेरी इस बात में वह व्यर्थवादी दोष निकालता है जो हमारे धर्म की राह-व-रस्म से अपरिचित है।

کجاست ملہم صادق کہ تا حقیقتِ ما   برو عیاں ہمہ از پردۂ خفا باشد

अनुवाद - ऐसा सच्चा मुल्हम कहां है कि जिस पर हमारी सच्चाई लज्जा के पर्दे में से भी प्रकट हो।

زمانِ یقظہ بیامد ہنوز در خوابی   شنو کہ ہر سحر از ہاتف ایں ندا باشد

अनुवाद - जागने का समय आ गया परन्तु अभी तू नींद में है सुन कि हर

पिछली रात को फरिश्ता यही आवाज़ देता है।

بعلم وفضل و کرامت کسے بما نرسد کجاست آنکہ ز ارباب اِدّعا باشد

अनुवाद - ज्ञान, कृपा और चमत्कार के ज़ोर से कोई हम तक नहीं पहुंच सकता। कहां है वह व्यक्ति जो ज्ञान, कृपा और चमत्कार का दावेदार है।

ہزار نقد نمائی یکے چو سکہء ما بہ نقشِ خوب و عیار و صفا کجا باشد

अनुवाद - तू हज़ारों सिक्के दिखाए फिर भी चमक-दमक और खरा होने में हमारे सिक्के की बराबरी नहीं कर सकता।

مؤیّدیکہ مسیحا دم ست و مہدیٔ وقت بشانِ او دگرے کے زِ اتقیا باشد

अनुवाद - वह समर्थन प्राप्त व्यक्ति जो मसीहा दम और समय का महदी है उसकी शान को संयमियों में से कोई नहीं पहुंच सकता।

چو غنچہ بود جہانے خموش و سربستہ من آمدم بقدومے کہ از صبا باشد

अनुवाद - यह संसार एक ग़ुन्चे की तरह बन्द था मैं उसके लिए उन बरकतों को लेकर आया हूं जो सुब्ह की ठण्डी हवा लाया करती है।

چہ فتنہ ہا کہ بزادست اندریں ایّام کدام راہِ بدی کو در اختفا باشد

अनुवाद - इस युग में कितने फ़ित्ने पैदा हो गए हैं और बुराई का कौन सा मार्ग है जो गुप्त है।

محال ہست کزیں فتنہ ہاشوی محفوظ مگر ترا چو بمن گامِ اقتدا باشد

अनुवाद - असंभव है कि तू इन फ़ित्नों से बच सके सिवाए इसके कि तू मेरा अनुकरण करे।

کسیکہ سایۂ بالِ ہماش سود نداد ببایدش کہ دو روزے بظلِ ما باشد

अनुवाद - वह व्यक्ति जिसे हुमा के बाल ने भी लाभ न दिया हो उसे चाहिए के दो दिन हमारी छाया के नीचे रहे।

مسلّم است مراز خدا حکومتِ★ عام کہ من مسیح خدایم کہ بر سما باشد

★ **हाशिया -** सामान्य हुकूमत और सामान्य हाकिम से अभिप्राय ज़ाहिरी (भौतिक) हुकूमत नहीं अपितु वह बादशाहत और हुकूमत है जो चुनिन्दा लोगों को आकाश से दी जाती है। ख़ुदा

अनुवाद - ख़ुदा की ओर से मेरी हुकूमत सिद्ध हो चुकी है क्योंकि मैं उस ख़ुदा का मसीह हूं जो आकाश पर है।

بدیں خطاب مرا ہرگز التفات نبود   چہ جُرمِ من چو چنیں حکم از خدا باشد

अनुवाद - मुझे इस उपाधि का कदापि कोई शौक़ न था परन्तु मेरा क्या दोष, है कि जबकि ख़ुदा की ओर से ऐसा ही आदेश है।

بتاج و تختِ زمیں آرزو نمیدارم   نہ شوقِ افسر شاہی بدل مرا باشد

अनुवाद - मैं किसी ज़मीनी ताज़-व-तख़्त की इच्छा नहीं रखता न मेरे दिल में किसी बादशाही ताज का शौक़ है।

مرا بس است کہ ملکِ سما بدست آید   کہ مُلک و مِلکِ زمیں را بقا کجا باشد

अनुवाद - मेरे लिए यही पर्याप्त है कि आकाशीय बादशाहत हाथ आ जाए क्योंकि ज़मीनी देशों और जायदादों को अनश्वरता नहीं है।

حوالتم بفلک کردہ اند روز نخست   کنوں نظر بمتاعِ زمیں چرا باشد

अनुवाद - जबकि ख़ुदा ने मुझे प्रथम दिन से आकाश के सुपुर्द कर दिया है तो अब सांसारिक पूंजी पर मेरी दृष्टि क्योंकर पड़ सकती है।

مرا کہ جنّتِ علیاست مسکن و ماوا   چرا بمزبلۂ ایں نشیب جا باشد

अनुवाद - जबकि मेरा निवास और शरणस्थल जन्नतुल फ़िरदौस है तो फिर मेरा ठिकाना उस गढ़े की कूड़े में क्यों है।

اگر جہاں ہمہ تحقیر من کند چہ غمے   کہ بامن ست قدیرے کہ ذوالعُلیٰ ا باشد

अनुवाद - यदि समस्त संसार भी मेरा तिरस्कार करे तो मुझे क्या ग़म क्योंकि मेरे साथ वह सामर्थ्यवान ख़ुदा है जो बड़ा प्रतिष्ठावान है।

منم مسیح زمان و منم کلیم خدا   منم محمدؐ و احمدؐ کہ مجتبیٰ باشد

अनुवाद - मैं ही समय का मसीह हूं और मैं ही ख़ुदा का कलाम हूं, मैं

शेष हाशिया - के पूर्ण प्रिय आकाश पर अपनी बादशाहत रखते हैं चाहे ज़मीन पर उनको सिर रखने के लिए भी जगह न हो। जिनको आकाशीय बादशाहत मिलती है वे ज़मीन वालों की बादशाहत का कुछ लालच नहीं रखते क्योंकि ज़मीन की बादशाहत बहुत संक्षिप्त तथा कुछ दिनों की और नश्वर है। इसी से

ही वह मुहम्मद और अहमद हूं जो मुज्तबा है।

نہ بلعم است کہ بدتر ز بلعم آں ناداں   کہ جنگِ اوبکلیم حق از ہوا باشد

अनुवाद - न केवल बल्अम है अपितु बल्अम से भी निकृष्टतम वह मूर्ख है जिसकी लड़ाई ख़ुदा के कलीम के साथ नफ़्स की इच्छा के अधीन हो।

ازاں قفس بپریدم بروں کہ دنیا نام   کنوں بکنگرۂ عرش جائے ما باشد

अनुवाद - मैं उस पिंजरे से निकल कर उड़ चुका हूं जिस का नाम दुनिया है। अब तो अर्श के किंगरे पर हमारा स्थान है।

مرا بگلشنِ رضوانِ حق شدست گذر   مقامِ من چمنِ قدس و اصطفا باشد

अनुवाद - अल्लाह तआला की प्रसन्नता के बाग़ में मेरा गुज़र हुआ है मेरा मुक़ाम बुज़ुर्गी और पवित्रता का चमन है।

کمالِ پاکی و صدق و صفا کہ گم شدہ بود   دوبارہ از سخن و وعظِ من بپا باشد

अनुवाद - पवित्रता और श्रद्धा एवं निष्ठा की ख़ूबी जो समाप्त हो गई थी वह दोबारा मेरे कलाम और उपदेश से स्थापित हुई है।

مرنج از سخنم ایکہ سخت بے خبری   کہ اینکہ گفتہ ام از وحیِ کبریا باشد

अनुवाद - हे वह व्यक्ति जो बिल्कुल बेख़बर है मेरी बात से नाराज़ न हो कि जो मैंने कहा है यह ख़ुदा की वह्यी से कहा है।

کسیکہ گم شدہ از خود بنورِ حق پیوست   ہر آنچہ از دہنش بشنوی بجا باشد

अनुवाद - जो व्यक्ति अपने अहंकार को छोड़ कर ख़ुदा के प्रकाश में जा मिला उसके मुंह से निकली हुई हर बात सत्य होगी।

نیامدم ز پئے جنگ و کارزار و جہاد   غرض ز آمدنم درسِ اتّقا باشد

अनुवाद - मैं युद्ध, लड़ाई और जिहाद के लिए नहीं आया मेरे आने का उद्देश्य तो संयम का पाठ पढ़ाना है।

بخاکِ ذلّت و لعنِ کسا رضا دادیم   بدیں غرض کہ بر نیستی بقا باشد

अनुवाद - हम अपमान की ख़ाक़ और लोगों की लानतों पर राज़ी हो गए इसलिए कि नेस्ती का फल अस्ति हुआ करता है।

درونِ من ہمہ پُر از محبت نوریست   کہ در زمانِ ضلالت ازوضیا باشد

अनुवाद - मेरा अन्त:करण उस प्रकाश के प्रेम से भरपूर है जिस से गुमराही के युग में प्रकाश हुआ करता है।

بجز اسیریٔ عشقِ رخش رہائی نیست   بدرد او ہمہ امراض را دوا باشد

अनुवाद - उसके चेहरे के प्रेम की क़ैद के अतिरिक्त कोई आज़ादी नहीं और उसका दर्द ही सब रोगों का इलाज है।

عنایت و کرمش پرورد مرا ہر دم   بہ بینی اش اگرت چشم خویش وا باشد

अनुवाद - उसकी कृपा और दया हर समय मेरा पोषण करती है यदि तेरी आंखें खुली हैं तो तुझे यह बात दिखाई दे जाएगी।

بکارخانۂ قدرت ہزارہا نقش اند   مگر تجلّیٔ رحماں ز نقشِ ما باشد

अनुवाद - क़ुदरत के कारखाने में हज़ारों नक़्श हैं परन्तु रहमान का जल्वा केवल हमारे नक़्श से नज़र आता है।

بیامدم کہ رہِ صدق را درخشانم   بدلستاں برم آنرا کہ پارسا باشد

अनुवाद - मैं इसलिए आया हूं कि सच्चाई के मार्ग को रोशन करूं और दिलबर के पास उसे ले चलूं जो नेक और पवित्र है।

بیامدم کہ درِ علم و رشد بکشایم   بخاک نیز نمایم کہ در سما باشد

अनुवाद - मैं इसलिए आया हूं कि ज्ञान और हिदायत दरवाज़ा खोलूं और अहले ज़मीन को वे चीज़ें दिखाऊं जो आकाशीय हैं।

ترا نمی رسد انکارِ ماکہ نامردی   تو با زناں بنشیں گر ترا حیا باشد

अनुवाद - तुझे हमारे इन्कार का अधिकार नहीं क्योंकि तू नपुंसक है। तू औरतों के साथ बैठ यदि तुझे कुछ शर्म है।

گداز شد دل و جانم پئے حمایتِ دیں   ہنوز چشم توکور ایں چہ اعتدا باشد

अनुवाद - मेरे प्राण और दिल धर्म की सहायता के लिए पिघल गए, परन्तु तेरी आंख अब भी अंधी है यह कैसा ज़ुल्म है।

ترا چہ غم اگر ایں دیں رہِ عدم گیرد   کہ ہر دمت دلِ بریاں پئے ہوا باشد

अनुवाद - तुझे क्या चिन्ता यदि धर्म समाप्त हो जाए कि तेरा दिल तो हर पल लालच के लिए कबाब हो रहा है।

تو خود ز علّتِ بیگانگی شدی مہجور　　وگرنہ از درِ او ہر طرف صلا باشد

अनुवाद - तू असंबंधित होने के कारण स्वयं ही दूर हो गया अन्यथा ख़ुदा के दरवाज़े से तो बुलाने की आवाज़ हर ओर जाती है।

چرا شکایت رحماں کنی بنادانی　　تو صاف باش کہ تازاں طرف صفا باشد

अनुवाद - तू रहमान की शिकायत मूर्खता के कारण क्यों करता है तू पवित्र बन ताकि उधर से भी सफाई का व्यवहार हो।

چنیں زمانہ چنیں دور ایں چنیں برکات　　تو بے نصیب روی وہ چہ ایں شقا باشد

अनुवाद - ऐसा समय, ऐसा युग और ऐसी-ऐसी बरकतें फिर भी अगर तू दुर्भाग्यशाली रहे तो इस दुर्भाग्य पर क्या आश्चर्य है।

بہ بیں کہ نور بریں خانہ ام ہمی بارد　　مگر چگونہ بہ بینی اگر عما باشد

अनुवाद - देख तो सही कि मेरे इस घर पर नूर बरस रहा है परन्तु यदि तू अंधा हो तो क्योंकर देख सकता है।

تراکہ ہمچو زناں کار زینت ست و ہوا　　چگونہ در دلِ تو میلِ اِھتدا باشد

अनुवाद - तू जिसका काम औरतों की तरह केवल सौन्दर्य और दुनिया का लालच है तेरे दिल में हिदायत की रुचि किस प्रकार पैदा हो सकती है।

فدائے بازوئے آناں ہزار زاہد باد　　کہ جانِ شاں برہِ دینِ حق فدا باشد

अनुवाद - उन लोगों के एक बाज़ू पर हज़ार संयमी क़ुर्बान हों जिन की जान सच्चे धर्म पर न्योछावर है।

گرفتگانِ محبت مسخرانِ جمال　　روندگانِ رہے کاں رہِ فنا باشد

अनुवाद - वे ख़ुदा के प्रेम के क़ैदी और उसके सौन्दर्य के पुजारी हैं और उस मार्ग पर चलने वाले हैं जो फ़ना का मार्ग है।

امامِ وقت ہماں پہلوانِ میدان ست　　کہ تیغ برسرو سر پیشِ آشنا باشد

अनुवाद - समय का इमाम युद्ध के मैदान का वही पहलवान है जिसके

सिर पर तलवार है और सिर ख़ुदा के सामने है।

چساں تو قدر شناسی خصالِ مرداں را　　که خصلتت ہمہ چوں خصلتِ نسا باشد

अनुवाद - तू योद्धाओं के शिष्टाचार की क़द्र क्या पहचान सकता है कि तेरी तो सब आदतें औरतों जैसी हैं।

جہان و جاہِ جہاں نزد شاں چناں ہیچ ست　　که پیش چشم تو یک خس ز بوریا باشد

अनुवाद - उनके निकट दुनिया और दुनिया का सम्मान ऐसा तिरस्कृत है जैसे तेरी नज़र में बोरिए का एक तिनका।

قمر مقابلہ با روئے شاں نیارد کرد　　که نورِ او ز خور ایں نُور از خدا باشد

अनुवाद - चन्द्रमा उनके मुंह का मुकाबला नहीं कर सकता क्योंकि उस का प्रकाश सूर्य से है और उन का प्रकाश ख़ुदा से।

بحضرتِ صمدے آبرو ہمی دارند　　دُعائے گریۂ شاں خارق السما باشد

अनुवाद - ये लोग ख़ुदा के दरबार में सम्मानीय हैं और इन के रोने-गिड़गिड़ाने की दुआ आकाश को चीर देती है।

بدست ہفت فلک مثل شاں نمی بینم　　اگرچہ برفلکے چشمۂ ضیا باشد

अनुवाद - मैं सातों आसमानों में किसी को उनका समरूप नहीं देखता चाहे प्रत्येक आसमान प्रकाश का झरना ही क्यों न हो।

رمد زِ صحبتِ شاں جذبہ ہائے تاریکی　　دمد ز گلشنِ شاں آنچہ دلکشا باشد

अनुवाद - उनकी संगत के कारण पाप-भावनाएं जाती रहती हैं और उनके चमन में वह बहार जोश मारती है जो दिल को खुशी देने वाली है।

ہزار جہد کنی زر نگردد ایں مسِ نفس　　مگر بدوستیء شاں که کیمیا باشد

अनुवाद - तू हज़ार कोशिश कर यह नफ़्स का तांबा, सोना नहीं बनेगा यदि उनकी दोस्ती से जो कीमिया का असर रखती है (यह बात हो सकती है)

اگر تو خود بگریزی وگرنہ ممکن نیست　　که سایۂ کرمِ شاں ز تو جدا باشد

अनुवाद - यदि तू स्वयं ही उन से भागे तो ख़ैर। अन्यथा यह असंभव है कि उनकी मेहरबानी की छाया तुझ से अलग हो जाए।

غبارِ حرص و ہوا را بزیرپابکنند　　که ترکِ دوست زبہر ہوا جفا باشد

अनुवाद - ये लोग लोभ-लालच की धूल को पैरों में मसल डालते हैं कि अपनी इच्छा के लिए दोस्त को छोड़ना ज़ुल्म है।

مرا مربیء من زیں گروہ خود کرد است　　بجذبہٗ کہ نہ حدّش نہ انتہا باشد

अनुवाद - मेरे मुरब्बी ने मुझे अपने इस गिरोह में शामिल किया है ऐसी भावना के साथ जिसकी सीमा और अन्त नहीं है।

دو چشم خلق بہ بیند چو ماہ پر تومن　　بشرط آنکہ زہر پردۂ رہا باشد

अनुवाद - लोगों की आंखें मेरे प्रकाश को चन्द्रमा की तरह देख सकती है बशर्ते कि पर्दों से मुक्ति प्राप्त हो।

ہزار گونہ نشانہائے صدق بنمایم　　بشرطِ آنکہ بصبر امتحانِ ما باشد

अनुवाद - मैं उन्हें हज़ारों प्रकार के निशान दिखाऊंगा बशर्ते यह कि सब्र से हमारी परीक्षा की जाए।

فلک قریبِ زمیں شد زِ بارشِ برکات　　کجاست طالبِ حق تایقیں فزا باشد

अनुवाद - बरकतों की वर्षा की प्रचुरता से आकाश पृथ्वी के निकट आ गया। ख़ुदा का अभिलाषी कहां है ताकि उसका विश्वास बढ़े।

کجادلے کہ در و خشیّتِ خداباشد　　کجاست مردمِ چشمے کہ باحیا باشد

अनुवाद - ऐसा दिल कहां है जिस में ख़ुदा का भय हो और आंख की ऐसी पुतली कहां है जिसमें शर्म और लज्जा हो।

بجاہ و منصبِ دنیا مناز اے ہشیار　　کہ ایں تنعّم و عیشت نہ دائما باشد

अनुवाद - हे समझदार इन्सान! संसार के सम्मान और पदों पर गर्व न कर कि यह तेरा ऐश-व-आराम स्थायी नहीं है।

چو خواب بگذرد ایں وقتِ خوش کہ میداری　　طمع مدار کہ ایں حال را بقا باشد

अनुवाद - तेरा यह अच्छा युग स्वप्न की तरह गुज़र जाएगा यह आशा मत रख कि यह हाल हमेशा इसी प्रकार शेष रहेगा

نماز می کنی و قبلہ رانمے دانی　　ندامت چہ غرض زیں نمازہا باشد

अनुवाद - तू नमाज़ पढ़ता है परन्तु अभीष्ट क़िबले से लापरवाह है मैं नहीं जानता कि ऐसी नमाज़ों का क्या फ़ायदा है।

زِدیدہ خوں بچکاند سماعِ قصّہء حشر　　بشرط آنکہ بدل خشیّتِ خدا باشد

अनुवाद - हश्र का ज़िक्र सुनने से आंखें रक्तग्रस्त हो जाती हैं बशर्ते यह कि दिल में ख़ुदा का भय हो।

بہ نفسِ تیرہ تمنّائے وصلِ او ہیہات　　رسد ہماں بخدا کو ز خود فنا باشد

अनुवाद - स्याह दिल के साथ ख़ुदा के मिलने की इच्छा! अफ़सोस की बात है। ख़ुदा तक तो वही पहुंचता है जो स्वयं को उसके मार्ग में फ़ना कर दे।

قدم بمنزلِ رُوحانیاں بنہ کہ جزیں　　جہان و کارِ جہاں جملہ ابتلا باشد

अनुवाद - रूहानी लोगों की मंज़िल में क़दम रख कि इसके बिना दुनिया और दुनिया के सब काम आज़माइश ही आज़माइश हैं।

چہ جائے خوابِ خوش دامن و عیش و عافیت ست　　نہنگِ مرگ چوہر لحظہ در قفا باشد

अनुवाद - यह आराम की नींद और अमन तथा ऐश व आराम का स्थान कब है जबकि मौत का मगरमच्छ हर समय पीछे लगा हुआ है।

کشادِ کار بدل بستن است در محبوب　　چہ خوش رخے کہ گرفتار او رہا باشد

अनुवाद - प्रियतम से दिल लगाने में सब सफलता है। क्या सुन्दर चेहरा है जिस का क़ैदी आज़ाद है।

ہزار شکر کہ من رُوئے یار خود دیدم　　چشیدم آں ہمہ کاں لذّتِ لقا باشد

अनुवाद - हज़ार शुक्र कि मैंने अपने यार का मुंह देख लिया और वे सब मज़े चख लिए जिन में अनश्वरता का स्वाद है।

دماغ و کبرِ ہمہ منکرانِ دیں شکنم　　من ایستادہ ام اینک دگر کجا باشد

अनुवाद - मैं धर्म के इन्कारियों के अहंकार और अभिमान को तोड़ रहा हूं। मैं उपस्थित हूं, मेरे मुकाबले पर कोई दूसरा कहां है?

چومہرِ انور و تاباں ہمی فشانم نور　　دگر کجا و چنیں قدرتے کرا باشد

अनुवाद - मैं रोशन और चमकदार सूर्य के समान प्रकाश फैला रहा हूं।

दूसरा कहां है? और ऐसी क़ुदरत किस में है?

ز کارہا کہ کنم و زنشاں کہ بنایم عیاں شود کہ ہمہ کارم از خدا باشد

अनुवाद - वह काम जो मैं करता हूं और उन निशानों से जो मैं दिखाता हूं यही प्रकट होता है कि मेरा समस्त कारोबार ख़ुदा की ओर से है।

کنوں کہ در چمنِ من ہزار گل بشگفت گر از طلب بنشینی عجب خطا باشد

अनुवाद - अब जब कि मेरे चमन में हज़ारों फूल खिल चुके हैं यदि तू न मांगे तो सख़्त ग़लती होगी।

تو عمر خواہ و صبوری کہ آں زماں آید کہ جلوۂ خورِما دافع العما باشد

अनुवाद - तू आयु मांग और सब्र मांग यहां तक कि वह समय आ जाए जबकि हमारे सूर्य का प्रकाश अंधेपन को दूर करने वाला हो जाए।

گرہ ز دل بکشا کارِ ما ز ہوش نگر کہ عقلِ صاف دہندت چودل صفا باشد

अनुवाद - दिल की गांठ खोल दे और हमारे काम को ध्यान से देख यदि तेरा दिल साफ होगा तो तुझे शुद्ध बुद्धि भी मिलेगी।

تراچہ شد کہ بماتم نشستۂ نالاں کہ موسمے است کہ ہم مرغِ در نوا باشد

अनुवाद - तुझे क्या हुआ कि शोक में रोता और विलाप करता बैठा है हालांकि मौसम तो ऐसा है कि हर परिन्दा चहचहा रहा है।

زِ فکرِ تفرقہ باز آ کہ موسمے آمد کہ اجتماع ہمہ اہل و اتقیا باشد

अनुवाद - फूट डालने का विचार त्याग दे कि अब समय आ गया है कि समस्त वलियों और संयमियों को एकत्र किया जाए।

ارادۂ ازلی ایں زمان وقت آورد تو چیستی کہ زِ تو ردِّ ایں قضا باشد

अनुवाद - ख़ुदा का अनादि इरादा यह युग और यह समय लाया है तू है क्या चीज़ कि इस प्रारब्ध को पलट दे।

مَرو بہ بے خردی نزدِ مابیا ونشیں کہ ظل اہلِ صفا موجبِ شفا باشد

अनुवाद - मूर्खता से चला न जा अपितु हमारे पास आकर बैठ कि वलियों की छाया रोग-मुक्ति का कारण हुआ करती है।

مقیم حلقۂ ابرار باش روزے چند مگر عنایتِ قادر گرہ کشا باشد

अनुवाद - कुछ दिन नेकों की संगत में आकर गुज़ार शायद उस शक्तिमान की कृपा तेरी गांठ को खोल दे।

زہے خجستہ زمانے کہ سوئے ما آئی زہے نصیب تو گر شوق و التجا باشد

अनुवाद - वह कैसा अच्छा युग होगा जब तू हमारी ओर आएगा। अहो भाग्य यदि तुम में शौक़ और इच्छा पैदा हो जाए।

چہ جورہا کہ تو بر نفسِ خود کنی ہیہات ہزار حیف بریں فطنت و ذکا باشد

अनुवाद - अफ़सोस तू अपनी जान पर कितने ज़ुल्म कर रहा है ऐसे मस्तिष्क और समझ पर हज़ार अफ़सोस।

چہ حاجتست کہ رنجے کشی بتالیفات کہ امتحانِ دعاگو ہم از دعا باشد

अनुवाद - क्या आवश्यकता है कि तू पुस्तकें लिखने का कष्ट उठाए क्योंकि दुआ करने वाले की परीक्षा भी दुआ ही के माध्यम से होती है।

بہ رُوئے یار کہ ہرگز نہ رُتبتے خواہم مگر اعانتِ اسلام مدّعا باشد

अनुवाद - ख़ुदा की क़सम है कदापि कोई सम्मान और पद नहीं चाहता मेरा मतलब तो केवल इस्लाम का समर्थन है।

سیاہ باد رخِ بختِ من اگر بہ دلم دگر غرض بجز از یارِ آشنا باشد

अनुवाद - मेरे भाग्य का मुंह काला हो यदि मेरे दिल में ख़ुदा के अतिरिक्त और कोई मतलब हो।

رہِ خلاص کجا باشد آں سیہ دل را کہ باچنیں دلِ من درپئے جفا باشد

अनुवाद - उस से काले (बेरहम) दिल इन्सान को मुक्ति कैसे मिल सकती है जो मेरे जैसे दिलवाले पर अत्याचार करने के लिए तत्पर हो।

چو سیل دیدۂ ما ہیچ سیل و طوفاں نیست بترس زیں کہ چنیں سیل پیشِ پا باشد

अनुवाद - हमारी आंख के सैलाब के समान और कोई सैलाब नहीं। इस बात से डर कि कहीं यह सैलाब तेरे सामने ही न हो।

زآہِ زمرۂ ابدال بایدت ترسید علی الخصوص اگر آہِ میرزا باشد

अनुवाद - तुझे अब्दालों की जमाअत की आहों से डरना चाहिए विशेष तौर पर यदि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की आह हो।

जैसा कि हमने इस फ़ारसी क़सीद: में जो ऊपर लिखा गया है यह बताया है कि ख़ुदा के कामिल मामूरों की निशानियों में से एक यह निशानी है कि उन से आकाशीय निशान प्रकट होते हैं। ऐसा ही हम यहां हज़ार-हज़ार शुक्र के साथ लिखते हैं कि समस्त निशानियां इस ख़ुदा के बन्दे के पक्ष में पूरी हुईं। उस युग में पादरियों का पक्षपाती समुदाय जो सर्वथा सच छुपाने के लिए कहा करता था कि मानो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कोई चमत्कार प्रकट नहीं हुआ उनको ख़ुदा तआला ने बहुत शर्मिन्दा करने वाला उत्तर दिया और अपने इस बन्दे के समर्थन में खुले-खुले निशान प्रकट किए।

एक वह समय था कि इंजील के उपदेशक बाज़ारों, गलियों और कूचों में अत्यन्त धृष्टता तथा सर्वथा झूठ गढ़कर हमारे सय्यिद-व-मौला, ख़ातमुल अंबिया, रसूलों और वलियों में सर्वश्रेष्ठ, मासूमों और संयमियों के सरदार ख़ुदा के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में यह लज्जनीय झूठ बोला करते थे कि मानो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कोई भविष्यवाणी या चमत्कार प्रकटन में नहीं आया और अब यह समय है कि ख़ुदा तआला ने उन हज़ारों चमत्कारों के अतिरिक्त जो हमारे सरदार व मौला, गुनाहगारों के सिफ़ारिश करने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पवित्र क़ुर्आन तथा हदीसों में इतनी प्रचुरता से वर्णन हुए हैं जो उच्च श्रेणी की निरन्तरता पर है, ताज़ा से ताज़ा सैकड़ों ऐसे निशान प्रकट किए हैं कि किसी विरोधी या इन्कारी को उनका मुकाबला करने का सामर्थ्य नहीं। हम अत्यन्त विनम्रता एवं विनयपूर्वक प्रत्येक ईसाई साहिब तथा अन्य विरोधियों को कहते रहे हैं और अब भी कहते हैं कि वास्तव में यह बात सच है कि प्रत्येक धर्म जो ख़ुदा तआला की ओर से होकर अपनी सच्चाई पर क़ायम होता है उसके लिए आवश्यक है कि उसमें हमेशा ऐसे इन्सान पैदा होते रहें कि जो अपने पेशवा और पथ-प्रदर्शक तथा रसूल के नायब हो कर यह सिद्ध करें कि वह नबी अपनी रूहानी बरकतों की दृष्टि से जीवित है मरा नहीं।

क्योंकि अवश्य है कि वह नबी जिस का अनुकरण किया जाए, जिसको शफ़ी (सिफ़ारिशकर्ता) और मुक्ति दाता समझा जाए वह अपने आध्यात्मिक लाभों की दृष्टि से हमेशा जीवित हो और सम्मान, बुलन्दी तथा प्रताप के आकाश पर अपने चमकते हुए चेहरे के साथ ऐसा स्पष्ट तौर पर स्थापित रहने वाला, सत्तावान ख़ुदा के दायीं ओर उसका बैठना ऐसे ज़बरदस्त ख़ुदाई प्रकाशों से सिद्ध होता है कि उस से पूर्ण प्रेम रखना और उसका पूर्ण अनुकरण करना अनिवार्य तौर पर इस परिणाम को पैदा करता हो कि अनुकरण करने वाला रूहुल क़ुदुस और आकाशीय बरकतों का इनाम पाए और अपने प्रिय नबी के प्रकाशों से प्रकाश प्राप्त करके अपने युग के अंधकार को दूर करे। और तैयार लोगों को ख़ुदा के अस्तित्व पर वह पुख़्ता और पूर्ण, चमकता हुआ, रोशन विश्वास प्रदान करे जिस से पाप की समस्त इच्छाएं और अधम जीवन की समस्त भावनाएं जल जाती हैं। यही इस बात का प्रमाण है कि वह नबी जीवित तथा आकाश पर है। अतः हम अपने पवित्र एवं प्रतापी ख़ुदा का क्या शुक्र करें कि उसने अपने प्रिय नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रेम और अनुकरण की सामर्थ्य देकर और फिर उस प्रेम एवं अनुकरण के रूहानी वरदानों से जो सच्चा संयम और सच्चे आकाशीय निशान हैं पूर्ण भाग प्रदान करके हम पर सिद्ध कर दिया कि वह हमारा प्यारा चुनिन्दा नबी मरा नहीं अपितु वह उच्चतम आकाश पर अपने सत्तावान स्वामी के दायीं ओर बुज़ुर्गी और प्रताप के तख़्त पर बैठा है।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلَیْہِ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ۔

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا (अलअहज़ाब-57)

अब हमें कोई उत्तर दे कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर यह जीवन हमारे नबी के अतिरिक्त किस नबी के लिए सिद्ध है? क्या हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए? कदापि नहीं, क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए? कदापि नहीं। क्या राजा रामचन्द्र या राजा कृष्ण के लिए? कदापि नहीं। क्या वेद के उन ऋषियों के

लिए जिनके बारे में वर्णन किया जाता है कि उनके हृदयों पर वेद का प्रकाश हुआ था? कदापि नहीं। शारीरिक जीवन का वर्णन अलाभकारी है। वास्तविक आध्यात्मिक और भलाई पहुंचाने वाला जीवन वह है जो ख़ुदा तआला के जीवन के समान होकर प्रकाश एवं विश्वास के चमत्कार उतारता हो अन्यथा शारीरिक (भौतिक) अस्तित्व के साथ एक लम्बी आयु पाना यदि मान भी लें और कल्पना के तौर पर स्वीकार भी कर लें कि ऐसी आयु किसी को दी गई है तो कुछ भी गर्व की बात नहीं। मिस्र की कुछ प्राचीन इमारतें हज़ारों वर्षों से चली आती हैं और बाबिल के खण्डरात अब तक मौजूद हैं जिन में उल्लू बोलते हैं और इस देश में अयोध्या और वृन्दावन भी प्राचीन काल की आबादियां हैं तथा इटली और यूनान में भी ऐसी प्राचीन इमारतें पाई जाती हैं, तो क्या इस शारीरिक तौर पर लम्बी आयु पाने से भी समस्त वस्तुएं उस प्रताप और महानता से भाग ले सकती हैं जो रूहानी जीवन के कारण ख़ुदा के पवित्र लोगों को प्राप्त होती हैं।

अब इस बात का फ़ैसला हो गया है कि इस रूहानी जीवन का सबूत केवल हमारे नबी अलैहिस्सलाम के मुबारक अस्तित्व में पाया जाता है। ख़ुदा की हज़ारों रहमतें उसके साथ रहें। अफ़सोस कि ईसाइयों को कभी भी यह विचार नहीं आया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का रूहानी जीवन सिद्ध करें और केवल उस लम्बी आयु पर प्रसन्न न हों जिसमें ईंट और पत्थर भी शामिल हो सकते हैं बेफ़ायदा है वह जीवन जो लाभप्रद नहीं और निष्फल है वह अनश्वरता जिस में फ़ैज़ (वरदान) नहीं। संसार में केवल दो जीवन प्रशंसनीय हैं –

(1) एक वह जीवन जो स्वयं जीवित रहने और स्थापित रहने वाले वरदान के उद्गम का जीवन है।

(2) दूसरा वह जीवन जो लाभप्रद और ख़ुदा को दिखाने वाला हो।

तो आओ हम दिखाते हैं कि वह जीवन केवल हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन है जिस पर प्रत्येक युग में आकाश गवाही देता रहा है और अब भी देता है और स्मरण रखो कि जिसमें भलाई पहुँचाने वाला जीवन नहीं वह मुर्दा है न कि जीवित। और मैं उस ख़ुदा की क़सम खा कर कहता

हूं जिसका नाम लेकर झूठ बोलना बड़ी नीचता है कि ख़ुदा ने मुझे मेरे बुज़ुर्ग अनुकरणीय सय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रूहानी अनश्वर जीवन तथा पूर्ण प्रताप और कमाल का यह सबूत दिया है कि मैंने उसके अनुकरण तथा उसके प्रेम से आकाशीय निशानों को अपने ऊपर उतरते हुए और हृदय को विश्वास के प्रकाश से भरते हुए पाया और ग़ैब के इतने निशान देखे कि उन खुले-खुले प्रकाशों के माध्यम से मैंने अपने ख़ुदा को देख लिया है। ख़ुदा के महान निशान वर्षा के समान मुझ पर उतर रहे हैं और ग़ैब की बातें मुझ पर खुल रही हैं। अब तक हज़ारों दुआएं स्वीकार हो चुकी हैं। और तीन हज़ार से अधिक निशान प्रकट हो चुके हैं। हज़ारों दुआएँ अब तक स्वीकार हो चुकी हैं हज़ारों सम्माननीय, संयमी, सौभाग्यशाली गवाह हैं और तुम स्वयं गवाह हो। और मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसने मुझे भेजा है कि यदि कोई कठोर हृदय ईसाई या हिन्दू या आर्य मेरे उन पहले निशानों से जो प्रकाशमान दिन के समान स्पष्ट हैं इन्कार भी कर दे और मुसलमान होने के लिए कोई निशान चाहे और इस बारे में बिना किसी बेहूदा वाद-विवाद के जिसमें बुरी नीयत की गंध पाई जाए सादा तौर पर यह इक़रार किसी अखबार द्वारा प्रकाशित कर दे कि वह किसी निशान के देखने से यद्यपि कोई निशान हो, परन्तु इन्सानी शक्तियों से बाहर हो, इस्लाम को स्वीकार करेगा। तो मैं आशा करता हूं कि अभी एक वर्ष पूरा न होगा कि वह निशान को देख लेगा। क्योंकि मैं उस जीवन में से प्रकाश लेता हूं जो मेरे अनुकरणीय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिला है। कोई नहीं जो उसका मुक़ाबला कर सके। अब यदि ईसाइयों में कोई सत्य का अभिलाषी है या हिन्दू अथवा आर्यों में से सच्चाई का ढूंढने वाला है तो मैदान में निकले और यदि अपने धर्म को सच्चा समझता है तो मुकाबले पर निशान दिखलाने के लिए खड़ा हो जाए। किन्तु मैं भविष्यवाणी करता हूं कि ऐसा कदापि न होगा, अपितु बुरी नीयत से जटिल से जटिल शर्तें लगाकर टाल देंगे, क्योंकि उन का धर्म मुर्दा है और उनके लिए कोई जीवित लाभ पहुंचाने वाला मौजूद नहीं जिस से वे रूहानी लाभ पा सकें तथा निशानों के साथ चमकता हुआ जीवन प्राप्त कर सकें।

हे समस्त वे लोगो जो पृथ्वी पर रहते हो और हे वे समस्त इन्सानी रूहो जो पूर्व और पश्चिम में आबाद हो! मैं पूरे ज़ोर के साथ आप को इस ओर बुलाता हूं कि **अब पृथ्वी पर सच्चा धर्म केवल इस्लाम है** और सच्चा ख़ुदा भी वही ख़ुदा है जो क़ुर्आन ने वर्णन किया है। और हमेशा का रूहानी जीवन वाला नबी तथा प्रताप एवं पवित्रता के तख़्त पर बैठने वाला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है जिसके रूहानी जीवन और पवित्र प्रताप का हमें यह सबूत मिला है कि उसके अनुकरण और प्रेम से हम रूहुल क़ुदुस तथा ख़ुदा से वार्तालाप और आकाशीय निशानों के इनाम पाते हैं। यद्यपि हम इस बात पर ईमान रखते हैं कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तथा अन्य इस्राईली नबी भी ख़ुदा की ओर से हैं परन्तु उनकी सच्चाई पर हमारे पास इसके अतिरिक्त अन्य कोई तर्क नहीं है कि पवित्र क़ुर्आन ने उन को नबी मान लिया है। उनका रूहानी जीवन अत्यन्त स्पष्ट निशान के साथ सिद्ध नहीं है और इसका कारण है कि वे धर्म और वे किताबें अक्षरांतरण के कारण खराब हो चुकी हैं। इसलिए उन नबियों के सच्चे अनुकरण का कोई मार्ग शेष नहीं रहा ताकि उस से उनके रूहानी जीवन का सबूत मिल सकता। और ईसाई जिस धर्म को प्रस्तुत करते हैं वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का धर्म नहीं है अपितु यह पादरियों के अपनी तबियत का आविष्कार है। बहुत सी इंजीलों में से ये चार इंजीलें चुनी गई हैं जिनको कुछ यूनानियों ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से बहुत पीछे बना कर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की ओर सम्बद्ध कर दिया और ईसाइयों के पास कोई इब्रानी इंजील मौजूद नहीं है और अकारण झूठ गढ़कर हज़रत मसीह को एक यूनानी आदमी समझ लिया है। हालांकि हज़रत मसीह की मातृ-भाषा इब्रानी थी। कोई सिद्ध नहीं कर सकता कि कभी हज़रत मसीह ने एक वाक्य यूनानी का भी किसी से पढ़ा था और न हवारियों ने जो अनपढ़ मात्र थे किसी पाठशाला में यूनानी सीखी अपितु वे हमेशा मछली पकड़ने वालों के कार्य करते रहे। अब चूंकि ईसाइयों को यह बड़ी कठिनाई सामने आई है कि कोई इब्रानी इंजील मौजूद नहीं, केवल लगभग साठ इंजीलें यूनानी में हैं जो परस्पर विरोधाभासी

हैं जिनमें से ये चार चुन ली गईं जबकि वे भी परस्पर विरोध रखती हैं। अपितु प्रत्येक इंजील स्वयं में भी विरोधाभासों का संग्रह है। इन कठिनाइयों की दृष्टि से यूनानी को मूल-भाषा ठहराया गया है। परन्तु यह इतनी व्यर्थ बात है कि इस से अनुमान हो सकता है कि इन पादरी लोगों ने कितने झूठ और जालसाज़ी पर कमर बांधी है। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के समय में रोमी शासन था और सरकार की भाषा लातीनी थी और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का सरकार से कोई नौकरी का संबंध न था और न रियासत और प्रतिष्ठा पाने की इच्छा थी। इसलिए उन्होंने लातीनी को भी नहीं सीखा वह एक सीधा-सादा, विनीत, ग़रीब प्रकृति तथा सरल स्वभाव इन्सान था। उसे वही भाषा याद थी जो नासरी बस्ती में अपनी मां से सीखी थी। अर्थात् इब्रानी, जो यहूदियों की क़ौमी भाषा है और इसी भाषा में तौरात इत्यादि ख़ुदा की किताबें थीं।★ अतः ये चार इंजीलें जो यूनानी से अनुवाद होकर इस देश में फैलाई जाती हैं एक कणभर विश्वसनीय नहीं। कारण है कि उन अनुकरण में कुछ भी बरकत नहीं। ख़ुदा का प्रताप उस व्यक्ति को कदापि नहीं मिलता जो इन इंजीलों का अनुकरण करता है। अपितु ये इंजीलें हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को बदनाम कर रही हैं। क्योंकि एक ओर तो इन इंजीलों में सच्चे ईसाई की ये निशानियां ठहराई गई हैं कि वह आकाशीय निशान दिखलाने पर समर्थ हो और दूसरी ओर ईसाइयों का यह हाल है कि वे एक मुर्दा हालत में पड़े हुए हैं और एक कण भर आकाशीय बरकत उनके साथ नहीं और कोई निशान नहीं दिखा सकते। इसलिए वे निशानियों का वर्णन करते समय हमेशा हर मज्लिस में शर्मिन्दा होते हैं और अकारण एवं अनुचित तावीलें करनी पड़ती हैं।

ख़ुदा ने मुझे संसार में इसलिए भेजा ताकि मैं सहनशीलता, सदाचार और विनम्रता से मार्ग से भटके लोगों को ख़ुदा और उसके पवित्र निर्देशों की ओर आकृष्ट करूं और वह प्रकाश जो मुझे दिया गया है उसके प्रकाश से लोगों को

★**हाशिया –** हज़रत मसीह को सलीब पर जब मौत का सामना मालूम होता था उस समय जीभ पर इब्रानी वाक्य जारी हुआ और वह यह है कि ईली-ईली लिमा सबक़्तानी। इसी से।

सद्मार्ग पर चलाऊं। मनुष्य को इस बात की आवश्यकता है कि उसे ऐसे तर्क मिलें जिन के अनुसार उसको विश्वास हो जाए कि ख़ुदा है। क्योंकि संसार का एक बड़ा भाग इसी मार्ग से तबाह हो रहा है कि उनको ख़ुदा के अस्तित्व और उसके इल्हामी निर्देशों पर ईमान नहीं है और ख़ुदा के अस्तित्व को मानने के लिए इस से अधिक स्पष्ट और समझ के निकट अन्य कोई मार्ग नहीं कि वे ग़ैब (परोक्ष) की बातें तथा गुप्त घटनाएं और भविष्य की ख़बरें अपने विशेष लोगों को बताता है और वे गुप्त से गुप्त रहस्य जिन का ज्ञात करना इन्सानी शक्तियों से श्रेष्ठतर है अपने सानिध्य प्राप्त लोगों पर प्रकट कर देता है। क्योंकि इन्सान के लिए कोई मार्ग नहीं जिसके द्वारा भविष्य काल की ऐसी गुप्त और इन्सानी शक्तियों से श्रेष्ठतर ख़बरें उसको मिल सकें। निस्सन्देह यह बात सच है कि ग़ैब की घटनाएं तथा ग़ैब की ख़बरें उसको मिल सकें। निस्सन्देह यह बात सच है कि ग़ैब की घटनाएं तथा ग़ैब की ख़बरें विशेष तौर पर जिन के साथ क़ुदरत और आदेश है ऐसी बातें हैं जिन के प्राप्त करने पर इन्सानी शक्ति किसी प्रकार से स्वयं समर्थ नहीं हो सकती। अतः ख़ुदा ने मुझ पर यह उपकार किया है कि उसने समस्त संसार में से मुझे इस बात के लिए चुना है ताकि वह अपने निशानों से गुमराह लोगों को मार्ग पर लाए। परन्तु चूंकि ख़ुदा तआला ने आकाश से देखा है कि ईसाई धर्म के सहायक तथा अनुयायी अर्थात् पादरी सच्चाई से बहुत दूर जा पड़े हैं और वह एक ऐसी क़ौम है जो न केवल स्वयं सीधे मार्ग को खो बैठे हैं अपितु हज़ारों कोस तक ख़ुश्की-तरी का सफर करके यह चाहते हैं कि दूसरों को भी अपने जैसा कर लें। वे नहीं जानते कि वास्तविक ख़ुदा कौन है अपितु उनका ख़ुदा उन्हीं का एक आविष्कार है। इसलिए ख़ुदा के उस रहम ने जो वह इन्सानों के लिए रखता है चाहा कि अपने बन्दों को उनके झूठ के जाल से छुड़ाए। इसलिए उस ने अपने इस मसीह को भेजा ताकि वह तर्कों के प्रहार से उस सलीब को तोड़े जिसने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के शरीर को तोड़ा था और ज़ख़्मी किया था परन्तु जिस समय हज़रत मसीह का शरीर सलीब की कीलों से तोड़ा गया उस घाव और टूट-फूट के लिए तो ख़ुदा ने मरहम-ए-ईसा

तैयार कर दी थी, जिस से कुछ सप्ताह में ही हज़रत ईसा रोग मुक्त होकर इस अत्याचारी देश से हिजरत करके स्वर्ग के समान कश्मीर की ओर चले आए। परन्तु उस सलीब का तोड़ना जो उस पवित्र शरीर के बदले में तोड़ा जाएगा जैसा कि सही बुख़ारी में वर्णन है ऐसा नहीं है जैसा कि मसीह का मुबारक शरीर सलीब पर तोड़ा गया, जो अन्ततः मरहम ईसा के इस्तेमाल से अच्छा हो गया। अपितु उस के लिए कोई भी मरहम नहीं जब तक कि अदालत का दिन आए। यह ख़ुदा का काम है जो उसने अपना इरादा अपने इस असहाय बन्दे के द्वारा पूरा किया। परन्तु इस बात को याद रखना चाहिए कि बुख़ारी की यह हदीस कि मसीह आएगा और सलीब को तोड़ेगा वह अर्थ नहीं रखते जो हमारे दयनीय उलेमा करते हैं। क्योंकि उन्होंने अपनी अदूरदर्शिता से यह समझा हुआ है कि मसीह संसार में आकर एक बड़े जिहाद का दरवाज़ा खोलेगा और मुहम्मद महदी ख़लीफ़ा से मिल कर धर्म फैलाने के लिए लड़ाइयां करेगा और तलवार उठाएगा तथा एक बड़ा रक्तपात होगा जो दुनिया के प्रारंभ से इस समय तक कभी नहीं हुआ होगा और यहां तक रक्तपात करेगा कि पृथ्वी को रक्त से भर देगा। अतः स्मरण रहे कि यह आस्था सर्वथा ग़लत है अपितु वह सच मात्र जो ख़ुदा ने हमें समझाया है यह है कि मसीह जिसका दूसरा नाम महदी है **संसार की बादशाहत से भाग कदापि नहीं पाएगा**। अपितु इसके लिए आकाशीय बादशाहत होगी, और यह जो हदीसों में आया है कि मसीह हकम (निर्णायक) होकर आएगा और वह इस्लाम के समस्त समुदायों पर सामान्य हाकिम होगा जिसका अनुवाद अंग्रेज़ी में गवर्नर जनरल है। यह उसकी गवर्नरी पृथ्वी की नहीं होगी, अपितु अवश्य है कि वह हज़रत ईसा बिन मरयम की तरह ग़ुर्बत और विनम्रता से आए। तो ऐसा ही वह प्रकट हुआ ताकि वे सब बातें पूरी हों जो सही बुख़ारी में हैं कि يضع الحرب अर्थात् वह धार्मिक युद्धों को स्थगित कर देगा और उसका युग अमन और सुलह करने वाला होगा। जैसा कि यह भी लिखा है कि उसके युग में शेर और बकरी एक घाट से पानी पिएंगे और सांपों से बच्चे खेलेंगे और भेड़िए अपने आक्रमणों से रुक जाएंगे। यह इस बात की ओर संकेत है कि

वह एक ऐसी सरकार की छत्र-छाया में पैदा होगा जिसका काम इन्साफ़ और न्याय करना होगा। तो इन हदीसों से स्पष्ट और खुले तौर पर अंग्रेज़ सरकार की प्रशंसा सिद्ध होती है। क्योंकि वह मसीह उसी सरकार के अधीन पैदा हुआ है और यही सरकार है जो अपने इन्साफ़ से सांपों को बच्चों के साथ एक स्थान पर एकत्र कर रही है और ऐसा अमन है कि कोई किसी पर अत्याचार नहीं कर सकता। इसलिए मुझे जो मैं मसीह मौऊद हूं पृथ्वी की बादशाहत से कुछ संबंध नहीं अपितु अवश्य था कि मैं ग़ुर्बत और दरिद्रता से आता ताकि इस आरोप को दुनिया पर से दूर कर देता कि''इस्लाम तलवार से फैला है न कि आकाशीय निशानों से''। क्योंकि मसीह मौऊद का आना ईसाई विचारों की पराजय के लिए था। फिर जब कि मसीह ने स्वयं ही जब्र करना आरंभ किया और तलवार से लोगों को मुसलमान बनाने लगा और ऐसी शिक्षा देने लगा तो इस स्थिति में वह ईसाइयों के उन आरोपों को और पुख़्ता करेगा जो जिहाद के बारे में वे इस्लाम के संबंध में रखते हैं, न यह कि उनको दूर कर देगा। इसलिए ख़ुदा के सच्चे मसीह और महदी के लिए आवश्यक है कि आकाशीय निशानों के धर्म को फैलाएं ताकि वे लोग शर्मिन्दा हों जिन्होंने ख़ुदा के धर्म इस्लाम पर अकारण झूठे आरोप लगाए। तो इसी कारण से मैं निशानों के साथ भेजा गया हूं और मेरा बड़ा भारी चमत्कार यह है कि मैंने संवेदनात्मक व्यापक सबूतों के माध्यम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु को सिद्ध कर दिया है और उनकी मृत्यु का स्थान तथा क़ब्र का पता दे दिया है। अत: जो व्यक्ति मेरी पुस्तक ''मसीह हिन्दुस्तान में'' आरंभ से अन्त तक पढ़ेगा यद्यपि वह मुसलमान हो या ईसाई अथवा यहूदी या आर्य, संभव नहीं इस पुस्तक को पढ़ने के बाद वह इस बात का क़ाइल न हो जाए कि मसीह के आकाश पर जाने का विचार व्यर्थ और झूठ तथा बनाया हुआ झूठ है। तो यह सबूत सरसरी सीमा तक सीमित नहीं अपितु अत्यन्त साफ और उज्ज्वल व्यापकताओं में से है जिस से इन्कार करना न केवल इन्साफ़ से दूर अपितु इन्सानी शर्म से दूर है।

और वे दूसरे निशान जो ख़ुदा तआला ने मेरे हाथ पर प्रकट किए सैकड़ों

निशान हैं जिनके न एक न दो गवाह अपितु समस्त संसार गवाह है। देखो! अभी ताज़ा निशान प्रकटन में आया है जिस का वर्णन समय से पूर्व पुस्तक 'अंजाम-ए-आथम' के पृष्ठ-58 में है और वह इबारत यह है –

"एक चौथे लड़के के पैदा होने का मुझे निरन्तर इल्हाम हुआ है और हम अब्दुल हक़ (ग़ज़नवी) को विश्वास दिलाते हैं कि वह नहीं मरेगा जब तक कि इस इल्हाम का पूरा होना न सुन ले। यदि वह कुछ चीज़ है तो दुआ से इस भविष्यवाणी को टाल दे।" देखो पृष्ठ-58, परिशिष्ट पुस्तक 'अंजाम-ए-आथम'

अब देखो यह कितनी महान भविष्यवाणी है कि एक के पैदा होने की समय से पूर्व सूचना दी गई और एक के जीवन की ज़िम्मेदारी उस समय तक ली गई जब तक कि वह लड़का जिसकी सूचना दी गई पैदा हो जाए। तो अलहम्दुलिल्लाह 4 सफर 1317 हिज्री 14 जून 1899 ई० बुध के दिन वह सौभाग्यशाली लड़का पैदा हो गया, जिस से पहले तीन लड़के उसके सगे भाई पैदा हो चुके हैं जो अब तक मौजूद हैं, जिनके बारे में भविष्यवाणी में वर्णन किया गया था कि अवश्य है कि वह पैदा हो लें और फिर चौथा पैदा हो जिसका संबंध सोमवार से है। तो ऐसा ही प्रकट हुआ और प्रारब्ध के आकर्षण से अत्यन्त विवशताओं का सामना करके चौथे लड़के का अक़ीक़ा सोमवार के दिन हुआ ताकि वह भविष्यवाणी पूरी हो जो 20 फ़रवरी 1886 ई. के विज्ञापन में दर्ज होकर प्रकाशित की गई थी जिसके शब्द ये थे कि

"दो शंबा है, मुबारक दो शंबा"

अत: यह अद्‌भुत बात है कि आज से चौदह वर्ष पहले 20 फ़रवरी 1886 ई. के विज्ञापन में उस युग में यह भविष्यवाणी प्रकाशित की गई थी कि जब इन हर चार मौऊद लड़कों में से एक भी अभी पैदा नहीं हुआ था, और यह बात भी एक आश्चर्यजनक निशान है कि मनुष्य अपने दावे के समर्थन में चार लड़कों के पैदा होने की भविष्यवाणी ऐसे समय करे जब कि उनमें से एक का भी अस्तित्व न हो और जबकि वह स्वयं वृद्धावस्था की आयु तक पहंचा हुआ हो, तथा इसके अतिरिक्त हमेशा का रोगी हो और चौथे लड़के के लिए यह शर्त

लगा दी कि अमुक आदमी अभी नहीं मरेगा जब तक वह चौथा लड़का पैदा न हो। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि ये बातें मनुष्य की शक्ति से श्रेष्ठतर हैं और यदि ये भविष्यवाणियां केवल मौखिक होतीं और प्रकाशित न की जातीं तो इन्कारियों के लिए इनके इन्कार की गुंजायश रह जाती। परन्तु सत्याभिलाषी का यह सौभाग्य है कि ये समस्त भविष्यवाणियां समय से बहुत पहले प्रकाशित की गई हैं। चौदह वर्ष पहले वर्णन करना और लाखों मनुष्यों में लिखित विज्ञापनों को प्रसिद्ध कर देना क्या यह मनुष्य का कार्य हो सकता है? संसार में है कौन है जो किसी अनुमान या अटकल से भविष्यवाणी कर सके? कि अवश्य है कि मेरी अमुक पत्नी से मेरे घर में चार लड़के पैदा हों और अवश्य है कि चौथे लड़के का सोमवार से कुछ संबंध हो और अवश्य है कि अमुक व्यक्ति उस समय तक न मरे जब तक चौथा लड़का पैदा हो जाए।

अब थोड़ा विचार करो कि यह किस श्रेष्ठता एवं प्रतिष्ठा की भविष्यवाणी उस व्यक्ति की है जिसने मसीह मौऊद होने का दावा किया और फिर ऐसी भविष्यवाणियों को अपनी सच्चाई का मापदण्ड ठहराएं और विज्ञापनों में विरोधियों को सम्बोधित करके यह भी लिख दिया कि यदि तुम ख़ुदा दोस्त हो और ख़ुदा तुम्हारे साथ है तो दुआ करो कि ये भविष्यवाणियां पूरी न हों। और फिर वे भविष्यवाणियां पूरी हो गईं और विरोधियों ने जो इल्हामी भी कहलाते थे बहुत सी दुआएं भी कीं कि वे भविष्यवाणियां टल जाएं। परन्तु ख़ुदा ने उनकी दुआ न सुनी और सब के सब असफल रहे। क्या ऐसा मुद्दई झूठा हो सकता है? जिन लेखों और सुदृढ़ गवाहियों के साथ ये निशान प्रकट हो गए संसार में तलाश करो कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त इस उच्च श्रेणी के सबूत का उदाहरण कहां है? परन्तु यहां यह भी स्मरण रखने के योग्य है कि चूंकि पक्षपाती मनुष्य की यह आदत है कि जब उस पर हर प्रकार से समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाता है और खूब सृदृढ़ तौर पर आरोप के शिकंजे के नीचे आ जाता है तो फिर वह जान बूझ कर लज्जा और शर्म से भी लापरवाह होकर दिन को रात कहना आरंभ कर देता है। और इसके बावजूद कि इन्कार की कोई भी

गुंजाइश न हो तब भी व्यर्थ मीन-मेखों के आधार पर इन्कार किए जाता है। तो यही कारण है कि हमारे विरोधियों ने ख़ुदा तआला के सैकड़ों निशानों को देख कर उन से फिर भी कुछ भी लाभ नहीं उठाया। अपितु कुछ ऐसी भविष्यवाणियों पर भी जो शर्त के साथ थीं और अपनी शर्तों के अनुसार पूरी हो गयी थीं तथा इल्हामी शर्तों ने चाहा कि उनकी पाबन्दी करने वालों को पाबन्दी का लाभ मिले। पूर्ण अन्याय के साथ यह ऐतराज़ किया कि वे झूठी निकलीं और पूरी नहीं हुईं। जैसा कि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम की मृत्यु के बारे में जो भविष्यवाणी की गई थी जिसमें यह शर्त थी कि यदि आथम साहिब पन्द्रह महीने की अवधि में सच की ओर रुजू कर लेंगे तो मौत से बच जाएंगे। मंदबुद्धि विरोधियों ने यह शोर मचा दिया कि आथम पन्द्रह महीने के अन्दर नहीं मरा बल्कि बाद में मृत्यु हुई। और यदि ये लोग पक्षपात से एक घड़ी के लिए भी पृथक होकर भविष्यवाणी के शब्दों पर विचार करते और शर्त के शब्दों को ध्यानपूर्वक देखते और फिर आथम साहिब की उन परिस्थितियों पर दृष्टि डालते कि जो भविष्यवाणी की अवधि पन्द्रह महीने में उन्होंने प्रकट की तो निस्सन्देह मानवीय लज्जा उनको इस बात से रोकती कि वे ऐसी रोशन भविष्यवाणी को जो खुले तौर पर पूर्ण हो गई ग़लत ठहराते। परन्तु इस अंधे संसार में पक्षपाती भी एक आपत्तियों से भरी हुई धूल है जिस से मनुष्य देखता हुआ नहीं देखता और सुनता हुआ नहीं सुनता तथा समझता हुआ नहीं समझता। क्या यह सच नहीं है कि आथम ने भविष्यवाणी की पन्द्रह महीने की अवधि में धार्मिक मुबाहसों से पूर्णतया मुंह बन्द रखा और अपनी उस पुरानी आदत से रुजू किया जिसको वह हमेशा पुस्तक लेखन तथा तहरीर के अनुसार प्रकट करता था। क्या इस रुजू का इसके अतिरिक्त कोई अन्य कारण था कि वह इस बात से भयभीत हुआ कि ऐसा न हो कि पक्षपात पूर्ण बहसों और लिखित एवं भाषण संबंधी धृष्टताओं से उस पर शीघ्र ही कोई विपत्ति आए। अतः ख़ुदा के प्रकोप के भय से अपनी पुरानी आदत से लौटना पड़ा। क्या यह लौटना (रुजू) न था? क्या यह ईसाइयत पर दृढ़ता का तर्क है कि ऐसा व्यक्ति जो कभी इस्लाम के अपमान और बहस-मुबाहसे से रुकता नहीं था वह पन्द्रह

महीने अर्थात् भविष्यवाणी की निर्धारित समय सीमा के दिनों तक अपना मुंह बन्द रखे और हतप्रभ होकर पागलों की तरह जीवन व्यतीत करे? तो जबकि आथम ने भविष्यवाणी से भयभीत होकर अपनी पहली जीवन-पद्धति को त्याग दिया और भय के लक्षण प्रकट किए और असभ्यता एवं इस्लाम के खण्डन से रुक गया तो क्या इस हालत को रुजू (अपनी बात से लौटना) नहीं कहेंगे?

हां यदि वह पूर्णरूप से रुजू करता तो ख़ुदा तआला भी पूर्ण रूप से उसे मोहलत देता। परन्तु चूंकि उसका रुजू पूर्ण न था तथा वह अपने रुजू पर स्थापित न रह सका और निर्धारित अवधि के बाद उसने असल गवाही को छुपाया। इसलिए भविष्यवाणी के प्रभाव ने उसे न छोड़ा और शीघ्र मृत्यु पा गया। अतः यह स्पष्ट अन्याय है और सच को बड़ी सख़्ती से छुपाया कि ऐसा प्रकट किया जाए कि जैसे आथम भविष्यवाणी के सुनने के बाद बड़ी बहादुरी और दृढ़ता से अपनी मामूली जीवन पद्धति तथा ईसाई धर्म की सेवा पर स्थापित और जमा रहा। जो व्यक्ति ख़ुदा की लानत से भयभीत हो वह ऐसा झूठ कदापि नहीं बोलेगा। भला तुम में से कोई तो सिद्ध करके दिखा दे कि आथम भविष्यवाणी की अवधि में अपनी पहली आदतों पर स्थापित और क़ायम रहा और भविष्यवाणी के भय ने उसे स्तब्ध नहीं किया यदि कोई सिद्ध कर सकता है तो करे हम स्वीकार करने को तैयार हैं अन्यथा झूठों पर ख़ुदा की लानत। क्या यह रुजू नहीं था कि न केवल आथम गालियां देने से रुका अपितु भविष्यवाणी की पूर्ण अवधि अर्थात् पन्द्रह महीने तक भयभीत रहा और उसके चेहरे पर बेचैनी तथा भय के लक्षण प्रकट थे और उसे किसी स्थान पर आराम न था। क्या यह तर्क कुछ कम भार रखता है कि जिस समय आथम साहिब को मैंने चार हज़ार रुपए नक़द इस बात के लिए देना किया कि वह मज्लिस में क़सम खा जाएं कि उन्होंने इस्लाम की ओर रुजू नहीं किया और उनके हृदय में ख़ुदा के क्रोध का विचार नहीं था। तो आथम साहिब ने क़सम खाने से साफ़ इन्कार कर दिया? और मैंने उनको विज्ञापन द्वारा सूचित किया कि यदि तुम क़सम खाने को तैयार हो तो मैं तुम्हारी चौखट पर क़दम रखने से पहले चार हज़ार रुपए तुम्हारे सुपुर्द कर दूंगा। परन्तु

फिर भी उसके क़सम न खाई। हालांकि मसीह ने अदालत में उपस्थित हुए बिना स्वयं क़सम खाई। पोलूस ने अदालत में उपस्थिति के बिना स्वयं क़सम खाई। फिर आथम को क़सम खाने से किस चीज़ ने रोक दिया? ★ क्या यह तर्क आथम साहिब के रूजू के कुछ कम भार का है कि उन को प्रकाशित विज्ञापन द्वारा मैंने सूचना दी कि यदि वह भय जिस का तुम्हें इक़रार है ख़ुदा के क्रोध से न था अपितु मेरे किसी आपराधिक आक्रमण से था तो अदालत में नालिश करो और इसका सबूत दो। परन्तु न उसने नालिश की और न भविष्यवाणी के दिनों में इस बात को किसी अख़बार में छपवाया कि मैं क़त्ल किए जाने से डरता रहा और न पुलिस में सूचना दी। क्या इस से प्रकट नहीं कि ऐसी कार्रवाई करने से उसका हृदय उस को दोषी करता था। आथम साहिब के रुजू का क्या यह तर्क कुछ कम भार का है। कि जैसा कि इल्हाम में समय से पूर्व प्रकाशित किया गया था कि आथम रुजू से लाभ उठाएगा। परन्तु यदि गवाही को छुपाएगा तो फिर शीघ्र पकड़ा जाएगा और मृत्यु पाएगा। यह इल्हाम आथम साहिब की मृत्यु से पूर्व लाखों लोगों में प्रसिद्ध हो चुका था। अत: आथम साहिब मेरे अन्तिम विज्ञापन से छ: माह बाद मृत्यु पा गए और अपने बचने तथा मरने से भविष्यवाणी की गवाही को दोहरे तौर पर सिद्ध कर गए। जब शर्त पर अमल किया तो उस अमल के कारण विलम्ब हो गया और जब गवाही को छुपाया तो पकड़ा गया। देखो यह भविष्यवाणी कैसी साफ़ और स्पष्ट थी तथा किस प्रकार उसमें ख़ुदा की श्रेष्ठता भरी हुई थी। परन्तु फिर भी पक्षपाती लोगों ने इल्हामी शर्त की उपेक्षा करके झुठलाने पर कमर कस ली। अतएव इसी प्रकार नबियों को झुठलाया जाता रहा है। अफ़सोस कि इन अत्याचार-प्रवृत्ति वाले लोगों ने आथम वाली भविष्यवाणी की लेखराम वाली भविष्यवाणी से तुलना भी नहीं की। यह हिदायत पाने का स्थान था कि आथम की भविष्यवाणी में इल्हाम रुजू की शर्त से संलग्न था और

★ विश्वसनीय साक्ष्यों से ज्ञात हुआ जिससे आथम साहिब ने इन्कार न किया बल्कि स्पष्ट इक़रार किया कि उन्होंने अपने जीवन में कई बार अदालत में उपस्थित होकर कुछ मुक़द्दमों में गवाही देने के आयोजन पर क़सम खाई वे कागज़ सरकारी दफ़्तरों में अब तक मौजूद हैं। इसी से

बहुत से क्रमों (घटनाओं) ने प्रकट कर दिया कि आथम ने अवश्य शर्त की पाबन्दी की। तो कृपालु ख़ुदा ने उसकी पाबन्दी से जितनी कि पाबन्दी उस से प्रकटन में आई उतना ही उसे लाभ पहुंचा दिया। परन्तु लेखराम की भविष्यवाणी में कोई शर्त न थी, इसलिए उसे विलम्ब न मिला। आथम ने नर्मी, हताश तथा भयभीत होने से काम लिया, इसलिए ख़ुदा ने भी उस से नर्मी की। परन्तु लेखराम ने भविष्यवाणी के बाद जीभ की छुरी सीमा से अधिक तेज़ कर दी और हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रत्येक मज्लिस में गालियां देना आरंभ किया। इसलिए उसने ख़ुदा के तेज़ प्रहार से अपनी तेज़ी का फल पाया। ये दोनों भविष्यवाणियां अपने-अपने स्थान पर जमाली (सुन्दरता) और जलाली (प्रतापी) रंग में हैं। आथम की भविष्यवाणी जमाली है और लेखराम की जलाली। इन दोनों भविष्यवाणियों पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालने से बड़ा ज्ञान प्राप्त होता है और ख़ुदाई आदतों की वास्तविकता खुलती है कि क्योंकर नर्म के साथ नर्म और कठोर के साथ कठोर है। आथम और लेखराम के आचरण का अन्तर किसी को ज्ञात नहीं? परन्तु अब कौन वर्णन करे जबकि बहरहाल झुठलाना अभीष्ट है। यदि इसी प्रकार झुठलाना वैध है जैसा कि आथम की भविष्यवाणी के संबंध में किया गया तो फिर ऐसे लोगों को नबियों की बहुत सी भविष्यवाणियों से इन्कार करना पड़ेगा। जिस प्रकार से इस ख़ुदा के बन्दे के खुले-खुले तौर पर निशान प्रकट हुए और लाखों इन्सानों में समय से पूर्व भविष्यवाणियां प्रसिद्ध होकर फिर कुश्ती के सावर्जनिक स्थान की तरह हज़ारों लोगों के दृष्टि के अन्तर्गत वे भविष्यवाणियां पूरी हुईं। क्या इसका उदाहरण संसार में है?

सोचना चाहिए कि भविष्यवाणियां छः प्रकारों से बाहर नहीं होतीं-

(1) या स्वयं से संबंधित

(2) या अपनी पत्नी से संबंधित

(3) या अपनी सन्तान से संबंधित

(4) या अपने मित्रों से संबंधित

(5) या अपने शत्रुओं से संबंधित

(6) या संसार की अन्य किसी चीज़ या इन्सान से संबंधित।

अत: यह समस्त प्रकार की भविष्यवाणियां पुस्तक बराहीन अहमदिया और विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886 ई. और पृष्ठ 2 से संबंधित हाशिया, विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886 ई. "आईना कमालाते इस्लाम" में दर्ज तथा पुस्तक "अंजाम-ए-आथम" के परिशिष्ट पृष्ठ-58 और पुस्तक "अंजाम-ए-आथम" पृष्ठ 282 तथा "इज़ाला औहाम" में दर्ज हैं और विज्ञापन जनवरी 1897 ई. में भी जिसमें यह भविष्यवाणी थी कि जल्सा मज़ाहिब में हमारा निबंध विजयी रहेगा जिसकी पुष्टि सिविल मिलिट्री गज़ट तथा आबज़र्बर ने भी की। ऐसा ही पुस्तक "किताबुल बरिय्य:" में भी जिसमें एक भविष्यवाणी डॉक्टर मार्टिन हेनरी क्लार्क के मुकद्दम: से बरी होने के बारे में है। ये समस्त भविष्यवाणियां यदि विस्तारपूर्वक लिखी जाएं तो एक रजिस्टर बनता है। यह भी स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्येक भविष्यवाणी की विश्वसनीयता एवं महत्वता देखने के लिए यह भी देखना ज़रूरी होता है कि वह भविष्यवाणी किस समय तथा किस युग में लिखी गई। उदाहरणतया चार लड़कों के पैदा होने के बारे में ऐसे समय में भविष्यवाणी करना जबकि उन में से एक लड़का भी मौजूद न था और इसके साथ यह भविष्यवाणी करना कि अब्दुल हक़ नहीं मरेगा जब तक चौथा लड़का पैदा होना न सुन ले। क्या यह ऐसी भविष्यवाणी करना इन्सानी शक्तियों में सम्मिलित है? यदि है तो कोई इसका मुकाबला करके दिखा दे। ऐसा ही जब बराहीन अहमदिया में यह प्रकाशित किया गया कि "मैं तुझे एक प्रसिद्ध इन्सान बनाऊंगा और लोगों के दिलों में तेरा प्रेम डालूंगा और दूर-दूर से लोग तेरे पास आएंगे और दूर-दूर से तेरे आराम की चीज़ें तुझे पहुंचाई जाएंगी।" इस युग को अब बीस वर्ष गुज़र गए और यह ख़ाकसार उस समय एक ऐसा गुमनाम आदमी था कि ऐसे दो चार आदमियों के अतिरिक्त कि जो मेरे पिता के समय से मुझ से परिचित थे और कोई भी पंजाब और हिन्दुस्तान से मुझ को नहीं जानता था और न मुझ से हमदर्दी और दोस्ती का संबंध रखता था। फिर इसके बाद इस भविष्यवाणी के अनुसार अब लाखों इन्सानों अपितु करोड़ों में मैं प्रसिद्ध किया गया और कई हज़ार आदमी मुझ से

हमदर्दी दोस्ती और निष्कपटता का संबंध रखने वाले पैदा हो गए और हिन्दुस्तान के किनारों तक बल्कि ब्रह्मा और बन्दर अब्बास तथा मद्रास, बुख़ारा हैदराबाद, अफ़्रीक़ा और काबुल के देश से भिन्न-भिन्न प्रकार के उपहार लोगों ने भेजे और मेरे सिलसिले के लिए बहुत से रुपयों से सहायता की और हमेशा करते हैं। तो यह स्थान आर्द्रता और आत्म-विस्मृति का है कि इस समय उस युग की भविष्यवाणियां जबकि मैं अधम और अपमानित वस्तु के समान इस जंगल में पड़ा था अत्यन्त धूम धाम और वैभव के साथ पूरी हो गईं। अपने हृदयों में विचार करो और बुद्धिमानों से पूछो कि क्या इस प्रकार की भविष्यवाणियों में मानवीय शक्ति का हस्तक्षेप है?★ कुछ अनाड़ी जिन्हें पक्षपात ने अंधा कर दिया है कहते हैं कि यद्यपि कुछ भविष्यवाणियां सच्ची निकलीं जैसा कि अहमद बेग की मृत्यु होने की और लेखराम के क़त्ल किए जाने की और लाहौर के धर्म महोत्सव जल्से में भाषण के श्रेष्ठ रहने की और गुमनामी के बाद करोड़ो लोगों में प्रसिद्ध हो जाने और हज़ारों निष्कपट और हमदर्द तथा सेवक पैदा हो जाने की और दूर-दूर से उपहार और माल पहुंचने की तथा डॉक्टर हेनरी मार्टिन क्लार्क के ख़ून के आरोप के मुकद्दमः से अन्त में बरी हो जाने की और मौलवी मुहम्मद हुसैन के गाली-गलौज तथा अपशब्दों के रोके जाने की और इसके साथ इस मुक़द्दमे से बरी होने की और 20 फ़रवरी 1886 ई. के विज्ञापन के अनुसार चार लड़के पैदा होने की और अंजाम-ए-आथम के परिशिष्ट पृष्ठ 58 के अनुसार चौथा लड़का

★ **हाशिया -** ख़ुदा तआला ने इरादा किया है कि मेरी भविष्यवाणी से केवल इस युग के लोग ही लाभ प्राप्त न करें अपितु कुछ भविष्यवाणियां ऐसी हों कि भविष्य के लोगों के लिए एक महान निशान हों जैसा कि बराहीन अहमदिया इत्यादि पुस्तकों की भविष्यवाणियां कि "मैं तुझे 80 वर्ष या कुछ वर्ष अधिक या इस से कुछ कम आयु दूंगा और विरोधियों के प्रत्येक झूठे आरोप से तुझे बरी करूंगा और तुझे एक बड़ा ख़ानदान बनाऊंगा और तुझ से एक महान इन्सान पैदा करूंगा और तेरे अनुयायियों से संसार भर जाएगा और वे हमेशा दूसरों पर विजयी रहेंगे और तू नहीं मरेगा जब तक सच के तर्कों को पृथ्वी पर स्थापित न कर ले और जब तक कि अपवित्र और पवित्र में अन्तर पैदा न हो जाए और ख़ुदा तुझे इतनी बरकत देगा कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेगे।" इसी से

उस समय पैदा होने की कि अभी अब्दुहक़ ग़ज़नवी शिष्य मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी जीवित था और तीन* परीक्षाओं के आने की भविष्यवाणी जिसका वर्णन बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-241 और पृष्ठ-510, 511 और 557 में है। ये सब भविष्यवाणियां पूरी हुईं। किन्तु आथम के बारे में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। अत: फिर भविष्यवाणी की गई थी कि लड़का होगा परन्तु लड़की हुई और फिर लड़का हुआ तो मर गया। हां बाद में चार लड़के अवश्य हो गए। तो आथम के बारे में हम अभी लिख चुके हैं कि इल्हामी शर्त के अनुसार वह भविष्यवाणी पूर्ण सफाई से पूरी हो गई। भला तुम ही बताओ कि जिस इल्हाम में स्पष्ट शर्त थी और प्रमाणित क्रमों ने बता दिया था कि आथम ने किसी सीमा तक इस शर्त की अवश्य पाबन्दी की तो क्या अवश्य न था कि इस पाबन्दी से आथम लाभ उठाता। क्या ख़ुदा तआला पर वादा खिलाफ़ी वैध है? क्या उचित है कि वह किसी रिआयत और क्षमा का वादा करके फिर उस वादे का ध्यान

---

* **हाशिया -** ये तीन परीक्षाएं जिन की आज से बीस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में सूचना दी गई है उनमें से एक वह है जो डॉक्टर हेनरी मार्टिन क्लार्क ने अकारण इक्दाम-ए-क़त्ल के आरोप का झूठा मुक़द्दमा मुझ पर दायर किया। इस परीक्षा की ओर बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में स्पष्ट संकेत है। दूसरी परीक्षा वह है जो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अकारण मुझ पर कुफ्र का फ़त्वा लिखा और फिर अपमान की भविष्यवाणी के उल्टे मायने किए और मुझ पर मुक़द्दम: बनाया गया। इस परीक्षा की ओर बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 510, 511 में संकेत है। और तीसरी परीक्षा लेखराम के मुक़द्दमे में हिन्दुओं का जोश और अकारण मेरे घर की तलाशी करना है जिसका वर्णन बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-557 में बतौर संकेत है* । अत: बराहीन-ए-अहमदिया में तीन कठोर परीक्षाओं का बतौर भविष्यवाणी वर्णन था। अत: वह तीनों परीक्षाएं पूरी हो गईं और शायद इनकी कोई और शाख़ अभी शेष हो। इसी से

---

* **हाशिए का हाशिया –** आर्यों का मुझ से बुरी धारणा रखना आश्चर्य की बात है क्योंकि सर्वप्रथम तो आर्यों को ही मेरे निशानों का अनुभव हुआ था। क़ादियान के कुछ आर्यों को मैंने समय से पूर्व पंडित दयानन्द सरस्वती की मृत्यु की सूचना दी कि छ: माह के अन्दर मृत्यु पा जाएंगे और स्वयं इन आर्यों की कुछ आपदाओं की समय से पूर्व सूचना दी और फिर आपदा से रिहाई पाने की समय से पूर्व सूचना दी। इन समस्त इल्हामों का विवरण बराहीन अहमदिया

न रखे। यूनुस अलैहिस्सलाम नबी के इल्हाम में कोई भी शर्त न थी तब भी तौब: करने वालों ने अपनी तौब: से लाभ उठाया। फिर आथम स्पष्ट शर्त से क्यों थोड़ा सा लाभ न उठा लेता? क्या तुम कह सकते हो कि आथम अपने ईसाइयत के पक्षपात पर ऐसा स्थापित रहा कि कुछ भी भय नहीं किया और रुजू की शर्त को छुआ भी नहीं। इस बात पर सूर्य के समान तर्क चमक रहे हैं कि आथम भविष्यवाणी के सुनने के बाद अपने पहले पक्षपात गालियों और इस्लाम के मुकाबले की आदत पर स्थापित न रह सका और वह भविष्यवाणी को सुनकर इस प्रकार भयभीत हो गया जिस प्रकार बिजली को देख कर एक बच्चा भयभीत हो जाता है। और अपने अन्दर एक परिवर्तन पैदा कर लिया और ग़रीब प्रकृति हो गया। यदि अब भी कोई अपने द्वेष और कृपणता को न छोड़े तो इसके अतिरिक्त क्या इलाज है कि हम उसको यह बात कह कर छोड़ दें कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। और स्मरण रहे कि लड़की पैदा होना या एक लड़का पैदा होकर मर जाना इस से इल्हाम को कुछ संबंध न था। इल्हाम यह बताता था क चार लड़के पैदा होंगे और उन में से एक को एक मर्दे ख़ुदा मसीह की विशेषता वाले इल्हाम ने वर्णन किया है। तो ख़ुदा तआला की कृपा से चार लड़के पैदा हो गए। हमारा कोई इल्हाम ऐसा नहीं है जिस का विषय यह हो कि पहले गर्भ में लड़का ही पैदा होगा या दूसरे गर्भ में जो

शेष हाशिए का हाशिया - में मौजूद हैं और जिन के बारे में भविष्यवाणी की गई थी वे भी क़ादियान में मौजूद हैं। उनमें से एक का नाम शरमपत है वह जाति के खत्री और बाज़ार के चौधरी हैं। शरमपत को मैंने ख़ुदा से इल्हाम पाकर सूचना दी थी कि उन के मुक़द्दमे की फ़ौजदारी मिस्ल चीफ़ कोर्ट से वापस आएगी और अधीन अदालत से उसके भाई विशम्भरदास की आधी क़ैद मेरी दुआ के कारण माफ़ कर दी जाएगी परन्तु बरी नहीं होगा। और मैंने उसे यह भी कहा था कि मैंने कश्फ़ की अवस्था में देखा है कि मैंने प्रारब्ध की लिखी आधी क़ैद को अपनी क़लम से काट दिया है परन्तु बरी नहीं किया। लाला शरमपत एक बहुत पक्षपाती आर्य इस्लाम का शत्रु है। मेरे सत्यापन के लिए इतना पर्याप्त है कि लाला शरमपत को औलाद की क़सम देकर पूछा जाए कि क्या ये मेरे बयान सही हैं या ग़लत? इसी से।

लड़का पैदा होगा वह जीवित रहेगा हां यदि हमने केवल अपनी विवेचना से यह समझ लिया हो कि शायद यही लड़का ख़ुदा के वलियों में से होगा तो यह ख़ुदा के इल्हाम पर आरोप नहीं। हम अपनी विवेचना की बातों को ग़लती से मासूम नहीं समझते हमें दोषी करने के लिए हमारा कोई इल्हाम प्रस्तुत करना चाहिए। विवेचना की ग़लती नबियों और रसूलों से भी हो जाती है। जिस पर वे क़ायम नहीं रखे जाते। थोड़ा सही बुख़ारी को खोलो और हदीस ذهب وهلی (ज़हब वहली) को ध्यानपूर्वक पढ़ो। ऐसा ऐतराज़ करना जो दूसरे पवित्र नबियों पर अपितु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी वही ऐतराज़ आए, मुसलमानों और नेक आदमियों का काम नहीं है बल्कि लानतियों और शैतानों का काम है। यदि हृदय में खराबी नहीं तो क़ौम की फूट दूर करने के लिए एक जल्सा करो और सार्वजनिक सभा में मुझ पर ऐतराज़ करो कि अमुक भविष्यवाणी झूठी निकली। फिर यदि दर्शकों ने क़सम खाकर कह दिया कि वास्तव में झूठी निकली और मेरे उत्तर को सुनकर तर्क पूर्ण वर्णन और शरीअत के तर्क से रद्द कर दिया तो उसी समय मैं तौब: करूंगा। अन्यथा चाहिए कि सब तौब: करके इस जमाअत में सम्मिलित हो जाएं तथा दरिन्दगी और गालियां छोड़ दें।

हे मुसलमानों की सन्तान! मैंने आप लोगों का क्या पाप किया है कि आप लोग नाना प्रकार के षडयंत्रों से मुझे कष्ट पहुंचाने के लिए तत्पर हो गए। तुम में से जो मौलवी हैं वे हर समय यही उपदेश करते हैं कि यह व्यक्ति काफ़िर, नास्तिक, दज्जाल है और अंग्रेज़ों के शासन की बहुत प्रशंसा करता है और रोमी शासन का विरोधी है तथा तुम में से जो नौकरी पेशा हैं वे इस कोशिश में हैं कि मुझे इस उपकारी सरकार का बाग़ी ठहराएं। मैं सुनता हूं कि हमेशा मेरे बारे में घटना के विरुद्ध ख़बरें पहुंचाने के लिए हर ओर से कोशिश की जाती है। हालांकि आप लोगों को अच्छी तरह ज्ञात है कि मैं विद्रोहियों जैसे आचरण का मनुष्य नहीं हूं। मेरी आयु का अधिकांश भाग इस अंग्रेज़ी शासन के समर्थन और सहायता में गुज़रा है और मैंने जिहाद के निषेध और अंग्रेज़ी शासन की आज्ञापालन के बारे में इतनी पुस्तकें लिखी हैं और विज्ञापन प्रकाशित किए हैं

कि यदि वे पत्रिकाएं और पुस्तकें एकत्र की जाएं तो उन से पचास अलमारियां भर सकती हैं मैंने ऐसी पुस्तकों को समस्त अरब देशों, मिस्र, शाम, काबुल और रोम तक पहुंचा दिया है। मेरी हमेशा कोशिश रही है कि मुसलमान इस शासन के सच्चे शुभ-चिन्तक हो जाएं। और ख़ूनी महदी तथा ख़ूनी मसीह की निराधार रिवायतें और जिहाद के जोश दिलाने वाले मामले जो मूर्खों के हृदयों को खराब करते हैं उनके हृदयों से समाप्त हो जाएं। फिर कैसे संभव था कि मैं इस शासन का अशुभ चिन्तक होता या कोई अवैध विद्रोहपूर्ण षड्यंत्र अपनी जमाअत में फैलाता जबकि मैं बीस वर्ष तक अंग्रेज़ी सरकार के आज्ञापालन करने की यही शिक्षा देता रहा तो क्योंकर संभव था कि इन समस्त निर्देशों के विरुद्ध मैं किसी विद्रोह की शिक्षा दूं। हालांकि मैं जानता हूं कि ख़ुदा तआला ने अपनी विशेष कृपा से इस सरकार को मेरी और मेरी जमाअत की शरण बना दिया है। यह अमन जो इस सरकार की छत्र-छाया में हमें प्राप्त है, न यह अमन पवित्र मक्का में मिल सकता है न मदीना में और न रोम की राजधानी कुस्तुनतुनिया में। फिर मैं स्वयं अपने आराम का शत्रु बनूं यदि इस सरकार के बारे में कोई विद्रोहपूर्ण षड्यंत्र हृदय में छुपाए रखूं। और जो लोग मुसलमानों में से ऐसे जिहाद और विद्रोह के बुरे विचार दिलों में छुपाए रखते हों मैं उनको बहुत अनाड़ी, दुर्भाग्यशाली और ज़ालिम समझता हूं, क्योंकि हम इस बात के गवाह हैं कि इस्लाम का पुनर्जीवन अंग्रेज़ी सरकार की शान्तिप्रद छाया से पैदा हुआ है। तुम चाहे मुझे दिल में कुछ कहो, गालियां निकालो या पहले की भांति काफ़िर होने का फ़त्वा लिखो परन्तु मेरा सिद्धान्त यही है कि ऐसी सरकार से दिल में बग़ावत के विचार रखना या ऐसे विचार जिन से बग़ावत की संभावना हो सके, बड़ी नीचता और ख़ुदा तआला के निकट पाप है। बहुत से ऐसे मुसलमान हैं जिन के दिल कभी साफ़ नहीं होंगे जब तक उनकी यह आस्था न हो कि ख़ूनी महदी और ख़ूनी मसीह की समस्त हदीसें अफ़साने और कहानियां हैं।

हे मुसलमानो! अपने धर्म की सहानुभूति तो ग्रहण करो परन्तु सच्ची सहानुभूति। क्या इस ज्ञान-विज्ञान के समय में धर्म के लिए यह उत्तम है कि

हम तलवार से लोगों को मुसलमान करना चाहें। क्या जब्र करना तथा ज़ोर और अत्याचार से अपने धर्म में सम्मिलि करना इस बात का प्रमाण हो सकता है कि वह धर्म ख़ुदा तआला की ओर से है? ख़ुदा से डरो और इस्लाम धर्म पर ये व्यर्थ इल्ज़ाम मत लगाओ कि उस ने जिहाद का मामला सिखाया है और ज़बरदस्ती अपने धर्म में दाख़िल करना उसकी शिक्षा है। ख़ुदा की पनाह पवित्र क़ुर्आन की यह शिक्षा नहीं है और न कभी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि कोई ख़ूनी महदी या ख़ूनी मसीह आएगा जो ज़बदस्ती मुसलमान बनाएगा तथा मनुष्यों को क़त्ल करना उसका काम होगा। जिस महदी या मसीह ने आना था वह आ चुका। क्या अवश्य न था कि वह मसीह सलीब के प्रभुत्त्व के समय आता? क्या सब से प्रथम श्रेणी की मसीह मौऊद की निशानी यह नहीं है कि वह सलीब के प्रभुत्त्व में आएगा अब स्वयं देख लो कि इस तेरह सौ वर्ष की अवधि में सलीबी धर्म कितनी उन्नति करता गया तथा कितनी अधिक तेज़ी के साथ उसका कदम दिन-प्रतिदिन आगे है। हिन्दुस्तान में ऐसी कौन सी क़ौम है जिस में से एक जमाअत इस धर्म में दाखिल नहीं की गई। करोड़ों पुस्तकें और अखबार इस्लाम धर्म के खण्डन में प्रकाशित हो चुके, यहां तक कि 'उम्महातुल मोमिनीन' जैसी गन्दी पुस्तक भी तुम्हारी चेतावनी के लिए ईसाइयों द्वारा प्रकाशित हुई। बेचारी चौदहवीं सदी में से भी जिस पर ऐसी आवश्यकता के समय में मुजद्दिद ने आना था सौलह वर्ष गुज़र गए परन्तु आप लोगों ने अब तक मसीह मौऊद की आवश्यकता महसूस नही की। पृथ्वी ने सलीबी धर्म के प्रभुत्त्व के कारण मसीह मौऊद की आवश्यकता पर गवाही दी और आकाश ने चन्द्र-ग्रहण तथा सूर्य-ग्रहण को रमज़ान में ठीक निश्चित तिथियों में दिखला कर उस वादा दिए गए महदी के प्रकट हो जाने की गवाही दी। और जैसा कि मसीह के समय की निशानी लिखी थी ऊंटों की सवारी और सामान ढोने में भी रेल गाड़ियों ने अन्तर डाल दिया तथा जैसा कि निशानियों में लिखा था देश में ताऊन भी फूटी, हज भी रोका गया और अहले कश्फ़ ने भी इस युग की सूचना दी और नुजूमी भी बोल उठे

कि मसीह मौऊद का यही समय★ है और जिसने दावा किया उसका नाम भी अर्थात् ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अपने अक्षरों की संख्या से संकेत कर रहा है। अर्थात् तेरह सौ की संख्या पूरा करना जो इस नाम से किलती है वह बता रही है कि तेरहवीं सदी के समाप्त होने पर यही मुजद्दिद आया, जिस का नाम तेरह सौ की संख्या पूरी करता है परन्तु अब तक आप लोगों की आंख नहीं खुली। आप लोग इस्लम की हमदर्दी के यही मायने समझते हैं कि यदि संभव हो तो ऐसे मनुष्य को जिसके मुंह से इस्लाम का विरोध तथा अपमान का वाक्य निकले दण्ड दिया जाए या दिलाया जाए। जैसा कि उम्महातुल मोमिनीन के प्रकाशित होने के समय में भी यही कार्रवाई की गई और सरकार को बताया गया कि हम इस पुस्तक का उत्तर लिखना नहीं चाहते केवल दण्ड दिलाना चाहते हैं। परन्तु चूंकि ऐसा निवेदन इस स्थिति में ध्यान देने योग्य हो सकता था कि कथित पुस्तक स्टेशन कानून के लागू होने के बाद लिखी होती। इसलिए वह निवेदन अस्वीकार हुआ। और यह तो स्वयं आप लोग सांकेतिक तौर पर इक़रार कर चुके कि हम खण्डन लिखना नहीं चाहते। तो जैसे न इधर के रहे न उधर के रहे। इसलिए यह जोशीला स्वभाव, भड़कने और प्रतिशोध लेने की इच्छा अच्छी नहीं। इस से इस्लाम बदनाम हो रहा है। स्मरण रखो कि अब जो व्यक्ति मसीह मौऊद और महदी माहूद के नाम पर आए और योग्यता केवल इतनी हो कि लोगों को तलवार का भय दिखा कर मुसलमान करना चाहे तो निस्सन्देह वह झूठा होगा

★**नोट** – अखबार डॉन में जिस से पत्रिका ट्रिब्यून तिथि 8 जुलाई 1899 ई. ने नक़ल किया है एक नुजूमी विद्वान की यह भविष्यवाणी प्रकाशित की है कि 1900 ई. के साथ एक नया दौर आरंभ होता है और ये दोनों सन् अर्थात् 1890 ई. से 1900 ई. एक महान दौरा समाप्त करते है जिसकी समाप्ति पर सूर्य के एक राशि चक्र की एक नवीन राशी में प्रवेश करता है और उस नुजूम के प्रभाव से अर्थात् जबकि सूर्य एक नवीन राशि में प्रवेश करे जैसा कि हमेशा से होता रहा है। सन् 1900 ई. में पृथ्वी पर मसीह कलिमतुल्लाह का एक नया अवतार और ख़ुदा का एक नया द्योतक प्रकट होगा और वह मसीह का समरूप होगा और संसार को जागरूक करके एक श्रेष्ठ जीवन प्रदान करेगा। देखो ट्रिब्यून 8 जुलाई 1899 ई. प्रकाशित लाहौर। इसी से

न कि सच्चा। जिन के हाथ में ख़ुदा तआला सच्चाई और आकाशीय निशानों की तलवार देता है उनको इस लोहे की तलवार की क्या आवश्यकता है। यह मूर्खता और बड़ी नादानी है कि इस युग के अधमुल्ला तुरन्त कह देते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने के लिए तलवार उठाई थी और इन्हीं सन्देहों में नासमझ पादरी गिरफ़्तार हैं। परन्तु इस से अधिक झूठी बात कोई नहीं होगी कि यह जब्र और अन्याय का आरोप उस धर्म पर लगाया जाए जिसका पहला निर्देश यही है कि لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ (अलबक़रह- 257) अर्थात् धर्म में जब्र नहीं चाहिए अपितु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के महान सहाबा रज़ियल्लाहु की लड़ाइयां या तो इसलिए थीं कि काफ़िरों के आक्रमण से स्वयं को बचाया जाए और या इसलिए थीं कि अमन स्थापित किया जाए। और जो लोग तलवार से धर्म को रोकना चाहते हैं उनको तलवार से पीछे हटाया जाए। परन्तु अब विरोधियों में से कौन धर्म के लिए तलवार उठाता है और मुसलमान होने वाले को कौन रोकता है तथा मस्जिदों में नमाज़ पढ़ने और अज़ान देने से कौन मना करता है। तो यदि ऐसे अमन के समय में ऐसा मसीह प्रकट हो कि वह अमन की क़द्र नहीं करता अपितु अकारण धर्म के लिए तलवार से लोगों को क़त्ल करना चाहता है तो मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि निस्सन्देह ऐसा व्यक्ति झूठा, महाझूठा, झूठ गढ़ने वाला और सच्चा मसीह कदापि नहीं है। मुझे तो चाहे स्वीकार करो या न करो परन्तु मैं तुम पर दया करके तुम्हें सीधा मार्ग बताता हूं कि ऐसी आस्था में बहुत बड़ी ग़लती पर हो। लाठी और तलवार से धर्म दिलों में कदापि-कदापि प्रवेश नहीं कर सकता, और आप लोगों के पास इन निरर्थक विचारों पर तर्क भी कोई नहीं। सही बुख़ारी में मसीह मौऊद की शान में स्पष्ट हदीस मौजूद है कि يَضَعُ الحرب अर्थात् मसीह मौऊद लड़ाई नहीं करेगा। तो फिर कितने आश्चर्य की बात है कि एक ओर तो आप लोग अपने मुख से कहते हैं कि सही बुख़ारी पवित्र क़ुर्आन के बाद सर्वाधिक सही पुस्तक है और दूसरी ओर सही बुख़ारी के मुकाबले पर ऐसी हदीसों पर विश्वास कर बैठते हैं कि जो स्पष्ट तौर पर सही बुख़ारी के विपरीत पड़ी हैं। चाहिए था कि यदि ऐसी

करोड़ पुस्तकें होतीं तब भी उसकी परवाह न करते। क्योंकि उनका विषय न केवल सही बुख़ारी की हदीस के विपरीत अपितु पवित्र क़ुर्आन के भी स्पष्ट विरुद्ध है, परन्तु एक पुरानी आस्था के होने के कारण आप लोग ग़लती को छोड़ना नहीं चाहते और दूसरे एक यह भी कारण है कि आप लोगों के विचार में आप का काल्पनिक मसीह और महदी तो प्रकट होकर और समस्त काफ़िरों को क़त्ल करके उन का माल आप लोगों को दे देगा और समस्त कामवासना संबंधी इच्छाएं पूरी कर देगा। जैसी कि आप लोगों की आस्था है। परन्तु मैं तो इसलिए नहीं आया कि आप लोगों को संसार के गन्दे माल में ग्रस्त करूं और आप पर समस्त लोभ लालच को पूरा करने के दरवाज़े ख़ोल दूं अपितु मैं इसलिए आया हूं कि वर्तमान संसार के भाग से भी कुछ कम करके ख़ुदा तआला की ओर खींचूं। अत: वास्तव में मेरे आने से आप लोगों की बहुत ही हानि हुई है। जैसे तेरह सौ वर्ष माल-व-सामान की अभिलाषाएं मिट्टी में मिल गईं। या यों कहो कि करोड़ों रुपयों की हानि हो गई। तो फिर मैं आप लोगों की दृष्टि में अच्छा क्योंकर ठहरूं। परन्तु ख़ुदा से डरो और रूह और सच्चाई के मार्ग को तलाश करो क्योंकि यदि तुम्हें संसार की बादशाहत भी मिल जाए तो चूंकि वह नश्वर है और ख़ुदा तआला से दूर डालती है। इसलिए तुच्छ है। भौतिक विचार त्यागो और अपने अन्दर रूहानी विचार पैदा करो। क्या तुम विचार करते हो कि सलीबी धर्म की तलवार से पराजय होगी अपितु इस अनुचित हरकत से इस्लाम की सच्चाई पर हज़ारों ऐतराज़ पैदा होंगे। यह क्या नीचता और कमीनगी है कि शत्रु के ऐतराज़ का तलवार से उत्तर दिया जाए। ऐसा धर्म कदापि संभव नहीं कि सच्चा हो। देखो हम हज़रात पादरी साहिबों को न तलवार से अपितु मुलायम शब्दों से बार-बार इस ओर बुलाते हैं कि आओ हम से मुकाबले करो कि दोनों मनुष्य अर्थात् हज़रत मसीह और हज़रत सय्यिदिना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रूहानी बरकतों तथा लाभों को पहुंचाने की दृष्टि से जीवित कौन है। और जिस प्रकार ख़ुदा के पवित्र नबी ने पवित्र क़ुर्आन में कहा है कि यदि यह सिद्ध हो कि मसीह ख़ुदा का बेटा है तो मैं सर्वप्रथम उसकी इबादत करूंगा, इसी प्रकार मैं कहता हूं कि हे यूरोप और अमरीका के पादरियो! अब क्यों शोर डाल रखा है। तुम जानते हो कि मैं एक इन्सान हूं जो

करोड़ों इन्सानों में प्रसिद्ध हूं आओ मेरे साथ मुक़ाबला करो। मुझ में और तुम में एक वर्ष का अवकाश हो। यदि इस अवधि में ख़ुदा के निशान तथा उसकी क़ुदरत दिखाने वाली भविष्यवाणियां तुम्हारे हाथ से प्रकट हुईं और मैं तुम से बहुत कम रहा तो मैं मान लूंगा कि मसीह इब्ने मरयम ख़ुदा है। परन्तु यदि उस सच्चे ख़ुदा ने जिसको मैं जानता हूं और आप लोग नहीं जानते मुझे विजयी किया और आप लोगों का धर्म आकाशीय निशानों से वंचित सिद्ध हुआ तो तुम पर अनिवार्य होगा कि इस धर्म को स्वीकार करो।

अब हे मुसलमानो! यदि तुम्हें कुछ स्वाभिमान है और यदि कुछ शर्म हो तो भविष्य में गालियाँ देना, काफ़िर-काफ़िर कहना बन्द करके यह तमाशा देखो। पादरी सज्जनों के पास जाओ और मेरा यह विज्ञापन उन को दिखाओ तथा उनको मेरे मुक़ाबले पर खड़ा करो और फिर देखो कि विजयी कौन होता है। ईमानदारी और अमानत के मार्ग को ग्रहण करो कि अपवित्र है वह मार्ग जो बेईमानी से भरा है और गन्दा है वह तरीक़ा जो शरारत और अन्याय अपने साथ रखता है।

ईसाइयों का वर्तमान धर्म जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से सम्बद्ध किया जाता है, उसका कोई भी ऐसा पहलू नहीं है जो सत्य के अभिलाषी को उस से कुछ सांत्वना प्राप्त हो सके। यदि शिक्षा की ओर देखें तो वह दोषपूर्ण है और यदि उन निशानों को देखें जो इंजील में सच्चे मसीही की निशानी ठहराए गए हैं तो किसी ईसाई में उन का पता नहीं मिलता और यदि मसीह के कार्य देखें तो क़िस्से-कहानियों के अतिरिक्त देखने के तौर पर किसी का सबूत नहीं। और यदि उन भविष्यवाणियों को ध्यानपूर्वक पढ़ें जिन के अनुसार मसीह का ख़ुदा होना समझा जाता है तो कोई भी ऐसी भविष्यवाणी नहीं जिस से यह दावा सिद्ध हो सके। स्वयं स्पष्ट है कि यदि तौरात तथा अन्य नबियों की किताबों में किसी ख़ुदा के पैदा होने का वादा दिया जाता तो यहूदी उस वादे के अनुसार अवश्य यह आस्था रखते कि किसी समय ख़ुदा उनकी सहायता करने के लिए साक्षात रूप लेकर किसी स्त्री के पेट में से जन्म लेगा। प्रत्येक समझ सकता है कि यहूदी तौरात तथा दूसरे पुराने अहदनाम: की पुस्तकों से फिरे हुए न थे ताकि ऐसे ख़ुदा से इन्कारी रहते। और यदि मसीह की ख़ुदाई को स्वीकार नहीं किया था तो क्या कारण था कि असल भविष्यवाणी से इन्कारी हो जाते। उनको बहरहाल यह कहना चाहिए था

कि ऐसा शारीरिक ख़ुदा यद्यपि अब तक नहीं आया परन्तु अवश्य आएगा परन्तु तुम यहूदियों से पूछ कर देख लो कि वे ऐसे विश्वास से बहुत विमुख और उसको शिर्क और कुफ़्र ठहराते हैं और इस बात के कदापि प्रतीक्षक नहीं है कि किसी समय ख़ुदा मानवीय शरीर में जन्म लेगा या यह कि तस्लीस की आस्था सच है अपितु वे स्पष्ट कहते हैं कि ऐसी आस्थाएं रखने वाला काफ़िर और कदापि मुक्ति नहीं पाएगा। हालांकि यहूदी वे लोग हैं जिनके बीच निरन्तर नबी आते रहे। यह बिल्कुल ज्ञानगम्य नहीं कि यहूदी नबियों की निरन्तर शिक्षा के बावजूद सिरे से ऐसे ख़ुदा से इन्कारी हो जाते जिसके पैदा होने की किसी भविष्यवाणी में उन्हें आशा दी जाती। हां संभव था कि इस शारीरिक ख़ुदा का चरितार्थ हज़रत मसीह को न ठहराते। परन्तु यह तो कहते कि वह शारीरिक (भौतिक) ख़ुदा कोई और है जो बाद में आएगा। हमने इस युग के बहुत से यहूदी विद्वानों से मालूम किया उन्होंने यह उत्तर लिखा है कि कभी किसी नबी ने यहूदियों को ऐसे शारीरिक ख़ुदा के प्रकट होने की आशा नहीं दिलाई। और ऐसी आस्था स्पष्ट शिर्क और कुफ़्र तथा तौरात की शिक्षा की विरोधी है। उन यहूदी विद्वानों के पत्र हमारे पास मौजूद हैं। यदि यह कहो कि यहूदी तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी इन्कारी हैं तो फिर ऐसे यहूदियों की गवाही का क्या भरोसा है। इसका उत्तर यह है कि यहूदी असल भविष्यवाणी के इन्कारी नहीं हैं और इस बात को मानते हैं कि जैसा कि तौरात में ख़बर दी गई है मूसा का मसील (समरूप) अवश्य आने वाला है। हां यहूदियों के इन वर्तमान फ़िर्क़ों ने जो यहूदियों के बारह फ़िर्कों में से शेष रह गए हैं हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी समझ की कमी और पक्षपात से मूसा का मसीह नहीं माना, परन्तु असल भविष्यवाणी से इन्कार तो नहीं किया। परन्तु ऐसी भविष्यवाणी के असतित्त्व से तो वे बिल्कुल इन्कारी हैं जो किसी ख़ुदा के आने के बारे में की गई हो। इसके अतिरिक्त यहूदियों के दस फ़िर्के इस्लाम में दाख़िल हो चुके हैं।★ और मसीह की शिक्षा जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं कदापि पूर्ण

★हम अपनी पुस्तक 'मसीह हिन्दुस्तान' में बड़े-बड़े अंग्रेज़ अन्वेषकों के इक़रार से सिद्ध कर चुके हैं कि यहूदियों के दस गुम हों चुके फ़िर्क़े अफ़ग़ान और कश्मीरी हैं जो मुसलमान हो गए और फिर तौरात के वादे के अनुसार उनमें से इस्लाम में बड़े-बड़े बादशाह हुए। इसी से

नहीं है और इन्सानी वृक्ष की समस्त शाखाओं अर्थात् शक्तियों का पोषण असंभव है। क्या इन्सानी पूर्णता इसी पर समाप्त हो सकती है कि हम हमेशा मौक़ा बे मौक़ा क्षमा करने की आदत डालें और एक गाल पर तमांचा खा कर दूसरा भी फेर दिया करें? क्या प्रत्येक स्थान और प्रत्येक अवसर पर ऐसा करना उचित है? क्या कभी ख़ुदा तआला का यह इरादा था कि उसकी पैदा की हुई समस्त शक्तियां जैसे क्रोध और कामवासना इत्यादि जो उचित इस्तेमाल के लिए पैदा की गई हैं सब की सब समाप्त कर दी जाएं और केवल सहनशीलता की शक्ति को शेष रखा जाए। यदि ख़ुदा तआला का ऐसा ही इरादा था तो उसके कार्य पर एक बड़ा आरोप होगा कि उसने मनुष्य में नाना प्रकार की शक्तियां पैदा करके फिर अपने इरादे को अपने कथन द्वारा यों व्यक्त किया कि इन समस्त शक्तियों को सहनशीलता और क्षमा करने की शक्ति के अतिरिक्त समाप्त कर देना चाहिए। तो इस से अनिवार्य होता है कि नऊज़ुबिल्लाह या तो ख़ुदा तआला की शिक्षा ग़लत है और या उसने अपने कार्य में ही ग़लती की और अपने पैदा करने के कार्य को होशियारी और दूरदर्शिता से नहीं किया। दोनों स्थितियों में ऐसा धर्म सही नहीं ठहर सकता जिसकी शिक्षा सही सिद्धान्तों पर आधारित न हो, या जिसका ख़ुदा अपने कार्य में ग़लती करने वाला हो। इसकी तुलना में जब हम पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा देखते हैं तो उसकी खूबी और सौन्दर्य पर दृष्टि डाल कर सहसा आर्द्रता और आत्म-विस्मृति पैदा होती है देखो क्या उत्तम शिक्षा है जिसका इस आयत में वर्णन है-

جَزٰٓؤُا سَیِّئَۃٍ سَیِّئَۃٌ مِّثۡلُہَا فَمَنۡ عَفَا وَ اَصۡلَحَ فَاَجۡرُہٗ عَلَی اللّٰہِ (अश्शूरा-41)

अर्थात् न्याय के कानून की दृष्टि से प्रत्यक बुराई का दण्ड उतनी ही बुराई है परन्तु यदि कोई व्यक्ति अपने गुनाहगार को माफ़ करे बशर्ते कि उस माफ़ करने में अपराधी मनुष्य का सुधार हो, न यह कि माफ़ करने से और भी अधिक दिलेर हो और धृष्ट हो जाए। तो ऐसा व्यक्ति ख़ुदा तआला से बड़ा प्रतिफल पाएगा। अब ऐसी पूर्ण शिक्षा इंजील के पन्नों में से कहां तलाश करें और किस से पूछें और कौन है जो हमें बताए। यदि सहनशीलता और क्षमा और मुकाबले का त्याग करना यों ही हर स्थान पर बिना किसी स्थान और अवसर के प्रशंसनीय है तो एक भड़ुवा जिसकी पत्नी पर अवैध आक्रमण किया जाए और वह क्षमा करके उस

आक्रमण को होने दे प्रशंसनीय और वंदनीय समझा जाएगा। और एक जैन मत वाला जिन के धर्म में किसी जीव को मरना वैध नहीं अपने इस आचरण से कि वह जूं और पिस्सू सांप और बिच्छू को भी नहीं मारता उच्चकोटि के शिष्टाचार पूर्ण हालत समझी जाएगी। तो मालूम हुआ कि ऐसी शिक्षा जो निरंकुश के समान किसी सरल रेखा पर नहीं चलती और न स्थान और अवसर की परवाह करती है मानवीय ख़ूबियों के लिए अत्यन्त हानिप्रद और घातक विष है। हां संभव है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने ऐसी शिक्षा को किसी क़ानून जो समय और कौम से विशिष्ट होने के समान हित के तौर पर प्रयोग किया हो। परन्तु सही और पूर्ण शिक्षा वही है जो क़ुर्आन की उपरोक्त आयत में वर्णन की गई है। इसी प्रकार इंजील की यह शिक्षा कि बुरी नज़र से किसी स्त्री को मत देखो जिस का सारांश यह है कि पवित्र नज़र से निस्सन्देह देख लिया करो। यह एक ऐसी शिक्षा है जो एक बुरी नीयत वाले मनुष्य को बुरी नज़र का अवसर देती है और एक नेक मनुष्य को परीक्षा में डालती है। क्योंकि इस फ़त्वे से बुरी नज़र से देखने की आदत वाले को शरण मिलती है और एक संयमी के हृदय को बुराई के झरने से निकट होना पड़ता है। कारण यह कि संभव है कि एक सादा हृदय वाला मनुष्य एक व्यक्ति के सौन्दर्य और खूबसूरती को देखकर उस पर आशिक और मुग्ध हो जाए और फिर हर पल दिल में अपवित्र विचार पैदा होने लगें। तो इस शिक्षा का उदाहरण ऐसा है कि जैसा कि एक इमारत उदाहरणतया दरिया के उस ओर बनाई जाए जिस ओर वह दरिया बड़े ज़ोर और बाढ़ के साथ कदम बढ़ा रहा है। तो ऐसी इमारत यदि दिन को नहीं गिरेगी तो रात को अवश्य गिर जाएगी। इसी प्रकार यदि कोई ईसाई इस शिक्षा से बुद्धि, लज्जा और मानवता के प्रकाश के होते हुए जो दिन से समानता रखता है बुराई में नहीं पड़ेगा। परन्तु जवानी की हालत और नफ़्स की भावनाओं के समय में विशेष तौर पर शराब पीने की हालत में कामवासना के अंधकारों की भीड़ से रात पड़ जाए। ऐसी अवस्था में इस आज़ादी की नज़र के दुष्परिणामों से कदापि नहीं बच सकेगा परन्तु इस शिक्षा की तुलना में वह शिक्षा जो पवित्र क़ुर्आन ने दी है वह इतनी उच्चतम है

कि हृदय बोल उठता है कि हां यह ख़ुदा का कलाम है। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में यह आयत है –

قُلْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ

(अन्नूर -31)

अर्थात् मोमिनों को कह दे कि नामुहरम औरतों तथा क़ामवासना संबंधी स्थानों के देखने से अपनी आंखें इतनी बन्द रखें कि पूरी सफाई से चेहरा दिखाई न दे सके और न चेहरे पर खुली और बेरोक दृष्टि पड़ सके और इस बात के पाबन्द रहें कि आंख को पूर्णरूप से खोल कर न देखें। न कामवासना की दृष्टि से और न बिना कामवासना के। क्योंकि ऐसा करना अन्त में ठोकर का कारण है। अर्थात् आज़ाद दृष्टि से नितान्त पवित्र हालत सुरक्षित नहीं रह सकती और अन्ततः आज़मायश आ जाती है और दिल पवित्र नहीं हो सकता जब तक आंख पवित्र न हो और वह पवित्र मुक़ाम जिस पर सत्याभिलाषी के लिए क़दम मारना उचित है प्राप्त नहीं हो सकता। और इस आयत में यह भी शिक्षा है कि शरीर के उन समस्त सूराखों को सुरक्षित रखें जिन के मार्ग से बुराई प्रवेश कर सकती है। सूराख के शब्द में जो पवित्र आयत में वर्णन है कामवासना संबंधी अंगों में तथा कान, नाक, मुंह सब सम्मिलित हैं। अब देखो कि यह समस्त शिक्षा किस शान और स्तर की है जो किसी पहलू पर अनुचित तौर पर न्यूनाधिकता से बल नहीं डाला गया और दूरदर्शितापूर्ण संतुलन से काम लिया गया है। और इस आयत का पढ़ने वाला तुरन्त ज्ञात कर लेगा कि इस आदेश से जो कि खुली-खुली दृष्टि डालने की आदत न डालो तात्पर्य यह है ताकि लोग किसी समय फ़ित्नः में ग्रस्त न हो जाएं। और दोनों ओर पुरुष और स्त्री में से कोई सदस्य ठोकर न खाए। परन्तु इंजील में जो स्वच्छन्द और खुली आज़ादी दी गई और केवल मनुष्य की गुप्त नीयत पर आधार रखा गया है इस शिक्षा की कमी और दोष ऐसी बात नहीं है कि इसकी व्याख्या की कुछ आवश्यकता हो।

अब हम पुनः अपने मूल उद्‌देश्य की ओर लौटते हुए समस्त मुसलमानों और विशेषतया इस्लाम के उलेमा तथा इस्लाम के फ़क़ीरों के बारे में प्रचार का

हक़ पूरा करते हैं और उन्हें स्मरण कराते हैं कि वह मुजद्दिद जो इस चौदहवीं सदी के सर पर नबवी हदीस के अनुसार आना चाहिए था वह यही लेखक है। यह बात बुद्धिमान और न्यायप्रिय व्यक्ति को शीघ्र समझ आ सकती है कि प्रत्येक मुजद्दिद उन खराबियों को दूर करने के लिए अवतरित होता है जो पृथ्वी पर सर्वाधिक ख़तरनाक और सबसे अधिक मरने का कारण और सब से अधिक संख्या में होती हैं। और उन्हीं सेवाओं के यथायोग्य उस मुजद्दिद का नाम आकाश पर होता है। जबकि यह बात निश्चित और सही है तो साफ़ प्रकट है कि इस उपद्रव से भरे युग में जबकि लोग चारों ओर ईसाइयत के ज़हर से भरी शिक्षा से तबाह होते जाते हैं, मुजद्दिद का बड़ा कार्य यह होना चाहिए कि मुसलमानों की नस्लों को इस ज़हर से बचाए और सलीबी फ़ित्नों पर इस्लाम को विजय प्रदान करे। और जब इस सदी के मुजद्दिद का यह कार्य हुआ तो निस्सन्देह आकाश पर उसका नाम कासिरुस्सलीब (सलीब तोड़ने वाला) हुआ।★ और यों भी कह सकते हैं कि जबकि चौदहवीं सदी के मुजद्दिद का यह कार्य हुआ कि वह सलीब को पराजित करे तो इस से यह फैसला हुआ कि चौदहवीं सदी का मुजद्दिद मसीह मौऊद होना चाहिए। क्योंकि यही पद मसीह मौऊद का है। इसलिए चौदहवीं सदी का मुजद्दिद अधिकार रखता है कि उसे मसीह मौऊद कहा जाए, क्योंकि वह इस युग का मुजद्दिद है। और इस युग में मुजद्दिद की विशेष सेवा सलीब की प्रतिष्ठा का खण्डन करना है। और ख़ुदा ने मेरे समय में आकाश से सलीबी आस्थाओं की प्रतिष्ठा का खण्डन करने के लिए ऐसे सामान पैदा कर दिए हैं कि प्रत्येक

★**हाशिया -** सही बुख़ारी में एक हदीस है जिसमें मसीह मौऊद का नाम कासिरुस्सलीब (अर्थात ईसाई आस्था का खण्डन करने वाला- अनुवादक) रखा है। और वास्तव में सच्चे मसीह मौऊद की निशानी हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही ठहराई है कि उसके हाथ पर कस्रे सलीब हो। यह इस बात की ओर संकेत है कि मसीह मौऊद ऐसे समय में आएगा जब कि हर ओर से ऐसे सामान पैदा हो जाएंगे जिन के शक्तिशाली प्रभावों से सलीबी धर्म बुद्धिमानों के हृदय में से गिरता जाएगा। अत: यह वही युग है परन्तु अफ़सोस कि हमारे विरोधी मौलवियों ने यहां भी कस्रे सलीब से जिहाद अभिप्राय ले लिया है। इसी से

बुद्धिमान उन सामानों पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालकर समझ सकता है कि सलीबी धर्म का संसार से समाप्त होना जिसका हदीसों में वर्णन है, इस उपाय के अतिरिक्त किसी प्रकार संभव नहीं। क्योंकि ईसाई धर्म को गिराने के लिए जो उपाय मस्तिष्क में आ सकते हैं वे केवल तीन हैं

(1) प्रथम यह कि तलवार से और लड़ाइयों से और जब्र से ईसाइयों को मुसलामन किया जाए जैसा कि सामान्य मुसलमानों की यही आस्था है कि उनका काल्पनिक मसीह मौऊद और महदी माहूद संसार में आकर यही कार्य करेगा और उसमें केवल इतनी ही योग्यता होगी कि ख़ून बहाकर और जब्र से लोगों को मुसलमान करना चाहेगा। परन्तु इस कार्रवाई में जितनी खराबियां हैं वर्णन की आवश्यकता नहीं। एक व्यक्ति के झूठे होने के लिए यह तर्क पर्याप्त हो सकता है कि वह लोगों को जब्र से अपने धर्म में दाखिल करना चाहे। इसलिए धर्म को फैलाने का यह उपाय कदापि सही नहीं है। और इस उपाय के प्रत्याशी और प्रतीक्षक केवल वही लोग हैं जो दरिन्दों की विशेषताएं अपने अन्दर रखते हैं।★ और आयत لَا اِکْرَاہَ فِی الدِّیْنِ (अलबक़रह-257) से अपरिचित हैं। सलीबी धर्म पर विजय पाने का दूसरा उपाय यह है कि मामूली मुबाहसों से जो हमेशा धर्मवाले किया करते हैं इस धर्म को पराजित किया जाए। परन्तु यह उपाय भी पूर्ण सफलता का माध्यम नहीं हो सकता। क्योंकि अधिकतर मुबाहसों का मैदान विशाल होता है और बौद्धिक तर्क प्राय: सरसरी होते हैं और प्रत्येक अज्ञानी और मोटी बुद्धि वाले का काम नहीं कि बौद्धिक एवं पुस्तकीय तर्कों को समझ सके। इसीलिए मूर्ति-पुजारियों की क़ौम लज्जाजनक आस्थाओं के बावजूद अब तक जगह-जगह संसार में पाई जती है। सलीबी धर्म पर विजय पाने का तीसरा उपाय यह है कि

★**हाशिया -** समस्त सच्चे मुसलमान जो संसार में गुज़रे उनकी कभी यह आस्था नहीं हुई कि इस्लाम को तलवार से फैलाना चाहिए अपितु इस्लाम हमेशा अपनी व्यक्तिगत खूबियों के कारण संसार में फैला है। तो जो लोग मुसलमान कहला कर केवल यही बात जानते हैं कि इस्लाम को तलवार से फैलाना चाहिए वे इस्लाम की व्यक्तिगत खूबियों के इक़रारी नहीं हैं और उनकी कार्रवाई दरिन्दों की कार्रवाई के समान है। इसी से

आकाशीय निशानों से इस्लाम की बरकत और सम्मान प्रकट किया जाए और पृथ्वी की घटनाओं से महसूस की गई स्पष्ट बातों की तरह यह सिद्ध किया जाए कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु सलीब पर नहीं हुई और न पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर गए अपितु अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मर गए। और यह तीसरा उपाय ऐसा है कि एक पक्षपाती ईसाई भी इक़रार कर सकता है कि यदि यह बात सबूत के साथ पहुंच जाए कि हज़रत मसीह सलीब पर नहीं मरे और न आकाश पर गए तो फिर ईसाई धर्म मिथ्या है तथा कफ़्फ़ारः और तस्लीस सब मिथ्या और फिर इसके साथ आकाशीय निशान भी इस्लाम के समर्थन में दिखाए जाएं तो जैसे इस्लाम में दाख़िल होने के लिए समस्त संसार के ईसाइयों पर दया का द्वार खोल दिया जाएगा। तो यही तीसरा उपाय है जिसके साथ मैं भेजा गया हूं। ख़ुदा तआला ने एक ओर तो मुझे आकाशीय निशान प्रदान किए हैं और कोई नहीं जो उन में मेरा मुक़ाबला कर सके। और संसार में कोई ईसाई नहीं कि जो आकाशीय निशान मेरे मुक़ाबले पर दिखा सके। और दूसरा ख़ुदा की कृपा और दया ने मुझ पर सिद्ध कर दिया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम न सलीब पर मृत्यु प्राप्त हुए न आकाश पर चढ़े अपितु सलीब से मुक्ति पाकर कश्मीर के मुल्क में आए और वहीं पर मृत्यु पाई। ये बातें केवल क़िस्से, कहानियों के रंग में नहीं हैं अपितु बहुत से पूर्ण सबूतों के द्वारा सिद्ध हो गई हैं जिन को मैंने अपनी पुस्तक **'मसीह हिन्दुस्तान में'** में विस्तारपूर्वक वर्णन कर दिया है। इसलिए मैं ज़ोर देकर और दावे से कहता हूं कि जिस कस्रे सलीब (सलीब तोड़ने) का बुख़ारी में वादा था उसका पूरा सामान मुझे दिया गया है और प्रत्येक बुद्धिमान गवाही देगा कि सलीब तोड़ने के इस उपाय के अतिरिक्त अन्य कोई प्रभावी एवं उचित उपाय नहीं। अब मैं प्रश्न करता हूं कि यदि मैं झूठा हूं और मसीह मौऊद नहीं हूं तो हमारे विरोधी इस्लाम के उलेमा बता दें कि जब उनका मसीह मौऊद संसार में प्रकट होगा तो वह कस्रे सलीब के लिए क्या कार्रवाई करेगा और हमें उचित तौर पर समझाएं कि क्या वह ऐसी कार्रवाई होगी जिस से चालीस करोड़ ईसाई अपने धर्म का झूठा होना हार्दिक विश्वास के साथ समझ सकें। इस प्रश्न के उत्तर में हमारे अनुकरण

में गिरफ़्तार मौलवी इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कह सकते कि जब उनका मसीह आएगा तो लोगों को तलवार से मुसलमान करेगा और ऐसा निर्दयी होगा कि जिज़्य: भी स्वीकार नहीं करेगा। उसके समयों का विभाजन यह होगा कि दिन का कुछ भाग तो लोगों को क़त्ल करने में व्यतीत होगा तथा दिन का कुछ भाग जंगलों में जाकर सुअरों को मारता रहेगा। अब प्रत्येक बुद्धिमान तुलना कर सकता है कि क्या वे बातें जो इस्लाम फैलाने और सलीब को तोड़ने के लिए हम पर खोली गई हैं वे हृदयों को आकर्षित करने वाली और प्रभावी मालूम होती हैं या हमारे विरोधी मुसलमानों के काल्पनिक मसीह मौऊद का यह तरीक़ा कि जैसे वह आते ही अज्ञान और लापरवाह लोगों को क़त्ल करना आरंभ कर देगा। स्मरण रहे कि ईसाई धर्म संसार में इतना फैल गया है कि केवल आकाशीय निशान भी उसे परास्त करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकते। क्योंकि धर्म को छोड़ना बहुत कठिन बात है। परन्तु यह उपाय कि एक ओर तो आकाशीय निशान दिखाए जाएं और दूसरे पहलू में उनके धर्म तथा उनके सिद्धान्तों का सच्ची घटनाओं द्वारा समस्त ताना-बाना तोड़ दिया जाए तथा सिद्ध कर दिया जाए कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का सलीब पर मरना फिर आकाश पर चढ़ जाना दोनों बातें झूठ हैं। सबूत का यह ढंग ऐसा है कि निस्सन्देह इस क़ौम में एक भूकम्प पैदा कर देगा। क्योंकि ईसाई धर्म का सम्पूर्ण आधार कफ़्फ़ार: पर है और कफ़्फ़ार: का सम्पूर्ण आधार सलीब पर है। और जब सलीब ही न रही तो कफ़्फ़ार: भी न रहा और जब कफ़्फार: न रहा तो धर्म बुनियाद से गिर गया। हम★ अपनी कुछ पुस्तकों में यह भी लिख चुके हैं कि सलीब की आस्था स्वयं ऐसी है जिस से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम किसी प्रकार सच्चे नबी नहीं ठहर सकते। क्योंकि जब कि तौरात के अनुसार सलीब पर

★**हाशिया -** ईसाई धर्म पर विजय पाने का हज़रत मसीह की स्वाभाविक मृत्यु सिद्ध करने और सलीबी मृत्यु के झूठा सिद्ध करने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं। तो ख़ुदा ने यह बात पैदा कर दी है न कि हमने कि पूर्ण सफाई से सिद्ध हो गया कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब से जान बचा कर कश्मीर में आ गए थे और वहीं मृत्यु पाई। यह वह उच्चकोटि का सबूत है जैसा कि आकाश पर सूर्य का चमकना। इसी से।

मरने वाला लानती होता है और लानत का अर्थ शब्दकोश की दृष्टि से यह है कि किसी व्यक्ति का हृदय ख़ुदा तआला से पूर्णतया आवज्ञाकारी हो जाए और ख़ुदा से विमुख हो जाए तथा ख़ुदा उस से विमुख हो जाए और वह ख़ुदा का शत्रु हो जाए और ख़ुदा उसका शत्रु हो जाए। इसीलिए लईन (धिक्कृत) शैतान का नाम है। तो लानत किया हुआ होना और लानती बन जाना जिसका अर्थ इतना बुरा है यह घोर अंधकार मसीह जैसे ईमानदार के हृदय पर कैसे आ सकता है? मालूम होता है कि ईसाइयों ने कफ़्फ़ारे की योजना बनाते समय लानत के अर्थ पर तनिक विचार नहीं किया और भूल गए अन्यथा संभव न था कि वह उपाधि जो अपवित्र शैतान को दी गई है वही नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को देते। अत्यावश्यक है कि अब भी ईसाई साहिबान अरबी और इब्रानी की पुस्तकों को ध्यानपूर्वक देख कर लानत के अर्थ को समझ लें कि यह क्या चीज़ है। उन्हीं पुस्तकों के देखने से मालूम होगा कि यह शब्द केवल उस व्यक्ति पर चरितार्थ होता है जिस का हृदय काला (निष्ठुर), अपवित्र, ख़ुदा से दूर और शैतान के समान हो गया हो तथा ख़ुदा तआला से समस्त संबंध टूट गए हों। मैं नहीं समझ सकता कि कौन ईमानदार यह अपवित्र उपाधि इस ईमानदार के बारे में वैध रख सकता है जिसका नाम इंजील में 'नूर' (प्रकाश) लिखा है। क्या वह नूर किसी समय में अंधकार हो गया था? क्या वह जो वास्तव में ख़ुदा से है उसे कह सकते हैं कि वह वास्तव में शैतान से है?

इसके अतिरिक्त जब कि यह सच्चाई भी स्पष्ट हो गयी कि हज़रत मसीह कदापि सलीब पर नहीं मरे और कश्मीर में उनकी क़ब्र है तो अब सच के भूखे और प्यासे ईसाई धर्म पर कैसे क़ायम रह सकते हैं। यह सामान सलीब तोड़ने का है जो ख़ुदा ने आकाश से पैदा किया है न यह कि मार-मार कर लोगों को मुसलमान बनाएं। हमारी क़ौम के उलेमा-ए-इस्लाम को थोड़ा ठहर कर सोचना चाहिए कि क्या जब्र से कोई मुसलमान हो सकता है और क्या जब्र से कोई धर्म हृदय में दाख़िल हो सकता है। और जो लोग मुसलमानों में से फ़क़ीर कहलाते हैं तथा शेख़ और सूफ़ी बने बैठे हैं यदि वे अब भी इस झूठी आस्था से न रुकें और हमारे मसीह मौऊद के दावे के सत्यापनकर्ता न हो जाएं तो आसान उपाय

यह है कि एक समूह एकत्र करके कोई ऐसा व्यक्ति जो मेरे मसीह मौऊद होने के दावे को नहीं मानता और स्वयं को मुल्हम और साहिबे इल्हाम जानता है मुझे स्थान बटाला या अमृतसर या लाहौर में बुलाए और ख़ुदा के दरबार में दुआ करें कि हम दोनों में से जो व्यक्ति ख़ुदा के दरबार में सच्चा है एक वर्ष में कोई महान निशान जो मानवीय शक्तियों से श्रेष्ठतर और मामूली इन्सानों की पहुंच से उच्चतर हो उस से प्रकटन में आए। ऐसा निशान जो अपनी प्रतिष्ठा, शक्ति और चमक में सामान्य मनुष्यों तथा विभिन्न स्वभावों पर प्रभाव डालने वाला हो, चाहे वह भविष्यवाणी हो अथवा अन्य किसी प्रकार का चमत्कार हो जो नबियों के चमत्कारों के समान हो। फिर इस दुआ के बाद ऐसा व्यक्ति जिसकी कोई विलक्षण भविष्यवाणी या अन्य कोई महान निशान एक वर्ष के अन्दर प्रकटन में आ जाए और इस प्रतिष्ठा के साथ प्रकटन में आए कि उस श्रेणी का निशान जो मुकाबले के प्रतिद्वन्द्वी से प्रकटन में न आ सके तो वह व्यक्ति सच्चा समझा जाएगा, जिस से ऐसा निशान प्रकटन में आया और फिर इस्लाम से फूट दूर करने के लिए पराजित व्यक्ति पर अनिवार्य होगा कि उस मनुष्य का विरोध करना त्याग दे और अविलम्ब एवं निसंकोच उसकी बैअत कर ले और उस ख़ुदा से जिसका क्रोध खा जाने वाली अग्नि है डरे।

प्राय: मूर्खों को यह ज्ञात नहीं है कि इल्हाम शैतानी भी हुआ करते हैं। उम्मत के समस्त बुज़ुर्ग इस आस्था पर सहमत हैं। तो प्रत्येक व्यक्ति का इल्हाम जो केवल शब्द हों और उन में कोई विलक्षण बात न हो ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हो सकता तथा कोई इल्हाम स्वीकारणीय नहीं जब तक कि उसमें ख़ुदाई प्रतिष्ठा न हो और ख़ुदाई प्रतिष्ठा यह है कि विलक्षण और महान भविष्यवाणियां जो ख़ुदा की क़दुरत और ज्ञान से भरी हुई हों उस इल्हाम में पाई जाएं या दूसरे इल्हामों में जो उसी व्यक्ति के मुंह से निकले हों। और उनमें एक शर्त यह भी होगी कि इस मज्लिस के आयोजित होने से दस दिन पूर्व छपे हुए विज्ञापन द्वारा मुझे सूचना दे दी जाए कि इन उपरोक्त कथित स्थानों में से अमुक स्थान अमुक तिथि और अमुक समय इस कार्य के लिए प्रस्तावित किया गया है। इस सूचना

देने के विज्ञापन पर बीस प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध उलेमा और शहर के रईसों के हस्ताक्षर होने चाहिए ताकि ऐसा न हो कि कोई नीच केवल हंसी और शरारत से ऐसा विज्ञापन प्रकाशित कर दे।★ तथा यह आवश्यक होगा कि इस दुआ के बाद यदि कोई निशान भविष्यवाणी के प्रकार में से किसी पर प्रकट हो तो वह भविष्यवाणी किसी छपे हुए विज्ञापन द्वारा प्रसारित कर दी जाए। हां यह कुछ आवश्यक नहीं कि वह कोई नई भविष्यवाणी हो अपितु यदि कोई पुरानी भविष्यवाणी हो जो अभी पूरी न हुई हो या ऐसी भविष्यवाणी जो मुल्हम ने सामान्य तौर पर लोगों को उसकी सूचना न दी हो तो ऐसी भविष्यवाणी भी ली जाएगी। और सबसे उत्तम वह भविष्यवाणी गिनी जाएगी जो किसी दुआ के स्वीकार होने पर ख़ुदा तआला से मिली हो। क्योंकि दुआ का स्वीकार होना वलियों की प्रथम निशानी में से है। अब मैं इस आयत पर इस पुस्तक को समाप्त करता हूं कि

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ - اٰمين

وَ اٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

लेखक

ख़ाकसार

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान से,

1 अगस्त 1899 ई०

★हाशिया :- कोई क़लम से लिखित पत्र हमारे नाम नहीं आना चाहिए अपितु यदि सीधी नीयत से मुक़ाबले का इरादा हो तो छपा हुआ सूचना पत्र जिस पर बीस प्रतिष्ठित लोगों की गवाही हो समय, तिथि, स्थान तथा मुकाबले पर आने वाले व्यक्ति के विवरण सहित बीस दिन पहले मेरे नाम आना चाहिए। इसी से

तिर्याक़ुल क़ुलूब का परिशिष्ट

चूंकि इस पुस्तक में एक अहम उद्देश्य जिस के लिए यह पुस्तक लिखी गई यह है कि इस लेखक को ख़ुदा तआला ने मसीह मौऊद करके भेजा है। इसलिए नमूने के तौर पर निम्नलिखित नक्शे में यह दिखाया गया है कि इस दावे के समर्थन में वे निशान जो मुझ से अभिव्यक्त हुए हैं वे ऐसे नहीं हैं जिन की जानकारी मेरे विशेष मुरीदों तक ही सीमित हो। अपितु उनमें से अधिकांश ऐसी सार्वजनिक साक्ष्यों से सिद्ध हैं जिन्हें देखने के गवाह प्रत्येक फ़िर्क़े के मुसलमान, हिन्दू और ईसाई हैं। यह गवाहों का नक्शा जो नीचे लिखा जाता है यह उस निशान के बारे में है जो लेखराम के बारे में प्रकट हुआ। चूंकि यह निशान वास्तव में एक महान निशान था जिसके साथ मीआद बताई गयी थी, समय बताया गया था, दिन बताया गया था और मृत्यु का रूप बताया गया था और यह भी बताया गया था कि दुआ है जो स्वीकार हुई। अपितु सर सय्यद अहदम खां साहिब (स्वर्गीय) को भविष्यवाणी के प्रकट होने से पूर्व एक छपे हुए विज्ञापन द्वारा लिखा गया था कि आप को जो दुआ स्वीकार होने में सन्देह है लेखराम की भविष्यवाणी का मुकद्दमः आप के समझने के लिए पर्याप्त होगा कि ख़ुदा तआला दुआओं को किस प्रकार स्वीकार करता है। इन समस्त कारणों की दृष्टि से इस भविष्यवाणी की एक संसार को प्रतीक्षा थी। और इस भविष्यवाणी में छः वर्ष की मीआद थी, और यह विचित्र रहस्य है कि लेखराम की मृत्यु शनिवार के दिन हुई। और चूंकि छः वर्ष ख़ुदा की किताबों में छः दिन के समान होते हैं। इसलिए सातवां दिन जो शनिवार का दिन है। इस भविष्यवाणी के पूरा होने के लिए बहुत उचित था। वह नक्शा सत्यापनकर्ताओं के नाम उन के बयानों सहित नीचे है-

क्रम संख्या	लेखराम के निशान के बारे में सत्यापरनकर्ता का नाम	पता-निवास स्थान ज़िला	सत्यापन की इबारत
1.	ख़ान बहादुर सय्यद फ़तह अली शाह साहिब	डिप्टी कलक्टर नहर ज़िला शाहपुर क़लम ख़ुद	लेखराम की भविष्यवाणी के बारे में मैंने बहुत बार सोच-विचार किया और इस बारे में लोगों से वार्तालाप भी हुआ। बराहीन अहमदिया, आईना कमालात-ए-इस्लाम इत्यादि के वे अवसर भी देखे। हर पहलू से सिद्ध है कि यह भविष्यवाणी बड़ी सफ़ाई से पूरी हुई और इसमें मिर्ज़ा साहिब का कोई षड्यंत्र लेखराम के क़त्ल में नहीं पाया जाता। **हस्ताक्षर**
2.	मुंशी अल्लाह वधाया साहिब	मैनेजर फॉरेस्ट एवं जंगलात तहसील भैयराह ज़िला शाहपुर	मेर विचार में मिर्ज़ा साहिब के षडयंत्र से पंडित लेखराम कत्ल नहीं हुआ परन्तु उसकी मृत्यु जो मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी की मीआद के अन्दर हुई है इस से भविष्यवाणी की सच्चाई सिद्ध है।
3.	अलाउद्दीन साहिब हकीम	निवासी-शेखूपुर तहसील-भेरा ज़िला शाहपुर	मेरी राय में लेखराम वाली भविष्यवाणी अपने आठ पहलू से अत्यन्त उच्च स्तरीय सफाई से सच्ची सिद्ध हुई है। आठ पहलू से

			उसका सच्चा सिद्ध होना ऐसा स्पष्ट प्रमाण युक्त निशान है जैसे सूर्य का प्रकट होना। उसके आठ पहलू ये हैं - 6 तारीख 6 बजे 1897 ई. को ईद के बाद दिन को बछड़े की तरह अप्रिय आवाज़ का निकलना क़त्ल के बाद आंधी का आना और पेट पर किसी तेज़ हथियार का लगना और लाल आंखों वाले फ़रिश्ते का क़त्ल करना, इस घटनाओं का एक समय पर पूर्ण होना, इन्सानी शक्तियों से सर्वथा असंभव और बाहर है। ऐसी सच्ची ख़ुदाई शक्ति का इन्कार अपवित्र रूहों का काम है। इति
4.	शेख फ़ज़्ल इलाही साहिब	ऑनरेरी मजिस्ट्रेट दर्जा (II) निवासी भेरा और रईस होजन	मेरे विचार में मिर्ज़ा साहिब के षड्यंत्र से लेखराम क़त्ल नहीं हुआ। परन्तु यह स्पष्ट है कि मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी उत्तम तौर पर सच्ची हुई है। **हस्ताक्षर स्वयं के क़लम से।**
5.	शेख़ ग़ुलाम नबी साहिब	निवासी भेरा भूतपूर्व वज़ीर रियासत लसबीला	मेरे विचार में लेखराम के बारे में मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी पूरी हुई। मेरी राय में मिर्ज़ा साहिब का कोई षड्यंत्र नहीं है। **हस्ताक्षर स्वयं के क़लम से।**
6	मुहम्मदीन साहिब हकीम	निवासी शेखूपुर तहसील-भेरा, ज़िला शाहपुर	भविष्यवाणी जिसके बारे में लेखराम लम्बे समय से निवेदन करता रहा था और मिर्ज़ा साहिब ने जब लेखराम को भविष्यवाणी का अनिवार्य पात्र पाया तो ख़ुदा तआला के उच्चतम दरबार में दुआ की। इल्हाम द्वारा आदेश हुआ छः वर्ष की मीआद आठ पहलुओं के साथ कथित लेखराम

			को सुनाया जाए। तिथि 6, ईद के दिन के बाद, छठे वर्ष, पहले कह देना इन्सानी शक्ति से बाहर है। क्या कोई मनुष्य विश्वास कर सकता है कि 6 तारीख़ ईद के बाद के दिन हुआ करती है? और फ़रिश्ते का क़ातिल होना संकेत करता है कि क़ातिल को कोई गिरफ़्तार नहीं करेगा और न उसे कोई देखेगा और बलिदान होने के बाद आंधी का आना अन्तर्यामी के अतिरिक्त कौन जानता है? तथा क़त्ल के बछड़े की आवाज़ का कहना इन्सानी जानकारियों द्वारा नहीं हो सकता इस भविष्यवाणी की सच्चाई में जो कुछ लिखा जाए वह बिल्कुल थोड़ा होगा। इस का एक-एक पहलू एक बड़ा निशान ख़ुदाई शक्ति का महान, बड़ा भारी न्याय करने वाला गवाह है।
7.	ग़ुलाम मुहम्मद साहिब ज़िलेदार नहर	डिवीज़न अन्हार शाहपुर	लेखराम के क़त्ल के बारे में मिर्ज़ा साहिब का कोई षड्यंत्र नहीं। वह मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी के अनुसार अपनी गालियों के कारण दण्ड को पहुंचा और भविष्यवाणी पूरी हुई। **इति हस्ताक्षर**
8.	गुल मुहम्मद साहिब	द्वितीय टीचर हाई स्कूल भेरा	लेखराम के बारे में मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी ऐसी पूरी हुई जैसी आथम वाली अपने दूसरे पहलू में पूरी हुई थी। ऐसी भविष्यवाणी में षड्यंत्र का होना अनुभव और इन्साफ़ से दूर की बात है। मिर्ज़ा का इसमें कोई षडयंत्र नहीं और न हो सकता है। **हस्ताक्षर**

9.	अहमदुद्दीन साहिब	टीचर अरबी बोर्ड हाई स्कूल भेरा ज़िला शाहपुर	मेरी नाक़िस राय में जनाब मिर्ज़ा साहिब मसीह मौऊद की भविष्यवाणी लेखराम के क़त्ल के बारे में बहुत ही सही और पूर्ण रूप से सिद्ध हुई है तथा इसमें हुज़ूर अलैहिस्सलाम का कोई षड्यंत्र नहीं है। मानो वह मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी के अनुसार क़त्ल हुआ। इसमें षडयंत्र का होना असंभव है दुर्लभ है। इति.
10.	मलक समन्द ख़ान माल गुज़ार	क़स्बा भेरा ज़िला शाहपुर	लेखराम के बारे में मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी अत्यन्त सफाई से पूरी हुई। इसमें मिर्ज़ा का कोई षड्यंत्र नहीं है **हस्ताक्षर**
11.	फ़र्मान अली साहिब फ़क़ीर	निवासी हज्का तहसील भेरा ज़िला शाहपुर	लेखराम के बारे में मिर्ज़ा ग़ुलाम की भविष्यवाणी जो छः वर्ष पूर्व प्रकाशित की गई थी अपनी मीआद के अन्दर पूरी हुई। इसमें मिर्ज़ा का षड्यंत्र असंभव एवं दुर्लभ है। **हस्ताक्षर**
12.	ख़ुदा बख़्श साहिब निवासी भेरा	टीचर एंग्लो आर्य स्कूल भेरा ज़िला शाहपुर	मैं पुष्टि करता हूं कि लेखराम का क़त्ल मिर्ज़ा साहिब के षड्यंत्र से नहीं हुआ बल्कि यह ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी थी जो अपने समय पर प्रत्येक पहलू से पूर्णरूप से पूरी हो गई। **हस्ताक्षर**
13.	फ़ज़्ल इलाही साहिब रफ़ूगर	निवासी भेरा ज़िला शाहपुर	लेखराम के बारे में मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी पूरी हुई। इस में षड्यंत्र का ख़याल ग़लती है। **हस्ताक्षर**
14.	शेख़ मुहम्मद मुबारक साहिब	निवासी भेरा अपील नवीस-व-म्यूनिस्पल कमिश्नर	लेखराम के बारे में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की भविष्यवाणी प्रत्येक पहलू से सच्ची सिद्ध हुई। **हस्ताक्षर**

15.	क़ाज़ी अहमद शाह साहिब	भेरा ज़िला शाहपुर	हार्दिक प्रफुल्लता के साथ हस्ताक्षर
16.	मुहम्मदुद्दीन साहिब एजण्ट	बाबू ग़ुलाम मुहम्मद मुख़्तार भेरा ज़िला शाहपुर	लेखराम मिर्ज़ा के षड्यंत्र से क़त्ल नहीं हुआ। भविष्यवाणी पूरी हुई। **हस्ताक्षर**
17.	मुंशी सदरुद्दीन साहिब	पोस्ट मास्टर तहसील भेरा ज़िला शाहपुर	बहुत से पवित्र कार्य मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के जो मेरी जानकारी में हैं मुझे विश्वास दिलाते है कि मिर्ज़ा साहिब पंडित लेखराम के क़त्ल में कदापि षड्यंत्र नहीं रखते हैं। **हस्ताक्षर**
18.	शेर मुहम्मद चपरासी	मुंसिफ़ी भेरा ज़िला शाहपुर	लेखराम के बारे में मिर्ज़ा की भविष्यवाणी पूरी हुई। इसमें मिर्ज़ा का षड्यंत्र बिल्कुल नहीं पाया जाता। **हस्ताक्षर**
19.	नज़र मुहम्मद साहिब माल गुज़ार	निवासी अदरहमां तहसील भेरा	मेरे ख़याल में मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी पूरी हुई और लेखराम के क़त्ल में उनका षड्यंत्र नहीं है। **हस्ताक्षर**

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम - नहमदुहू व नुसल्ली

हस सब मुसलमान जिन के हस्ताक्षर नीचे दर्ज हैं सच्ची गवाही देते हैं कि हज़रत अक़्दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी (ख़ुदा की कृपा सदैव रहे) ने जो ख़ुदा तआला, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा इस्लाम धर्म के शत्रु पंडित लेखराम इत्यादि बारे में ख़ुदा तआला की ओर से इल्हाम पाकर जो भविष्यवाणी की थी वह प्रभुत्वशाली, शक्तिशाली, सच्चों का सहायक, महान प्रतिष्ठा रखने वाले ख़ुदा तआला ने ठीक मीआद (अवधि) के अन्दर समस्त अनिवार्य बातों के साथ पूरी की और इस भविष्यवाणी में मिर्ज़ा साहिब तथा किसी मुसलमान का किसी प्रकार का षड्यंत्र नहीं है। यह विशेष तौर पर ख़ुदा तआला का कार्य था जो यथासमय इस्लाम की सच्चाई में अपनी प्रतिष्ठा एवं श्रेष्ठता पूर्वक सिद्ध हुआ। الحمد لله رب العالمين والسلام على رسوله خاتم النبيين

हस्ताक्षर

फ़क़ीर हक़ीर ख़लीलुर्रहमान जमाली नम्बरदार-व-रईस आज़म खेवटदार-व-सज्जादा नशीन तरीक़त

चार क़ुतुब हाँसवी व सनद हाला शरीफ़ ख़ानक़ः हज़रत मख़्दूम बहाउद्दीन रहमउल्लाहु अलैहि और

सर सावः ख़ानक़ः हज़रत शाह हबीबुर्रहमान क़ुदुस सिर्रहुल अज़ीज़

हकीम मिर्ज़ा मुहम्मद इबादुल्लाह बेग क़ादरी पानीपती वर्तमान निवासी सरसावः ज़िला सहारनपुर चौधरी नसरुल्लाह खान नम्बरदार ज़मीनदार छावड़ी इलाक़ा सरसावः, मुरीद साईं तवक्कल शाह। सय्यद ज़ामिन अली सुपुत्र सय्यद हुसैन अली, क़ौम सय्यद, औलाद हज़रत सय्यद जलाल बुख़ारी रहमउल्लाहु अलैहि, साकिन क़स्बा सरसावः ज़िला सहारनपुर, अल्लाह दया ख़ान सुपुत्र मौला बख़्श, क़ौम राजपूत, खैवटदार

निवासी क़स्बा सरसावः, ज़िला सहारनपुर। बिस्मिल्लाह शाह पानीपती। महरबान अली सुपुत्र जान मुहम्मद साकिन क़स्बा सरसावः ज़िला सहारनपुर। मुहम्मद अली खान सवार तहसील रियासत जींद, **मुहम्मद अली खान** खाकसार हाफ़िज़ अज़ीमुल्लाह सुपुत्र शैख़ नजीबुल्लाह ख़ालदी कुरैशी, औलाद हज़रत ख़ालिद इब्न-ए-वलीद सैफ़ुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु सदर अमीन रियासत जींद। सय्यद आज़म अली सुपुत्र कासिम अली निवासी सफैदों रियासत महाराजा साहिब वाली जींद, मुलाज़िम बतौर पद सब ओवरसियर नहर जमन, रियासत जींद। **मिस्तरी इमाम बख्श,** मिस्तरी इमाम बख्श सुपुत्र मिस्तरी अमीरुल्लाह निवासी जींद। क़ाज़ी अब्दुल मजीद उस्मानी रईस जींद, स्वयं की कलम से औलाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु। **अब्दुल मजीद सुपुत्र ग़ुलाम नबी** पीर जी सय्यद मुहम्मद याकूब अली औलाद हज़रत पीरान-ए-पीर गौस-ए-आज़म रहिमहुल्लाह निवासी कस्बा जींद। मौलवी मुहम्मद अमीरुद्दीन निवासी जींद। क़ाज़ी रमज़ान अली क़ुरैशी उस्मानी नम्बरदार कस्बा जींद, औलाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु। **रमज़ान अली** मुहम्मद हसन ख़ान सुपुत्र मुहम्मद ख़ान, क़ौम अफ़गान निवासी हांसी जमाली। सय्यद अब्दुल ग़नी जाअफ़री सुपुत्र हज़रत सय्यद ताजुद्दीन शेर सवार, निवासी नारनौल मोहल्ला सादात। हाफ़िज़ सय्यद मुहम्मद हबीब अहमद जाअफ़री उफिया औलाद सय्यद ताजुद्दीन साहिब शेर सवार चाबुक मार क़ुदुस सिर्रुहू। ख्वाजा अब्दुल गफ़ूर ख़ान रईस हिसार व अपील नवेस प्रथम श्रेणी **मोहर** क़ाज़ी वाजिद अली नबीरा, क़ाज़ी खामोश क़ुदुस सिर्रुहू स्थान नारनौल नग़री व जमाली। सय्यद अब्दुल फ़तह नग़री निवासी नारनौल सरिश्तादार पूर्व कौंसिल जयपुर।

क्रम संख्या	सत्यापन कर्ता का नाम	पता-नवास ज़िला	सत्यापन की इबारत
41.	अब्दुल हक़ साहिब हेड मास्टर	प्रायमरी इस्लामिया स्कूल रावपिण्डी 3rd मास्टर	यद्यपि मैं मिर्ज़ा साहिब के मुरीदों में से नहीं हूं परन्तु मैं साहिब मौसूफ़ को इस्लाम का एक रुकन आज़म, एक नितान्त आलिम, क़ौम का सुधारक और रिफ़ार्मर मानता हूं कि पंडित लेखराम की यह मृत्यु मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी के अनुसार हुई।
42.	हाजी अल्लाह दीन साहिब नक्शबंदी मुजद्दिदी	शहर रावलपिण्डी अफ़्सर एक कारखाना सरकारी सदर रावलपिण्डी	मैं दिल और जान से सत्यापन करता हूँ कि पंडित लेखराम की मौत हज़रत मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी के अनुसार हुई। इस भविष्यवाणी का कथित पंडित को पहले ही सुनाया जाना और लम्बी छूट का मिलना बहाने के निवारण और इत्माम-ए-हुज्जत के लिए था। जैसा कि अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है- لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ यद्यपि भौतिक तौर पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दर्शन मुझे इस समय तक प्राप्त नहीं हुए परन्तु मैं दिल से विश्वास रखता हूं कि हज़रत मौसूफ सच पर हैं।
43.	शेख़ क़ादिर बख़्श साहिब	अहमदाबाद ज़िला जेहलम	हमारे नज़दीक यह भविष्यवाणी पूरी हुई।
44.	मौलवी मुहम्मद हसन साहिब	हैड मौलवी इस्लामिया हाई स्कूल रावलपिण्डी ज़िला-जेहलम तहसील-चकवाल बानी, ज़िला जेहलम डोमिली कानूनगो बीना	यद्यपि मैं मिर्ज़ा साहिब के सब दावों के मानने वालों में से नहीं हूं परन्तु मैं मिर्ज़ा साहिब को वली जानता हूं। मैं मानता हूं कि यह मौत हज़रत मिर्ज़ां साहिब को समय से पूर्व अल्लाह तआला ने बता दी।

क्रम संख्या	नाम सत्यापनकर्ता-पता	सत्यापन की इबारत का सारांश
45.	ग़ुलाम हुसैन साहिब स्टेशन मास्टर दीना ज़िला जेहलम	यह इल्हाम भविष्यवाणी है। इन्सानी षड्यंत्र नहीं।
46.	जमालुद्दीन स्टेशन मास्टर डोमेली	भविष्यवाणी पूर्ण और कामिल तौर पर पूरी हो गई
47.	अली अहमद साहिब कलानौरी गिर्दावर कानूनगो दीना	इस भविष्यवाणी में इन्सानी षडयंत्र नहीं।
48.	मुहम्मद शाह साहिब इमाम मस्जिद मौज़ा हरियाणा ज़िला जेहलम	यह भविष्यवाणी अल्लाह तआला का आदेश है।
49.	नूरुद्दीन साहिब गार्ड रेलवे रावलपिण्डी	मेरी राय में लेखराम के बारे में भविष्यवाणी हर प्रकार से पूरी हो गई। और मिर्ज़ा साहिब का सच प्रकट हो गया। इसमें सन्देह नहीं है।
50.	इमामुद्दीन साहिब गार्ड रेलवे रावलपिण्डी	मैं पूर्ण विश्वास से कह सकता हूं कि भविष्यवाणी विलक्षण थी और वास्तव में बड़े भय से पूरी हो गई।
51.	क़ुतुबद्दीन साहिब सूबेदार पेन्शनर मौज़ा सागरी, ज़िला जेहलम	यह भविष्यवाणी अल्लाह का आदेश है।
52.	गुलाबुद्दीन साहिब शिक्षक बालिका विद्यालय रोहतास	मैं सच्चे दिल से पुष्टि करता हूं भविष्यवाणी पूरी हो गई।
53.	मुहम्मद हसन साहिब पुत्र मुंशी गुलाबुद्दीन साहिब रोहतास	ख़ुदा की क़सम यह भविष्यवाणी इस्लाम और अन्य धर्मों में खुला-खुला फ़ैसला है।
54.	निज़ामुद्दीन साहिब गार्ड रेलवे रावलपिण्डी	भविष्यवाणी वास्तव में पूरी हो गई।
55.	प्रेमदास पुत्र बोड़ाशाह साहूकार रोहतास ज़िला जेहलम	मैं सम्पूर्ण निश्चय से भविष्यवाणी का सत्यापन करता हूं।
56.	वज़ीर बख़्श साहिब रोहतास	मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी पूरी हो गई।

57.	सत्यापन जनाब मौलाना मौलवी बदरुद्दीन साहिब रफ़ीक़ी हनफ़ी अस्सहरवर्दी निस्बतन व नक़्शबन्दी नस्बन	تمام پیشینگوئیاں درحق مسمّی لیکھرام از جناب مولانا واولانا صادرو ظاہر شدند ہمہ ہا واقعی و درست وراست صحیح بودند و ہستند دراں باب بہ ہیچ گونہ تصنع وریا را راہے نہ۔
58.	मुंशी सिराजुद्दीन साहिब बहलों डलहौज़ी फ़तहुद्दीन साहिब भेरा ज़िला शाहपुर बाबू शाहदीन स्टेशन मास्टर बीना	लेखराम के बारे में मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणियां दुरुस्त और सही हैं। यह भविष्यवाणी वास्तव में पूरी हो गई। इस भविष्यवाणी के सब पहलू पूरे हुए।
59.	अब्दुस्सलाम साहिब रफ़ीक़ी इमाम मस्जिद जामिअ कोह डलहौज़ी	लेखराम के बारे में भविष्यवाणियां दुरुस्त और सच्ची हैं
60.	ग़ुलाम हुसैन साहिब कातिब कर्मचारी प्रेस चौदहवीं सदी रावलपिण्डी	हां निस्सन्देह आप सच्चे और ख़ुदा के हबीब और आशिक़ हैं
61.	अहमद हुसैन साहिब फरीदाबादी ज़िला देहली मास्टर इस्लामिया स्कूल रावलपिण्डी	मैं आप को सच्चे दिल से इस्लाम का सुदृढ़ स्तंभ मानता हूं। आप की अहम और आवश्यक दुआ स्वीकार होनी संभव है।
62.	मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब टीचर अरबी इस्लामिया हाई स्कूल रावलपिण्डी	इनकी सत्यापन की इबारत बहुत लम्बी है। बड़े ज़ोर-शोर से सत्यापन किया है।
63.	फ़ज़्ल करीम साहिब सौदागर रावलपिण्डी	मिर्ज़ा साहिब की यह भविष्यवाणी ठीक पूरी हुई।
64.	मुहियुद्दीन अहमद साहिब शाहाबाद, ज़िला-हरदोई	इन की सत्यापन की इबारत बड़ी ज़ोरदार और बहुत लम्बी है यहां नक़ल की गुंजायश नहीं।
65.	मुहम्मद फ़ीरोज़ुद्दीन साहिब डिस्कवी टीचर प्रथम फारसी एम.बी. हाई स्कूल सियालकोट	इन की सत्यापन की इबारत बारह पृष्ठों पर है और अत्यन्त ज़ोरदार श्रद्धा और निष्कपटता से भरी हुई है। यहां नक़ल करने की गुंजायश नहीं।

66.	मौलवी इलाही बख़्श साहिब फ़ारूक़ी भूतपूर्व प्रोफेसर नार्मल स्कूल रावलपिण्डी वर्तमान पेन्शनर	इनकी सत्यापन की इबारत भी बहुत लम्बी चौड़ी है और श्रद्धा एवं निष्ठा से भरपूर
67.	मियां ज़फरुद्दीन साहिब नक़्शबन्दी आडरा निज़्द रावलपिण्डी	मेरी राय में यह भविष्यवाणी ठीक पूरी हो गई।
68.	ख़ादिम हुसैन साहिब टीचर इस्लामिया हाई स्कूल रावलपिण्डी	कविताओं की पंक्तियों में सत्यापन किया है।
69.	हाफ़िज़ रुकनुद्दीन साहिब नक़्शबन्दी, कसूरी निवासी कोठि याला शेखां गुजरात	लेखराम की मौत भविष्यवाणी के अनुसार घटित हुई है। मैं इसका सत्यापन करता हूं।
70.	मुंशी हमीदुद्दीन साहिब कर्मचारी पुलिस थाना शहना ज़िला लुधियाना	इन की सत्यापन की इबारत तीन कालम पर है और बहुत उत्तम प्रकार से सत्यापन किया है।
71.	हबीबुल्लाह साहिब क़िला दीदार सिंह, गुजरावांला	यह भविष्यवाणी स्पष्ट तौर पर प्रकटन में आई।
72.	शेख़ ज़ियाउल हक़ साहिब हापुड़ हाल हरदा	लम्बी इबारत में बहुत उत्तम पुष्टि की है।
73.	मास्टर हुसैन खां साहिब पुत्र अहमद खां वीविंग मास्टर बन्दर बम्बई भायखला	हम इस बात की पुष्टि क़सम खाकर करते हैं कि लेखराम पेशावरी के बारे में जनाब मिर्ज़ा साहिब ने जो भविष्यवाणी 20 फ़रवरी 1893 को की थी जिसका एक विज्ञापन भी पुस्तक आईना कमालात-ए-इस्लाम के अन्त में दर्ज हो चुका है वह भविष्यवाणी लगभग तीन वर्ष पूर्व घटित होने से पूर्व देखी थी आज उसकी पुष्टि हुई कि वह भविष्याणी बिल्कुल अनुकूल, सही और सच्ची है दिनांक 14 जून 1897 ई.
74.	सय्यद हाजी अब्दुर्रहमान शाह क़ादिरी डॉक्टर बम्बई परेल	" " " "

75.	शेख़ मुहम्मद साहिब पुत्र शम्सूद्दीन बम्बई चिचपुंकली	" " " "
76.	शम्सुद्दीन साहिब पुत्र मुहम्मद इब्राहीम चिचपुकली बम्बई	" " " "
77.	हसन मियां साहिब बांगीटांग बन्दर बम्बई	" " " "
80.	मुहम्मद इब्राहीम साहिब पुत्र मुंशी ज़ैनुद्दीन इंजीनियर बम्बई	" " " "
81.	मियां अहमद साहिब इंजीनियर बम्बई	" " " "
82.	मुंशी ज़ैनुद्दीन मुहम्मद इब्राहीम साहिब इंजीनियर बम्बई	" " " "
83.	हाफ़िज़ अब्दुर्रहीम साहिब पुत्र हाफ़िज़ अब्दुल्लाह सूरती बम्बई सोनापुर क़दीम	" " " "
84.	इस्माईल आदम साहिब मेमन सौदागर बम्बई	" " " "
85.	ग़ुलाम मुहम्मद साहिब पुत्र ग़ुलाम हसन खां साहिब बहादुर दिलेर जंग मर्हूम शैई पालीन चुंजी, ज़िला दक्षिण अर्काट सब इन्सपेक्टर साल्ट एवं आबकारी	इबारत का सारांश यह है कि भविष्यवाणी बड़ी सफ़ाई से पूरी हुई।
86.	अब्दुल बासित साहिब पुत्र अब्दुर्रहमान पालीम चीख़ी ज़िला दक्षिण अकर्ट	प्रत्येक पहलू बड़ी सफाई से पूरा हुआ।

87.	सय्यद हबी बुल्लाह साहिब क़ादरी पुत्र ग़ुलाम मुहम्मद टीचर सीलापुर, दक्षिण अर्काट	बिल्कुल सफ़ाई से पूरा हुआ।
88.	अब्दुल ग़फ़ूर साहिब क़ुरैशी पुत्र मुहम्मद यूसुफ़ साहिब क़ुरैशी चुंजी पोस्ट मास्टर दक्षिण अरकाट	बड़ी सफ़ाई के साथ पूरी हुई।
89.	मिर्ज़ा मुहम्मद इस्माईल साहिब अफ़सर पुलिस स्टेशन पुत्र मिर्ज़ा अमीर बेग़ साहिब रिज़वी दक्षिण अर्काट	लेखराम की भविष्यवाणी सौ सफ़ाई के साथ पूरी हुई।
90.	फ़तह शरीफ़ साहिब पुत्र शेख इमाम साहिब सार्जन चुंजी दक्षिण अर्काट	लेखराम की मौत की भविष्यवाणी सच्ची हुई।
91.	मलिक अब्दुल वहहाब साहिब पुत्र फ़क़ीर अहमद सदर अंजुमन नुसरतुल इस्लाम मीलू शारम उत्तरी अर्काट	मैं निस्सन्देह कह सकता हूं कि पंडित लेखराम स्वयं भविष्यवाणी की सच्चाई पर हैरान होकर मर गया 22 जुलाई 1897 ई.
92.	अब्दुल वह्हाब खां साहिब मुहम्मदिया बिन अब्दुल्लाह साहिब मुहम्मदिया चीत पीत पोलूर उत्तरी अर्काट	मैं निस्सन्देह कह सकता हूं कि पंडित लेखराम स्वयं भविष्यवाणी के कारण हैरान होकर मर गया।
93.	मलिक मुहम्मद नईम साहिब बी.ए. क्लास, मिशन कालेज लाहौर	मैं ज़ोर से गवाही देता हूँ कि इस क़त्ल में मिर्ज़ा साहिब का कोई दख़ल नहीं है।
94.	ग़ुलाम अहमद साहिब स्टूडेन्ट बी.ए.क्लास मिशन कालेज लाहौर	भविष्यवाणी पूरी हो गई है।
95.	ग़ुलाम हसन साहिब बी.ए.क्लास मिशन कालेज लाहौर	मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी हर प्रकार से पूरी हुई है।

96.	अली मुहम्मद साहिब बी.ए.क्लास मिशन कालेज, लाहौर	भविष्यवाणी पर मेरा विश्वास अधिक हुआ। मैं मिर्ज़ा साहिब के दावे का समर्थन करता हूं।
97.	अब्दुल हक साहिब बी.ए. क्लास मिशन कालेज, लाहौर	भविष्यवाणी वास्तव में बड़े उत्तम रंग में पूर्ण हो गई। इसमें इन्सानी षड्यंत्र का हस्तक्षेप हो सर्वथा असंभव है
98.	ग़ुलाम मुहियुद्दीन साहिब बी.ए.क्लास मिशन कालेज, लाहौर	निस्सन्देह पंडित साहिब के क़त्ल में किसी इन्सानी षड्यंत्र का हस्तक्षेप नहीं।
99.	अमीर शाह साहिब बी.ए.क्लास मिशन कालेज, लाहौर	लेखराम के बारे में मिर्ज़ा साहिब की दुआ सब ही स्वीकार हुई हैं।
100	नूर अहमद खां साहिब पेशावरी बी.ए.क्लास मिशन कालेज लाहौर	भविष्यवाणी के वाक्य अक्षरशः ठीक निकले।
101	अमीर खुसरो साहिब गुजराती एफ.ए. क्लास	इस्तिफ़ा पुस्तक में कुछ सन्देह नहीं।
102	अता मुहम्मद साहिब बटाला, ज़िला गुरदासपुर	ये भविष्यवाणियां हर पहलू से पूरी हुईं।
103	मुहम्मदुद्दीन साहिब क्लर्क एक्ज़ामिनर आफ़िस रेलवे बटाला	भविष्यवाणी हर पहलू से पूरी हुई।
104	वली उल्लाह साहिब टीचर एचेन्स स्कूल लाहौर	यह भविष्यवाणी शर्तों के अनुसार पूरी हुई।
105	सूफ़ी इलाही बख़्श साहिब रफ़ूगर कूचा चाबुक सवारान, लाहौर	मेरे नज़दीक यह भविष्यवाणी सही निकली।
106	मुहम्मद हुसैन साहिब क़ुरैशी मलिक विक्टोरिया प्रेस, लाहौर	यह भविष्यवाणी बिल्कुल मिर्ज़ा साहिब की शर्तों के अनुसार पूरी हुई।
107	सजावल साहिब निवासी जगरांव ज़िला लुधियाना	निस्सन्देह यह भविष्यवाणी पूरी हुई।
108	ग़ुलाम अकबर साहिब सारजेन्ट प्रथम श्रेणी पुलिस लाहौर	निस्सन्देह यह भविष्यवाणी पूरी हुई।

109	अल्लाह बख़्श साहिब सिपाही न. 125 (पुलिस) शहर लाहौर	बिल्कुल सही तौर पर पूरी हुई कोई अन्तर नहीं।
110	वज़ीर अली साहिब क़स्बा नगीना ज़िला बिजनौर	यह भविष्यवाणी पूर्णरूपेण पूरी हुई।
111	अल्लाहदीन खां साहिब सारजेण्ट द्वितीय न. 95, मौज़ा थाना लोपो के ज़िला अमृतसर	यह भविष्यवाणी दुरुस्त है।
112	अहमद खां साहिब कन्सटेबिल न. 60 पुलिस जेहलम	निस्सन्देह भविष्यवाणी पूरी हुई।

यहां सत्यापन कर्ताओं के मात्र थोड़े नामों का देना ही पर्याप्त है। उनके बयानों को लम्बाई के भय से छोड़ दिया गया है

113	अल्लाह दित्ता साहिब टीचर मिश स्कूल जेहलम
114	रहीम बख़्श साहिब टीचर हिसाब हिन्दू मुहम्मदन अंबाला छावनी
115	मुहम्मद बख़्श साहिब हेड क्लर्क दफ़्तर नहर सरहिन्द, अंबाला-छावनी
116	मुहम्मद इस्माईल साहिब नक्शा निवासी देहली कालका रेलवे, अंबाला छावनी
117	ग़ुलाम नबी साहिब पुस्तक व्यापारी रावलपिण्डी
118	गुलाब खां साहिब सब ओवर सियर मिलिट्री वर्क्स सियालकोट वर्तमान रावलपिण्डी
119	नूर इलाही साहिब सब डिवीज़न क्लर्क मिलिट्री वर्क्स, रावलपिण्डी
120	ज़हूरुल इस्लाम साहिब नक्शानवीस वर्तमान रावलपिण्डी
121	ख़ुदा बख़्श साहिब, नक्शा नवीस मिलिट्री वर्क्स रावलपिण्डी
122	अज़ीज़ुद्दीन साहिब पुत्र ग़ुलाम मुहियुद्दीन साहिब क्लर्क वर्कशाप रावलपिण्डी
123	शम्सुद्दीन खां साहिब ठेकेदार रईस रावलपिण्डी
124	यार मुहम्मद साहिब क्लर्क रावलपिण्डी
125	इमामुद्दीन साहिब क्लर्क रावलपिण्डी
126	जाफ़र ख़ाँ साहिब प्रत्याशी नक्शानिवास रावलपिण्डी
127	मौलवी मुहम्मद फ़ज़ल साहिब चंगवी तहसील गूजर खां
128	शाहनवाज़ खां साहिब नम्बरदार उमराल, ज़िला जेहलम
129	हाफ़िज़ अहमद बख्श साहिब पटवारी मौज़ा बाठ, कबीरपुर, रियासत कपूरथला
130	ग़ुलाम मुहियुद्दीन साहिब हेडमास्टर स्कूल नूरमहल, ज़िला जालन्धर
131	मिर्ज़ा नियाज़ बेग साहिब रईस कलानौर ज़िला गुरदासपुर
132	अन्वार हुसैन खां साहिब रईस शाहाबाद, ज़िला हरदोई
133	मुहियुद्दीन अहमद साहिब शाहबाद ज़िला हरदोई

134	हकीम ख़ादिम हुसैन खां साहिब सेक्रेट्री म्यूनिस्पल बोर्ड, शाहाबाद ज़िला हरदोई
135	मुहम्मद रफ़ीक़ साहिब जस्वी हाल-रावलपिण्डी
136	मौलवी ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब नूरमहल, ज़िला-जालंधर
137	सदरुद्दीन साहिब सब पोस्ट मास्टर ज़िला भेरा, शाहपुर।
138	मुहम्मद अब्दुल ग़नी साहिब ख़ुशनवीस कातिब अखबार दोस्त हिन्द भेरा
139	मुंशी मुहम्मदुद्दीन साहिब टीचर मीरूवाल, तहसील रइया सियालकोट
140	चौधरी मुज़फ़्फ़र खां साहिब नम्बरदार भीरोवाल, तहसली रइया सियालकोट
141	रुकनुद्दीन साहिब मीरूवाल, ज़िला सियालकोट
142	अब्दुल वाहिद खां साहिब सदर बाज़ार केम्प अम्बाला
143	मियां इल्मदीन साहिब चक ख्वाजा
144	नजीब खां साहिब पेन्शनर उमराल ज़िला जेहलम
145	सुलतान मुहम्मद खां साहिब निवासी बकराला, ज़िला जेहलम
146	नूर हुसैन साहिब ड्राइवर नवां मुहल्ला ज़िला जेहलम
147	मुहम्मद उमर साहिब निवासी बराए रौनकाबाद, ज़िला गुजरात
148	करीम बख़्श साहिब दुकानदार जेहलम
149	मियां मुहम्मद साहिब कोटला अइम्मा
150	चौधरी मुहम्मद करीम बख़्श साहिब नम्बरदान भिण्डी नेन, तहसील रइया ज़िला सियालकोट
151	नूर आलम साहिब चक सिकन्दर
152	शेख़ इम्दाद हुसैन साहिब मुहल्ला जदीद जेहलम
153	सुल्तान मुहम्मद साहिब जदीद जेहलम
154	नूर आलम साहिब निवासी जादा ज़िला जेहलम
155	इल्म दीन साहिब इमाम मस्जिद जादा जेहलम
156	ग़ुलाम क़ादिर साहिब दुकानदार जेहलम
157	ग़ुलाम हैदर साहिब मौज़ा जकर जेहलम

158	मुहम्मद अताउल्लाह साहिब निवासी ख़ुशहाला, ज़िला हज़ारा
159	सुल्तान मुहम्मद साहिब ज़िला हज़ारा
160	फैज़ अली साहिब निवासी ख़ुशहाला, इलाक़ा मानसहरा, ज़िला हज़ारा
161	मुहम्मद यामीन साहिब दाता ज़िला हज़ारा
162	अब्दुल करीम साहिब ज़िला हज़ारा
163	अब्दुर्रहमान साहिब पहोड़ा ज़िला हज़ारा
164	मालिक क़ुतुबुद्दीन खां साहिब पेन्शनर एक्स्ट्रा असिस्टेण्ट सियालकोट
165	मुहम्मद आलम साहिब चकयाही सियालकोट
166	अबुल ग़नी साहिब दाता सियालकोट
167	लाल शाह साहिब गोलड़ा हाल सियालकोट
168	मुहम्मद गुल साहिब सय्यदपुर, कहोड़ी ज़िला मुज़फ़्फ़राबाद
169	हबीबुल्लाह साहिब बांडी ढोडां एबटाबाद
170	शेख नूर अहमद साहिब पुत्र हाजी क़ायमदीन साहिब, चिन्योट-झंग
171	मुहम्मद इस्माईल साहिब झंग मदरसा
172	इलाह बख़्श साहिब झंग मदरसा
173	हकीम दिलबर साहिब झंग मदरसा
174	अता मुहम्मद साहिब झंग मदरसा
175	मुहम्मद हयात साहिब झंग मदरसा
176	मुहम्मद हुसैन साहिब झंग मदरसा
177	पीर बहादुरदीन साहिब सय्यद गैलानी चिन्योट, ज़िला झंग
178	मौला बख़्श साहिब ज़िला झंग
179	रोशन दीन साहिब मस्गर, मुहल्ला लोहारां, ज़िला शाहपुर
180	फ़तहदीन साहिब ज़िला शाहपुर
180	शम्सुद्दीन साहिब ज़िला शाहपुर
181	निज़ामुद्दीन साहिब ज़िला शाहपुर
182	शर्फ़ुद्दीन साहिब मुहल्ला लोहारां ज़िला शाहपुर

183	अल्लाह दीन साहिब ज़िला शाहपुर
184	ग़ुलाम मुहम्मद साहिब भेरा मुहल्ला लोहारां
185	चिराग़ुद्दीन साहिब भेरा ज़िला शाहपुर मुहल्ला लोहारां
186	ख़ुदा बख़्श साहिब ज़िला शाहपुर मुहल्ला लोहारां
187	इनायतुल्लाह साहिब ज़िला शाहपुर मुहल्ला लोहारां
188	फ़ज़्ल इलाही साहिब ज़िला शाहपुर मुहल्ला लोहारां
189	मुहम्मद इस्लाम साहिब ज़िला शाहपुर मुहल्ला लोहारां
190	अब्दुल ग़फ़ूर साहिब ज़िला शाहपुर मुहल्ला लोहारां
191	इलाहदीन साहिब ज़िला शाहपुर मुहल्ला लोहारां
192	ख़्वाजा मुहम्मद शरीफ़ अहमद साहिब पेशावरी, निवासी भेरा
193	अब्दुस्सुब्हान खां साहिब जेहलमी हाल भेरा
194	फ़ज़्ल इलाही साहिब भेरा
195	हबीबुल्लाह साहिब प्राचा भेरा
196	ग़ुलाम इलाही साहिब भेरा
197	ग़ुलाम रसूल साहिब भेरा
198	अब्दुर्रऊफ़ साहिब भेरा
199	फ़ज़्ल इलाही साहिब भेरा
200	इनायतुल्लाह साहिब भेरा
201	अल्लाह जवाया आहंगर साहिब भेरा
202	हाजी आहंगर भेरा
203	हाजी नूर अहमद साहिब भेरा
204	फ़ज़्लुद्दीन साहिब भेरा
205	सदरुद्दीन साहिब भेरा
206	निज़ामुद्दीन साहिब भेरा
207	शम्सुद्दीन साहिब भेरा
208	चिराग़ुद्दीन साहिब भेरा

209	मुहम्मदुद्दीन साहिब भेरा
210	अल्लाह दित्ता साहिब भेरा
211	अब्दुल करीम साहिब भेरा
212	अल्लाह दीन साहिब भेरा
213	ख़ुदा बख़्श साहिब भेरा
214	मुहम्मद आज़म साहिब मीरूवाल ज़िला सियालकोट
215	मुहम्मद अली खां साहिब नम्बरदार मीरूवाल, ज़िला सियालकोट
216	अली अकबर साहिब ज़िला सियालकोट
217	ग़ुलाम यासीन साहिब बरयार तहसील रइया
218	मुहम्मद शाह साहिब सतराह, पसरूर
219	ग़ुलाम रसूल साहिब दूना चक
220	मुहम्मद अशरफ साहिब कोट बूचा
221	शेख नबी बख़्श साहिब कोड़ी
222	फ़ज़्ल हुसैन साहिब चांद
223	मुहम्मुद्दीन साहिब मीरूवाल
224	मौला बख़्श साहिब मीरूवाल
225	अकबर खां साहिब मीरूवाल
226	नेमत खां साहिब मीरूवाल
227	महताबुद्दीन साहिब मीरूवाल
228	शेख़ अली मुल्लाह साहिब मीरूवाल
229	सय्यद लुद्धे शाह साहिब मीरूवाल
230	अब्दुल अज़ीज़ साहिब मीरूवाल
231	सय्यद अली साहिब मीरूवाल
232	बरकत अली साहिब मीरूवाल
233	मुहम्मद जान साहिब ज़ैलदार बद्दोमल्ली
234	पीर अहमद साहिब नम्बरदार बद्दो मल्ली

235	अली मुहम्मद साहिब पटवारी बद्दोमल्ली
236	अब्दुल्लाह शाह साहिब वाइज़ बद्दोमल्ली
237	निज़ामुद्दीन खान साहिब मुलाज़िम चीफ़ कोर्ट लाहौर
238	झण्डे शाह साहिब टीचर मिशन स्कूल बद्दोमल्ली
239	मलावामल साहिब हिन्दू लाहौर, आन्तरिक भाग लुहारी दरवाज़ा, सत्यापन की इबारत यह है - ''जनाब मिर्ज़ा साहिब ने जो भविष्यवाणी लेखराम के बारे में की थी मीआद के अन्दर पूरी हुई।'' बक़लम ख़ुद
240	ज्वाला सिंह साहिब हिन्दू नम्बरदार निवासी - ''कोटलोमान, तहसील रइया इबारत - यह बात सच्ची है जो मिर्ज़ा साहिब ने कहा था लेखराम मर गया है।''
241	वीर बहाना साहिब, बद्दोमल्ली ''पंडित लेखराम मर गया है।''
242	दुनीचन्द साहिब बद्दोमल्ली ''पंडित लेखराम साहिब मीआद के अन्दर मर गया।''
243	आत्मा सिंह साहिब बद्दोमल्ली ''पंडित लेखराम मीआद के अन्दर मर गया।''
244	निहाल चन्द साहिब अरोड़ा -बद्दोमल्ली ''पंडित लेखराम मीआद के अन्दर मर गया।''
245	हक़ीकत राम अरोड़ा, बद्दोमल्ली ''पंडित लेखराम मर गया है।''
246	लक्ष्मणदास अरोड़ा ''पंडित लेखराम मीआद के अन्दर मर गया है।''
247	ठाकुरदास अरोड़ा, बद्दोमल्ली बशरहसद्र
248	बीरबल साहिब अरोड़ा बद्दोमल्ली साहूकार। इबारत यह है - ''मिर्ज़ा साहिब की यह भविष्यवाणी सच्ची है।'' बक़लम ख़ुद
249	हाकिम साहिब नम्बरदार बद्दोमल्ली
250	मौलवी ग़ुलाम अली साहिब नौशाही हनफ़ी क़ादिरी, अमृतसर
251	अलिफ़ दीन साहिब मगोला, ज़िला सियालकोट
252	सय्यद हुसैन साहिब सज्जादानशीन बद्दोमल्ली
253	सय्यद ग़ुलाम क़ादिर साहिब सज्जादानशीन बद्दोमल्ली
254	चिराग़ुद्दीन साहिब नम्बरदार मौज़ा मिनन
255	मियां मुस्तक़ीम साहिब इमाम मस्जिद बद्दोमल्ली

256	ग़ुलाम हैदर साहिब मेम्बर कमेटी बद्दोमल्ली
257	नूर अहमद साहिब नम्बरदार कुल्दीवाल रइया
258	ग़ुलाम मुहम्मद साहिब नम्बरदार फागियां, रइया
259	ग़ुलाम क़ादिर साहिब नम्बरदार गटामियां रइया
260	यारा साहिब नम्बरदार अकबरियां रइया
262	सय्यद गुलाब शाह साहिब इमाम जामेअ मस्जिद बद्दोमल्ली
263	सय्यद आबिल अली साहिब हकीम धर्म कोट
264	जमैता नम्बरदार बाठानवाला रइया
265	करमदार खान साहिब नम्बरदार कोट रइया
266	अली गौहर साहिब नम्बरदार घटियालियां पसरूर
267	चन्दशाह सय्यद नम्बरदार तम्बू पर पसरूर
268	चण्डा नम्बरदार जल्लोवाली
269	आदिल ख़ान साहिब सज्जादा नशीन बद्दोमल्ली
270	नवाब नम्बरदार बद्दोमल्ली
271	फ़क़ीर हसन अमीर शाह साहिब सज्जादा नशीन जंडियाला कल्सान
272	शंगरफ़ अली साहिब टीचर शेख़ूपुरा गुजरांवाला
273	ग़ुलाम रसूल साहिब स्टाम्प विक्रेता बद्दोमल्ली
274	सय्यद अहमद शाह साहिब मशहदी घटियालियां
275	मुहम्मद हुसैन साहिब मशहदी कोटलीतारा पसरूर
276	सय्यद मुहम्मद शाह मशहदी नूरपुर पसरूर
277	सय्यद इमाम अली शाह साहिब हकीम नूरपुर पसरूर
278	उमरुद्दीन साहिब दरवेश बद्दोमल्ली
279	जीवन सिंह नम्बरदार बाठांवाला। सत्यापन की इबारत यह है - "हमने मान लिया मिर्ज़ा साहिब सच्चे हैं और लेखराम मर गया है।"

नोट - सत्यापन कर्ताओं के ये हस्ताक्षर लगभग चार हज़ार थे। हम ने इस पुस्तक में केवल थोड़े से नाम बतौर नमूना लिख दिए हैं। इति।

तिर्याक़ुल क़ुलूब का परिशिष्ट न. 2

हम इस परिशिष्ट में एक संक्षिप्त सूची अपने उन निशानों की जो आज तक अर्थात् 20 अगस्त 1899 ई. तक प्रकट हो चुके हैं सत्य के अभिलाषियों के लिए नीचे दर्ज करते हैं और वे ये हैं –

क्रम संख्या 1.	**निशान का विवरण**

नवाब सरदार मुहम्मद हयात खां साहिब एक समय निलंबित हो गए थे और सरकार से उन पर कई आरोप क़ायम होकर एक बहुत भयानक मुक़द्दमा दायर किया गया था। इन कठिनाइयों के समय इन के बारे में मेरे भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर (स्वर्गीय) ने मुझ से सिफ़ारिश की कि उनके लिए दुआ की जाए। दुआ के बाद उनके बरी होने की ख़ुशख़बरी मुझे स्वप्न में मिली और मैंने उनको स्वप्न में अदालत की कुर्सी पर बैठे हुए देखा और मैंने कहा कि तुम निलंबित थे। उन्होंने उत्तर दिया हां उस संसार में परन्तु इस संसार में नहीं। और एक बार स्वप्न में मैंने उनको कहा कि तुम कुछ भय मत करो। ख़ुदा तआला प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान है। वह तुमको इस विपदा से मुक्ति देगा और बरी कर देगा। इस भविष्यवाणी के बहुत से गवाह हिन्दू और मुसलमान हैं। उनमें से एक हिन्दू लाला शरमपत भी है जो इसी गांव में रहता है। और स्वयं नवाब सरदार मुहम्मद हयात खां साहिब गवाह हैं। क्योंकि मेरे भाई ने इस स्वप्न की उन्हें सूचना दे दी थी और मेरे लड़के फ़ज़्ल अहमद ने भी उनको सूचना दी थी और बराहीन अहमदिया की दो प्रतियां भी जिनमें इस भविष्यवाणी के पूरा होने का ज़िक्र है उनकी सेवा में और उनके भी साहिब की सेवा में भेजी गई थीं।★ और अन्त में ऐसा ही हुआ जैसा कि कहा गया था।

जनाब नवाब साहिब स्वयं क़सम खाकर वर्णन कर सकते हैं कि यह घटना

★ कोई बुद्धिमान इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता कि ख्याति प्राप्त पुस्तक की भविष्य-वाणी जिसको बीस वर्ष हो चुके। यदि वह घटना के विरुद्ध और इफ़्तिरा हो तो इतने समय तक वह व्यक्ति ख़ामोश रह सके जिसके बारे में यह भविष्यवाणी है। विशेष तौर पर इस हालत में कि जब अविलम्ब वह पुस्तक उसे दे दी गई हो। इसी से

सच्ची है। किन्तु चूंकि मैं जानता हूं कि इन्सान कुछ हितों के कारण कभी-कभी सच्ची गवाही के अदा करने पर दिलेरी नहीं कर सकता। इसलिए मैं उनकी सेवा में तथा सब गवाहों की सेवा में आदरपूर्वक निवेदन करता हूं कि यदि वे उन भविष्यवाणियों की जानकारी से जिनमें उनको गवाह बनाया गया है इन्कार करें। तो अपने प्रिय सुपुत्रों के नाम पर ख़ुदा तआला की क़सम खा लें कि यह भविष्यवाणी झूठी है। और इस से पूर्व कि नवाब साहिब मेरी गवाही दें, मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि यह सम्पूर्ण घटना सच है। और झूठों पर ख़ुदा की लानत। और यह भविष्यवाणी आज से बीस वर्ष पहले पुस्तक बराहीन अहमदिया में दर्ज हो कर लाखों इन्सानों में प्रसिद्ध हो चुकी है। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-252

क्रम संख्या 2.	**निशान का विवरण**

शरमपत नामक एक आर्य क़ौम खत्री जिसका प्रथम नम्बर में वर्णन आया है जो कभी-कभी मेरे पास आता था, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों का इन्कारी और इस्लाम का कट्टर शत्रु था। फिर ऐसा संयोग हुआ कि अचानक उसका भाई विशम्बर दास एक फ़ौजदारी आरोप के तहत आकर एक वर्ष की क़ैद का दंडित हो गया और उसके साथ एक और भी क़ैद हुआ, जिस का नाम खुशहाल था उसे डेढ़ साल का दण्ड हुआ। इस संकट के समय शरमपत ने मुझ से अपने भाई विशम्बर दास के बारे में दुआ चाही और यह भी कहा कि इस से मैं परीक्षा कर लूंगा, तथा यह भी कहा कि हम ने इस मुकद्दमे की चीफ़ कोर्ट में अपील की है। यदि मुझे इल्हाम के द्वारा यह ख़बर मिल जाए कि इस अपील का क्या परिणाम निकलेगा। और यह ख़बर सच्ची निकली तो मैं समझूंगा कि इस्लाम में यह शक्ति मौजूद है। अत: उसके अत्यन्त आग्रह के कारण ख़ुदा तआला से दुआ की गई और वह दुआ स्वीकार हुई और इल्हाम द्वारा मुझे बताया गया कि इस मुकद्दमे की मिस्ल चीफ़ कोर्ट से अधीन अदालत में वापस आएगी और फिर उस अधीन अदालत में जांच-पड़ताल होकर विशम्बरदास की आधी क़ैद कम कर दी जाएगी, परन्तु बरी नहीं होगा। और जो उसका दूसरा साथी है वह कदापि छुटकारा नहीं पाएगा, जब तक पूरी क़ैद न भुगत ले। और बरी वह भी नहीं

होगा और उस की क़ैद के दिनों में से एक दिन भी कम न होगा। और मैंने उस समय कश्फ़ी तौर पर यह भी देखा कि मैं प्रारब्ध के दफ्तर में गया हूं और एक पुस्तक मेरे सामने प्रस्तुत की गई जिसमें विशम्बरदास की एक वर्ष की क़ैद लिखी थी। तब मैंने उसकी क़ैद में से आधी क़ैद को अपने हाथ से और अपनी क़लम से काट दिया है। यह वह महान भविष्यवाणी है जिसमें दुआ की स्वीकारिता, साहस का अधिकार और समय से पूर्व बताना तीनों बातें सिद्ध हैं। और शरमपत इस्लाम का कट्टर विरोधी और क़ौम परस्त है। उसके मुंह से यह निकलना कठिन है कि यह भविष्यवाणी हू बहू सच्ची निकली। क्योंकि क़ौम परस्ती के कारण क़ौम का रोब उसको खाएगा। परन्तु फिर भी उसके मुंह से सच कहलाने का बहुत ही आसान उपाय यह है कि उसको उसके बेटों की क़सम दी जाए। अर्थात् बेटों के सर पर हाथ रख कर बतौर क़सम यह कहे कि यह भविष्यवाणी मेरे नज़दीक झूठी है पूरी नहीं हुई और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि समस्त घटना सच है। और झूठों पर ख़ुदा की लानत। इस भविष्यवाणी का परिशिष्ट एक यह भी बात है कि जब विशम्बरदास ने अपील की और वह अपील चीफ़ कोर्ट में लिया गया। तो विशम्बरदास के भाइयों ने प्रसिद्ध किया कि विशम्बरदास बरी हो गया। और चूंकि ऐसी प्रसिद्धि मेरे इल्हाम के विरुद्ध थी इसलिए कुछ नादान लोगों ने मुझे दोषी किया कि तुम कहते थे कि मुकद्दमे की मिस्ल अधीन अदलात में वापस आएगी और आधी क़ैद कम होगी और बरी नहीं होगा। परन्तु वह बरी हो गया। तब मुझे मस्जिद में सज्दे की हालत में यह इल्हाम हुआ-

لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى

अर्थात् कुछ भय न कर कि तू विजयी है और विजय तेरे नाम है। फिर थोड़े समय के बाद मालूम हो गया कि यह ख़बर झूठी प्रसिद्ध की गई थी। इस झूठी ख़बर का लाभ यह हुआ कि एक और भविष्यवाणी प्रकटन में आ गई। और यह भविष्यवाणी जैसा कि वर्णन किया गया था कि मुकद्दमे की मिस्ल अधीन (निचली) अदालत में वापस आएगी और विशम्बरदास की आधी क़ैद कम होगी। परन्तु दोनों अपराधी बरी नहीं होंगे। बिल्कुल वैसा ही प्रकटन में आ गया। यद्यपि यह पूरी भविष्यवाणी

हमारी पुस्तक बराहीन अहमदिया में बीस वर्ष के समय से दर्ज होकर लाखों लोगों में प्रसिद्ध हो चुकी है। देखो बराहीन अहमदिया, पृष्ठ 250, 251 और 550

क्रम संख्या 3.	निशान का विवरण

पंडित दयानन्द सरस्वती की मौत की ख़बर क़ादियान के कुछ हिन्दुओं को जिसमें लाला शरमपत भी है। इस घटना से लगभग तीन माह पूर्व दी गई और वर्णन किया गया कि कथित पंडित भविष्यवाणी के दिन से तीन माह की अवधि तक मृत्यु पा जाएगा। अतः वह तीन माह के अन्दर अजमेर में मृत्यु पा गया तथा कई अन्य मुसलमानों को भी यह ख़बर दी गई। और प्रत्येक क़सम खाकर इस घटना की पुष्टि कर सकता है। परन्तु लाला शरमपत के लिए क़ौम परस्ती के कारण यह गवाही देना भी कठिन है जब तक कि वह इस विषय की क़सम न खाए जिसका नम्बर दो में वर्णन हो चुका है। यह भविष्यवाणी भी बीस साल से हमारी पुस्तक बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर लाखों लोगों में ख्याति पा चुकी है। देखो पृष्ठ 535 बराहीन अहमदिया

क्रम संख्या 4.	निशान का विवरण

एक हिन्दू आर्य निवासी क़ादियान मलावामल नामक टीबी में ग्रस्त हो गया और एक दिन अपने जीवन से निराश होकर मेरे पास आकर बहुत रोया। मैंने उसके लिए दुआ की। तब इल्हाम हुआ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا अर्थात् हमने कहा कि हे तप की आग ठण्डी हो जा और सलामती हो जा। यह इल्हाम उसको तथा कई आदमियों को सुनाया गया और वर्णन किया गया कि वह इस रोग से रोग-मुक्त हो जाएगा। अतः इस इल्हाम के बाद एक सप्ताह के अन्दर ही वह हिन्दू स्वस्थ हो गया। यह आर्य भी अर्थात् मलावामल धार्मिक वैर, और पक्षपात के कारण जिसकी आजकल आर्यों को शिक्षा दी जाती है कदापि सच नहीं बोलेगा क्योंकि इन लोगों की यह आदत है कि वे दूसरी क़ौम के मुकाबले पर झूठ बोलना या सच्ची गवाही को हर प्रकार को बहाने से छुपाना पुण्य समझते हैं। परन्तु यदि इसको भी वही सन्तान की क़सम दी जाए जिस का वर्णन अभी हमने शरमपत की क़सम में किया है तो फिर संभव नहीं कि झूठ बोले। क्योंकि

इन लोगों को ख़ुदा की अपेक्षा सन्तान अधिक प्रिय है। जिस मनुष्य के नज़दीक झूठ और सच को छुपाना तथा गवाही को छुपाना धर्म के लिए सब वैध अपितु परमेश्वर की प्रसन्नता का कारण हो। इसका इसके अतिरिक्त क्या इलाज है कि उसे सन्तान की क़सम दी जाए। और यह भविष्यवाणी भी बीस वर्ष की अवधि से हमारी पुस्तक बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर लाखों लोगों में ख्याति पा चुकी है। देखो पृष्ठ 227,228 बराहीन अहमदिया

क्रम संख्या 5.	निशान का विवरण

शेख़ हामिद अली निवासी थः गुलाब नबी, ज़िला गुरदासपुर जो एक समय तक मेरे पास रहा है और बहुत से निशानों का गवाह है, उसके समक्ष एक यह निशान प्रकटन में आया कि ज़ुहर की नमाज़ का समय था कि सहसा मुझे इल्हाम हुआ تَـرٰی فَخِـذًا الیمًـا अर्थात् तू एक दर्दनाक रान देखेगा। तब मैंने यह इल्हाम उसको सुनाया तत्पश्चात् अविलम्ब मैं नमाज़ के लिए मस्जिद की ओर जाने लगा और वह भी मेरे साथ ही सीढ़ी पर से उतरा। जब हम सीढ़ी पर से उतर आए तो दो घोड़ों पर दो लड़के सवार दिखाई दिए जिन की आयु बीस वर्ष के अन्दर-अन्दर होगी। एक कुछ छोटा एक बड़ा। वे सवार होने की हालत में ही हमारे पास आकर खड़े हो गए। एक ने उनमें से मुझे कहा कि यह दूसरा सवार मेरा भाई है और इसकी रान में बहुत दर्द हो रहा है। इसका कोई इलाज पूछने आए हैं। तब मैंने हामिद अली को कह दिया कि गवाह रह कि यह भविष्यवाणी दो-तीन मिनट में ही पूरी हो गई। शैख हामिद अली अपने गांव में ज़िन्दा मौजूद है। उस से प्रत्येक सत्याभिलाषी क़सम देकर पूछ सकता है। क़सम वही होगी जिसका नमूना हम नम्बर 2 में वर्णन कर चुके हैं।

क्रम संख्या 6.	निशान का विवरण

मेरे एक मुख़लिस अब्दुल्लाह नामक पटवारी ग़ौसगढ़ इलाक़ा रियासत पटियाला के देखते हुए और उन की नज़र के सामने ख़ुदा का यह निशान प्रकट हुआ कि प्रथम मुझ को कश्फ़ी तौर पर दिखाया गया कि मैंने प्रारब्ध के बहुत से आदेश दुनिया वालों की नेकी, बदी के बारे में तथा अपने लिए और अपने दोस्तों

के लिए लिखे हैं। और फिर प्रतिरूप के तौर पर ख़ुदा तआला को देखा और वह काग़ज़ ख़ुदा तआला के आगे रख दिया कि वह उस पर हस्ताक्षर कर दें। मतलब यह था कि ये सब बातें जिन के होने के लिए मैंने इरादा किया है हो जाएं। तो ख़ुदा ने लाल रोशनाई से हस्ताक्षर कर दिए और क़लम की नोक पर जो रोशनाई अधिक थी उसको झाड़ा और अचानक झाड़ने के साथ ही उस सुर्ख़ी की बूंदें मेरे कपड़ों और अब्दुल्लाह के कपड़ों पर पड़ीं। और चूंकि कश्फ़ी अवस्था में मनुष्य जागने का हिस्सा रखता है इसलिए मुझे जबकि उन बूंदों से जो ख़ुदा तआला के हाथ से गिरीं सूचना हुई। साथ ही मैंने स्वयं अपनी आंखों से उन बूंदों को भी देखा और दर्दे दिल के साथ इस किस्से को मियां अब्दुल्लाह के पास वर्णन कर रहा था कि इतने में उस ने भी वे भीगी बूंदें कपड़ों पर पड़ी हुई देख लीं और हमारे पास कोई ऐसी चीज़ मौजूद न थी जिस से उस सुर्ख़ी (लाल रोशनाई) के गिरने की कोई संभावना होती। और वह सुर्ख़ी थी जो ख़ुदा तआला ने अपनी क़लम से झाड़ी थी। अब तक कुछ कपड़े मियां अब्दुल्लाह के पास मौजूद हैं, जिन पर वह बहुत सी सुर्ख़ी पड़ी थी और मियां अब्दुल्लाह ज़िन्दा मौजूद हैं और इस हालत को क़सम खा कर वर्णन कर सकते हैं कि यह विलक्षण और चमत्कारिक तौर पर यह बात कैसी थी। और क़सम नमूना न. 2 पर ही होगी। और यह निशान उन्हीं दिनों में पुस्तक 'सुर्मा चश्म आर्य' में दर्ज किया गया था। देखो पृष्ठ 102 हाशिया इस्लामिया प्रेस लाहौर 1893 ई.

क्रम संख्या 7.	निशान का विवरण

मेरे पिता जी मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा (स्वर्गीय) की मृत्यु का समय जब क़रीब आया और केवल कुछ पहर शेष रह गए तो ख़ुदा तआला ने उन की मृत्यु से मुझे इन शोकाकुल शब्दों के साथ ख़बर दी والسماء والطارق अर्थात् क़सम है आकाश की और क़सम है उस घटना की जो सूर्य अस्त के बाद प्रकटन में आएगी। और चूंकि उनके जीवन से जीविका के हमारे बहुत से कारण सम्बद्ध थे इसलिए मनुष्य होने के कारण हृदय में यह विचार गुज़रा कि उनकी मृत्यु हमारे लिए बहुत से संकटों का कारण होगी। क्योंकि आप की वह प्रचुर धन राशि ज़ब्त हो

जाएगी जो उनके जीवन से सम्बद्ध थी। इस विचार के आने के साथ ही यह इल्हाम हुआ– اَلَیۡسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبۡدَہٗ अर्थात् क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है। तब वह विचार यों उड़ गया जैसा कि प्रकाश के निकलने से अंधकार उड़ जाता है। और उसी दिन सूर्य अस्त होने के बाद मेरे पिता जी का देहान्त हो गया, जैसा कि इल्हाम ने प्रकट किया था और जो इल्हाम- اَلَیۡسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبۡدَہٗ हुआ था वह बहुत से लोगों को समय से पूर्व सुनाया गया। जिन में से कथित लाला शरमपत और लाला मलावामल खत्रियान निवासी क़ादियान हैं। जे हलफ़ उठा कर वर्णन कर सकते हैं। फिर स्वर्गीय मिर्ज़ा साहिब के देहान्त के बाद वह इल्हाम की इबारत एक नगीने पर ख़ुदवाई गई और संयोग से इसी मलावामल को जब वह अपने किसी काम के लिए अमृतसर जाता था वह इबारत दी गई ताकि वह नगीना खुदवाकर और मुहर बनवा कर ले आए। अतः वह हकीम मुहम्मद शरीफ़ (स्वर्गीय) अमृतसरी के माध्यम से बनवा कर ले आया जो अब तक मेरे पास मौजूद है जो इस जगह लगाई जाती है। और वह यह है

اَلَیۡسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبۡدَہٗ 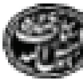

अब स्पष्ट है कि इस भविष्यवाणी में एक तो यही बात है जो पूरी हुई। अर्थात् यह कि इल्हाम के संकेत के अनुसार मेरे पिता जी का स्वर्गवास सूर्य अस्त होने के बाद हुआ इसके बावजूद कि वह बीमारी से स्वस्थ हो चुके थे और दृढ़ थे और मृत्यु के कुछ लक्षण प्रकट न थे तथा कोई भी नहीं कह सकता था कि वह एक वर्ष तक भी मृत्यु पा जाएंगे परन्तु इल्हाम के आशय के अनुसार सूर्य अस्त होने के बाद उन्होंने मृत्यु पाई। और फिर दूसरा इल्हाम यह पूरा हुआ कि पिता जी स्वर्गीय मग़फ़ूर की मृत्यु से मुझे कुछ सांसारिक आघात नहीं पहुंचा जिसकी आशंका थी। अपितु शक्तिशाली ख़ुदा ने मुझे अपने प्रेम की छाया के नीचे ऐसा ले लिया कि एक संसार को हैरान किया और मेरी इतनी देखभाल की तथा वह मेरा इतना अभिभावक और प्रतिपालक हो गया कि इसके बावजूद कि मेरे पिता जी (स्वर्गीय) के देहान्त को आज की तिथि तक चौबीस वर्ष जो 20 अगस्त 1899 ई. और रबीउस्सानी

1317 हिज्री है गुज़र गए। मुझे प्रत्येक कष्ट और आवश्यकता से सुरक्षित रखा। और यह प्रकट है कि मैं अपने पिता के समय में एक गुमनाम (व्यक्ति) था। ख़ुदा ने उनके देहान्त के बाद मुझे लाखों इन्सानों में सम्मान के साथ ख्याति दी। और मैं पिता जी के समय में अपनी शक्ति और अधिकार से कोई आर्थिक क़ुदरत नहीं रखता था। और ख़ुदा तआला ने उनके देहान्त के बाद इस सिलसिले के समर्थन के लिए मेरी इतनी सहायता की और कर रहा है कि जमाअत के दरवेशों, ग़रीबों, मेहमानों और सत्याभिलाषियों की ख़ुराक के लिए जो हर ओर से सैकड़ों ख़ुदा के बन्दे आ रहे हैं। दूसरे पुस्तकों के लिखने के कार्य के लिए हज़ारों रुपया उपलब्ध किया और कर रहा है। इस बात के गवाह इस गांव के समस्त मुसलमान और हिन्दू हैं जो दो हज़ार से कुछ अधिक होंगे।

क्रम संख्या 8.	**निशान का विवरण**

ऐसा संयोग दो हज़ार बार से भी अधिक हुआ है कि ख़ुदा तआला ने मेरी आवश्यकता के समय मुझे अपने इल्हाम या कश्फ़ से यह ख़बर दी कि शीघ्र ही कुछ रुपया आने वाला है और किसी समय आने वाले रुपए की संख्या से भी ख़बर दी। और कभी यह ख़बर दी कि इतना रुपया अमुक तिथि में तथा अमुक व्यक्ति के भेजने से आने वाला है। और ऐसा ही प्रकटन में आया। इस बात के गवाह भी क़ादियान के कुछ हिन्दू और कई सौ मुसलमान होंगे जो हलफ़ उठा कर वर्णन कर सकते हैं। और इस प्रकार के निशान दो हज़ार या इस से भी अधिक हैं। और यह इस बात का भी तर्क है कि ख़ुदा तआला आवश्यकताओं के समय में क्योंकर मेरा अभिभावक और प्रतिपालक होता रहा है। और ख़ुदा की मुझ से प्रायः आदत यही है कि वह समय से पूर्व मुझे बता देता है कि वह दुनिया के ईनामों में से किस प्रकार का ईनाम मुझ पर करना चाहता है और अधिकतर वह मुझे बतला देता है कि कल तू यह खाएगा और यह पिएगा और तुझे यह दिया जाएगा तथा वैसा ही प्रकटन में आ जाता है कि जो मुझे बताता है। इन बातों की पुष्टि कुछ सप्ताह मेरे पास रहने से प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है। ऐसे निशान कथित शेख हामिद अली, लाला शरमपत और मलावामल ने बहुत देखे हैं। और वे नमूना न. 2 के अनुसार

हलफ़ उठा कर वर्णन कर सकते हैं। और मेरी जमाअत के दोस्तों में से कोई कम होगा जिसने एक दो बार अपनी आंखों से ऐसा निशान न देखा होगा।

क्रम संख्या 9.	निशान का विवरण

समय लगभग अठारह वर्ष का हुआ है कि मैंने ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर हिन्दुओं और मुसलमानों में से कुछ आदमियों को इस बात की ख़बर दी कि ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया है कि اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ حَسِيْنٍ अर्थात् हम तुझे एक सुन्दर लड़के के प्रदान करने की ख़ुशख़री देते हैं। मैंने यह इल्हाम एक व्यक्ति हाफ़िज़, नूर अहमद अमृतसरी को सुनाया जो अब तक ज़िन्दा है और मेरे मसीह होने के दावे के कारण विरोधियों में से है। फिर यही इल्हाम शेख हामिद अली को जो मेरे पास रहता था सुनाया और दो हिन्दुओं को जो आना-जाना रखते थे। अर्थात् शरमपत और मलावामल निवासी क़ादियान को भी सुनाया। तथा लोगों ने इस इल्हाम से आश्चर्य किया क्योंकि मेरी पहली पत्नी को बीस साल के समय से सन्तान होनी समाप्त हो चुकी थी और दूसरी कोई पत्नी न थी। परन्तु हाफ़िज़ नूर अहमद ने कहा कि ख़ुदा की क़ुदरत से क्या आश्चर्य कि वह लड़का दे। इस से लगभग तीन वर्ष के बाद जैसा कि अभी लिखता हूं कि देहली में मेरी शादी हुई और ख़ुदा ने वह लड़का भी दिया तथा तीन और प्रदान किए। इस वर्णन का ये समस्त लोग सत्यापन करेंगे बशर्ते कि क़सम नमूना न. 2 देकर पूछा जाए। हाफ़िज़ नूर मुहम्मद कट्टर विरोधी है परन्तु नमूना न. 2 की क़सम उसको भी सच बोलने पर विवश करेगी।

क्रम संख्या 10.	निशान का विवरण

अठारह वर्ष के लगभग समय गुज़रा है कि मुझे किसी काम से मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्नः के मकान पर जाने का संयोग हुआ। उसने मुझ से पूछा कि आजकल कोई इल्हाम हुआ है? मैंने उसको यह इल्हाम सुनाया जिसको मैं कई बार अपने मुखलिसों को सुना चुका था और वह यह है कि بِكْرٌ وَّثَيِّبٌ जिसके यह मायने उसके आगे तथा प्रत्येक के आगे मैंने व्यक्त किए कि ख़ुदा तआला का इरादा है कि वह दो औरतें मेरे निकाह में

लाएगा एक बिक्र (कुंवारी) होगी और दूसरी विधवा। अत: यह इल्हाम जो बिक्र के बारे में पूरा हो गया और इस समय ख़ुदा के फ़ज़्ल से इस पत्नी से चार पुत्र मौजूद हैं और विधवा इल्हाम की प्रतीक्षा है। मैं विश्वास नहीं कर सकता कि मौलवी मुहम्मद हुसैन घोर शत्रुता और पक्षपात के कारण इस भविष्यवाणी के बारे में अपनी जानकारी वर्णन कर सके। परन्तु यदि क़सम नमूना न. 2 के अनुसार दी जाए तो इस स्थिति में आशा है कि सच बोल दे।

क्रम संख्या 11.	**निशान का विवरण**

लगभग सोलह वर्ष का समय गुज़रा है कि मैंने शेख हामिद अली और लाला शरमपत खत्री निवासी क़ादियान और लाला मलावामल खत्री निवासी क़ादियान और स्वर्गीय जान मुहम्मद निवासी क़ादियान तथा बहुत से अन्य लोगों को यह ख़बर दी थी कि ख़ुदा ने अपने इल्हाम से मुझे ख़बर दी है कि एक शरीफ़ ख़ानदान में वह मेरी शादी करेगा। और वे क़ौम के सय्यिद होंगे★ और इस पत्नी को ख़ुदा

★**नोट –** हमारा ख़ानदान जो एक रियासत का ख़ानदान था इसमें ख़ुदा की आदत इस तरह पर घटित हुई है कि कुछ बुज़ुर्ग दादियां हमारी शरीफ़ सादात की लड़कियां थीं। अत: ख़ुदा तआला के कुछ इल्हामों में भी इस बात की ओर संकेत है कि इस ख़ाकसार के खून की बनी फ़ातिमा के ख़ून से मिलावट है। और वास्तव में वह कश्फ़ बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 503 का जिसमें लिखा है कि मैंने देखा कि मेरा सर हज़रत फ़ातिमा रज़ि. ने मेहरबान मां की तरह अपनी रान पर रखा हुआ है। इस से भी यह संकेत निकलता है। इल्हाम जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 490 में दर्ज है यह बशारत दी थी

سبحان اللہ تبارك و تعالیٰ زاد مجدك ينقطع اٰباءك و يبدء منك

अर्थात् समस्त पवित्रताएं ख़ुदा के लिए हैं जो अत्यन्त बरकत वाला और उच्चतम अस्तित्व है। उसने तेरी बुज़ुर्गी को अधिक किया। अब से तेरे बाप दादे का ज़िक्र कट जाएगा और ख़ानदान का प्रारंभ तुझ से किया जाएगा। अर्थात् जिस प्रकार इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने नए ख़ानदान का प्रवर्त्तक हुआ, ऐसा ही तू भी होगा। क्योंकि इल्हाम में बार-बार इस ख़ाकसार का नाम इब्राहीम रखा गया है जैसा कि बराहीन अहमदिया पृष्ठ 561 में यह इल्हाम है

سلام علیٰ ابراھیم صافیناہ و نجّیناہ من الغم۔ تفردنا بذاك۔ فا تخذو ا من مقام ابراھیم مُصَلّٰی

अर्थात् हे इब्राहीम तुझ पर सलाम। हमने इब्राहीम से निश्छल प्रेम किया और उसके ग़म से मुक्ति दी। हम ही इस बात से विशेष हैं। अत: यदि तुम प्रतिष्ठा का स्थान चाहते हो तो तुम उस स्थान पर अपना ग़ुलामी का क़दम रखो जो इब्राहीम अर्थात् इस ख़ाकसार का स्थान है। इसी से।

मुबारक करेगा तथा इस से सन्तान होगी। और यह स्वप्न उन दिनों में आया था कि जब मैं कुछ कुछ विमुखता और रोगों के कारण बहुत कमज़ोर था अपितु करीब ही वह युग गुज़र चुका था जबकि मुझे फेफड़ों की बीमारी हो गई थी और एकान्तवास और संसार को त्यागने के प्रबंधों के कारण शादी करने से दिल बहुत नफ़रत करता था और बाल बच्चों के बखेड़े में पड़ने के बोझ से तबीयत नफ़रत करती थी। तो इस अफसोस से भरी हालत की कल्पना के समय यह इल्हाम हुआ था। ہر چہ باید نو عروسے راہمہ ساماں کنم अर्थात् इस शादी में तुझे कुछ चिन्ता नहीं करना चाहिए। इन समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करना मेरे ज़िम्मे में रहेगा। अतः क़सम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि उसने अपने वादे के अनुसार इस शादी के बाद शादी के प्रत्येक बोझ से मुझे भार मुक्त रखा और मुझे बहुत आराम पहुंचाया। कोई बाप दुनिया में किसी बेटे का पोषण नहीं करता जैसा कि उसने मेरा किया, और कोई मां पूरी होशियारी से दिन-रात अपने बच्चे की ऐसी ख़बर नहीं रखती जैसा कि उसने मेरी रखी। और जैसा कि उसने बहुत समय पूर्व बराहीन अहमदिया में यह वादा किया था कि يا احمد اسكن انت وزوجك الجنّة ऐसा ही उसने किया। जीविका की चिन्ता करने के लिए उसने कोई घड़ी मेरे लिए ख़ाली न रखी और घरेलू कार्यों के लिए उसने कोई व्याकुलता मेरे निकट नहीं आने दी। इस शादी के समय मुझे एक कठिनाई यह हुई कि इस कारणवश कि मेरा दिल और मस्तिष्क बहुत कमज़ोर था तथा मैं बहुत से रोगों का निशाना रह चुका था और दो रोग अर्थात् मधुमेह और सरदर्द हमेशा से मेरे साथ संलग्न थे, जिनके साथ कभी हृदय की ऐंठन भी रहती थी। इसलिए मेरी मर्दाना हालत न होने जैसी थी और मेरा जीवन वृद्धावस्था में था। इसलिए मेरी इस शादी पर मेरे कुछ दोस्तों ने अफ़सोस किया और एक पत्र जिसको मैंने अपनी जमाअत के बहुत से सम्माननीय लोगों को दिखा दिया है। जैसे अख़्वैम मौलवी नूरुद्दीन साहिब और अख़्वैम मौलवी बुरहानुद्दीन इत्यादि। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब एडीटर इशाअतुस्सुन्नः ने हमदर्दी करते हुए मेरे पास भेजा कि आप ने शादी की है और मुझे हकीम मुहम्मद शरीफ़ से मौखिक तौर पर मालूम हुआ है कि आप

सख़्त कमज़ोरी के कारण इस योग्य न थे। यदि यह बात आपकी रूहानी शक्ति से संबंध रखती है तो मैं ऐतराज़ नहीं कर सकता, क्योंकि मैं ख़ुदा के वलियों की विलक्षणताओं और रूहानी शक्तियों का इन्कारी नहीं, अन्यथा एक बड़ी चिन्ता की बात है ऐसा न हो कि कोई इब्तिला सामने आए। यह एक छोटे से काग़ज़ पर पर्चा है जो संयोग से अब तक मेरे पास सुरक्षित रहा है। और मेरी जमाअत के पचास के लगभग दोस्तों ने स्वयं अपनी आंखों से देख लिया और पत्र पहचान लिया है और मुझे आशा नहीं कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब इस से इन्कार करें और यदि करें तो फिर क़सम देने से वास्तविकता खुल जाएगी। सारांश यह कि इस कठिनाई के समय मैंने ख़ुदा के दरबार में दुआ की और मुझे उसने रोग के निवारण के लिए अपने इल्हाम के माध्यम से दवाएं बताईं और मैंने कश्फ़ी तौर पर देखा कि एक फ़रिश्ता वे दवाएं मेरे मुंह में डाल रहा है। तो वह दवा मैंने तैयार की और उसमें ख़ुदा ने इतनी बरकत डाल दी कि मैंने हार्दिक विश्वास से मालूम कर लिया कि वह स्वास्थ्य से भरी शक्ति जो एक पूर्ण स्वस्थ इन्सान को दुनिया में मिल सकती है वह मुझे दी गई और मुझे चार लड़के प्रदान किए गए। यदि दुनिया इस बात को अतिशयोक्ति न समझती तो मैं इस जगह इस सच्ची घटना को जो चमत्कार के रंग में मुझे हमेशा के लिए प्रदान की गई, विवरण सहित वर्णन करता ताकि मालूम होता कि हमारे शक्तिमान और हमेशा क़ायम रहने वाले (ख़ुदा) के निशान हर रंग में प्रकटन में आते हैं और हर रंग में अपने विशेष लोगों को वह विशिष्टता प्रदान करता है जिसमें दुनिया के लोग भागीदार नहीं हो सकते। मैं इस युग में अपनी कमज़ोरी के कारण एक बच्चे के समान था और फिर स्वयं को ख़ुदा की दी हुई शक्ति में पचास मर्दों के समान देखा। इसलिए मेरा विश्वास है कि हमारा ख़ुदा हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है।

क्रम संख्या 12.	निशान का विवरण

एक साहिब नवाब मुहम्मद अली ख़ान नामक झज्जर के नवाबों में से लुधियाना में रहते थे और उन्होंने लुधियाना में इस उद्देश्य से एक सराय बनाई थी ताकि जितना अनाज बाहर से आता है उसका इस सराय में क्रय-विक्रय हो

और इसी सराय में अनाज बेचने वाले अपना माल उतारें। फिर ऐसा हुआ कि एक अन्य व्यक्ति इस काम में उनका बाटमार हो गया और नवाब साहिब की सराय बेकार हो गई। जिस से उनको बहुत कष्ट पहुंचा। उन्होंने इस संकट के समय दुआ के लिए मेरी ओर याचना की और इस से पूर्व कि उनका पत्र क़ादियान में पहुंचे मुझ पर ख़ुदा ने प्रकट कर दिया कि इस विषय का पत्र उन्होंने रवाना किया है और ख़ुदा तआला ने मुझे सूचना दी कि कुछ समय के लिए उनकी यह रोक उठा दी जएगी और इस चिन्ता से उनको मुक्ति दी जाएगी। तो मैंने इस समस्त हाल से समय से पूर्व उनको ख़बर कर दी। उनको यह बहुत आश्चर्य हुआ कि मेरा पत्र जो अविलम्ब भेजा गया था उसका ज्ञान क्योंकर हो गया? और फिर इस भविष्यवाणी के पूरा होने से एक अद्‌भुत रंग का विश्वास उसके हृदय में मेरे बारे में बैठ गया और वह हमेशा मुझे कहा करता था कि मैंने अपनी नोट बुक में इस भविष्यवाणी को याददाश्त के लिए लिख छोड़ा है और हमेशा उसको पढ़ लिया करता हूं। तथा कई लोगों को उसने अपनी यह किताब दिखाई और एक दिन मेरे सामने पटियाला में वज़ीर मुहम्मद हुसैन ख़ान साहिब को भी किताब में वह स्थान दिखाया और कहा कि मेरे विश्वास के लिए यह पर्याप्त है कि मेरे पत्र की सूचना ख़ुदा तआला की ओर से पत्र पंहुचने से पहले मिल गई जिसकी मुझे अविलम्ब ख़बर दी गई, और दूसरे यह कि यह मेरा काम जो प्रत्यक्ष में एक न होने वाली बात थी उसके हो जाने की समय से पूर्व सूचना दे दी। और मैं जानता हूं कि यह ज्ञान जो क़ुदरत के साथ मिला हुआ है ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य किसी की शक्ति में नहीं। ऐसा ही आदरणीय नवाब साहिब का जीवन के अन्त तक हमेशा यह हाल रहा कि इस भविष्यवाणी की याद से उनको एक आत्म विस्मृति की अवस्था हो जाती थी और हमेशा उसको पढ़ा करते थे। यहां तक कि उनकी मृत्यु का समय आया और मैं बीमार का हाल पूछने के लिए गया तो उस शाम के समय जिस की सुब्ह में उनका निधन होना था उन्होंने मुझे देखकर यह हिम्मत की कि खूनी बवासीर के अत्यन्त कष्ट के बावजूद जिसकी अधिकता से उनकी मृत्यु हुई अन्दर के दालान में चले गए और अपनी वह नोट बुक ले आए जिसमें वह भविष्यवाणी

उसके पूरा हो जाने की हालतों के साथ दर्ज थी। फिर वह पुस्तक मुझ को दिखाई और कहा कि मैं इसे बड़े प्रबन्ध के साथ सुरक्षित रखता हूं कि इस से ख़ुदा की क़ुदरत याद आती है और फिर दूसरे दिन प्रातःकाल मृत्यु पा गए। मुझे विश्वास है कि वह उनकी नोटबुक जिसे बड़े प्रबन्ध और प्रेमपूर्वक वह अपने पास रखते थे अब लुधियाना में उनके बेटे के पास सुरक्षित होगी और अवश्य होगी। तो देखो किस-किस पहलू से ख़ुदा तआला के निशान प्रकट हुए हैं।

क्रम संख्या 13.	निशान का विवरण

राजा जहांदाद ख़ान साहिब जो अब गुजरांवाला में एक्स्ट्रा असिस्टेण्ट हैं और इलाक़े के बड़े रईस आम और बहुत से देहात के जागीदार हैं एक निशान के वह गवाह हैं जिस के पूरा होने पर उन्होंने बैअत की। यदि हलफ़ लेकर पूछा जाए तो कदापि इन्कार नहीं करेंगे।

क्रम संख्या 14.	निशान का विवरण

एक बार मुझे अपने एक ज़मींदारी मुकद्दमे के बारे में जो तहसील बटाला में दायर था, स्वप्न आया कि झण्डा सिंह नामक एक काश्तकार पर जो धारा-5 एक्ट खेतिहर का काश्तकार था, हमारी डिग्री हो गई है। उस काश्तकार पर एक कीकर के पेड़ के कारण जिसको उसने अपने खेत से हमारी इजाज़त के बिना काट लिया था, चौदह रुपए की नालिश की गई थी। तो स्वप्न में दिखाया गया कि वह दावा की सुनवाई होकर डिग्री की गई। संयोग से मैंने इस स्वप्न को उसी आर्य के पास वर्णन किया जिसका मैं पहले ज़िक्र कर चुका हूं अर्थात् लाला शरमपत खत्री निवासी क़ादियान। फिर दूसरे दिन ऐसा संयोग हुआ कि कथित झण्डा सिंह अपने सोलह या सत्रह गवाहों के साथ कथित मुकद्दमे में अपने समर्थन में गवाही दिलाकर बटाला से क़ादियान में वापस आया और यह प्रसिद्ध किया कि मुक़द्दमा ख़ारिज हुआ। इस पर कथित आर्य ने हंसी के तौर पर कहा कि आप का स्वप्न ग़लत हो गया और चौदह रुपए की नालिश तहसील से ख़ारिज हुई। मैंने उसको कहा कि उसने निस्सन्देह झूठ बोला है। तब उसने कहा कि वह अकेला नहीं अपितु उसके साथ पन्द्रह या सोलह आदमी आए हैं जो गवाह थे। वे सब कहते हैं कि

मुक़द्दमा ख़ारिज हुआ और असंभव है कि इतने लोग झूठ बोलते हों। वह आर्य मस्जिद में जो बाज़ार के क़रीब है यह बात कहकर चला गया और मैं मस्जिद में अकेला रह गया यह अस्र का समय था तब एक ग़ैबी आवाज़ करने वाले ने ज़ोर से कहा कि डिग्री हो गई है। यह आवाज़ इतने ज़ोर से थी कि मैंने सोचा कि यह आवाज़ ओरों ने भी सुनी होगी। तब मैं उस आर्य से फिर मिला और अपने इल्हाम की सूचना दी परन्तु वह गवाहों की संख्या की अधिकता को देखकर विश्वास न कर सका और फिर भी हंस कर चला गया मानो वह अपने दिल में मेरे झूठे खयाल पर हंसा। दूसरे दिन मैं स्वयं बटाला में गया और तहसीलदार के मिस्ल पढ़ने वाले मथुरादास नामक से पूछा कि हमारे मुक़द्दमे में क्या आदेश हुआ? उसने कहा कि डिग्री हुई। मैंने कहा कि फिर क्या कारण है कि झण्डा सिंह और उसके समस्त गवाहों ने क़ादियान में जाकर यह प्रसिद्ध किया है कि मुक़द्दमा ख़ारिज हुआ। उसने कहा कि उन्होंने भी एक प्रकार से सच कहा है। बात यह है कि तहसीलदार नया है। मेरी अनुपस्थिति में वह मुक़द्दमा प्रस्तुत हुआ था और मैं संयोग से डेढ़ घण्टे तक किसी काम को चला गया था। अत: उस समय जब मैं नहीं था प्रतिवादी झण्डा सिंह ने तहसीलदार को कमिश्नर साहिब का एक फैसला दिखाया जिसमें लिखा हुआ था कि क़ादियान के काश्तकारों को अधिकार है कि मालिकों की इजाज़त के बिना अपने खेतों से आवश्यकतानुसार पेड़ काट लिया करें। इसलिए तहसीलदार ने उस फ़ैसले की नक़ल देख कर आप का मुक़द्दमा ख़ारिज कर दिया और उन्हें रुखसत कर दिया। तब लगभग एक घण्टे के बाद मैं आ गया और मुझे उन्होंने अपना वह आदेश दिखाया। मैंने कहा कि आपको उस प्रतिवादी ने धोखा दिया है। यह फैसला तो निरस्त हो चुका है। और इसके बाद में फायनेन्शल कमिश्नर साहिब का फैसला है जो मिस्ल में शामिल है जिससे यह आदेश निरस्त किया गया। तब तहसीलदार ने वह फ़ैसला देखकर अपना अदालती आदेश तुरन्त फाड़ दिया और नए सिरे से अदालती आदेश लिखकर आपकी डिग्री खर्च सहित की।★ यह वह भविष्यवाणी है जिसका गवाह न शरमपत अपितु अन्य

★ इन ज़मींदारी के संबंधों से जो प्रारंभिक जीवन से मेरे साथ रहे कोई आश्चर्य न करें क्योंकि

कई गवाह हैं जो ज़िन्दा हैं और क़सम खा कर वर्णन कर सकते हैं, परन्तु हलफ़ (क़सम) उसी निबंध का होगा जिसका नमूना न. 2 में ज़िक्र हो चुका है। और यह भविष्यवाणी बीस वर्ष से पुस्तक बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 551 में दर्ज होकर एक दुनिया में ख्याति प्राप्त कर चुकी है।

क्रम संख्या 15.	निशान का विवरण

एक बार मैं बहुत बीमार हुआ, यहां तक कि तीन भिन्न-भिन्न समयों में मेरे वारिसों ने मेरा अन्तिम समय समझ कर मस्नून तरीक़े पर मुझे तीन बार सूरह यासीन सुनाई। जब तीसरी बार सूरह यासीन सुनाई गई तो मैं देखता था कि मेरे कुछ अज़ीज़ जो अब दुनिया से गुज़र भी गए दीवारों के पीछे बेक़ाबू रोते थे और मुझे एक प्रकार का सख़्त बड़ी आंत का दर्द था और बार-बार मल के साथ ख़ून आता था। सोलह दिन निरन्तर ऐसी हालत रही और इसी बीमारी में मेरे साथ एक और व्यक्ति बीमार हुआ था। वह आठवें दिन इस संसार से कूच कर गया। हालांकि उसके रोग की तीव्रता ऐसी न थी जैसी मेरी। जब बीमारी को सोलहवां दिन चढ़ा तो उस दिन निराशा के पूर्णरूप से हालत प्रकट होकर तीसरी बार मुझे सूरह यासीन सुनाई गई और सब अज़ीजों के दिल में यह दृढ़ विश्वास था कि आज शाम तक यह क़ब्र में होगा। तब ऐसा हुआ कि जिस प्रकार ख़ुदा तआला ने संकटों से मुक्ति पाने के लिए अपने कुछ नबियों को दुआएं सिखाई थीं, मुझे भी ख़ुदा ने इल्हाम करके एक दुआ सिखाई और वह यह है –

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَ بِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ

और मेरे दिल में ख़ुदा तआला ने यह इल्हाम किया कि दरिया के पानी में जिस के साथ रेत भी हो हाथ डाल और ये पवित्र दुआ पढ़ और अपने सीने और सीने के पीछे तथा दोनों हाथों और मुंह पर उसको फेर कि इस से तू शिफ़ा (रोग से मुक्ति) पाएगा। तो जल्दी से दरिया का पानी रेत सहित मंगवाया गया और मैंने उसी प्रकार अमल करना आरंभ किया जैसा कि मुझे शिक्षा दी थी और उस समय

नबवी हदीसों पर विचार करने से स्पष्ट तौर पर मालूम होगा कि वह मसीह मौऊद हारिस कहलाएगा अर्थात् ज़मींदार और ज़मींदार के ख़ानदान से होगा। इसी से

हालत यह थी कि मेरे एक-एक बाल से आग निकलती थी और समस्त शरीर में दर्दनाक जलन थी और तबियत बेक़ाबू होकर इस बात की ओर झुका रही थी कि यदि मौत भी हो तो उत्तम ताकि इस हालत से मुक्ति हो। परन्तु जब वह अमल शुरू किया तो मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि प्रत्येक बार उन कलिमात-ए-तय्यिबा के पढ़ने और पानी को शरीर पर फेरने से मैं महसूस करता कि वह आग अन्दर से निकलती जाती है और उसके स्थान पर ठण्डक और आराम पैदा होता जाता है। यहां तक कि कभी उस प्याले का पानी समाप्त न हुआ था कि मैंने देखा कि बीमारी पूर्ण रूप से मुझे छोड़ गई और मैं सोलह दिन के बाद रात को तन्दुरुस्ती की नींद से सोया। जब सुबह हुई तो मुझे यह इल्हाम हुआ –

ان كنتم فى ريبٍ ممّا نزّلنا علٰى عبدنا فاتوا بشفاءٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ

अर्थात् यदि तुम्हें इस निशान में सन्देह हो जो शिफ़ा देकर हमने दिखाया तो तुम उसके उदाहरण में कोई और शिफ़ा प्रस्तुत करो। यह घटना है जिसकी पचास लोगों से अधिक को ख़बर है। कुछ उन में से मर गए और कुछ अभी तक ज़िन्दा हैं जो हलफ़ उठाकर वर्णन कर सकते हैं परन्तु हलफ़ उसी प्रकार का होगा जिस का नमूना न. 2 में विवरण है।

क्रम संख्या 16.	निशान का विवरण

आज़म बेग नामक एक व्यक्ति लाहौर का निवासी था जो एक्स्ट्रा असिस्टेण्ट था उसने अपनी चालबाज़ी से हमारे कुछ बेदख़ल भागीदारों को खड़ा किया जो क़ादियान के सरकारी कागज़ों के स्वामित्त्व की दृष्टि से भागीदार थे परन्तु स्वामित्त्व से बिल्कुल असंबंधित थे और क़ादियान के मुक़द्दमों के हज़ारों रुपए के ख़र्च और हानि में किसी काम में सम्मिलित नहीं हुए थे और कहा कि अपने हिस्से मुझे बेच दो मैं मुक़द्दमा करूंगा। अतः उनको कुछ थोड़ा रुपया देकर प्रसन्न कर दिया और उन से क़ादियान की जायदाद के मुक़द्दमे कराए और स्वयं उनको सहायता दी। मेरा भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर (स्वर्गीय) जिन को अपनी जीत पर बहुत विश्वास था बड़ी तत्परता से उत्तर देने में व्यस्त हुए। और चूंकि मैंने सुना हुआ था कि मेरे पिता श्री मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब (स्वर्गीय) ने

उन देहात पर हज़ारों रुपया खर्च किया हुआ है और भागीदार उस ख़र्च में कभी सम्मिलित नहीं हुए। इसलिए मैंने भी उनकी सफलता के लिए दुआ की। और दुआ के बाद यह इल्हाम हुआ – اُجِیْبُ کلّ دُعَائک اِلَّا فِیْ شُرَکاءِک अर्थात् मैं तेरी सब दुआएं स्वीकार करूंगा परन्तु भागीदारों के बारे में नहीं। तब मैं घर गया और सब अज़ीज़ों को एकत्र किया और अपने बड़े भाई को भी बुला लिया और यह ख़ुदा तआला का इल्हाम सुनाया। परन्तु अफ़सोस कि उन्होंने उत्तर दिया कि यदि हमें इस इल्हाम की पहले से सूचना होती तो हम इस मुकद्दमे को शुरू ही न करते। अब क्या करें कि मुकद्दमों के पेच में हम लिप्त हैं। परन्तु असल बात यह है कि अभी वह समय नहीं था कि वह मेरे मुंह की बातों पर पूर्ण विश्वास कर सकते। अंजाम यह हुआ कि यद्यपि प्रारंभिक अदालतों में उन्होंने सफलता पाई परन्तु अन्त में चीफ़ कोर्ट में खुली हार हुई और भागीदार अपने-अपने हिस्सों के मालिक ठहराए गए और लगभग सात हज़ार रुपए की उनको क़र्ज़े के कारण परेशानी हुई। इस भविष्यवाणी के क़दियान में बहुत से लोग पक्षी एवं विपक्षियों में से गवाह हैं जो क़सम देने पर मेरे इस बयान का सत्यापन कर सकते हैं।

क्रम संख्या 17.	**निशान का विवरण**

एक बार मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि मेरा भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर (स्वर्गीय) बहुत बीमार है। अतः मैंने वह स्वप्न कई लोगों के सामने वर्णन किया। जिन में से अब तक कुछ ज़िन्दा मौजूद हैं। तत्पश्चात् ऐसा संयोग हुआ वह भाई (स्वर्गीय) बहुत बीमार हुए। तब मैंने स्वप्न में देखा कि हमारे परिजनों में से एक बुज़ुर्ग जो मृत्यु पा चुके थे, मेरे भाई को अपनी ओर बुलाते हैं। तो वह उनकी ओर चले गए और उनके मकान के अन्दर दाख़िल हो गए। इसकी ताबीर यह थी कि वह मृत्यु पा जाएंगे। इसी बीच उनकी बीमारी बढ़ती गई यहां तक कि वह मुट्ठी भर हड्डियां रह गए। चूंकि मैं उन से प्रेम रखता था, मुझे उनकी हालत के बारे में बहुत बेचैनी हुई। तब मैंने उनके स्वस्थ होने के लिए ख़ुदा तआला की ओर ध्यान किया और उस ध्यान से मेरे तीन उद्देश्य थे। प्रथम मैं यह देखना चाहता था कि ऐसी हालत में मेरी दुआ ख़ुदा के दरबार में स्वीकार होती है या

नहीं। द्वितीय - दूसरे यह देखना चाहता था कि क्या ख़ुदा के प्रकृति के नियम में है कि ऐसे बड़े बीमार को भी अच्छा कर दे। तृतीय – तीसरे यह कि क्या ऐसा डराने वाला स्वप्न जो उनकी मौत की ओर संकेत करता था, रद्द हो सकता है या नहीं। तो जब मैं दुआ में व्यस्त हुआ तो थोड़े ही दिन अभी दुआ करते गुज़रे थे कि मैंने स्वप्न में देखा कि मेरा भाई पूर्ण तन्दुरुस्त की तरह किसी और चीज़ के सहारे के बिना अपने मकान में चल रहा है और इसी बारे में एक इल्हाम भी था, जिसके शब्द मुझे याद नहीं रहे। अत: इस स्वप्न और इल्हाम के अनुसार जो मेरी दुआ के स्वीकार होने को बताते थे। अल्लाह तआला ने उनको शिफ़ा (रोग मुक्ति) दी और इसके बाद पन्द्रह वर्ष तक पूरी तन्दुरुस्ती के साथ ज़िन्दा रहे। और फिर ख़ुदा के प्रारब्ध से मृत्यु पा गए। मैंने इस इल्हाम और स्वप्न को बहुत से लोगों के पास वर्णन किया था, जिनमें से कुछ अब तक ज़िन्दा हैं और क़सम खा कर मेरे वर्णन की पुष्टि कर सकते हैं परन्तु क़सम इस प्रकार की होगी जिसका नमूना न. 2 में लिखा गया।

क्रम संख्या 18.	निशान का विवरण

पन्द्रह वर्ष के उपरान्त जब मेरे भाई की मृत्यु का समय क़रीब आया तो मैं अमृतसर में था। मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि अब निश्चित तौर पर उनके जीवन का प्याला भर चुका और बहुत शीघ्र मृत्यु पा जाने वाले हैं। मैंने वह स्वप्न हकीम मुहम्मद शरीफ़ को जो अमृतसर में एक हकीम थे सुनाया और फिर अपने भाई को पत्र लिखा कि आप आख़िरत के मामलों की ओर ध्यान दें। क्योंकि मुझे दिखाया गया है कि आप के जीवन के दिन थोड़े हैं। उन्होंने सब घर वालों को इसकी सूचना दे दी और फिर कुछ सप्ताह में ही इस नश्वर संसार से गुज़र गए। इस घटना के गवाह भी कई पुरुष और स्त्रियां मौजूद हैं जो क़सम खाकर वर्णन कर सकते हैं अपितु जिस समय मेरा भाई मृत्यु प्राप्त हुआ तो मेरा अमृतसर का पत्र उन के संदूक में से निकला।

क्रम संख्या 19.	निशान का विवरण

एक बार मेरे एक निष्कपट दोस्त जो हमारे सिलसिले के अत्यन्त सहायक

और सच्चा इख़्लास रखते हैं। जिन्होंने अपने ऊपर अनिवार्य कर रखा है कि इस सिलसिले की सहायता के लिए एक सौ रुपया माह वार भेजा करें। जिन का नाम सेठ अब्दुर्रहमान हाजी अल्लाह रखा है। जो मद्रास के व्यापारी हैं अपनी किसी दुविधा में दुआ के याचक हुए और उनके बारे में मुझे यह इल्हाम हुआ – ''क़ादिर है वह बारगाह टूटा काम बनावे, बना बनाया तोड़ दे कोई उस का भेद न पावे।''

यह एक ख़ुशख़बरी उन का ग़म दूर करने के लिए थी। अतः कुछ सप्ताह के बाद ही ख़ुदा तआला ने उनको उस आने वाले ग़म से मुक्ति प्रदान की। सेठ साहिब अल्लाह तआला की कृपा से मद्रास में ज़िन्दा मौजूद हैं, वह इस घटना की पुष्टि कर सकते हैं। परन्तु क़सम नमूना न. 2 के अनुसार होगी।

क्रम संख्या 20.	निशान का विवरण

एक लुधियाना के पक्षपाती परन्तु नितान्त मूर्ख सादुल्लाह नामक ने जो हिन्दुओं में से नया मुसलमान हुआ था। मुझ पर यह ऐतराज़ किया था कि अमृतसर के मुबाहसे में जो ईसाइयों के साथ 1893 ई. में हुआ था उसका परिणाम बाद में यह हुआ कि अख़्वैम हुब्बी फ़िल्लाह हकीम नूरुद्दीन साहिब का दूध पीता बच्चा ख़ुदा के प्रारब्ध से मृत्यु पा गया। इस लज्जाजनक ऐतराज़ से उन निर्लज्ज कमीने स्वभाव का असल मतलब कि जो इस्लाम के बुज़ुर्गों के बच्चों के मरने से प्रसन्न होता है, यह था कि इस्लाम धर्म झूठा है और ईसाई धर्म सच्चा। इसलिए मैंने दुआ की कि ख़ुदा इस दुष्ट को इस आलोचना में भी अपमानित और बदनाम करे और मौलवी साहिब का उत्तम बदले में लड़का प्रदान करे। फिर उस समय कि मैंने इस मूर्ख का उत्तर लिखा और दुआ से निवृत्त हुआ तुरन्त मुझ पर नींद विजयी हो गई और स्वप्न में मैंने देखा कि कथित मौलवी साहिब की गोद में एक लड़का खेलता है जो उन्हीं का है और पहले बच्चों की अपेक्षा रंग और शक्ति में इतना अन्तर रखता है कि मैंने गुमान किया कि शायद किसी और पत्नी से यह लड़का है और उसी समय इस स्वप्न के समर्थन में मुझे इल्हाम भी हुआ कि लड़का पैदा होगा। फिर पांच वर्ष बाद इस भविष्यवाणी के अनुसार मौलवी साहिब के घर में साहिबज़ादा पैदा हुआ, जिसका नाम अब्दुलहयी रखा गया। ताकि ख़ुदा तआला ऐसे धर्म के

शत्रु को लज्जित करे जिसने पादरियों का सहायक बन कर इस्लाम पर आक्रमण किया। यह वह भविष्यवाणी है जो इस लड़के के जन्म से पांच वर्ष पूर्व सम्पूर्ण देश में पुस्तक "अन्वारुल इस्लाम" के द्वारा प्रसारित की गई थी। देखो अन्वारुल इस्लाम पृष्ठ 26 हाशिए का हाशिया। और यह पुस्तक पांच हज़ार छपवा कर लाखों लोगों में प्रसारित की गई। देखो ये वे निशान हैं जिनको एक दुनिया ने स्वयं अपनी आंखों से देख लिया और जो विलक्षण श्रेष्ठता से भरे हुए हैं।

क्रम संख्या 21.	**निशान का विवरण**

मुझे ख़ुदा तआला ने ख़बर दी कि मैं तुझे एक और लड़का दूंगा और वही चौथा लड़का है जो अब पैदा हुआ जिसका नाम मुबारक अहमद रखा गया और इसके पैदा होने की ख़बर मुझे लगभग दो वर्ष पूर्व दी गयी। और फिर उस समय दी गई कि जब उसके पैदा होने में लगभग दो महीने शेष रहते थे और फिर जब यह पैदा होने को था यह इल्हाम हुआ انی اسقط من اللہ واصیبہ अर्थात् मैं ख़ुदा के हाथ से पृथ्वी पर गिरता हूं और ख़ुदा ही की ओर जाऊंगा। मैंने अपने विवेचन से इसका यह अर्थ किया कि यह लड़का नेक होगा और उसका चेहरा ख़ुदा की ओर होगा और उसकी हरकत ख़ुदा की ओर होगी या यह कि शीघ्र मृत्यु पा जाएगा। इस बात का ज्ञान ख़ुदा को है कि इन दोनों बातों में से कौन सी बात उसके इरादे के अनुसार है। और मैंने इस भविष्यवाणी को अपनी पुस्तक 'अंजाम आथम' के पृष्ठ 183 और परिशिष्ट अंजाम आथम के पृष्ठ 58 में समय से पूर्व हज़ारों इन्सानों में प्रकाशित कर दिया है।

क्रम संख्या 22.	**निशान का विवरण**

मेरा पहला लड़का जो ज़िन्दा मौजूद है जिसका नाम महमूद है अभी वह पैदा नहीं हुआ था कि मुझे कश्फ़ी तौर पर उसके पैदा होने की सूचना दी गई और मैंने मस्जिद की दीवार पर उसका लिखा हुआ नाम यह पाया कि 'महमूद' तब मैंने इस भविष्यवाणी के प्रकाशित करने के लिए हरे रंग (सब्ज़ रंग) के काग़ज़ों पर एक विज्ञापन छापा, जिसके प्रकाशन की तिथि थी 1, दिसम्बर 1888 ई. है और यह विज्ञापन 1 दिसम्बर 1888 ई. हज़ारों लोगों में प्रकाशित किया गया।

और अब तक उसमें से बहुत से विज्ञापन मेरे पास मौजूद हैं।

क्रम संख्या 23.	**निशान का विवरण**

मेरा दूसरा लड़का जिस का नाम बशीर है अभी पैदा नहीं हुआ था कि उसके जन्म से तीन माह पूर्व अल्लाह तआला ने मुझे उसके पैदा होने की ख़ुशख़बरी दी। वह ख़ुशख़बरी "आईना कमालात-ए-इस्लाम" के पृष्ठ 266 में दर्ज होकर समय से पूर्व लोखों लोगों में प्रकाशित की गई। वह इबारत यह है-

سیولد لک الولد و یدنی منک الفضل

अर्थात् शीघ्र ही तेरे एक लड़का पैदा होगा और फ़ज़्ल तेरे निकट किया जाएगा। स्मरण रहे कि मेरे एक लड़के का नाम फ़ज़्ल अहमद है। तो भविष्यवाणी में यह संकेत है कि फ़ज़्ल इलाही के अतिरिक्त वह लड़का फ़ज़्ल अहमद के रूप और शक्ल से बहुत समान होगा। और सैकड़ों लोग जानते हैं कि यह लड़का फ़ज़्ल अहमद के बहुत समान है। क़ादियान के हिन्दू, मुसलमान सब जानते हैं।

क्रम संख्या 24.	**निशान का विवरण**

ख़ुदा तआला ने मेरे घर में तीसरा लड़का पैदा होने के लिए उसकी पैदायश से नौ महीने पूर्व अपने इल्हाम द्वारा मुझे सूचना दी। और वह इल्हाम 5 सितम्बर 1894 ई. को पुस्तक 'अन्वारुल इस्लाम' के पृष्ठ 39 के हाशिए में छाप कर करोड़ों लोगों में प्रसारित किया गया। क्योंकि अन्वारुल इस्लाम की पांच हज़ार प्रतियां छपी थीं। और पंजाब तथा हिन्दुस्तान के समस्त बड़े-बड़े शहरों और कस्बों में अपितु देहात में प्रसारित की गई थीं। और कथित इल्हाम जो अन्वारुल इस्लाम के पृष्ठ 39 में दर्ज है उसकी इबारत यह है – اِنَّا نبشّرك بِغُلام अर्थात् हम तुझे एक लड़का पैदा होने की ख़ुशख़बरी देते हैं। देखो 'अन्वारुल इस्लाम' पृष्ठ 39, हाशिया। फिर जब यह भविष्यवाणी लाखों लोगों, हिन्दुओं, ईसाइयों और मुसलमानों में भली भांति प्रसारित हो चुकी तो वह लड़का जिस का इल्हाम में वादा दिया गया था दिनांक 27 ज़िलक़ाद: 1312 हिज्री तदनुसार 24 मई 1895 ई. पैदा हुआ, जिसका नाम शरीफ अहमद रखा गया। देखो पुस्तक 'ज़ियाउल हक़' अन्तिम पृष्ठ टाइटल पेज।

क्रम संख्या 25.	निशान का विवरण

मेरे चौथे लड़के के बारे में एक और भविष्यवाणी का निशान है जो इन्शाअल्लाह पाठकों के लिए ज्ञान, ईमान और विश्वास में वृद्धि का कारण होगा। उसका विवरण यह है कि वह इल्हाम जिस को मैंने पुस्तक अंजाम आथम के पृष्ठ 182, 183 और परिशिष्ट अंजाम आथम के पृष्ठ 58 में लिखा है जिसमें चौथा लड़का पैदा होने के बारे में भविष्यवाणी है जो जनवरी 1897 ई. में कथित पुस्तक द्वारा अर्थात् "अंजाम-ए-आथम" और परिशिष्ट अंजाम-ए-आथम लाखों लोगों में प्रकाशित की गई। जिसको आज की तिथि तक जो 20 आगस्त 1899 ई. है पौने तीन वर्ष से कुछ अधिक दिन गुज़र गए हैं। इस थोड़ी सी अवधि को विरोधियों ने एक लम्बी अवधि समझ कर यह आलोचना आरंभ कर दी कि वह इल्हाम कहां गया जो अंजाम आथम के पृष्ठ 182, 183 और उसके परिशिष्ट के पृष्ठ 58 में दर्ज करके प्रकाशित किया गया था। और लड़का अब तक पैदा नहीं हुआ। यद्यपि मैं जानता हूं कि अन्याय करने वाले शत्रु किसी प्रकार राज़ी नहीं होते। यदि उदाहरण के तौर पर कोई लड़का इल्हाम के बाद दो, तीन माह में ही पैदा हो जाए तो यह शोर मचाते हैं कि भविष्यवाणी करने वाला तिब्ब के ज्ञान में भी पूर्ण महारत रखता है। इसलिए उस ने तबीबों (वैद्यों) की निर्धारित निशानियों के द्वारा मालूम कर लिया होगा कि लड़का ही पैदा होगा क्योंकि गर्भ के दिन थे और यदि उदाहरणतया किसी लड़के के पैदा होने की भविष्यवाणी उसके पैदा होने से तीन-चार वर्ष पूर्व की जाए तो फिर कहते हैं कि इस इतनी लम्बी अवधि तक अकारण कोई लड़का होना ही था। थोड़ी अवधि क्यों नहीं रखी। हालांकि यह विचार भी सर्वथा झूठ है। लड़का ख़ुदा की दैन है अपना हस्तक्षेप और अधिकार नहीं। और इस स्थान पर एक बादशाह भी यह दावा नहीं कर सकता कि इतने समय तक अवश्य लड़का ही पैदा हो जाएगा अपितु इतना भी नहीं कह सकता कि उस समय तक स्वयं ही जीवित रहेगा और या यह कि उसकी पत्नि जीवित रहेगी। अपितु सत्य तो यह है कि इन दिनों के निरन्तर संक्रामक रोगों ने जो ताऊन और हैज़ा है लोगों की ऐसी कमर तोड़ दी है कि कोई एक दिन के लिए भी अपने जीवन पर भरोसा नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति अपने दावे के समर्थन में ललकार

कर ऐसी भविष्यवाणी प्रकाशित करता है। यदि वह झूठा है तो ख़ुदा के स्वाभिमान की अवश्य यह मांग होना चाहिए कि उसे ऐसी मनोकामनाओं से सदैव वंचित रखे। क्योंकि उसका पुत्र के बिना और बेटों से विहीन मरना इससे उत्तम है कि लोग उसकी ऐसी मक्कारियों से धोखा खाएं और पथभ्रष्ठ हों और यही ख़ुदा की आदत है जिसको हमारे अहले सुन्नत उलेमा ने भी अपनी आस्था में सम्मिलित कर लिया है। सारांश यह कि मैंने बार-बार इन आलोचनाओं को सुन कर कि चौथा लड़का पैदा होने में देर हो गयी है, ख़ुदा के पास विनय पूर्वक हाथ उठाए। और मुझे क़सम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि मेरी दुआ और मेरे निरन्तर ध्यान के कारण 13 अप्रैल 1899 ई. को यह इल्हाम हुआ إِصْبِرْ مَلِيًّا سَأَهَبُ لَكَ غُلَامًا ذَكِيًّا अर्थात् कुछ थोड़ा समय सब्र कर कि मैं तुझे एक पवित्र लड़का शीघ्र ही प्रदान करूंगा और यह वीरवार का दिन था और ज़िलहज 1316 हिज्री की दूसरी तिथि थी जबकि यह इल्हाम हुआ। और इस इल्हाम के साथ ही यह इल्हाम हुआ – رَبِّ اَصِحَّ زوجتی هٰذه★ अर्थात् हे मेरे ख़ुदा ! मेरी इस पत्नी को बीमार होने से बचा। और बीमार से स्वस्थ कर। यह इस बात की ओर संकेत था कि इस बच्चे के पैदा होने के समय किसी बीमारी की शंका है। अत: इस इल्हाम को मैंने उस समस्त जमाअत को सुना दिया जो मेरे पास क़ादियान में मौजूद थे और भाई मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने बहुत से पत्र लिख कर अपने समस्त आदर्णीय दोस्तों को इस इल्हाम की ख़बर कर दी। और फिर जब 13 जून 1899 ई. का दिन चढ़ा जिस पर कथित इल्हाम की तिथि को जो 13 अप्रैल 1899 ई. को हुआ था पूरे दो महीने होते थे। तो ख़ुदा तआला की ओर से उसी लड़के की रूह मुझ में बोली और मैंने इल्हाम के तौर पर उसका यह कलाम सुना انی اسقط من اللہ و اصیبه अर्थात् अब मेरा समय आ गया और मैं अब ख़ुदा की ओर से और ख़ुदा के हाथों से पृथ्वी पर गिरूंगा और फिर उसी की ओर जाऊंगा। और उसी लड़के ने इसी प्रकार पैदायश से पहले 1, जनवरी 1897 ई. में बतौर इल्हाम यह कलाम मुझ से किया और सम्बोधित

★बच्चा पैदा होने के बाद जैसा कि इल्हाम का आशय था मेरी पत्नी बीमार हो गई। अत: अब तक रोग मौजूद हैं और सख़्त रोगों से ख़ुदा तआला की कृपा से स्वस्थ हो गई है। इसी से।

भाई थे कि मुझे में और तुम में एक दिन की मीआद है। अर्थात् हे मेरे भाइयो मैं पूरे एक दिन के बाद तुम्हें मिलूंगा। इस स्थान पर एक दिन से अभिप्राय दो वर्ष थे और तीसरा वर्ष वह है जिसमें जन्म हुआ और यह विचित्र बात है कि हज़रत मसीह ने तो केवल महद (पालने) में ही बातें कीं परन्तु इस लड़के ने पेट में ही बातें कीं परन्तु इस लड़के ने पेट में ही दो बार बातें कीं। तत्पश्चात् 14 जून 1899 ई. को वह पैदा हुआ और जैसा कि वह चौथा लड़का था उसी अनुकूलता की दृष्टि से उसने इस्लामी महीनों में से चौथा महीना लिया अर्थात् सफर माह। और सप्ताह के दिनों में से चौथा दिन लिया अर्थात् बुधवार और दिन के घंटों में से दोपहर के बाद चौथा घंटा लिया और भविष्यवाणी 20 फ़रवरी 1886 ई. के अनुसार सोमवार के दिन उसका अक़ीक़: हुआ। और उसकी पैदयाश के दिन अर्थात् बुधवार के दिन चौथे घण्टे में कई दिन के वर्षा न होने के बाद खूब वर्षा हुई।

ये चार लड़के हैं जिन की पैदायश से पहले इन के पैदा होने के बारे में ख़ुदा तआला ने हर बार मुझे ख़बर दी और ये हर चार भविष्यवाणियां न केवल मौखिक तौर पर लोगों को सुनाई गईं अपितु समय से पूर्व विज्ञापनों और पुस्तकों के द्वारा लाखों लोगों में प्रसिद्ध की गईं तथा पंजाब और हिन्दुस्तान में अपितु समस्त संसार में इस महान ग़ैब की ख़बर बताने का उदाहरण नहीं मिलेगा। और किसी की कोई भविष्यवाणी ऐसी नहीं पाओगे कि प्रथम तो ख़ुदा तआला ने चार लड़कों के पैदा होने की इकट्ठी ख़बर दी और फिर प्रत्येक लड़के के पैदा होने से पहले अपने इल्हाम से सूचना दे दी कि वह पैदा होने वाला है। और फिर वे समस्त भविष्यवाणियां लाखों लोगों में प्रकाशित की जाएं। समस्त संसार में फिरो। यदि उसका कहीं उदाहरण है तो प्रस्तुत करो। और विचित्रतर यह कि चार लड़कों के पैदा होने की सूचना जो सर्वप्रथम हर चार लड़कों में से एक भी नहीं हुआ था और कथित विज्ञापन में ख़ुदा तआला ने स्पष्ट तौर पर चौथे लड़के का नाम मुबारक अहमद रख दिया है। देखो पृष्ठ 3 विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886 ई. दूसरे कालम की पंक्ति नम्बर 7 तो जब इस लड़के का नाम मुबारक अहमद रखा गया तब इस नाम रखने के बाद सहसा वह 20 फरवरी 1886 ई. की भविष्यवाणी याद आ गई।

अब पाठकों के याद रखने के लिए इन चार लड़कों के बारे में यह वर्णन करना चाहता हूं कि किस-किस तिथि में उन के पैदा होने के बारे में भविष्यवाणी हुई और फिर किस-किस तिथि में वे पैदा हुए। और उत्तम होगा कि प्रत्येक सत्यभिलाषी ऐसी पुस्तकें और ऐसे विज्ञापन अपने पास रखे। क्योंकि एक अवधि के बाद फिर इन विज्ञापनों का मिलना कठिन होगा। और जब कोई काग़ज़ मिल न सके तो निर्लज्ज दुश्मन बावजूद इसके कि उसने स्वयं उस विज्ञापन या पुस्तक को कई बार पढ़ा हो। केवल सच छुपाने के लिए इन्कार करना आरंभ कर देता है। तो यह कर्त्तव्य हमारी जमाअत का है कि इन इन्कार करने वालों को मारने वाले हथियारों से ख़ाली न रहें अपितु यह पुस्तकों और विज्ञापनों का सम्पूर्ण भण्डार एक स्थान पर भली भांति क्रमबद्ध करके जिल्द बना कर रखें ताकि आवश्यकता के समय अत्याचारी विरोधी को आसानी से दिखा सकें।

और इन चारों लड़कों के पैदा होने के संबंध में भविष्यवाणी की तिथि और फिर पैदा होने के समय पैदायश की तिथि यह है कि महमूद जो मेरा बड़ा बेटा है। उसके पैदा होने के बारे में 10 जुलाई 1888 ई. के विज्ञापन में और इसी प्रकार विज्ञापन 1 दिसम्बर 1888 ई. में जो सब्ज़ रंग के काग़ज़ पर छापा गया था भविष्यवाणी की गई और सब्ज़ (हरा) रंग के विज्ञापन में यह भी लिखा गया कि इस पैदा होने वाले लड़के का नाम महमूद रखा जाएगा। और यह विज्ञापन महमूद के जन्म से पूर्व ही लाखों लोगों में प्रकाशित किया गया। अतः अब तक हमारे विरोधियों के घरों में ये सब्ज़ रंग के हज़ारों विज्ञापन पड़े हुए होंगे। और ऐसा ही 10, जुलाई 1888 ई. के विज्ञापन भी प्रत्येक के घर में मौजूद होंगे। फिर जब कि इस भविष्यवाणी की प्रसिद्धि विज्ञापनों द्वारा पूर्ण स्तर पर पहुंच गई और मुसलमानों, ईसाइयों तथा हिन्दुओं में से कोई भी फ़िर्क़ा शेष न रहा जो इस से सूचित न हो। तब ख़ुदा तआला की कृपा और दया से 12 जनवरी 1889 ई. तद्नुसार 9 जमादिउल अव्वल 1306 हिज्री दिन शनिवार महमूद पैदा हुआ। और मैंने इसके पैदा होने की सूचना उस विज्ञापन में दी है जिस के शीर्षक पर "तक्मील-ए-तब्लीग़" मोटी क़लम से लिखा हुआ है जिस में बैअत की दस शर्तें

दर्ज हैं, और उसके पृष्ठ 4 में मौऊद बेटे के बारे में यह इल्हाम है –

اے فخرِ رُسل قربِ تو معلومم شد دیر آمدۂ زراہِ دور آمدۂ

(अनुवाद - हे रसूलों के गर्व! तेरा सामीप्य तो मुझे ज्ञात हो गया। तुम देर से और दूर के मार्ग से आए हो अर्थात समय की दृष्टि से यद्यपि तुम बाद में आए हो परंतु ख़ुदा के सामीप्य के कारण समस्त रसूल तुझ पर गर्व करते हैं। अनुवादक)

और मेरा दूसरा लड़का जिस का नाम बशीर अहमद है उसके पैदा होने की भविष्यवाणी "आईना कमालात-ए-इस्लाम" के पृष्ठ 266 में की गई है और इस पुस्तक के पृष्ठ 262 की चौथी पंक्ति से मालूम होता है कि इस भविष्यवाणी की तिथि 10 दिसम्बर 1892 ई. है और भविष्यवाणी के शब्द ये हैं –

یاتی قمر الانبیاء وامرک یتأتی۔ یسرّ اللہ وجھک وینیر برھانک۔ سیولدلک الولد ویدنی منک الفضل ان نوری قریب

देखो आईना कमालात-ए-इस्लाम का पृष्ठ 226 अर्थात् नबियों का चन्द्रमा आएगा और तेरा काम बन जाएगा। तेरे लिए एक लड़का पैदा किया जाएगा और फ़ज़्ल तुझ से निकट किया जाएगा अर्थात् ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) का कारण होगा और दूसरे यह कि शक्ल और रूप में फ़ज़्ल अहमद से जो दूसरी पत्नी से मेरा लड़का है समानता रखेगा। और मेरा प्रकाश क़रीब है (शायद प्रकाश से अभिप्राय मौऊद बेटा हो) फिर जब यह पुस्तक आईना कमालात जिसमें यह भविष्यवाणी तिथि 10 दिसम्बर 1892 ई. में दर्ज है और जिसका दूसरा नाम 'दाफ़िउलवसावस' भी है फरवरी 1893 में प्रकाशित हो गई जैसा कि उसके टायटल पेज से प्रकट है। तो 20 फ़रवरी 1893 ई. को जैसा कि 20 अप्रैल 1893 ई. के विज्ञापन से प्रकट है। इस भविष्यवाणी के अनुसार वह लड़का पैदा हआ जिस का नाम बशीर अहमद रखा गया। और वास्तव में वह लड़का शक़्ल की दृष्टि से फ़ज़्ल अहमद से समानता रखता है जैसा कि भविष्यवाणी में साफ संकेत किया गया। और यह लड़का भविष्यवाणी की तिथि दिसम्बर 1892 ई. से संभवत: पांच माह बाद पैदा हुआ। और उस के पैदा होने की तिथि में 20 अप्रैल 1893 ई. को विज्ञापन छपवाया

गया। जिसके शीर्षक पर यह इबारत है – इन्कारियों के दोषी करने के लिए एक और भविष्यवाणी विशेष मुहम्मद हुसैन बटालवी के ध्यान योग्य है।

और मेरा तीसरा लड़का जिसका नाम शरीफ़ अहमद है। इसके पैदा होने की भविष्यवाणी मेरी पुस्तक "अन्वारुल इस्लाम" पृष्ठ 39 के हाशिए पर दर्ज है। और यह पुस्तक सितम्बर 1894 में प्रकाशित हुई थी और सितम्बर 1894 ई. को यह भविष्यवाणी कथित पुस्तक के पृष्ठ 39 कि हाशिए पर छापी गई थी। और फिर जैसा कि पुस्तक ''ज़ियाउल हक़'' के अन्तिम पृष्ठ टायटल पेज पर प्रकाशित किया गया है कि यह लड़का अर्थात् शरीफ़ अहमद 24 मई 1895 ई. तद्नुसार 27 ज़िलक़ादः 1312 हिज्री को पैदा हुआ। अर्थात् भविष्वयाणी के प्रकाशित होने के बाद नौवें महीने में पैदा हुआ।

और मेरा चौथा लड़का जिसका नाम मुबारक अहमद है। इसके बारे में भविष्यवाणी 20 फ़रवरी 1886 ई. के विज्ञापन में की गयी। और फिर 'अंजाम आथम' के पृष्ठ 183 में दिनांक 14 सितम्बर 1896 ई. को यह भविष्यवाणी की गई तथा पुस्तक 'अंजाम आथम' माह सितम्बर 1896 ई. देश में अच्छी तरह प्रकाशित हो गयी और फिर यह भविष्यवाणी परिशिष्ट 'अंजाम आथम' के पृष्ठ 58 में इस शर्त के साथ की गई कि अब्दुल हक़ ग़ज़नवी जो अमृतसर में मौलवी अब्दुल जब्बार ग़ज़नवी की जमाअत में रहता है नहीं मरेगा जब तक यह चौथा बेटा पैदा न होले। और इस पृष्ठ 58 में यह भी लिखा गया था कि यदि अब्दुल्ल हक़ ग़ज़नवी हमारे विरोध में सच पर है और ख़ुदा के दरबार में मान्यता रखता है तो इस भविष्यवाणी को दुआ करके टाल दे। और फिर यह 'अंजाम आथम' के परिशिष्ट के 15 में की गई। फिर ख़ुदा ने मेरे सत्यापन के लिए और समस्त विरोधियों को झुठलाने के लिए और अब्दुल हक़ ग़ज़नवी को होशियार करने के लिए इस चौथे लड़के की भविष्याणी को 14 जून 1899 ई. में जो तदनुसार 4 सफ़र 1317 हिज्री थी बुधवार के दिन पूरा कर दिया। अर्थात् वह नेक चौथा लड़का कथित तिथि में पैदा हो गया। इसलिए इस पुस्तक के लिखने का मूल उद्देश्य यही है कि ताकि वह महान भविष्यवाणी जिस का वादा चार बार ख़ुदा तआला की ओर से हो चुका

था उस को देश में प्रकाशित किया जाए। क्योंकि मनुष्य को यह हिम्मत नहीं हो सकती कि ये योजनाएं सोचे कि प्रथम तो सम्मिलित तौर पर चार लड़कों के पैदा होने की भविष्यवाणी करे। जैसा कि 20 फ़रवरी 1886 ई. के विज्ञापन में की गई और फिर प्रत्येक लड़के के पैदा होने से पहले उसके पैदा होने की भविष्यवाणी करता जाए तथा उसके अनुसार लड़के पैदा होते जाएं। यहां तक कि चार की संख्या जो पहली भविष्यवाणियों में ठहराई गई थी वह पूरी हो जाए। हालांकि यह भविष्यवाणी उसकी ओर से हो कि जो केवल इफ़्तिरा से स्वयं को ख़ुदा तआला का मामूर ठहराता है। क्या संभव है कि ख़ुदा तआला मुफ़्तरी की ऐसी निरन्तर मदद करता जाए जो 1886 ई. से 1899 ई. चौदह वर्ष तक वह मदद निरन्तर जारी रहे। क्या कभी ख़ुदा ने मुफ़्तरी का ऐसा समर्थन किया? या समस्त संसार में इसका कोई उदाहरण भी है? देखो एक वह युग था कि इन चार लड़कों में से कोई भी न था और उस समय एक बूढ़ा कमज़ोर और हमेशा बीमार रहने वाला आदमी जिसकी प्रत्येक सांस मौत की ख़तरनाक हालत में है भविष्यवाणी करता है कि अवश्य है कि मेरे घर में चार लड़के पैदा हों। और फिर जब एक लड़के के पैदा होने का समय कुछ क़रीब आता है तो इल्हाम द्वारा उसके पैदा होने की ख़ुश ख़बरी देता है। और फिर ऐसा ही इल्हाम के द्वारा दूसरे लड़के के पैदा होने की ख़बर देता है। फिर ऐसा ही तीसरे लड़के के पैदा होने से पहले उसके पैदा होने की भविष्यवाणी प्रकाशित करता है फिर इस से पहले कि चौथा लड़का पैदा हो बड़े दावे और ज़ोर-शोर से उसके पैदा होने की ख़बर देता है। यहां तक कि कहता है कि अमुक व्यक्ति नहीं मरेगा जब तक वह चौथा बेटा पैदा न हो जाए। तो उसके कथनानुसार चौथा बेटा भी पैदा हो जाता है। अब सोच कर देखो कि क्या ये मनुष्य की कार्रवाइयां हैं? और क्या आकाश के नीचे यह शक्ति किसी को दी गई है कि इस ज़ोर-शोर की निरन्तर भविष्यवाणियां मैदान में खड़े होकर प्रकाशित करे और फिर वे निरन्तर पूरी हो जाएं। देखो एक वह समय था कि अंजाम आथम के परिशिष्ट के पृष्ठ 15 में यह इबारत लिखी गई थी।

एक और इल्हाम है जो 20 फ़रवरी 1886 ई. में प्रकाशित हुआ था और

वह यह है कि ख़ुदा तीन को चार करेगा उस सयम इन तीनों लड़कों का जो अब मौजूद हैं नामोनिशान न था। और इस इल्हाम के मायने ये थे कि तीन लड़के होंगे और फिर एक और होगा जो तीन को चार कर देगा। तो एक बड़ा भाग इसका पूरा हो गया। अर्थात् ख़ुदा ने मुझे तीन लड़के इस निकाह से प्रदान किए जो तीनों मौजूद हैं। केवल एक की प्रतीक्षा है। अब देखो यह कितना महान निशान है? क्या इन्सान के अधिकार में है कि प्रथम इफ़्तिरा के तौर पर तीन या चार लड़कों की ख़बर दे और फिर वे पैदा भी हो जाएं? इति.

यह इबारत जिस पर हम ने लकीर खींची है अंजाम आथम के परिशिष्ट की है। यदि तुम इस परिशिष्ट को खोल कर पढ़ोगे तो उसके पृष्ठ 15 में यही इबारत पाओगे। अब ख़ुदा तआला की क़ुदरत का निशान देखो कि वह चौथा बेटा जिसके पैदा होने के बारे में इस पृष्ठ 15 परिशिष्ट अंजाम आथम में प्रतीक्षा दिलाई गई और पाठकों को आशा दिलाई गई है कि एक दिन अवश्य आएगा कि जैसा कि ये तीन लड़के पैदा हो गए हैं वह चौथा लड़का भी पैदा हो जाएगा। तो सज्जनों वह दिन आ गया और वह चौथा लड़का जिसका इन पुस्तकों में चार बार वादा दिया गया था सफ़र 1317 हिज्री की चौथी तिथि में बुधवार के दिन पैदा हो गया। विचित्र बात है कि इस लड़के के साथ चार की संख्या को प्रत्येक पहलू से संबंध है। इसके बारे में चार भविष्यवाणियां हुईं। ये चार सफ़र 1317 हिज्री को पैदा हुआ। इसकी पैदायश का दिन सप्ताह का चौथा दिन था अर्थात् बुध। यह दोपहर के बाद चौथे घण्टे में पैदा हुआ। यह स्वयं चौथा था।

क्रम संख्या 26.	**निशान का विवरण**

एक महान भविष्यवाणी वह है जो लाहौर टाउन हाल में जल्सा धर्म महोत्सव के समय पूरी हुई। उसका विवरण यह है कि इस से पूर्व कि वह धर्म महोत्सव हो जो 26, 27, 28 दिसम्बर 1896 ई. को कथित स्थान में हुआ था। जिसमें प्रत्येक धर्म के किसी प्रसिद्ध व्यक्ति ने उस धर्म के समर्थन में जल्से के सदस्यों द्वारा निर्धारित प्रश्नों के उत्तर सुनाए थे और मैंने भी इस जल्से में सुनाने कि लिए एक निबन्ध लिखा था ख़ुदा तआला की ओर से एक इल्हाम हुआ। जिस से निश्चित

और अटल तौर पर समझा जाता था कि समस्त निबंधों में से मेरा ही निबन्ध ऊंचा रहेगा तो मैंने इस विचार से कि ऐसे धार्मिक जल्से के अवसर पर मेरे इल्हामों की सच्चाई लोगों पर खुल जाए। इस से पूर्व कि लोग अपने-अपने निबन्ध सुनाएं अपने इस इल्हाम को एक विज्ञापन द्वारा प्रकाशित कर दिया और फिर बाद में मेरे इल्हाम के अनुसार सामान्य राय यही हुई कि मेरा निबन्ध समस्त निबंधों पर विजयी है। अतः उन्हीं में सिविल मिलिट्री ग़ज़ट लाहौर और आबज़र्वर ने भी मेरे इस बयान की ज़ोर के साथ पुष्टि की। और जैसा कि मैंने ख़ुदा तआला के इल्हाम के द्वारा समय से पूर्व समस्त लोगों में प्रकाशित कर दिया था कि मेरा ही निबन्ध विजयी रहेगा। वास्तव में ऐसा ही प्रकटन में आया। और मेरा निबंध इस जल्से में नितान्त श्रेणी की श्रेष्ठता की दृष्टि से सुना गया और उसकी प्रशंसा में लाहौर में धूम मच गई।

यह विज्ञापन जिस की मैंने चर्चा की है लाहौर के धर्म महोत्सव से पूर्व न केवल लाहौर में ही प्रसिद्ध किया गया था अपितु कथित जल्से की तिथियों से कई दिन पूर्व पंजाब के अधिकांश शहरों में और हज़ारों लोगों में बहुतायत के साथ प्रकाशित हो चुका था और शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी और मौलवी अहमदुल्लाह, सनाउल्लाह अमृतसरी, मौलवी अब्दुल जब्बार ग़ज़नवी फिर अमृतसरी तथा दूसरे कई मौलवियों, ईसाइयों और हिन्दुओं के पास पहुंच चुका था और सामान्य मुसलमानों में प्रचुरता से प्रकाशित किया गया था। यही कारण है कि धर्म महोत्सव के बाद सत्य के अभिलाषियों के हृदयों पर इस भविष्यवाणी का बहुत ही प्रभाव हुआ। क्योंकि जब उन्होंने देखा कि वास्तव में यही निबन्ध दूसरे निबन्धों पर विजयी रहा और समस्त फ़िर्क़ों का सामान्य ध्यान और रुचि इसी निबंध की ओर हो गयी। तब न्यायप्रिय लोगों के हृदयों पर इल्हामी भविष्यवाणी की सच्चाई ने विचित्र प्रभाव किया यहां तक कि साहिब ने सियालकोट से सौ रुपया अपनी खुशी के जोश से भेजा कि ख़ुदा तआला ने इस निबन्ध को एक निशान के रंग में प्रकट किया। अर्थात् उसने एक तो व्यक्तिगत विशेषता इस निबन्ध में ऐसी रखी कि प्रत्येक फ़िर्क़े का इन्सान धार्मिक रोकों के बावजूद अनायास इस निबन्ध की प्रशंसा करने लगा। और पंजाब के लगभग समस्त अखबार एक जीभ से बोल उठे कि धर्म महोत्सव के समस्त

निबन्धों का प्राण यही निबन्ध है और सिविल मिलिट्री ग़ज़ट जो एक अर्ध सरकारी अखबार समझा जाता है उसने भी यही गवाही दी कि इसी निबंध की मान्यता प्रकट हुई। और आबज़र्वर ने लिखा कि यह निबन्ध इस योग्य है कि अंग्रेज़ी में अनुवाद होकर यूरोप में प्रकाशित किया जाए। इस से प्रकट है कि किस वैभव एवं प्रतिष्ठा से यह भविष्यवाणी पूरी हुई? जिस के बारे में ईसाइयों, हिन्दुओं, मुसलमानों और स्वयं जल्से के सदस्यों ने इतनी श्रेष्ठतर और अतुल्यता का इक़रार किया कि जिस से बढ़कर संभव नहीं और विचित्रतर यह कि ये लोग जानते थे कि हमारे इस इक़रार से भविष्यवाणी पूरी हो जाएगी। परन्तु फिर भी उन पर आत्म विस्मृति की कुछ ऐसी अवस्था छा गई कि अनायास उनके मुंह से ये वाक्य निकल गए कि यही निबन्ध बाला (श्रेष्ठ) रहा। और अत्यन्त आश्चर्य में डालने वाली बात यह है कि जो आर्यों में से इस जल्से के प्रतिष्ठित कर्त्ता धर्त्ता बनाए गए थे सर्वप्रथम उन्होंने ही यह कहा कि यही निबन्ध है जो दूसरे निबंधों पर विजयी रहा।

अब मैं उचित समझता हूं कि नीचे उस विज्ञापन की नक़ल लिख दूं कि जो इस धर्म महोत्सव से पहले हज़ारों लोगों में प्रकाशित किया गया और जिस में बुलन्द आवाज़ में बताया गया था कि यही निबन्ध दूसरे समस्त निबन्धों पर विजयी रहेगा और वह यह है –

जल्सा धर्म महोसत्व से संबंधित भविष्यवाणी के विज्ञापन की नक़ल जो 21 दिसम्बर 1896 ई. से पूर्व प्रकाशित की गई।

सत्याभिलाषियों के लिए एक महान ख़ुशख़बरी

जल्सा धर्म महोस्तव जो लाहौर टाउन हाल में 26,27,28 दिसम्बर 1896 ई. को होगा। उसमें इस ख़ाकसार का एक निबन्ध पवित्र क़ुर्आन की ख़ूबियों और चमत्कारों के बारे में पढ़ा जाएगा। यह वह निबन्ध है जो मानवीय शक्तियों से श्रेष्ठतर और ख़ुदा के निशानों में से एक निशान और उसके विशेष समर्थन से लिखा गया है। इसमें पवित्र क़ुर्आन की सच्चाइयां और अध्यात्म ज्ञान दर्ज हैं जिनसे सूर्य के समान रोशन हो जाएगा कि वास्तव में यह ख़ुदा का कलाम और रब्बुल आलमीन

की किताब है। और जो मनुष्य इस लेख को आद्योपान्त पांचों प्रश्नों के उत्तर में सुनेगा, मैं विश्वास करता हूं कि उसमें एक नया ईमान पैदा होगा और उसमें एक नया प्रकाश चमक उठेगा और ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम की एक जामिअ तफ़्सीर (व्याख्या) उसके हाथ आ जाएगी। मेरा यह भाषण मानवीय व्यर्थ बातों से पवित्र और डीगें मारने के दाग़ से शुद्ध है। मुझे इस समय केवल लोगों की हमदर्दी ने इस विज्ञापन के लिखने के लिए विवश किया है ताकि वह पवित्र क़ुर्आन की सुन्दरता एवं सौन्दर्य का अवलोकन करें और देखें कि हमारे का कितना अन्याय है कि वे अंधकार से प्रेम करते और इस प्रकाश से नफ़रत रखते हैं। मुझे सर्वज्ञ ख़ुदा ने इल्हाम से सूचित किया है कि यह वह निबन्ध है जो सब पर विजयी होगा। और इसमें सच्चाई, दूरदर्शिता और मारिफ़त का वह प्रकाश है जो दूसरी क़ौमें बशर्ते कि उपस्थित हों और उसे आदि से अन्त तक सुनें शर्मिन्दा हो जाएंगी और कादपि समर्थ नहीं होगा कि अपनी किताबों की ये ख़ूबियां दिखा सकें। चाहे वे ईसाई हों, चाहे आर्य, चाहे सनातन धर्म वाले अथवा कोई अन्य। क्योंकि ख़ुदा तआला ने इरादा किया है कि उस दिन उसकी पवित्र किताब का जल्वा प्रकट हो। मैंने कश्फ़ की अवस्था में इसके बारे में देखा कि मेरे महल पर ग़ैब (परोक्ष) से एक हाथ मारा गया और उस हाथ के छूने से उस महल में से एक चमकने वाला प्रकाश निकला जो चारों ओर फैल गया और मेरे हाथों में भी उसका प्रकाश हुआ। तब एक व्यक्ति जो मेरे पास खड़ा था वह ऊंचे स्वर से बोला अल्लाहु अकबर ख़रिबत ख़ैबर इस की यह ताबीर (स्वप्नफल) है कि इस महल से अभिप्राय मेरा हृदय है जो प्रकाशों के उतरने और परस्पर एक दूसरे में समा जाने का स्थान है और वह प्रकाश क़ुर्आन के अध्यात्म ज्ञान हैं। और ख़ैबर से अभिप्राय समस्त ख़राब धर्म हैं जिनमें शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और झूठ की मिलौनी है तथा इन्सान को ख़ुदा का स्थान दिया गया या ख़ुदा की विशेषताओं को अपने कामिल महल से नीचे गिरा दिया है। फिर मुझे जतलाया गया कि इस निबन्ध के खूब फैलने के बाद झूठे धर्मों का झूठ खुल जाएगा और पृथ्वी पर दिन-प्रतिदिन क़ुर्आनी सच्चाई फैलती जाएगी। जब तक कि अपना दायरा पूरा करे। फिर मैं उस कश्फ़ी अवस्था से इल्हाम की

ओर लाया गया और मुझे यह इल्हाम हुआ–ان اللہ معک انّ اللہ یقوم اینما قمت अर्थात् ख़ुदा तेरे साथ है ख़ुदा वहीं खड़ा होता है जहां तू खड़ा हो। यह ख़ुदा की सहायता का एक रूपक है। अब मैं अधिक लिखना नहीं चाहता। प्रत्येक को यही सूचना देता हूं कि अपनी-अपनी हानि करके भी इन मआरिफ़ के सुनने के लिए लाहौर में जल्से की तिथि पर अवश्य आएं कि उनकी बुद्धि एवं ईमान को इसके वे लाभ प्राप्त होंगे जिन का वे गुमान नहीं कर सकते होंगे।

वस्सलामु अला मनित्तबअल हुदा★

ख़ाकसार – ग़ुलाम अहमद क़ादियान से 21 दिसम्बर 1896 ई.

नक़ल असल के अनुसार की गई।

क्रम संख्या 27.	**निशान का विवरण**

जब मैंने पुस्तक बराहीन अहमदिया लिखी तो उस समय मुझे छपवाने की शक्ति न थी। मैंने ख़ुदा के दरबार में दुआ की तो इन शब्दों में उत्तर आया कि बिलफेल नहीं (क्रियात्मक तौर पर नहीं) फिर एक अवधि तक प्रत्येक प्रकार के प्रयासों के बावजूद इस पुस्तक को छपवाने के लिए पैसों का प्रबन्ध न हो सका और लोगों को प्रेरित करने और विज्ञापन प्रकाशित करने के बावजूद देर तक कुछ ध्यान न हुआ। अत: इसी प्रकार इल्हाम पूरा हुआ जिस प्रकार बताया गया था। यहां तक कि लोगों की बेध्यानी ने इस इल्हाम की सूचना रखने वालों को आश्चर्य में डाला और जिन लोगों के समक्ष यह भविष्यवाणी वर्णन की गई थी उनके दिल पर इस घटना का बहुत प्रभाव हुआ। इस इल्हाम की सूचना शेख

★ स्वामी शोगन चन्द्र साहिब ने अपने विज्ञापन में मुसलमानों, ईसाइयों और आर्य सज्जनों को क़सम दी थी कि उनके प्रसिद्ध उलेमा इस जल्से में अपने-अपने धर्म की ख़ूबियां अवश्य वर्णन करें। अत: हम स्वामी साहिब को सूचना देते हैं कि हम इस बुज़ुर्ग क़सम के सम्मान के लिए आप की इच्छा की पूर्ति हेतु तैयार हो गए हैं और इन्शा अल्लाह हमारा निबन्ध आपके जल्से में पढ़ा जाएगा। इस्लाम वह धर्म है जो ख़ुदा का नाम मध्य में आने से सच्चे मुसलमान को पूर्ण आज्ञापालन की हिदायत देता है। परन्तु अब हम देखेंगे कि आपके भाई आर्यों तथा पादरी साहिबों को उनके परमेश्वर या यसू के सम्मान का कितना पास है और वे ऐसे महान पवित्र के नाम पर उपस्थित होने के लिए तैयार हैं या नहीं? इसी से। (हाशिया 31 दिसम्बर 1896 ई. जल्सा धर्म महोत्सव के विज्ञापन से संबंधित)

हामिद अली और लाला शरमपत खत्री और मियां जान मुहम्मद इमाम मस्जिद तथा अन्य कई लोगों को क़ादियान निवासियों में से समय से पूर्व दी गई थी तो क़सम खा कर वर्णन कर सकते हैं। और यह इल्हाम बीस वर्ष की अवधि से पुस्तक बराहीन अहमदिया में दर्ज है। देखो पृष्ठ 225

क्रम संख्या 28.	निशान का विवरण

जब इस इल्हाम पर जो अभी मैंने न. 27 में वर्णन किया है कुछ देर हो गई और बराहीन अहमदिया के छपवाने का शौक़ हद से बढ़ा और किसी की ओर से आर्थिक सहायता न हुई तो मेरे दिल में आघात पहुंचना आरंभ हुआ। तब मैंने उसी बेचैनी की अवस्था में दुआ की। इस पर ख़ुदावन्द शक्तिशाली और कृपालु की ओर से यह इल्हाम हुआ –

هُزِّ اِلَيْكَ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسَاقِطْ عَلَيْكَ رُطَبًا جَنِيًّا

अर्थात् खजूर का पेड़ या उसकी शाखाओं में से कोई शाखा हिला। तब तुझ पर तरोताज़ा खजूरें गिरेंगी। मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि इस इल्हाम की ख़बर मैंने मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब को भी दी थी। और इस ज़िले के एक एक्स्ट्रा असिसटेण्ट को भी जिस का नाम हाफ़िज़ हिदायत अली था तथा कई अन्य लोगों को भी सूचना दी और क़ादियान के वे दोनों हिन्दू अर्थात् शरमपत और मलावामल जिनकी चर्चा कई बार इस पुस्तक में आई है, उनको भी मैंने इस इल्हाम की सूचना दे दी थी। फिर इस से पूर्व कि इल्हाम के पूरा होने के लक्षण प्रकट हों उसे ख़ूब प्रसिद्ध किया। और फिर इस इल्हाम के बाद दोबारा विज्ञापन द्वारा लोगों को प्रेरित किया परन्तु अब की बार किसी मनुष्य पर दृष्टि न थी और पूर्ण निराशा हो चुकी थी तथा केवल ख़ुदा के इल्हाम का पालन करना दृष्टिगत था। अत: क़सम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि विज्ञापनों के प्रकाशित होते ही रुपया वर्षा के समान बरसने लगा और पुस्तक छपनी आरंभ हो गई यहां तक पुस्तक बराहीन अहमदिया के चार भाग छप कर प्रसारित हो गए और लाखों इन्सानों में इस पुस्तक की ख्याति हो गयी। और इस भविष्यवाणी के पूरा होने के गवाह भी वही लोग हैं जिन की अभी चर्चा की गई है। और यह भविष्यवाणी आज से संभवत: बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में दर्ज

हो चुकी है। देखो मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया पृष्ठ 226

क्रम संख्या 29.	**निशान का विवरण**

एक बार मुझे यह इल्हाम हुआ – अब्दुल्लाह ख़ान डेरा इस्माईल ख़ान। अतः कुछ हिन्दू जो संयोग से उस समय मेरे पास मौजूद थे जिनमें एक लाला शरमपत खत्री और एक लाला मलावामल खत्री भी है। उनको यह इल्हाम सुना दिया गया तथा कुछ मुसलमानों को भी सुना दिया गया और स्पष्ट तौर पर कह दिया गया कि इस इल्हाम से मतलब यह है कि आज अब्दुल्लाह ख़ान नामक एक व्यक्ति का हमारे नाम कुछ रुपया आएगा और पत्र भी आएगा। फिर उनमें से एक विशन दास नामक हिन्दू इसके लिए तैयार हुआ कि मैं इस इलहाम को स्वयं परखूं। और संयोग से उन दिनों में क़ादियान का सब पोस्टमास्टर भी हिन्दू था। अतः वह हिन्दू डाकखाने में गया और स्वयं ही सब मास्टर से पूछ कर यह ख़बर लाया कि अब्दुल्लाह ख़ान नामक एक व्यक्ति का इस डाक में पत्र आया है और कुछ रुपया आया है। जब यह घटना हुई तो उस समय इन समस्त हिन्दुओं को मानना पड़ा कि यह इल्हाम वास्तव में सच्चा है। और वह हिन्दू जो डाकख़ाने में गया था नितान्त आश्चर्य और हैरत में पड़ा कि यह ग़ैब की बात क्योंकर मालूम की गई। तब मैंने उसको कहा कि एक ख़ुदा है सामर्थ्यवान और शक्तिशाली जो अन्तर्यामी है जिस से हिन्दू अनभिज्ञ हैं। यह उसने मुझे बताया। और यह इल्हाम आज से बीस वर्ष पूर्व पुस्तक बराहीन अहमदिया में दर्ज हो चुका तथा लाखों लोग इस से सूचना पा चुके हैं। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 226, 227

क्रम संख्या 30.	**निशान का विवरण**

मुझे एक बार यह इल्हाम हुआ –

الرَّحمٰن علّم القرآن . یا احمد فاضت الرّحمة علٰی شفتیك

अर्थात् ख़ुदा ने तुझे हे अहमद ! क़ुर्आन सिखाया और तेरे होठों पर रहमत जारी गी गई। और इस इल्हाम को मुझे इस प्रकार समझाया गया कि करामत और निशान के तौर पर क़ुर्आन और क़ुर्आन की भाषा के बारे में दो प्रकार की नेमतें मुझ को प्रदान की गई हैं। (1) एक यह कि पवित्र क़ुर्आन के उच्च मआरिफ़

बतौर विलक्षण मुझ को सिखाए गए जिनमें दूसरा (कोई) मुक़ाबला नहीं कर सकता। (2) दूसरे यह कि क़ुर्आन की भाषा अर्थात् अरबी में मुझे वह सरसता और सुबोधता दी गई कि यदि समस्त विरोधी उलेमा परस्पर सहमत होकर भी इसमें मेरा मुक़ाबला करना चाहें तो असफल और निराश रहेंगे तथा वे देख लेंगे कि जो मिठास और सरसता एवं सुबोधता अरबी भाषा में सच्चाइयों, अध्यात्म ज्ञानों और रहस्यों की अनिवार्यता सहित मेरे कलाम में है वह उनको, उनके दोस्तों, उनके उस्तादों और उनके बुज़ुर्गों को कदापि प्राप्त नहीं। इस इल्हाम के बाद मैंने पवित्र क़ुर्आन के कुछ स्थानों और कुछ सूरतों की तफ़्सीरें लिखीं और अरबी भाषा में कई पुस्तकें अत्यन्त सरस-व-सुबोध लिखीं और विरोधियों को उनके मुकाबले के लिए बुलाया अपितु उनके लिए बड़े-बड़े इनाम निर्धारित किए यदि वे मुक़ाबला कर सकें। और उनमें से जो प्रसिद्ध आदमी थे, जैसा कि मियां नज़ीर हुसैन देहलवी और अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्न:। इन लोगों को बार-बार इस बात की ओर बुलाया गया कि यदि उनको क़ुर्आन के ज्ञान में कुछ भी योग्यता है या अरबी भाषा में महारत है या मुझे मेरे मसीह होने के दावे में झूठा समझते हैं तो उन वास्तविकताओं और सरसता से भरपूर अध्यात्म ज्ञानों का उदाहरण प्रस्तुत करें जो मैंने पुस्तकों में इस दावे के साथ लिखे हैं कि वे मानवीय शक्तियों से उच्चतर और ख़ुदा के निशान हैं। परन्तु वे लोग मुकाबले से असमर्थ हो गए। न तो वे उन वास्तविकताओं, अध्यात्म ज्ञानों का उदाहरण प्रस्तुत कर सके जिन को मैंने कुछ क़ुर्आन की आयतों और सूरतों की तफ़्सीर लिखते समय अपनी पुस्तकों में लिखा था। और न उन सुबोध तथा सरस पुस्तकों के समान दो पंक्तियां भी लिख सके जो मैंने अरबी में लिखकर प्रकाशित की थीं। तो जिस व्यक्ति ने मेरी पुस्तक 'नूरुलहक़', 'करामातुस्सादिक़ीन', 'सिर्रुलख़िलाफ़त' और 'इत्मामुल हुज्जत' इत्यादि अरबी पुस्तकें पढ़ी होंगी तथा मेरी पुस्तक 'अंजाम-ए-आथम' और 'नज्मुलहुदा' की अरबी इबारत को देखा होगा, वह इस बात को भली-भांति समझ लेगा कि इन पुस्तकों में बड़े ज़ोर-शोर से सुबोधता और सरसता की अनिवार्य चीज़ों को पद्य

और गद्य में सम्पन्न किया गया है और फिर किस तेज़ी और तीव्रता से समस्त विरोधी मौलवियों से इस बात की मांग की गई है कि यदि वे क़ुर्आन के ज्ञान और सुबोधता से कुछ हिस्सा रखते हैं तो इन पुस्तकों का उदाहरण प्रस्तुत करें अन्यथा मेरे इस कारोबार को ख़ुदा तआला की ओर से समझ कर उसे मेरी सच्चाई का निशान ठहराएं। किन्तु खेद कि इन मौलवियों ने न तो इन्कार को छोड़ा और न मेरी पुस्तकों का उदाहरण बनाने पर समर्थ हो सके। बहरहाल इन पर ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो गई। और वे उस आरोप के नीचे आ गए जिसके नीचे वे समस्त इन्कारी हैं जिन्होंने ख़ुदा के मामूरों से उद्दण्डता की।

क्रम संख्या 31.	निशान का विवरण

संभवतः बीस वर्ष की अवधि गुज़री है कि मुझे इस क़ुर्आनी आयत का इल्हाम हुआ था। और वह यह है –

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡہُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡہِرَہٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّہٖ ☆

और मुझे इस इल्हाम के ये मायने समझाए गए थे कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से इसलिए भेजा गया हूं ताकि मेरे हाथ से ख़ुदा तआला इस्लाम को समस्त धर्मों पर विजयी करे। और इस स्थान पर स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन में यह महान भविष्यवाणी है जिसके बारे में अन्वेषक उलेमा की सहमति है कि यह मसीह मौऊद के हाथ पर पूरी होगा तो जितने वली और अब्दाल मुझ से पहले गुज़र गए हैं उनमें से किसी ने स्वयं को इस भविष्यवाणी का पात्र नहीं ठहराया और न यह दावा किया कि इस उपरोक्त कथित आयत का मुझे अपने पक्ष में इल्हाम हुआ है। किन्तु जब मेरा समय आया तो मुझ को यह इल्हाम हुआ और मुझ को बताया गया कि इस आयत का पात्र तू है और तेरे ही हाथ से और तेरे ही युग में इस्लाम धर्म की महानता दूसरे धर्मों पर सिद्ध होगी। अतः यह क़ुदरत का करिश्मा (चमत्कार) महोत्सव के जल्से में प्रकटन में आ चुका। और इस जल्से में मेरे भाषण के समय समस्त भाषणों की तुलना में प्रत्येक समुदाय के

☆**अनुवाद –** वह ख़ुदा जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि वह अपने धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करे। इसी से।

वकील को चाहते और न चाहते हुए भी इक़रार करना पड़ा कि निस्सन्देह इस्लाम धर्म अपनी ख़ूबियों के साथ प्रत्येक धर्म से बढ़ा हुआ है और फिर इसी को पर्याप्त नहीं समझा अपितु ख़ुदा तआला ने मेरे लेखों के साथ प्रत्येक फ़िर्क़े पर हुज्जत पूर्ण की। हिन्दुओं के मुकाबले पर मैंने पुस्तक बराहीन अहमदिया, सुर्मा चश्म आर्य, और आर्य धर्म ऐसी पुस्तकें लिखीं जिन से प्रत्येक सत्याभिलाषी पर भली-भांति स्पष्ट हो गया कि हिन्दू धर्म जिस का आधार वेद पर ठहराया गया है ख़ुदा तआला की ओर से कदापि नहीं है। अपितु वह ऐसी सत्य के विरुद्ध आस्थाओं का संग्रह है जिन में न ख़ुदा तआला का सम्मान, श्रेष्ठता, और क़ुदरत का कुछ पास किया गया है और न मानवीय पवित्रता और स्वच्छता को दृष्टिगत रखा गया है। मैंने इन पुस्तकों में स्वयं आर्यों के इक़रार से सिद्ध कर दिया है कि उन के धर्मानुसार इस संसार का कोई ऐसा स्रष्टा नहीं है जिसने सृष्टि को नास्ति से अस्तित्व दिया हो। अपितु प्रत्येक वस्तु अनादि और अपने अस्तित्व की स्वयं ख़ुदा है। तो इस स्थिति में हिन्दुओं के परमेश्वर की पहचान के लिए और उसके अस्तित्त्व को मानने के लिए कोई तर्क स्थापित नहीं हो सकता। अपितु इस उद्देश्य के विरुद्ध तर्क स्थापित होते हैं। इसी कारण हिन्दुओं में आधे के लगभग वे समुदाय हैं जो परमेश्वर के अस्तित्त्व से ही इन्कारी हैं। क्योंकि वेद की इस शिक्षा की दृष्टि से कि रूहें और तत्त्व स्वयं भू हैं परमेश्वर के अस्तित्त्व की कुछ आवश्यकता मालूम नहीं होती। तथा प्रत्येक बद्धिमान समझ सकता है कि जब ये समस्त शक्तियां जो रूहों और कणों में मौजूद हैं किसी आविष्कारक की मुहताज नहीं और उनका अस्तित्व किसी रचयिता के अस्तित्व पर निर्भर नहीं। तो फिर केवल रूह और शरीर को जोड़ने की कारीगरी जो निम्न स्तर की कारीगरी है क्योंकर किसी कारीगर की मुहताज हो सकती है। इसलिए यह विचार कि परमेश्वर ने कुछ भागों को कुछ से जोड़ा है और रूह को जो अनादि से स्वयं उपस्थित है इन अनादि शरीरों में दाख़िल किया है। यह अत्यन्त कमज़ोर विचार है और इसको रचयिता के अस्तित्त्व पर तर्क समझना सर्वथा मूर्खता है। क्योंकि जब ये समस्त चीज़ें अनादि काल से पृथक-पृथक स्वयं मौजूद हैं और

अपने अस्तित्त्व और अनश्वरता में दूसरे की मुहताज नहीं तो फिर इन चीज़ों के परस्पर मिलने या पृथक होने के लिए परमेश्वर की क्यों आवश्यकता है। यदि परमेश्वर का अस्तित्व ऐसा नहीं कि उसी से समस्त चीज़ों का प्रकटन हो और उसी से समस्त वस्तुओं की अनश्वरता हो तथा उसी ने प्रत्येक वस्तु को लाभ पुहंचे तो स्वयं उसका अस्तित्व व्यर्थ होगा। और उसके अस्तित्व पर किसी चीज़ का पूर्ण तर्क नहीं होगा। हिन्दुओं का यह विचार कि नास्ति और आस्ति नहीं हो सकती साफ बता रहा है कि ख़ुदा तआला और उसका अस्तित्व तथा विशेषताओं की मारिफ़त की सच्ची पुस्तकें उनको कदापि नहीं मिलीं। इसलिए उन्होंने अपने परमेश्वर के कार्यों और उसकी ताक़त एवं शक्ति को केवल मनुष्य की ताक़त और शक्ति पर अनुमान कर लिया है। उनको यह भी ज्ञात नहीं कि मनुष्य के सच्चे स्वप्नों और वास्तविक कश्फ़ों में हज़ारों ऐसी चीज़ें अस्तित्व में आ जाती हैं कि अभी वे पूर्ण तथा नेस्ती में गुप्त होती हैं और कई वर्षों के बाद उनका प्रकटन होता है। फिर यदि ख़ुदा तआला नेस्ती से हस्ती नहीं कर सकता तो कश्फ़ों और स्वप्नों में ऐसा अस्तित्व क्यों प्रकटन में आ जाता है जिसका व्यवहार में कोई नामोनिशान नहीं। उदाहरणतया किसी के घर में बीस वर्ष के पश्चात् बेटा पैदा होना हो तो कभी-कभी ऐसा विचित्र कश्फ़ और विचित्र स्वप्न उसे दिखाया जाता है कि जो बेटा पैदा होने से पहले अपितु उस बेटे की मां के अस्तित्व से भी पहले वह अपने उस बेटे को स्वप्नावस्था में या कश्फ़ावस्था में बिल्कुल देख लेता है। अपितु कभी उस से बातें कर लेता है और कभी वह बेटा उसे ऐसे रहस्य बताता है कि जो एक लम्बी अवधि के पश्चात् और ज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् वह शक्ति बेटे में उत्पन्न होती है।★ फिर यदि ख़ुदा तआला मनुष्य के समान तत्त्व और प्रकृति का मुहताज है तो उदाहरणतया वह बेटा जो स्वप्न में या कश्फ़ में उपस्थित किया जाता है जिसकी अभी मां भी पैदा नहीं हुई वह किस तत्त्व या परमाणु से बनाया जाता है। फिर जबकि वह सामर्थ्यवान इस

★ इसके सबूत के लिए हम स्वयं ज़िम्मेदार हैं परन्तु वे लोग कहां हैं जो सत्याभिलाषी होकर आएं? इसी से।

प्रकार की बनावट भी जानता है कि उस हालत में किसी मनुष्य का निशान प्रकट कर देता है और साक्षात् तौर पर बिल्कुल जागने की अवस्था में उसे दिखा देता है जबकि वह पूर्णतया बेनिशान होता है। तो फिर इस से अधिक और कौन सी मूर्खता होगी कि उस समार्थ्यवान को तत्त्व का मुहताज समझा जाए। यदि ऐसा ही परमेश्वर है तो उस पर भविष्य की अनश्वर खुशियों के लिए कोई आशा नहीं हो सकती क्योंकि वह स्वयं हमेशा तत्त्व और रूह का मुहताज है। और ऐसी चीज़ों के सहारे से उसकी ख़ुदाई चल रही है जो उसके हाथ से निकली नहीं और न निकल सकती हैं। अतः हिन्दुओं के वेदों की यह स्पष्ट ग़लती है कि वे ख़ुदाई शक्ति और मानवीय शक्ति को बराबर श्रेणी पर समझते हैं और कहते हैं कि किसी संयोग से जिस का भेद मालूम नहीं इतनी रूहें और तत्त्व मौजूद चले आते हैं कि परमेश्वर की अपनी पैदा की हुई नहीं। और इन्हीं पर परमेश्वरता का समस्त कराखाना चल रहा है। और यदि मान लें कि वे भविष्य में किसी समय समाप्त हो जाएंगी तो साथ ही मानना पड़ेगा कि परमेश्वर भी भविष्य में खाली हाथ बैठेगा। तो सोचने का स्थान है कि क्या हय्यो-क़य्यूम (हमेशा जीवित रहने वाले और क़ायम रहने और रखने वाले) ख़ुदा की यही विशेषताएं होनी चाहिएं? और क्या उसकी ख़दाई की वास्तविकता और असलियत इतनी ही है कि उसकी बादशाहत उन चीज़ों पर चलती हो जो उसका अपना स्वामित्त्व नहीं। अतः मैंने इन पुस्तकों में सिद्ध किया है कि हिन्दू धर्म का ज्ञान और मारिफ़त परमेश्वर के बारे में जो कुछ है यही है कि वह उसको अनादि काल से निलंबित और स्रष्टा होने की विशेषता से वंचित ठहराते हैं और मानवीय पवित्रता के बारे में वेद की शिक्षा जिस को पंडित दयानन्द ने आर्यों को सिखाया है बतौर नमूना यह है कि एक आर्य सन्तान के लिए अपनी प्रिय पत्नी को अपने जीवन और जवानी की हालत में दूसरे से संभोग करा सकता है ताकि किसी प्रकार सन्तान पैदा हो जाए। इस कृत्य को हिन्दुओं के धर्म में नियोग कहते हैं। तो जिस धर्म का ख़ुदा तआला के बारे में यह विचार है कि वह अनादि काल से असमर्थ, कमज़ोर और पैदा करने की विशेषता से वंचित है तथा जिस धर्म ने सृष्टि की पवित्रता का इस हद

तक ख़ून कर दिया है कि पति जो स्वाभाविक तौर पर मानवीय स्वाभिमान का इतना जोश अपनी पत्नी के मामले में अपने अन्दर रखता है कि वैध नहीं रखता कि किसी ग़ैर की आवाज़ की ओर भी वह कान लगाए। उसको यह निर्देश दिया जाता है कि सन्तान की आवश्यकता के लिए न एक बार अपितु कई बार अपनी पत्नी को ग़ैर इन्सान से संभोग कराए। ऐसे धर्म से किस अच्छाई की आशा हो सकती है? इसके अतिरिक्त मैंने अपनी पुस्तकों में यह भी वर्णन कर दिया है कि हिन्दू धर्म के पाबन्द लोग विलक्षण निशानों और चमत्कारों से वंचित हैं अपितु इसके इन्कारी हैं। और मैंने इस प्रकार से भी इन लोगों पर हुज्जत को पूर्ण किया है कि कई आकाशीय निशान उनको दिखाए हैं और उन पर सिद्ध किया है कि आकाश के नीचे केवल एक इस्लाम है जिसके अनुकरण से इन्सान को ख़ुदा तआला का सानिध्य प्राप्त होता है। और इस सानिध्य की बरकत से नाना प्रकार के चमत्कार और भविष्यवाणियां उस मनुष्य से प्रकट होती हैं जैसा कि अब प्रकट हो रही हैं। क्या इन में कोई ऐसा ऋषि अथवा योगी मौजूद है कि वह ख़ुदा के अद्भुत कार्य दिखा सके जो मुझ से प्रकट होते हैं? अत: स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म पर बौद्धिक एवं चमत्कारिक तौर पर इस्लाम की हुज्जत पूरी हो गई। अब इसके बाद इन्कार करना लज्जा को त्यागना है। ये समस्त निबन्ध लगभग बीस वर्ष से छपकर प्रसारित हो चुके हैं। यह वह समझाने के अन्तिम प्रयास है जो पुस्तकों और आकाशीय निशानों के माध्यम से हिन्दुओं पर किया गया। और इस स्थान पर उन पुस्तकों में से थोड़ा सा बतौर ख़ुलासा लिखा गया है। जो वर्षों से छपकर भली भांति देश में प्रकाशित हो चुकी हैं अपितु कुछ पुस्तकें दोबारा भी छप गईं।

और ईसाइयों के बारे में जो हुज्जत पूर्ण की गई वह भी दो प्रकार से है। एक वे पुस्तकें हैं जो मैंने ईसाइयों की विचारधारा के खण्डन में लिखीं। जैसा कि 'बराहीन अहमदिया', 'नूरुलहक़' और 'कश्फ़ुलग़िता' इत्यादि। दूसरे वे निशान हैं जो ईसाइयों पर हुज्जत पूरी करने के लिए मैंने दिखाए। और मैंने उन पुस्तकों में जो ईसाइयों के मुकाबले पर लिखी गई हैं सिद्ध कर दिया है कि ईसाइयों का मसीह के ख़ून और कफ़्फ़ारे की समस्या ऐसी ग़लत है कि एक बुद्धिमान न्यायप्रिय लिए

पर्याप्त है कि इसी समस्या पर विचार करके ख़ुदा से डरे और इस धर्म से पृथक हो जाए।★ और मैंने इन पुस्तकों में लिखा है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को लानती ठहराने की आस्था जो ईसाइयों के धर्म का मूल उद्देश्य है ऐसा स्पष्ट झूठ है कि एक सामान्य विचार का मनुष्य भी मालूम कर सकता है कि किसी प्रकार संभव नहीं कि ऐसा धर्म सच्चा हो जिसकी बुनियाद ऐसी आस्था पर हो जो एक सत्यनिष्ठ के हृदय को लानत के काले दाग़ के साथ लिप्त करना चाहता है। क्योंकि लानत का शब्द जो अरबी और इब्रानी में साझा है अत्यन्त गन्दे अर्थ रखता है। और इस शब्द के ऐसे बुरे अर्थ हैं कि शैतान के अतिरिक्त अन्य कोई उसका चरितार्थ नहीं हो सकता। क्योंकि अरबी और इब्रानी की भाषा में मलऊन उसको कहते हैं कि जो ख़ुदा तआला की दया से हमेशा के लिए वंचित किया जाए। इसी कारण से लईन शैताना का नाम है। क्योंकि वह हमेशा के लिए ख़ुदा की दया से वंचित किया गया है। और ख़ुदा तआला की समस्त किताबों में तौरात से पवित्र क़ुर्आन तक किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में मलऊन होने का शब्द नहीं बोला गया जिसने अन्ततः ख़ुदा की दया और कृपा से हिस्सा लिया है। अपितु हमेशा से यह मलऊन और लानती का शब्द उन्हीं अनादि दुर्भाग्यशालियों पर चरितार्थ होता रहा है जो हमेशा के लिए ख़ुदा तआला की दया, मुक्ति और प्रेम की दृष्टि से वंचित किए गए और ख़ुदा की अनुकम्पा और मेहरबानी और कृपा से अनश्वर तौर पर दूर और पृथक हो गए। और उनका रिश्ता अनश्वर तौर पर ख़ुदा तआला से काट दिया गया और उनके लिए उस नर्क का हमेशा का रहना तय पाया जो ख़ुदा तआला के प्रकोप का नर्क है और ख़ुदा तआला की दया में प्रवेश करने की आशा न रही। और नबियों के मुंह से भी यह शब्द कभी ऐसे लोगों के बारे में नहीं बोला जाता जो किसी समय ख़ुदा की हिदायत, कृपा और दया से हिस्सा लेने वाले थे। इसलिए यहूदियों की पवित्र किताब और इस्लाम की पवित्र किताब के अनुसार यह आस्था सर्वसम्मत मानी गई है कि जो व्यक्ति ऐसा हो कि ख़ुदा की किताबों में उस पर मलऊन का

★क्या कोई सद्बुद्धि इस बात को स्वीकार कर सकती है कि कोई ख़ून करे और उसके बदले में किसी और को सूली दिया जाए। इसी से।

शब्द बोला गया हो, वह हमेशा के लिए ख़ुदा की दया से वंचितऔर महरूम होता है। जैसा कि इस आयत में भी संकेत है -

(अलअहज़ाब-62) مَّلۡعُوۡنِیۡنَ ۚ اَیۡنَمَا ثُقِفُوۡۤا اُخِذُوۡا وَ قُتِّلُوۡا تَقۡتِیۡلًا

अर्थात् व्यभिचारी और व्यभिचार को फैलाने वाले जो मदीना में हैं ये लानती हैं अर्थात् ख़ुदा की दया से हमेशा के लिए रद्द किए गए। इसलिए ये इस योग्य हैं कि इनको जहां पाओ क़त्ल कर दो। अत: इस आयत में इस बात की ओर यह अद्भुत संकेत है कि लानती हमेशा के लिए हिदायत से वंचित होता है और उसकी पैदायश ही ऐसी होती है जिस पर झूठ व्यभिचार का जोश विजयी रहता है। और इसी आधार पर क़त्ल करने का आदेश हुआ। क्योंकि जो उपचार योग्य नहीं और असाध्य रोग रखता है उसका मरना उत्तम है। और यही तौरात में लिखा है कि लानती मरेगा। इसके अतिरिक्त मलऊन के शब्द में यह कितने गन्दे अर्थ दर्ज हैं कि अरबी और इब्रानी भाषा की दृष्टि से मलऊन होने की हालत में उन आवश्यक सामानों का पाया जाना आवश्यक है कि मलऊन व्यक्ति अपनी हार्दिक इच्छा से ख़ुदा तआला से विमुख हो। और वह ख़ुदा तआला से अपने हार्दिक जोश के साथ शत्रुता रखे और उसके हृदय में ख़ुदा तआला का लेशमात्र प्रेम और आदर न हो। और ऐसा ही ख़ुदा के हृदय में भी उसका लशमात्र प्रेम न हो यहां तक कि वह शैतान का वारिस हो न कि ख़ुदा का। और यह भी लानती होने के सामान में से है कि मलऊन व्यक्ति ख़ुदा तआला की पहचान, मारिफ़त और मुहब्बत से पूर्णतया वंचित हो। अब प्रकट है कि यह लानत और मलऊन की हालत का अर्थ ऐसा अपवित्र अर्थ है जो एक तुच्छ से तुच्छ ईमानदार की ओर सम्बद्ध नहीं हो सकता कहां यह कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में इसको सम्बद्ध किया जाए। क्योंकि मलऊन होने से अभिप्राय वह कठोर हृदय होने का अंधकार है जिसमें ख़ुदा की मारिफ़त थी प्रकाश, ख़ुदा के प्रेम का प्रकाश, ख़ुदा के सम्मान का प्रकाश एक कण शेष न हो। तो क्या वैध है कि ऐसे मुर्दार की सी हालत एक सेकण्ड के लिए भी मसीह जैसे ईमानदार की ओर सम्बद्ध की जाए। क्या प्रकाश और अंधकार दोनों जमा हो सकते हैं। इसलिए इससे साफ तौर पर सिद्ध होता है कि ईसाई धर्म की

ये आस्थाएं सर्वथा ग़लत हैं। नेक दिल मनुष्य ऐसी मुक्ति से विमुख होगा जिस की प्रथम शर्त यही हो कि एक पवित्र और मासूम और ख़ुदा के प्रिय के बारे में यह विश्वास रखा जाए कि वह मलऊन हो गया और उसका दिल जानबूझ कर ख़ुदा से उद्दण्ड हो गया और उसके सीने में से ख़ुदा को पहचानने का प्रकाश जाता रहा और वह शैतान के समान ख़ुदा तआला का शत्रु हो गया और ख़ुदा से विमुख हो गया तथा शैतान का वारिस हो गया और लानत की विषाक्त अवस्था से उसका दिल और उसकी आंखें और उसके कान और उसकी जीभ और उसके समस्त विचार भर गए। और उसकी गन्दी भूमि में लानती वृक्षों के अतिरिक्त और कुछ शेष न रहा। क्या ऐसे सिद्धान्तों को कोई ईमानदार और सुशील आदमी अपनी मुक्ति का माध्यम ठहरा सकता है? यदि मुक्ति का यही माध्यम है तो प्रत्येक पवित्र हृदय व्यक्ति की अन्तर्आत्मा यही गवाही देगी कि ऐसी मुक्ति से हमेशा का अज़ाब उत्तम है। समस्त लोगों का मरना इस से बेहतर है कि लानत जैसा सड़ा हुआ मुर्दार जो शैतान की विशेष विरासत है मसीह जैसे पवित्र और शुद्ध हृदय के मुंह में डालें। और इस मुर्दार का उसके हृदय को भण्डार बना दें। फिर इस घृणित कार्य से अपनी मुक्ति और आज़ादी की आशा रखें। सारांश यह है कि यह वह ईसाई शिक्षा है जिसको हमने सर्वथा हमदर्दी और शुभेच्छा के द्वारा अपनी पुस्तकों में खण्डन किया है। और केवल इतना ही नहीं अपितु यह भी सिद्ध करके दिखलाया है कि स्वयं हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का सूली मिलना ही झूठ हैं। इंजील स्वयं गवाही देती है कि वह सूली नहीं चढ़े। और फिर स्वयं हज़रत मसीह ने इंजील में अपनी इस घटना का उदाहरण हज़रत यूनुस की घटना से चरितार्थ किया है। और यह कहा है कि मेरा क़ब्र में दाख़िल होना तथा क़ब्र से निकलना यूनुस नबी के मछली के निशान से समान है और स्पष्ट है कि यूनुस मछली के पेट में न मुर्दा दाखिल हुआ था और न मुर्दा निकला था अपितु ज़िन्दा दाख़िल हुआ और ज़िन्दा ही निकला। फिर यदि हज़रत मसीह क़ब्र में मुर्दा दाख़िल हुआ था तो उसके क़िस्से को यूनुस नबी के क़िस्से से क्या समानता। और संभव नहीं कि नबी झूठ बोले। इसलिए यह इस बात पर निश्चित प्रमाण है कि मसीह अलैहिस्सलाम की सलीब पर मृत्यु नहीं

हुई और न मुर्दा होने की हालत में क़ब्र में दाख़िल हुए। और यदि वर्तमान इंजीलें पूर्णतया इस घटना के विरुद्ध होतीं तब भी कोई सच्चा ईमानदार स्वीकार न करता कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की सूली पर मर जाने की घटना सही है। क्योंकि इससे केवल यही परिणाम नहीं निकलता कि हज़रत मसीह अपनी इस समानता ठहराने में झूठे ठहरते हैं और समानता सर्वथा ग़लत सिद्ध होती हैं। अपितु यह परिणाम भी निकलता है कि वह नऊज़ुबिल्लाह उन बैलों, गधों की तरह लानती भी हो गए जिनके बारे में तौरात में मार देने का आदेश था। और नऊज़ुबिल्लाह उन के दिल में लानत का वह विष समा गया था जिसने शैतान को हमेशा के लिए मार दिया है। परन्तु वर्तमान इंजीलों में से वह इंजील बरनबास जिसमें हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के सूली मिलने से इन्कार किया गया है और इन चार इंजीलों को दूसरी इंजीलों पर कुछ विशेष तर्जीह (प्राथमिकता) नहीं, क्योंकि ये सब इंजीलें हवारियों के युग के बाद कुछ यूनान के लोगों ने बिना सर पैर की रिवायतों के आधार पर लिखी हैं और इनमें हज़रत मसीह के हाथों की कोई इंजील नहीं अपितु हवारियों के हाथों की भी कोई इंजील नहीं। और यह बात स्वीकार की गई कि इंजील की इब्रानी प्रति दुनिया से अभिप्राय है। इसके अतिरिक्त ये चारों इंजीलें जो चौंसठ इंजीलों में से केवल बल के तौर पर ग्रहण की गईं हैं। उनके बयानों से यही सिद्ध होता है कि मसीह की सलीब पर मृत्यु नहीं हुई। अत: हम अपनी पुस्तक "मसीह हिन्दुस्तान में" इस बहस को सफाई से तय कर चुके हैं, और इन इंजीलों से यह भी सिद्ध है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम एक बाग़ में अपनी मुक्ति के लिए पूरी रात दुआ करते रहे। और इस मतलब एवं उद्देश्य से कि किसी प्रकार सूली से बच जाएं। पूरी रात रोने, गिड़गिड़ाने और सज्दा करने में गुज़री। और यह असंभव है कि जिस नेक इन्सान को यह सामर्थ्य दी जाए कि पूरी रात हार्दिक दर्द से किसी बात के हो जाने के लिए दुआ करे और उस दुआ के लिए उसको पूरा जोश प्रदान किया जाए और फिर वह दुआ अस्वीकार और अमान्य हो। जब से कि दुनिया की बुनियाद पड़ी उस समय से आज तक इसका उदाहरण नहीं मिला। और ख़ुदा तआला की समस्त किताबों में सर्वसम्मति से यह गवाही पाई जाती है

कि सच्चों की दुआ स्वीकार होती है और उनके खटखटाने पर अवश्य खोला जाता है। फिर मसीह की दुआ को क्या रोक आई कि पूरी रात के रोने-धोने और कोलाहल के बावजूद रद्दी के समान फेंक दी गई तथा स्वीकार न हुई। क्या ख़ुदा तआला की किताबों में इस घटना का कोई और उदाहरण भी है कि कोई मसीह जैसा सत्यनिष्ठ या उस से न्यूनतर पूरी रात रो-रो कर और जिगर फाड़ कर दुआ करे और बेचैनी से बेहोश होता जाए तथा स्वयं इक़रार करे कि मेरी जान घट रही है और मेरा दिल गिरा जाता है, और फिर ऐसी दर्द भरी दुआ स्वीकार न हो? हम देखते हैं कि यदि ख़ुदा तआला हमारी कोई दुआ स्वीकार करना नहीं चाहता तो शीघ्र हमें सूचना प्रदान करता है और उस दर्दनाक हालत तक नहीं पहुंचाता जिसमें उसका प्रकृति का नियम यही है कि इस दर्जे पर वफ़ादार बन्दों की दुआ पहुंचकर अवश्य स्वीकार हो जाया करती है। फिर मसीह की दुआ को क्या बला आ पड़ी कि न तो वह स्वीकार हुई और न ही उन्हें पहले से सूचना दी गई कि यह दुआ स्वीकार नहीं होगी। और परिणाम यह हुआ कि ईसाइयों के कथनानुसार ख़ुदा की इस खामोशी से मसीह बड़े आश्चर्य में पड़ा यहां तक कि जब सलीब पर चढ़ाया गया तो सहसा निराशा की अवस्था में बोल उठा कि ''ईली-ईली लिमा सबकतानी''। अर्थात् हे मेरे ख़ुदा, हे मेरे ख़ुदा! तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया। इसलिए मैंने अपनी पुस्तकों में सत्याभिलाषियों का इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट कराया है कि वे पहले इस बात को ध्यान में रखकर कि मान्य लोगों की पहली निशानी उसकी हर दुआ ख़ुदा के यहां स्वीकार हो जाना है। विशेष तौर पर इस हालत में जबकि उनका हार्दिक दर्द चरम सीमा तक पहुंच जाए। फिर इस बात को सोचें कि क्योंकर संभव है कि इसके बावजूद कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने ग़म के मारे निष्प्राण और कमज़ोर हो कर एक बाग़ में जो फल लाने का स्थान है पूर्ण दर्द के साथ पूरी रात दुआ की और कहा कि हे मेरे बाप! यदि संभव हो तो यह प्याला मुझ से टाल दिया जाए। परन्तु फिर भी जलन, पिघलन के बावजूद अपनी दुआ का फल देखने से निराश रहा। यह बात अध्यात्म ज्ञानियों और ईमानदारों के नज़दीक ऐसी झूठ है जैसा कि दिन को कहा जाए कि रात है या उजाले को कहा जाए कि अंधकार है

या मधुर झरने को कहा जाए कड़वा और नमकीन है। जिस दुआ में रात के चार पहर निरन्तर जलन, पिघलन और रोने, गिड़गिड़ाने, सज्दों और अत्यन्त कष्ट में गुज़रे कभी संभव नहीं कि दयालु एवं कृपालु ख़ुदा ऐसी दुआ को अस्वीकार करे। विशेषत: वह दुआ जो एक मान्य के मुंह से निकली हो। अत: इस छान-बीन से स्पष्ट है कि हज़रत मसीह की दुआ स्वीकार हो गई थी तथा इसी कारण से ख़ुदा तआला ने मसीह की मुक्ति के लिए ऐसे सामान पैदा कर दिए थे जो उसकी आज़ादी के लिए ठोस सामान थे। उनमें से एक यह कि पैलातूस की पत्नी को स्वप्न में फ़रिश्ते ने कहा कि यदि यसू सूली पर मर गया तो इसमें तुम्हारी तबाही है। और इस बात का ख़ुदा तआला की किताबों में कोई उदाहरण नहीं मिलता कि ख़ुदा तआला की ओर से किसी को स्वप्न में फ़रिश्ता कहे कि यदि ऐसा काम नहीं करोगे तो तुम तबाह हो जाओगे। और फिर फ़रिश्ते के कहने कर उनके दिलों पर कुछ भी प्रभाव न हो और वह कहना व्यर्थ जाए। और इसी प्रकार यह बात भी सर्वथा बेकार और झूठ मालूम होती है कि ख़ुदा तआला का तो यह पक्का इरादा हो कि वह यसू मसीह को सूली दे और इस प्रकार से लोगों को हमेशा के अज़ाब से बचाए और फ़रिश्ता अकारण यसू मसीह को बचाने के लिए तड़पता फिरे। कभी पैलातूस के दिल में डाले कि मसीह निर्दोष है और कभी पैलातूस सिपाहियों को उस पर मेहरबान करे और प्रेरणा दे कि वे उसकी हड्डी न तोड़ें, और कभी पैलातूस की पत्नी के स्वप्न में आए और उसको यह कहे कि यदि यसू मसीह सूली पर मर गया तो फिर इसमें तुम्हारी तबाही है। यह विचित्र बात है कि ख़ुदा और फ़रिश्ते का परस्पर राय में मतभेद हो। और फिर रिहाई के सामानों में से जो इन चार इंजीलों में दर्ज हैं। एक कारण यह भी है कि यहूदियों को यह अवसर न मिला कि वे प्राचीन दस्तूर के अनुसार पांच-छ: दिन तक हज़रत मसीह को सलीब पर लटका रखते ताकि भूख, प्यास और धूप के प्राभव से मर जाता। और न प्राचीन दस्तूर के अनुसार उनकी हडिडयां तोड़ी गईं जैसा कि चोरों की तोड़ी गईं। यद्यपि यह रियाअत गुप्त तौर पर पैलातूस की ओर से थी क्योंकि रोब भरे स्वप्न ने उसकी पत्नी का दिल हिला दिया था, परन्तु आकाश से भी यही इरादा ज़ोर मार रहा था। अन्यथा

क्या आवश्यकता थी कि ठीक सलीब देने के समय प्रचंड आंधी आती और पृथ्वी पर घोर अंधकार छा जाता तथा डराने वाला भूकम्प आता। असल बात यह थी कि ख़ुदा तआला चाहता था कि यहूदियों के दिल डर जाएं और उन पर समय संदिग्ध होकर सब्त के तोड़ने की चिन्ता भी उनको साथ हो जाए। क्योंकि जिस समय हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब पर चढ़ाए गए वह शुक्रवार का दिन था और लगभग दोपहर के बाद तीन बजे थे और यहूदियों को कड़ी मनाही थी कि कोई मस्लूब सब्त (शनिवार) के दिन या सब्त की रात जो जुमे के बाद आती है सलीब पर लटका न रहे। और यहूदी चन्द्रमा के हिसाब के पाबन्द थे। इसलिए वह सब्त की रात उस रात को समझते थे कि जब शुक्रवार के दिन का अन्त हो जाता है। अतः आंधी और घोर अंधकार के पैदा हो जाने से यहूदियों के दिलों में यह खटका आरंभ हुआ कि ऐसा न हो कि वे लाशों को सब्त की रात में सलीब पर रखकर सब्त के अपराधी हों और दण्डनीय ठहरें। और दूसरे दिन ईद फ़सह भी थी जिसमें विशेष तौर पर सलीब देने का निषेध था। तो जबकि आकाश से ये सामान पैदा हो गए और यहूदियों के दिलों पर ख़ुदाई, रोब भी विजयी हो गया तो उनके दिलों में यह धड़का आरंभ हो गया कि ऐसा न हो कि इस अंधकार में सब्त की रात आ जाए। इसलिए मसीह और चोरों को शीघ्र सलीब पर से उतार लिया गया। और सिपाहियों ने यह चालाकी की कि पहले चोरों की टांगों को तोड़ना आरंभ कर दिया और उनमें से एक ने यह षड्यंत्र किया कि मसीह की नाड़ी देख कर कह दिया कि यह तो मर चुका है। अब इसकी टांगे तोड़ने की आवश्यकता नहीं। और फिर यूसुफ नामक एक ताजिर ने एक बड़े कोठे में उनको रख दिया। और वह कोठा एक बाग़ में था और यहूदी मुर्दों के लिए ऐसे कोठे खिड़कीदार भी बनाया करते थे। तो हज़रत मसीह इस प्रकार बच गए। और फिर चालीस दिन तक मरहम-ए-ईसा से उनके ज़ख़्मों का इलाज होता रहा जैसा कि पुस्तक ''मसीह हिन्दुस्तान में'' में हम सिद्ध कर चुके हैं। और फिर जब ख़ुदा तआला की कृपा से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को मरहमे ईसा के इस्तेमाल से शिफ़ा हो गयी और समस्त सलीबी ज़ख़्म अच्छे हो गए। तो अल्लाह तआला के आदेश से उस देश से उन्होंने गुप्त

तौर पर हिजरत की जैसा कि नबियों की सुन्नत है। और उस हिजरत में एक यह भी हिकमत थी ताकि ख़ुदा तआला के पवित्र नबियों की सुन्नत अदा हो जाए। क्योंकि अब तक वह अपने देश की चारदीवारी में ही फिरते थे और हिजरत की कटुता नहीं उठाई थी। और इस से पूर्व उन्होंने अपनी हिजरत की ओर संकेत भी किया था जैसा कि इंजील में उनका यह कथन है कि "नबी अपमानित नहीं परन्तु अपने देश में" सारांश यह कि फिर आप पैलातूस के देश से गुप्त तौर पर गलील की ओर आए और अपने हवारियों को गलील की सड़क पर मिले और एक गांव में उनके साथ रात भर इक्ट्ठे रहे। और इक्ट्ठे खाना खाया। और फिर जैसा कि मैंने अपनी पुस्तक "मसीह हिन्दुस्तान में" में सिद्ध किया है। कई देशों की सैर करते हुए नसीबैन में आए। और नसीबैन से अफ़ग़ानिस्तान में पुहंचे। और एक लम्बे समय तक उस स्थान पर जो कोहे पग़मान कहलाता है उसके समीप निवासी रहे और इसके बाद पंजाब में आए और पंजाब के विभिन्न भागों को देखा और हिन्दुस्तान की भी यात्रा की। और संभवत: बनारस और नेपाल में भी पुहंचे, और फिर पंजाब की ओर लौट कर कश्मीर का संकल्प किया तथा शेष आयु श्रीनगर में गुज़ारी और वहीं निधन हुआ और श्री नगर मुहल्ला ख़ानयार के निकट दफ़्न किए गए और अब तक वह क़ब्र यूज़ आसफ़ और शहज़ादा नबी की क़ब्र तथा ईसा नबी की क़ब्र कहलाती है। और श्रीनगर में यह घटना सामान्य तौर पर प्रसिद्ध है कि यह क़ब्र हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की है। और इस मज़ार का युग लगभग दो हज़ार वर्ष बताते हैं तथा सामान्य लोगों और विशेष लोगों में यह रिवायत बड़ी प्रचुरता से प्रसिद्ध है कि यह नबी शाम देश की ओर से आया था।

निष्कर्ष यह कि ये तर्क और वास्तविकताएं तथा मआरिफ़ हैं जो ईसाई धर्म के खण्डन करने के लिए ख़ुदा तआला ने मेरे हाथ पर सिद्ध किए। जिन को मैंने अपनी पुस्तकों में बड़े विस्तार से लिखा है। और प्रकट है कि इन रोशन तर्कों के बाद न ईसाई धर्म स्थापित रह सकता है और न उसका कफ़्फ़ारा ठहर सकता है। अपितु इस सबूत के साथ यह इमारत सहसा गिरती है। क्योंकि जब हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का मस्लूब होना ही सिद्ध न हुआ तो कफ़्फ़ारे की समस्त आशाएं

मिट्टी में मिल गईं। और यह महान विजय है जो हदीस कस्रे सलीब (सलीब तोड़ने) के आशय को पूर्णरूपेण पूरा करती हैं। और वह काम जो मसीह मौऊद को करना चाहिए यही काम था कि ऐसे स्पष्ट तर्कों से ईसाई धर्म को गिरा दे न यह कि तलवारों और बन्दूक़ों से लोगों को क़त्ल करता फिरे। और यह विजय केवल एक व्यक्ति के नाम पर प्रारब्ध थी जो ठीक सलीब के फ़ित्ने के समय में ख़ुदा तआला की ओर से भेजा गया और यह विजय उसके हाथ से पूर्ण रूप से प्रकटन में आ गयी। अब किसी सलीब तोड़ने वाले और मसीह मौऊद की प्रतीक्षा करना व्यर्थ और असंभव मांग है। क्योंकि जिन वास्तविकताओं के खुलने से ईसाइयों को पराजय मिली थी वे वास्तविकताएं ख़ुदा की कृपा से मेरे हाथ पर खुल गईं। अब किसी दूसरे मसीह के लिए कोई रूहानी काम शेष नहीं। और केवल तलवारों से रक्त बहाना और बलात् कलिमा पढ़ाना कोई कला की बात नहीं। अपितु यह कार्य तो डाका मारने वालों के कार्यों के समान है। यह कैसी मूर्खता है जो कुछ मूर्ख मुसलमानों के दिलों में स्थिर है कि वे इस बात पर गर्व करते हैं कि उनका मसीह मौऊद और महदी माहूद बलात् लोगों को मुसलमान करेगा और तलवारों से धर्म को फैलाएगा। ये लोग नहीं सोचते कि जब्र से कोई आस्था दिल में दाख़िल नहीं हो सकती, अपितु प्रत्येक व्यक्ति जो ऐसे अत्याचारियों के क़ाबू आ जाए अपने दिल में उनको अत्यन्त बुरा इन्सान समझता है। यद्यपि जान छुड़ाने के लिए उस समय हां में हां मिला दे। यह बड़ी मूर्खता होगी कि इस स्थान पर हमारे सय्यिद-व-मौला जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हवाला दिया जाए कि आपने धर्म के फैलाने के लिए युद्ध किया। क्योंकि मैं ख़ुदा तआला की क़सम से कह सकता हूं कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमान बनाने के लिए कभी जब्र नहीं किया, और न तलवार खींची और न धर्म में दाखिल करने के लिए किसी के एक बाल को भी हानि पहुंचाई। अपितु वे समस्त नबवी लड़ाइयां और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम के जो उस समय युद्ध किए गए या तो इसलिए उनकी आवश्यकता पड़ी ताकि अपनी रक्षा की जाए और या इसलिए आवश्यकता पड़ी ताकि देश में अमन स्थापित किया जाए। और जो

लोग इस्लाम को उसके फैलने से रोकते हैं और उन लोगों को क़त्ल कर देते हैं जो मुसलमान हों उनको कमज़ोर कर दिया जाए जब तक कि वे इस बेहूदा तरीक़े से तौबः करके इस्लाम की हुकूमत के आज्ञाकारी हो जाएं। तो ऐसे युद्ध का उस युग में कहां पता मिलता है जो बलात् मुसलमान बनाने के लिए किया जाता है। वहां ख़ुदा की दया ने दण्डयोग्य क़ौमों के लिए जो बहुत से ख़ून कर चुकी थीं और ख़ूनियों को मदद दे चुकी थीं और अपने अपराधों के कारण इन्साफ़ की दृष्टि से क़त्ल के योग्य थीं दया के तौर पर यह रियाअत रखी थी कि ऐसे अपराधी यदि सच्चे दिल से मुसलमान हो जाएं तो उनका वह जघन्य अपराध क्षमा कर दिया जाए। और ऐसे अपराधियों को अधिकार मिला था कि यदि चाहें तो इस दया पूर्ण कानून से लाभ उठाएं। निष्कर्ष यह कि जैसा कि ख़ुदा तआला ने मसीह मौऊद की यह निशानी पवित्र क़ुर्आन में वर्णन की थी कि لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ वह निशानी मेरे हाथ से पूरी हो गई। और जिस प्रकार ईसाइयों तथा हिन्दुओं पर हुज्जत पूरी की गयी, ऐसा ही सिक्खों पर भी हुज्जत को पूरा कर दिया गया। मैंने अपनी पुस्तक ''सत बचन'' में सिद्ध कर दिया है कि बाबा नानक वास्तव में मुसलमान थे और उन लोगों में से थे जिन का दिल ग़ैर के प्रेम और स्नेह से पवित्र किया जाता है और उनका चोला जो वह पहनते थे अब तक डेरा नानक में मौजूद है जिस पर पवित्र क़ुर्आन की आयतें लिखी हुई हैं और मोटी क़लम से अरबी भाषा में यह लिखा हुआ है कि इस्लाम के अतिरिक्त अन्य समस्त धर्म झूठे हैं जो ख़ुदा तआला तक नहीं पहुंचा सकते। अब इस से अधिक आदरणीय बावा साहिब के इस्लाम पर और क्या गवाही होगी कि वह स्वयं अपने चोले के लेख में इस बात का इक़रार व्यक्त करते हैं कि पृथ्वी पर केवल इस्लाम ही वह धर्म है जो सच्चा और ख़ुदा तआला की ओर से है। और मैंने सतबचन में यह भी सिद्ध किया है कि बाबा नानक साहिब मुसलमानों की तरह नमाज़ भी पढ़ा करते थे और एक या दो हज भी किए थे। और हयात ख़ान नामक एक अफ़ग़ान की लड़की से निकाह भी किया था और मुल्तान में एक बुज़ुर्ग की क़ब्र के पड़ोस में निरन्तर चालीस दिन तक चिल्ले में भी बैठे थे तथा कई अन्य वलियों की क़ब्रों पर भी चिल्लाकशी

की। और उनके इस्लाम पर ये तर्क ऐसे मज़बूत हैं कि इन से बढ़कर अन्य किसी तर्क की आवश्यकता नहीं। और ग्रन्थ के वे शेर जो उनकी ओर सम्बद्ध किए गए हैं पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा से सर्वथा अनुकूल हैं। अपितु वह अपने कुछ शेरों में अनुकूल हैं। अपितु वह अपने कुछ शेरों में सामान्य लोगों को नमाज़ की प्रेरणा देते हैं। और यदि मान लें कि ग्रन्थ में इस्लाम के बारे में कुछ अनादर के शब्द हैं तो निस्सन्देह बाबा साहिब का उन पवित्र शेरों से दामन पवित्र है। अपितु निस्सन्देह ये उस युग के शेर होंगे जब कि सिक्खों में इस्लाम के बारे में बहुत कुछ वैर और पक्षपात पैदा हो गया था। क्योंकि ग्रन्थ के शेर सब बाबा साहिब का ही कलाम नहीं है अपितु इसमें बहुत कुछ भण्डार दूसरे लोगों के शेरों का है जिन से हमें कुछ संबंध नहीं। इसके अतिरिक्त यह ग्रन्थ जो खालिसा साहिबों के हाथ में है बाबा साहिब की मृत्यु से बहुत समय बाद इकट्ठा किया गया और रिवायतों का कोई सिलसिला सिक्खों के हाथ में नहीं है। मालूम नहीं कि कहां-कहां से और किस-किस से ये शेर लिए गए और क्या कुछ कम किया गया या बढ़ाया गया। मैंने ग्रन्थ के वे शेर ध्यानपूर्वक देखे हैं जो बाबा नानक साहिब की ओर सम्बद्ध किए जाते हैं। और मैं एक लम्बे समय तक ग्रन्थ को सुनता रहा और स्वयं भी पढ़ता रहा और उसमें विचार करता रहा। मैं अपने पुख़्ता अनुभव के आधार पर दर्शकों को विश्वास दिलाता हूं कि उनमें से जितने उत्तम शेर अध्यात्म ज्ञान और वास्तविकताओं से भरे हुए हैं वह सर्वथा पवित्र क़ुर्आन का अनुवाद है। मालूम होता है कि बावा साहिब जो एक लम्बे समय तक अहले इस्लाम और औलिया-ए-इस्लाम की सेवा में रहे। उनके मुंह से ये क़ुर्आन के हक़ाइक़ सुनते रहे और अन्त में उन्हीं हक़ाइक़ को अपनी भाषा में अनुवाद करके पद्य में क़ौम की भलाई के लिए प्रसिद्ध कर दिया। अत: बावा साहिब का इस्लाम एक ऐसे चमकदार नक्षत्र के समान है जो किसी प्रकार छुप ही नहीं सकता। बाबा साहिब की यह कार्रवाई अत्यन्त सराहनीय है जो उन्होंने अपनी जमाअत को हिन्दुओं और उनके वेदों से पृथक कर दिया। जैसा कि अभी 1898 ई. या 1899 ई. में ग्रन्थ के कुछ विद्वान सिक्खों ने अख़बार आम में यह प्रकाशित कर दिया है कि हमें हिन्दुओं से कुछ संबंध नहीं। अत: यह हुज्जत

को पूरा करना है जो मैंने अपनी पुस्तकों में खालिसा क़ौम पर की है। अब यदि वे चाहें तो स्वीकार करें और बावा साहिब की असल इच्छा पर चलकर अपनी आख़िरत ठीक कर लें कि दुनिया में हमेशा रहना नहीं।

और एक सांझी कार्रवाई जिस से समस्त विरोधी धर्मों पर हुज्जत पूरी हो गयी है। मेरी ओर से यह है कि मैंने सार्वजनिक घोषणा कर दी है कि आसमानी निशान और बरकतें तथा परमेश्वर की शक्ति के काम केवल इस्लाम में ही पाए जाते हैं और दुनिया में कोई ऐसा धर्म नहीं कि उन निशानों में इस्लाम का मुक़ाबला कर सके। इस बात के लिए ख़ुदा तआला ने समस्त विरोधियों को दोषी और निरुत्तर करने के लिए मुझे प्रस्तुत किया है और मैं निश्चित तौर पर जानता हूं कि हिन्दुओं, ईसाइयों और सिक्खों में एक भी नहीं कि जो आकाशीय निशानों और स्वाकारिताओं तथा बरकतों में मेरा मुक़ाबला कर सके। यह बात प्रकट है कि ज़िन्दा धर्म वही धर्म है जो आकाशीय निशान साथ रखता हो और पूर्ण उत्तर का प्रकाश उसके सर पर चमकता हो तो वह इस्लाम है। क्या ईसाइयों सिक्खों में अथवा हिन्दुओं में कोई ऐसा है जो इसमें मेरा मुकाबला कर सके? **तो मेरी सच्चाई के लिए यह पर्याप्त हुज्जत है कि मेरे मुकाबले पर किसी क़ौम को क़रार नहीं**। अब जिस प्रकार चाहो अपनी तसल्ली कर लो कि मेरे प्रकटन से वह भविष्यवाणी पूरी हो गयी जो बराहीन अहमदिया में क़ुर्आनी आशय के अनुसार थी और वह यह है -

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡہُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡہِرَہٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّہٖ

क्रम संख्या 32.	निशान का विवरण

मुझे ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया में अपने इल्हाम से ख़बर दी है कि ईसाइयों की ओर से एक फ़ित्न: होगा और वे अपने धर्म के समर्थन में इस्लाम पर आरोप स्थापित करेंगे अर्थात् कुछ षड्यंत्र करेंगे और सच्चाई को छुपाएंगे और ख़ुदा भी मकर (षड्यंत्र) करेगा अर्थात ईसाइयों के षड्यंत्र की असल वास्तविकता खोल देगा और उनका छिद्रान्वेषण (पर्दादरी) करेगा और उनका षड्यंत्र उन्हीं के मुंह पर मारेगा। अत: इस भविष्यवाणी से लगभग पन्द्रह वर्ष पश्चात् डिप्टी अब्दुल्लाह

आथम ईसाई और उसके दोस्तों ने जो ईसाई थे यही षड्यंत्र किया। और इस्लाम की एक महान विजय को गुप्त रखने के लिए झूठ बोला और यह इफ़्तिरा किया कि आथम भविष्यवाणी से नहीं अपितु तीन आक्रमणों से भयभीत रहा। यह तो पाठकों को मालूम होगा कि मौत की भविष्यवाणी उसके पक्ष में की गयी थी और उस भविष्यवाणी की मीआद पन्द्रह माह थी परन्तु उसके साथ एक इल्हामी शर्त थी और वह यह थी कि यदि आथम पन्द्रह माह की मीआद में सच की ओर रुजू करेगा तो इस बात से बच जाएगा कि पन्द्रह माह के अन्दर-अन्दर मर जाए, अपितु उस की मृत्यु में कुछ विलम्ब डाल दिया जाएगा। अतः ऐसा ही हुआ कि आथम शर्त की पाबन्दी के कारण पन्द्रह माह की मीआद में न मरा अपितु कुछ विलम्ब के बाद मर गया। यह आथम की मृत्यु ऐसे रूप की थी जिस पर भविष्यवाणी का दूसरा पहलू साफ़-साफ़ सिद्ध करता था और सद्बुद्धि गवाही देती थी कि इल्हाम के आशय के अनुसार अवश्य ऐसा ही होना चाहिए था। और यदि ईसाइयों में से कोई जमाअत बुद्धिमान और न्यायप्रिय होती तो वह तुरन्त समझ जाती कि आथम की यह मृत्यु उस प्रकार की मृत्यु है जो इल्हामी शर्त पर अमल करने की हालत में और फिर धृष्ट एवं प्रतिज्ञा भंग होने की हालत में समय से पूर्व बताई गई थी और हज़ारों लोगों में प्रकाशित की गई थी। क्योंकि इल्हाम में यह बताया गया था कि आथम को इल्हामी शर्त की पाबन्दी का लाभ मिलेगा। परन्तु यदि इस शर्त पर क़ायम नहीं रहेगा तो फिर शीघ्र मौत आ जाएगी और ऐसा ही घटित हुआ। परन्तु खेद कि दुर्भाग्यशाली आथम ने जब शर्त की पाबन्दी के कारण पन्द्रह महीने के अन्दर मरने से मुक्ति पाई तो उसके विचार ने इस ओर पलटा खाया कि शायद मैं संयोग के तौर पर बच गया और डरने तथा रोने के प्रभाव से नहीं बचा। तब उसने न केवल सच्ची गवाही को छुपाया अपितु अपने भयभीत होने को छुपाने के लिए तीन झूठे आरोप भी मुझ पर लगाए। और जब आथम ने अपने भय और रोने की अन्य प्रकार से तावील कर ली और मुंह बन्द रख कर मीआद के अन्दर मरने से बच गया तो ईसाइयों ने भी शोर मचाया कि आथम मीआद के अन्दर क्यों नहीं मरा और आथम ने ईसाइयों को प्रसन्न करने के लिए तथा अपने उस भय की

वास्तविकता को छुपाने के लिए जो उसके कार्यों, कथनों और हरकतों से प्रकट हो चुकी थी। सरासर षड्यंत्र और छल से यह बहाना बनाया कि पन्द्रह माह तक जो मैं डरता रहा और रोता रहा और मुझ पर अत्यन्त भय और हताशा विजयी रही तो इसका यह कारण नहीं था कि मैं भविष्यवाणी की सच्चाई से डरता था अपितु मेरे क़त्ल करने के लिए तीन आक्रमण किए गए। सांप छोड़ा गया, कुछ सवार क़त्ल करने के लिए आए और उनके हाथ में बन्दूकें थीं और कुछ ने भालों के साथ मुझ पर आक्रमण करना चाहा। तो मैं पन्द्रह महीने के अन्दर जो भविष्यवाणी की मीआद थी इसी कारण से डरता और रोता रहा और मेरे दिल में से चैन और आराम जाता रहा। अत: यह आथम का एक षड्यंत्र था जो ईसाइयों के फ़ित्ने और कोलाहल का कारण हुआ और उसने अपने भय को छुपाने के लिए मुझ पर तीन झूठे आरोप लगा कर ईसाइयों को सरासर धोखा देता रहा और उसने इस धोखे देने में एक लज्जाजनक छल को इस्तेमाल किया। और ईमानदारी से काम न लिया। और स्पष्ट है कि यदि वह वास्तव में मेरे अत्याचारपूर्ण आक्रमण से घटित होने से जो न एक बार अपितु तीन बार पन्द्रह माह के अन्दर हुआ। हर समय रोता और गिड़गिड़ाने में व्यस्त रहा तो उचित था कि वह बुद्धिमत्ता के मार्ग से भविष्य में इन आक्रमणों के रोकथाम के लिए कोई कानूनी उपाय करता। क्योंकि वह तो लम्बे समय तक एक्स्ट्रा असिसटेण्ट भी रह चुका था और अंग्रेज़ी सरकार के कानून से अच्छी तरह परिचित था। वह कम से कम मेरे बारे में अदालत में नालिश कर सकता था ताकि पन्द्रह महीने की मीआद गुज़रने तक मेरी ज़मानत ली जाए या यह कि मुचिल्का ही लिया जाए। अपितु जबकि तीन बार ख़तरनाक आक्रमणों के द्वारा कत्ल का इक़्दाम हो चुका था तो उस पर आवश्यक था कि इक़्दाम-ए-कत्ल की नालिश करता। ताकि सरकार स्वयं वादी होकर असल वास्तविकता की जांच-पड़ताल करके ऐसे व्यक्ति को इक़्दाम-ए-क़त्ल का दण्ड देती जो इस अपराध का करने वाला हुआ हो। यदि कुछ नहीं कर सकता था तो यही करता कि ऐसे आपराधिक आक्रमणों की उस थाने में सूचना देता जिसकी सीमाओं के अन्दर यह अपराध हुआ था। ताकि पुलिस के अफ़सर स्वयं पड़ताल कर लेते।

और यदि वह इन समस्त उपायों से असमर्थ हो गया था तो इतना तो अवश्य चाहिए था कि वह कुछ अख़बारों में इन दर्द भरी घटनाओं को प्रकाशित करा देता। किन्तु चूंकि इस युग में अर्थात् पन्द्रह माह की मीआद में उसके कथनानुसार उस पर तीन आक्रमण हुए थे वह बिल्कुल खामोश रहा। और उसने सांकेतिक तौर पर भी किसी को नहीं बताया कि मेरे बारे में यह अपराधिक कार्रवाई आरंभ की गई है। और इस मीआद गुज़रने के बाद जब उस पर लोगों ने ऐतराज़ किए कि इतना क्यों डरता रहा और क्यों रोता रहा? तो यह बात कह दी कि उस पर तीन आक्रमण हुए थे। इस तरीक़े और रफ़्तार से नितान्त सफाई से सिद्ध है कि उसने अपनी इस लज्जा का दाग़ धोने के लिए जो रोते रहने, भयभीत रहने और हताश रहने के कारण उसके साथ संलग्न रह चुके थे जिस की सामान्य प्रसिद्धि हो गई थी। यह एक षड्यंत्र बनाया था जो लोगों के पास वर्णन किया कि मैं भविष्यवाणी के कारण नहीं अपितु तीन आक्रमणों के कारण रोता और डरता रहा। और शेष ईसाइयों ने इस षड्यंत्र को हाथ में लेकर अमृतसर और दूसरे शहरों में बहुत शोर मचाया और गालियों को चरम सीमा तक पहुंचा दिया। परन्तु खेद कि यदि कोई सुशील व्यक्ति तीन मिनट तक इस पर विचार करता या यदि अब भी विचार करे तो उस पर स्पष्ट होगा कि आथम की ओर से ये तीन आक्रमणों का बहाना सर्वथा षड्यंत्र था, जिसको दूसरे ईसाइयों ने अपनी ओर से रंग चढ़ाकर जगह-जगह सच्चाई की पद्धति में प्रसिद्ध किया। यदि यह प्रश्न हो कि क्योंकर मालूम हुआ कि आथम ने जो यह वर्णन किया कि पन्द्रह माह की मीआद में जो भविष्यवाणी की मीआद थी मेरे क़त्ल के लिए तीन आक्रमण किए गए। उसका यह बयान षड्यंत्र-व-छल है। वास्तविक नहीं है। तो इसका उत्तर अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि आथम के ये बहाने समय के बाद हैं। और उस का कदापि यह अधिकार नहीं था कि आक्रमणों के समय में जो डेढ़ वर्ष के लगभग का समय था बिल्कुल खामोश रह कर फिर उस मीआद गुज़रने के बाद यह चर्चा ज़बान पर लाता कि मैं इसलिए डरता रहा और रोता रहा कि मुझ पर तीन आक्रमण हुए थे। अपितु इस चर्चा का समय वह था और अभी पन्द्रह महीने की मीआद नहीं

गुज़री थी। तो चूंकि उसने उस समय अपनी ज़बान बन्द रखी जिस समय न्याय और कानून के अनुसार उस का अधिकार था कि अविलम्ब शोर मचाता। और उस समय में, डरने और अकेले कोने में बैठने के अतिरिक्त वह अन्य कोई शिकायत ज़बान पर न लाया। और फिर जब पन्द्रह माह की मीआद गुज़र गई और हज़ारों लोगों में यह घटना ख्याति पा गयी कि आथम भविष्यवाणी के समय में जो पन्द्रह महीने थी दिन-रात रोता रहा और डरता रहा, कांपता रहा और पागलों के समान किसी स्थान पर उसको चैन न था। तो फिर उस समय आथम ने लोगों के पास वर्णन करना आरंभ किया कि भविष्यवाणी की मीआद में अर्थात् पन्द्रह महीने के समय में मेरे क़त्ल करने के लिए तीन आक्रमण हुए थे। उन आक्रमणों के भय और डर से मैं रोता और डरता रहा। अब प्रत्येक बुद्धिमान सोच सकता है कि यह बयान जो समय के बाद था इसका कोई अन्य उचित कारण इसके अतिरिक्त सिद्ध नहीं होता कि वह शर्म जो सीमा से अधिक डरने और रोने के कारण आथम के साथ संलग्न हो गई थी उसके मिटाने के लिए आथम ने यह एक बहाना सोचा था। और इस पर एक अन्य तर्क यह भी है कि स्वयं आथम के ईसाई साथियों ने उसको कहा कि यदि वास्तविक तौर पर तीन आक्रमण कराने वाले पर नालिश करते हैं। परन्तु आथम ने नालिश से इन्कार किया। फिर स्वयं मैंने भी इस बात पर बार-बार ज़ोर लगाया कि यदि मेरी शिक्षा और मेरे कहने से तीन आक्रमण हुए हैं तो तुम्हें क़सम है कि मुझ पर नालिश करो। अन्यथा तुम निश्चित तौर पर झूठे हो और केवल शर्म का दाग़ दूर करने के लिए बातें बनाते हो। परन्तु फिर भी आथम ने नालिश न की। अन्त में फिर मैंने यह भी कहा कि यदि तुम भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से नहीं डरे और तीन आक्रमणों से डरे हो तो क़सम खा जाओ और इस क़सम खाने पर मैं तुम्हें चार हज़ार रुपया नक़द दूंगा। परन्तु उसने क़सम भी न खाई। तब मैंने इस निबन्ध के विज्ञापन सोलह हज़ार के लगभग प्रकाशित किए। परन्तु आथम ने तनिक ध्यान न दिया। अब प्रत्येक बुद्धिमान स्वयं सोच ले कि इन समस्त बातों को इकट्ठी नज़र से देखने से क्या सिद्ध होता है। मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कह सकता हूं कि यही सिद्ध होता है कि आथम अवश्य

भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से डरा। फिर जब भविष्यवाणी की मीआद गुज़र गई और उसने समझा कि अब मैं अमन में आ गया तो उस व्यक्ति के समान जो भय की घड़ी गुज़रने के बाद अपने भय को भिन्न-भिन्न प्रकार की तावीलों से छुपाता है तीन आक्रमणों का बहाना बना लिया और एक व्यापक षड्यंत्र और छल से ख़ुदा तआला की सच्ची भविष्यवाणी पर मिट्टी डालना चाही। परन्तु अन्ततः ख़ुदा के इल्हाम के अनुसार स्वयं ही मिट्टी में मिल गया। तो यह अर्थ बराहीन अहमदिया के इस इल्हाम के हैं कि

يَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الْمَا كِرِيْنَ

अर्थात् ईसाई षड्यंत्र करेंगे और ख़ुदा भी षड्यंत्र करेगा और ख़ुदा का षड्यंत्र विजयी होगा। और वे अपने षड्यंत्र से एक फ़ित्नः पैदा करेंगे। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-241 और इस फ़ित्ने का भाग वह फ़ित्नः भी है जो डॉक्टर मार्टिन क्लार्क से प्रकटन में आया जो मुझ को इक़्दाम-ए-क़त्ल का करने वाला ठहराया। सारांश यह कि बराहीन अहमदिया में आथम का फ़ित्नः और क्लार्क के बारे में यह महान भविष्यवाणी है जो साफ़ तौर पर समझ आती है।

देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-241

क्रम संख्या 33.	**निशान का विवरण**

इस बात पर लगभग बीस वर्ष का समय गुज़र चुका है कि उस समय कि जब मुझ को क़ादियान के कुछ लोगों के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था। यह इल्हाम हुआ

انت وجیہ فی حُضرتی. اخترتك لنفسی .انت منی بمنزلۃ توحیدی و تفردی . فحان ان تعان و تعرف بین الناس

देखो पृष्ठ 489 बराहीन अहमदिया और अनुवाद इस का यह है कि तू मेरी दरगाह में वजीह (सम्माननीय) है मैंने तुझे अपने लिए चुना। तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरी तौहीद और तफ़रीद (एकत्व)। अतः समय आ गया कि तू पहचाना जाए और लोगों में सम्मानपूर्वक प्रसिद्ध किया जाए।

और यही इल्हाम शब्दों में कुछ परिवर्तन के साथ बराहीन अहमदिया के

एक अन्य स्थान में है। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-2531 फिर इसके बाद ख़ुदा तआला ने कुछ वर्षों में ही अपने इल्हाम के अनुसार वह ख्याति दी कि मुझे करोड़ों लोगों में प्रसिद्ध कर दिया और हज़ारों लोग ऐसे पैदा हो गए कि वे ऐसी पूर्ण श्रद्धा रखते हैं कि ख़ुदा तआला के पवित्र नबियों के सच्चे अनुयायियों के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान पर उनका उदाहरण नहीं पाया जाता। और चूंकि यह भविष्यवाणी आज से बीस वर्ष पूर्व पुस्तक बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 253 तथा 489 में दर्ज होकर ऐसे युग में प्रकाशित हो चुकी है कि कोई सिद्ध नहीं कर सकता कि उस समय में लोगों का मेरी ओर कुछ भी रुजू न था और न यह सिद्ध कर सकता था कि उस समय यह ख़ाकसार एक ख्याति प्राप्त इन्सान था। इसलिए यह बहुत स्पष्ट बात है कि यह भविष्यवाणी ऐसी शान और प्रतिष्ठा के साथ पूरी हुई कि इस का उदाहरण नबियों के जीवन के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान पर नहीं पाया जाता। क्योंकि प्रत्येक तरीक़े के इन्सान बहुत दूर के देशों तक मेरी जमाअत में दाख़िल हुए और ख़ुदा तआला ने एक दुनिया को मेरी ओर रुजू दे दिया। तो निस्सन्देह यह भविष्यवाणी उन महान भविष्यवाणियों में से है जो सत्याभिलाषी के लिए विश्वास और ईमान में वृद्धि का कारण हैं।

क्रम संख्या 34.	**निशान का विवरण**

एक बार एक व्यक्ति शेख बहाउद्दीन नामक प्रधान मंत्री रियासत जूनागढ़ ने मेरे नाम पचास रुपए भेजे। और इस से पूर्व कि उसके रुपए की रवानगी से मुझे सूचना हो। ख़ुदा तआला ने अपने इल्हाम के द्वारा मुझे सूचना दी कि पचास रुपए आने वाले हैं। मैंने इस ग़ैब मात्र से बहुत से लोगों को समय से पूर्व बता दिया कि शीघ्र यह रुपया आने वाला है। और क़ादियान के शरमपत नामक एक आर्य को भी इसकी सूचना दी। यह वही शरमपत है जिसका इस से पूर्व कई बार इस पुस्तक में ज़िक्र आ चुका है। विचित्रतर बात यह है कि कथित आर्य ने मेरे इल्हाम को सुनकर कहा कि आज मैंने भी स्वप्न में देखा है कि आप को किसी स्थान से हज़ार रुपया आया है। तब मैंने उसे उत्तर दिया कि इस कारण से कि तुम्हें ईमान से हिस्सा नहीं तुम्हारे स्वप्न में उन्नीस हिस्से झूठ मिल गया है। अन्यथा

तुम ख़ूब याद रखो कि पचास रुपए आएंगे न कि हज़ार रुपए। अतः अभी वह मेरे मकान पर मौजूद था कि डाक द्वारा पचास रुपए आ गए जो कथित शेख ने भेजे थे। और यह निशान आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर हज़ारों लोगों में ख्याति पा चुका है। देखो मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया पृष्ठ-255 और लाला शरमपत को यदि हलफ़ देकर पूछा जाए तो विश्वास है कि सच कह देगा। परन्तु हलफ़ नमूना न. 2 के अनुसार होगा।

क्रम संख्या 35.	निशान का विवरण

एक वकील साहिब सियालकोट में हैं जिन का नाम लाला भीमसैन है। एक बार जब उन्होंने इस ज़िले में वकालत की परीक्षा दी तो मैंने एक स्वप्न के द्वारा उन को बताया कि ख़ुदा तआला की ओर से ऐसा प्रारब्ध है कि इस ज़िले के कुल लोग जिन्होंने वकालत या मुख़्तारी की परीक्षा दी है फ़ेल हो जाएंगे। परन्तु सब में से तुम एक हो कि वकालत में पास हो जाओगे। और यह ख़बर मैंने तीस के लगभग अन्य लोगों को भी बताई। अतः ऐसा ही हुआ और सियालकोट की समस्त जमाअत की जमाअत जिन्होंने वकालत या मुख्तारी की परीक्षा दी थी फ़ेल किए गए और केवल लाला भीमसैन पास हो गए। और वह अब तक सियालकोट में ज़िन्दा मौजूद हैं और जो कुछ मैंने वर्णन किया और वह हलफ़ उठाकर इस की पुष्टि कर सकते हैं। परन्तु मैं कई बार इस पुस्तक में लिख चुका हूं कि प्रत्येक क़सम खाने वाले की क़सम नमूना न. 2 के अनुसार होगी। और यह निशान आज से बीस वर्ष पूर्व पुस्तक बराहीन अहमदिया में दर्ज है। देखो पृष्ठ-256

क्रम संख्या 36.	निशान का विवरण

इन्हीं वकील साहिब अर्थात् लाला भीमसैन साहिब को जो सियालकोट में वकील हैं। एक बार मैंने स्वप्न के द्वारा राजा तेजा सिंह की मृत्यु की ख़बर पाकर उनको सूचना दी कि वह राजा तेजा सिंह जिन को सियालकोट के देहात जागीर के बदले में तहसील बटाला में देहात उसके इलाक़े की हुकूमत सहित मिले थे मृत्यु पा गए हैं। उन्होंने इस स्वप्न को सुनकर बहुत आश्चर्य किया और जब लगभग दो बजे के बाद दोपहर का समय हुआ तो मिस्टर प्रिसंब साहिब कमिश्नर

अमृतसर अचानक सियालकोट में आ गए और उन्होंने आते ही मिस्टर मुक्नेब साहिब डिप्टी कमिश्नर साहिब सियालकोट को हिदायत की कि राजा तेजा सिंह के बाग़ों इत्यादि की जो ज़िला सियालकोट में हैं बहुत शीघ्र एक लिस्ट तैयार होनी चाहिए क्योंकि वह कल बटाला में मृत्यु पा गए। तब लाला भीमसैन ने इस मृत्यु की ख़बर पर सूचना पाकर अत्यन्त आश्चर्य किया कि समय से पूर्व उसके मरने की ख़बर क्योंकर हो गई। और यह निशान आज से बीस वर्ष पूर्व पुस्तक बराहीन अहमदिया में दर्ज है। देखो पृष्ठ-256

क्रम संख्या 37.	निशान का विवरण

एक बार रुपयों की बड़ी आवश्यकता आ पड़ी जिस का हमारे यहाँ के आर्य लाला शरमपत तथा मलावामल को अच्छी तरह मालूम था और उनको यह भी मालूम था कि प्रत्यक्ष तौर पर कोई ऐसा अवसर नहीं जहाँ से उम्मीद हो सके। सहसा दुआ के लिए जोश पैदा हुआ ताकि कठिनाई भी हल हो जाए और इन लोगों के लिए निशान भी हो। अत: दुआ की गई कि अल्लाह तआला निशान के तौर पर आर्थिक सहायता से सूचना प्रदान करे। तब इल्हाम हुआ –"दस दिन के बाद मैं मौज दिखाता हूं"

الا انّ نصر اللہ قریب فی شائل مقیاس

Then will you go to Amritsar

अर्थात् दस दिन के बाद रुपया आएगा। ख़ुदा की मदद निकट है। और जैसे जब प्रसव के लिए ऊंटनी पूंछ उठाती है तब उसका बच्चा जनना निकट होता है। ऐसा ही ख़ुदा की सहायता भी निकट है। दस दिन के बाद जब रुपया आएगा तब तुम अमृतसर भी जाओगे।

तो ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार उपरोक्त कथित आर्यों के सामने घटित हुआ अर्थात् दस दिन तक कुछ न आया। ग्यारहवें दिन मुहम्मद अफ़्ज़ल ख़ान साहिब ने रावलपिण्डी से एक सौ दस रुपए भेजे, बीस रुपए एक अन्य स्थान से आए और फिर रुपया आने का सिलसिला ऐसा ही निरन्तर जारी रहा जिसकी आशा न थी। और जिस दिन मुहम्मद अफ़्ज़ल ख़ान साहिब इत्यादि का रुपया

आया अमृतसर भी जाना पड़ा क्योंकि अदालत खफ़ीफ़ा अमृतसर से एक गवाही के अदा करने के लिए उसी दिन सम्मन आ गया। और इस निशान के कथित दोनों आर्य गवाह हैं जो हलफ़ उठाकर वर्णन कर सकते हैं तथा कई अन्य मुसलमान भी गवाह हैं जो अब तक ज़िन्दा मौजूद हैं। और यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया में छप कर प्रसारित हो चुकी है। देखों बराहीन अहमदिया पृष्ठ 468, 469, 470

क्रम संख्या 38.	निशान का विवरण

एक साहिब हाफ़िज़ नूर अहमद नामक मौलवी ग़ुलाम अली क़सूरी के शागिर्द एक बार सैर करते हुए यहां भी आ गए और उन्होंने मुद्दई के तौर पर इल्हाम से इन्कार किया। बौद्धिक (तार्किक) तौर पर बहुत समझाया गया। अन्त में ख़ुदा की ओर ध्यान किया गया और उनको भविष्यवाणी के प्रकटन से पूर्व बताया गया कि दुआ की जाएगी। ताकि ख़ुदा तआला कोई ऐसी भविष्यवाणी प्रकट करे जो तुम स्वयं अपनी आँखों से देख जाओ। दुआ की गई। प्रातः काल कश्फ़ में एक पत्र दिखलाया गया जो एक व्यक्ति ने डाक में भेजा है उस पत्र पर अंग्रेज़ी भाषा में लिखा हुआ था I am quarreler और अरबी में लिखा हुआ था هٰذَا شَاهِدٌ نَزَّاغٌ और यही इल्हाम एक किताब से हिकायत के तौर पर इल्क़ा किया गया। पहले मियां नूर अहमद को इस कश्फ़ और इल्हाम से सूचना दी गई फिर एक अंग्रेज़ी जानने वाले से अंग्रेज़ी वाक्य के मायने पूछे गए। तो मालूम हुआ कि इसके मायने हैं – मैं झगड़ने वाला हूं। इस से निस्सन्देह मालूम हो गया कि किसी झगड़े के बारे में कोई पत्र आने वाला है। और अरबी वाक्य के यह मायने खुले कि पत्र के कातिब ने किसी मुक़द्दमे की गवाही के बारे में वह पत्र लिखा है। हाफ़िज़ नूर अहमद उस दिन वर्षा के कारण अमृतसर जाने से रोके गए और वास्तव में यह भी एक आकाशीय कारण था ताकि स्वयं अपनी आंखों से भविष्यवाणी के प्रकटन को देख लें। शाम को एक पत्र रजिस्टर्ड पादरी रजब अली मालिक प्रेस सफ़ीर हिन्द का आया जिस से मालूम हुआ कि पादरी साहिब ने अपने कातिब पर नालिश की थी और मुझे गवाह ठहराया है और साथ ही सरकारी सम्मन भी आया और इल्हामी वाक्य هٰذَا شَاهِدٌ نَزَّاغٌ अर्थात् गवाह तबाही डालने वाला है। इन मायनों पर

चरितार्थ मालूम हुआ कि पादरी साहिब को पूर्ण विश्वास था कि मेरी गवाही दृढ़ता और सच्चाई के कारण दूसरे पक्ष पर तबाही डालेगी। और संयोग से जिस दिन यह भविष्यवाणी पूरी हुई उसी दिन अमृतसर जाना पड़ा। और यह घटना आज से बीस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में दर्ज है। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 471, 472, 473 और हाफ़िज़ नूर अहमद जो फ़िर्क़ा अहले हदीस में से है अब तक अमृतसर में ज़िन्दा मौजूद है उस से प्रत्येक व्यक्ति मालूम कर सकता है परन्तु हलफ़ नमूना न. 2 के अनुसार होगा।

क्रम संख्या 39.	**निशान का विवरण**

एक बार फ़ज्र के समय इल्हाम हुआ कि आज हाजी अर्बाब मुहम्मद लश्कर खान के निकट संबंधी का रुपया आता है। लाला शरमपत तथा मलावामल खत्रियान निवासी क़ादियान को बदस्तूर सूचित किया गया। और तय पाया कि इन्हीं में से कोई डाक के समय डाकखाने में जाए। अत: इनमें से एक आर्य मलावामल नामक डाकखाने में गया और ख़बर लाया कि हूती मर्दान से दस रुपए आए हैं और पत्र में लिखा था कि यह रुपया अर्बाब सर्वर खान ने भेजा है। यद्यपि यह भविष्यवाणी इस प्रकार से साफ़ तौर पर पूर्ण हो गई परन्तु तथा कथित आर्यों ने इन्कार करके यह बहस आरंभ की कि निकट संबंधी होना साबित नहीं है अत: पत्र लिखने पर कई दिन बाद हूती मर्दान से एक साहिब मुन्शी इलाही बख्श एकाउण्टेण्ट ने लिखा कि अर्बाब सर्वर खान, अर्बाब मुहम्मद लश्कर खान का बेटा है। इस पर बहस करने वाले बहुत शर्मिन्दा और निरुत्तर हुए। इस पर ख़ुदा की प्रशंसा। और यह निशान आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में दर्ज किया गया है। देखो पृष्ठ 474 तथा कथित आर्यों से हलफ़ देकर मालूम किया जा सकता है।

क्रम संख्या 40.	**निशान का विवरण**

एक बार अप्रैल 1883 ई. में सुबह के समय जागने की अवस्था में जेहलम से रुपया रवाना होने की सूचना दी गई। इस बारे में जेहलम से कोई पत्र नहीं आया था और पूर्वोक्त आर्यों को जो स्वयं ही डाकखाने जा कर पत्र लाते थे इसकी जानकारी भी थी अपितु स्वयं डाकखाने का मुन्शी भी एक हिन्दू था। और

इन दिनों में एक हिन्दू इल्हामी भविष्यवाणी के लिखने के लिए बतौर रोज़नामचः नवीस नौकर रखा हुआ था और कुछ ग़ैबी बातें जो प्रकट होती थीं उसके हाथ से नागरी और फ़ारसी में घटना से पूर्व लिखवाई जाती थीं और उस पत्र पर उसके हस्ताक्षर भी कराए जाते थे। तो यह भविष्यवाणी भी बदस्तूर लिखाई गई। अभी पांच दिन नहीं गुज़रे थे कि जेहलम से पैंतालीस रुपए का मनी आर्डर आ गया। हिसाब किया गया तो मनी आर्डर के रवाना होने का ठीक वही दिन था जिस दिन ख़ुदा तआला की ओर से सूचना मिली थी। और यह निशान आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर हज़ारों लोगों में प्रकाशित हो चुका है। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 475 इस निशान के गवाह वही आर्य हैं और हलफ़ उठाकर वर्णन कर सकते हैं परन्तु हलफ नमूना न. 2 के अनुसार होगा।

क्रम संख्या 41.	निशान का विवरण

एक बार स्वप्न में देखा कि हैदराबाद से नवाब इकबालुद्दौला साहिब की ओर से पत्र आया है और उसमें कुछ रुपया देने का वादा है। स्वप्न बदस्तूर लिखवाया गया और उपरोक्त आर्यों को सूचना दी गई। इस पर ख़ुदा की हर प्रकार की प्रशंसा। इस निशान के गवाह वही आर्य हैं और हलफ़ उठा कर वर्णन कर सकते हैं। परन्तु हलफ़ नमूना न. 2 के अनुसार होगा। और यह निशान आज से बीस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में दर्ज हो चुका है। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ – 477

क्रम संख्या 42.	निशान का विवरण

एक दोस्त ने बड़ी मुश्किल के समय पत्र लिखा कि एक रिश्तेदार किसी संगीन मुकद्दमे में गिरफ़्तार है और रिहाई का कोई उपाय दिखाई नहीं देता और दुआ के लिए निवेदन किया। फिर उसी रात स्वीकृति का समय उपलब्ध हो गया और स्वीकार होने के लक्षणों से एक आर्य को सूचना दी गई। कुछ दिन बाद ख़बर मिली कि मुद्दई जिसने यह मुक़द्दमा दायर किया था अचानक मौत से मर गया और गिरफ़्तार व्यक्ति ने छुटकारा पाया। इस पर ख़ुदा की हर प्रकार की प्रशंसा। इसके गवाह भी कई मुसलमान और वही पूर्वोक्त आर्य हैं जो हलफ़ उठा कर वर्णन कर सकते हैं। परन्तु हलफ़ नमूना नं. 2 के अनुसार होगा। और यह

निशान आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में दर्ज है। देखो पृष्ठ 477, 478

क्रम संख्या 43.	निशान का विवरण

लगभग सत्ताईस वर्ष का समय गुज़रा है कि मैंने स्वप्न में देखा कि मैं एक विशाल स्थान पर हूं और वहां एक चबूतरा है जो एक दरमियानी क़द के इन्सान की कमर तक ऊंचा है और चबूतरे पर एक लड़का बैठा है जिसकी आयु चार-पांच वर्ष की होगी और वह लड़का अत्यन्त सुन्दर है तथा उसका चेहरा चमकता है। और उसके चेहरे पर एक ऐसा नूर और पवित्रता का रोब है जिस से मालूम होता है कि वह इन्सान नहीं है और तुरन्त देखते ही मरे दिल में गुज़रा कि वह फ़रिश्ता है। तब मैं उसके निकट गया। उसके हाथ में एक पवित्र नान (रोटी) था। जो पवित्रता और सफ़ाई में कभी मैंने दुनिया में नहीं देखा। और वह नान बिल्कुल ताज़ा था तथा चमक रहा था। फ़िरश्ते ने वह नान मुझ को दिया और कहा कि यह तेरे लिए और तेरे साथ के दरवेशों के लिए है। इस स्वप्न के गवाह शेख हामिद अली और मियां जान मुहम्मद और दोनों पूर्वोक्त आर्य तथा बहुत से अन्य निष्कपट दोस्त हैं। और यह स्वप्न उस युग में आया था जबकि मैं कोई प्रसिद्धि और दावा न रखता था और न मेरे साथ कोई दरवेशों की जमाअत थी। परन्तु अब मेरे साथ बहुत सी वह जमाअत है जिन्होंने स्वयं धर्म को दुनिया पर प्राथमिक रख कर स्वयं को दरवेश बना दिया है और अपनी मातृभूमियों से हिजरत करके और अपने पुराने दोस्तों और रिश्तेदारों से पृथक होकर और अपनी जीवन पद्धति को सरासर दरिद्रता और दरवेशी की ओर परिवर्तन देकर क़ादियान में मेरे पड़ोस में आबाद हो गए हैं तथा कुछ वे हैं जो दिलों से अपनी मातृभूमियों और अपनी जायदाद के प्रेम को दूर कर चुके हैं और शीघ्र ही वे भी इस क़ादियान की मिट्टी को मृत्यु तक अपनी मातृभूमि बनाना चाहते हैं। इसलिए यही दरवेश हैं जिन को ख़ुदा तआला ने मेरे इल्हामों में प्रशंसनीय कहा है। और यही हैं जिनको दरवेशी ने पराजित नहीं किया अपितु स्वयं उन्होंने दरवेशी को अपने लिए पसन्द किया। और ईमान की मिठास को पाकर समस्त मिठासों को दामन से फेंक दिया। उन्हीं के पक्ष में बराहीन अहमदिया के तीसरे भाग में यह इल्हाम है –

اَصحاب الصُّفّةِ و مَا اَدْرٰكَ ما اَصْحَابُ الصُّفّةِ تَرٰی اَعْیُنُھُمْ تَفِیْضُ مِنَ الدَّمْعِ یُصَلُّوْنَ عَلَیْكَ رَبَّنا اِنَّنَا سمعنا منادیًا یُّنَادِیْ للایمان وَدَاعِیًا اِلَی اللّٰہِ وَسِرَاجًا منیرًا رَبَّنَا اٰمَنَّا فَاکْتُبْنَامَعَ الشَّاھِدِیْنَ ★

बराहीन अहमदिया पृष्ठ 242

अनुवाद – पूर्ण निष्कपट वे हैं जो तेरे मकान के सुफ़्फ़ों में रहने वाले हैं अर्थात् अपने वतनों को छोड़ कर यहां आ गए हैं। और तू क्या जानता है कि क्या हैं सुफ़्फ़ों के रहने वाले। तू देखेगा कि उनकी आंखों से आंसू जारी होंगे और तुझ पर दरूद भेजते होंगे यह कहते हुए कि हे हमारे ख़ुदा! हमने एक मुनादी की आवाज़ सुनी कि जो लोगों को ईमान की ओर बुलाता है। वह ख़ुदा की ओर बुलाने वाला है और वह एक प्रकाशमान दीपक है जो अपने अस्तित्व में रोशन तथा दूसरों को रोशनी पहुंचाता है। हे हमारे ख़ुदा! तू उन लोगों में हमें लिख ले जिन्होंने तेरे मामूर और तेरे भेजे हुए की सच्चाई पर गवाही दी।

निष्कर्ष यह कि ख़ुदा तआला ने इन्हीं अस्हाबुस्सुफ्फः को समस्त जमाअत में से पसन्द किया है। और जो व्यक्ति सब कुछ छोड़ कर इस स्थान पर आकर आबाद नहीं होता और कम से कम यह दिल में यह इच्छा नहीं रखता उसकी हालत के बारे में मुझे आशंका है कि वह पवित्र करने वाले संबंधों में अपूर्ण न रहे और यह भविष्यवाणी महान है और उन लोगों की श्रेष्ठता प्रकट करती है जो ख़ुदा तआला के ज्ञान में थे कि वे अपने घरों और वतनों तथा जायदाद को छोड़ेंगे और मेरे पड़ोस के लिए क़ादियान में आकर रहेंगे। और यह भविष्यवाणी शेख हामिद अली तथा कई अन्य दोस्तों को समय से पूर्व बताई गई थी और वे हलफ़ उठाकर वर्णन कर सकते हैं।

क्रम संख्या 44.	**निशान का विवरण**

एक बार मौलवी मुहम्मद हुसैन एडीटर इशाअतुस्सुन्नः के दोस्तों में से एक

★ इतना वाक्य رَبَّنَا اٰمنا فاکتبنا مَعَ الشَّاھدین इस समय जो मैं यही वाक्य लिख रहा था, इल्हाम हुआ और आज 2 सितम्बर 1899 ई० दिन शानिवार और एक बजे, नमाज़ ज़ुहर का समय है। इसी से

नजफ़ अली नामक व्यक्ति क़ादियान में मेरे पास आया और उसके साथ मुहिब्बी मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब भी आए फिर ऐसा संयोग हुआ कि अस्र की नमाज़ के समय हम तीनों अर्थात् मैं, मिर्ज़ा ख़ुदाबख़्श साहिब और मियां नजफ़ अली मौलवी मुहम्मद हुसैन के दोस्त क़ादियान के उत्तरी ओर सैर करने गए और आते समय जैसा कि ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किया मैंने मियां नजफ़ अली साहिब को कहा कि मैंने कश्फ़ी तौर पर ऐसा देखा है कि तुम ने कुछ बातें मेरे बारे में विरोध और कपट की हैं। तो उसने मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब के समक्ष इस बात का इक़रार कर लिया कि ऐसी बातें उसकी जीभ पर जारी हुई थीं। अतः इस बात के गवाह मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब हैं जिन के सामने उस ने इक़रार किया। और मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) से अब तक ज़िन्दा मौजूद और मालेरकोटला में हैं। वह हलफ़ उठा कर वर्णन कर सकते हैं कि यह घटना वास्तव में सच्ची और सही है।

क्रम संख्या 45.	निशान का विवरण

लगभग पच्चीस वर्ष का समय गुज़र गया है कि मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि एक बड़ी लम्बी नाली है जो कई कोस तक चली जाती है और उस नाली पर हज़ारों भेड़ें लिटाई हुई हैं इस प्रकार से कि भेड़ों का सर नाली के किनारों पर है इसी उद्देश्य से ताकि ज़िबह करने के समय उनका ख़ून नाली में पड़े और उनके अस्तित्व का शेष भाग नाली से बाहर है। और नाली पूरब-पश्चित की ओर है और भेड़ों के सर नाली पर दक्षिण की ओर रखे गए हैं। और प्रत्येक भेड़ पर एक क़साई बैठा है। और उन समस्त क़साइयों के हाथ में एक-एक छुरी है जो प्रत्येक भेड़ की गर्दन पर रखी हुई है और उनकी नज़र आकाश की ओर है। मानो ख़ुदा तआला की अनुमति के प्रतीक्षक हैं। और मैं उस मैदान में उत्तरी ओर फिर रहा हूं और देखता हूं कि वे लोग जो वास्तव में फ़रिश्ते हैं भेड़ों को ज़िब्ह करने के लिए तैयार बैठे हैं। केवल आकाशीय अनुमति की प्रतीक्षा है। तब मैं उनके निकट गया और मैंने पवित्र क़ुर्आन की यह आयत पढ़ी - قل ما يعبؤا بكم ربّى لولا دعاؤ كم (अलफ़ुरक़ान-78) अर्थात् उन को कह दे कि मेरा ख़ुदा तुम्हारी क्या परवाह रखता है यदि तुम उस की इबादत न करो और उसके आदेशों को न सुनो। और मेरा

यह कहना ही था कि फ़रिश्तों ने समझ लिया कि हमें अनुमति मिल गई। मानो मेरे मुंह के शब्द ख़ुदा के शब्द थे। तब फ़रिश्तों ने जो क़साइयों के रूप में बैठे हुए थे तुरन्त अपनी भेड़ों ने एक दर्दनाक तौर पर तड़पना आरंभ किया। तब उन फ़रिश्तों ने सख़्ती से उन भेड़ों की गर्दन की समस्त रगें काट दीं और कहा कि तुम चीज़ क्या हो गू खाने वाली भेड़ें ही हो। मैंने इसकी यह ताबीर की कि एक बड़ा संक्रामक रोग होगा और उस से बहुत से लोग अपने कुकर्मों के कारण मरेंगे। और मैंने यह स्वप्न बहुतों को सुना दिया, जिन में से अधिकांश लोग अब तक ज़िन्दा हैं और हलफ़ उठाकर वर्णन कर सकते हैं। फिर ऐसा ही प्रकटन में आया। पंजाब, हिन्दुस्तान और विशेष तौर पर अमृतसर और लाहौर में इतना हैज़ा फूटा कि लाखों प्राणों की क्षति हुई और मौत का इतना बाज़ार गर्म हुआ कि मुर्दों को गाड़ियों पर लाद कर ले जाते थे और मुसलमानों का जनाज़ा पढ़ना कठिन हो गया।

क्रम संख्या 46.	**निशान का विवरण**

एक बार जिस को लगभग बाईस वर्ष का समय गुज़रा है एक अंग्रेज़ी जानने वाला मुझ से मिलने के लिए आया तो उसके सामने ही यह इल्हाम हुआ This is my enemy अर्थात् यह मेरा दुश्मन है। और यह भी मालूम हो गया कि यह इल्हाम उसी के बारे में है। फिर उस से इस इल्हाम के मायने पूछे गए और अन्ततः वह ऐसा ही आदमी निकला। और उसके आन्तरिक में भिन्न-भिन्न प्रकार की दुष्टताएं पाई गईं। इस इल्हाम के गवाह शेख हामिद अली हैं जिनकी पहले चर्चा हो चुकी है तथा कई अन्य दोस्त हैं जो अब तक ज़िन्दा मौजूद हैं जो क़सम खाकर वर्णन कर सकते हैं।

क्रम संख्या 47.	**निशान का विवरण**

समय बीस वर्ष हुआ कि मुझे यह इल्हाम हुआ

قُل جاء الحقّ وزهق الباطل انّ الباطل كان زهوقا. كلّ بركة من محمّد صلّى الله عليه وسلّم. فتبارك من علّم وتعلّم. قُل ان افتريتُهٗ فعلىّ اجرامى. هو الّذى ارسل رسُولهٗ بالهُدٰى ودين الحقّ ليظهرهٗ على الدين كلّهٖ. لا مبدل لِكَلمات الله. ظُلمُوا وانّ الله علٰى

نصرھم لقدیر۔ بخرام کہ وقتِ تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں برمنارِ بلندتر محکم افتاد۔ پاک محمد مصطفٰی نبیوں کا سردار۔

पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा नबियों का सरदार। ख़ुदा तेरे सब काम दुरुस्त कर देगा और तेरी सारी मनोकामनाएं तुझे देगा। फ़ौजों का रब्ब इस ओर ध्यान देगा इस निशान का उद्देश्य यह है कि पवित्र क़ुर्आन ख़ुदा की किताब और मेरे मुंह की बातें हैं। ख़ुदा के दरबार के उपकारों का दरवाज़ा खुला है और उसकी पवित्र रहमतें इस ओर ध्यान दे रही हैं। वे दिन आते हैं कि ख़ुदा तुम्हारी सहायता करेगा वह ख़ुदा जो प्रतापी और पृथ्वी तथा आकाश का पैदा करने वाला है।

देखो पृष्ठ 239 और पृष्ठ 522 बराहीन अहमदिया।

अनुवाद – सच आया और झूठ भाग गया और झूठ ने एक दिन भागना ही था। प्रत्येक बरकत (जो तुझे मिली है) वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिली है। दो लोग बड़ी बरकत वाले हैं जिनकी बरकतें कभी और किसी युग में समाप्त नहीं होंगी। एक वह अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिसकी ओर से और जिस की वदान्यता से ये समस्त बरकतें तुझ पर उतारी गई हैं और दूसरा वह मनुष्य जिस पर ये समस्त बरकतें उतरीं (अर्थात् यह विनीत) तू कह यदि मैंने यह झूठ गढ़ा है और ख़ुदा के इल्हाम से नहीं अपितु यह बात स्वयं बनाई है तो इस का वबाल मुझ पर होगा और मैं इस अपराध का दण्ड पाऊंगा। नहीं, अपितु सच बात यह है कि ख़ुदा ने इस रसूल अर्थात् तुझ को भेजा है तथा इसके साथ युग की आवश्यकता के अनुसार हिदायत अर्थात् मार्गदर्शन के ज्ञान और सांत्वना देने के ज्ञान और ईमान दृढ़ करने के ज्ञान और शत्रु पर हुज्जत पूरी करने के ज्ञान भेजे हैं। और इसके साथ धर्म को ऐसे चमकते हुए रूप के

साथ भेजा है जिस का सच होना और ख़ुदा की ओर से होना स्पष्ट तौर पर मालूम हो रहा है। ख़ुदा ने इस रसूल को अर्थात् कामिल मुजद्दिद को इसलिए भेजा है ताकि ख़ुदा इस युग में यह सिद्ध करके दिखा दे कि इस्लाम के मुक़ाबले पर सब धर्म और सब शिक्षाएं तुच्छ हैं। और इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो समस्त धर्मों पर प्रत्येक बरकत, सूक्ष्म मारिफ़त और आकाशीय निशानों में विजयी है। यह ख़ुदा का इरादा है कि इस रसूल के हाथ पर हर प्रकार से इस्लाम की चमक दिखा दे। कौन है जो ख़ुदा के इरादों को बदल सके। ख़ुदा ने मुसलमानों को और उनके धर्म को इस युग में पीड़ित पाया। और वह आया है ताकि इन लोगों तथा इन के धर्म की सहायता करे अर्थात् रूहानी तौर पर शक्ति दिखाए और आकाशीय निशानों से इसकी महानता और सच्चाई दिलों पर प्रकट करे। और वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान है, जो चाहता है करता है। अपनी शक्ति और उमंग के साथ पृथ्वी पर चल अर्थात् लोगों पर प्रकट हो कि तेरा समय आ गया, और तेरे अस्तित्व से मुसलमानों का क़दम एक सुदृढ़ और बुलन्द मीनार पर जा पड़ा। मुहम्मदी विजयी हो गए, वही मुहम्मद जो पवित्र और चुना हुआ तथा नबियों का सरदार है। ख़ुदा तेरे सब काम दुरुस्त करेगा और तेरी समस्त मनोकामनाएं तुझे देगा। वह तो फ़ौजों का मालिक है वह इस और ध्यान करेगा, अर्थात् आकाश से तेरी बड़ी सहायता की जाएगी और समस्त फ़रिश्ते तेरी सहायता में लगेंगे और एक बड़ा निशान आकाश से प्रकट होगा। इस निशान से मूल उद्देश्य यह है ताकि लोगों को ज्ञात हो कि पवित्र क़ुर्आन ख़ुदा का कलाम और मेरे मुंह से निकला है। ख़ुदा के उपकार का दरवाज़ा तुझ पर खोला गया है। और उसकी पवित्र रहमतें तेरी ओर ध्यान दे रही हैं और वे दिन आते हैं (अर्थात् करीब है) कि ख़ुदा तेरी सहायता करेगा। वही ख़ुदा जो प्रताप वाला और पृथ्वी एवं आकाश का स्रष्टा है। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-239 और पृष्ठ-522। इन समस्त इल्हामों में यह भविष्यवाणी थी कि ख़ुदा तआला मेरे हाथ से और मेरे ही द्वारा इस्लाम धर्म की सच्चाई और समस्त विरोधी धर्मों का झूठा होना सिद्ध कर देगा तो आज वह भविष्यवाणी पूरी हो गयी। क्योंकि मेरे सामने किसी विरोधी की मजाल नहीं कि अपने धर्म की सच्चाई सिद्ध कर

सके। मेरे हाथ से आकाशीय निशान प्रकट हो रहे हैं और मेरी क़लम से क़ुर्आन की वास्तविकताएं और मआरिफ़ चमक रहे हैं। उठो और समस्त संसार में तलाश करो कि कोई ईसाइयों में से या सिक्खों में से या यहूदियों में से या किसी अन्य फ़िर्क़े में से कोई ऐसा है जो आकाशीय निशानों के दिखाने तथा अध्यात्म ज्ञानों और सच्चाइयों के वर्णन करने में मेरा मुक़ाबला कर सके।

मैं वही हूं जिसके बारे में सिहाह (हदीस की छः प्रमाणित पुस्तकें) में यह हदीस मौजूद है कि उस के युग में समस्त मिल्लतें मर जाएंगी सिवाए इस्लाम के जो ऐसा चमकेगा कि मध्यवर्ती युगों में कभी नहीं चमका होगा। परन्तु मरने से यह अभिप्राय नहीं कि विरोधी तलवार से पराजित किए जाएंगे ऐसे विचार ग़लतियां हैं। अपितु इस से अभिप्राय यह है कि उन समस्त धर्मों से बरकत की रूह जाती रहेगी और वे ऐसे हो जाएंगे जैसा कि निष्प्राण शरीर। अतः यह वही युग है। क्या कभी किसी आंख ने देखा है कि जिस मुक़ाबले के लिए मैं लोगों को बुलाता हूं कभी किसी ने मध्यवर्ती युगों में से इस प्रकार बुलाया। ये इन्सान के दिन नहीं अपितु ख़ुदा के दिन हैं और अय्यामुल्लाह हैं। यह कारोबार पृथ्वी से नहीं अपितु उसके हाथ से है जो प्रतापी, जीवित और क़ायम रहने वाला है मुबारक वह दिल जो शर्मिन्दा होने से पूर्व समझ ले और मुबारक वे आंखें जो गिरफ़्त की घड़ी से पूर्व देख लें।

क्रम संख्या 48.	**निशान का विवरण**

बीस वर्ष का समय गुज़र गया कि मुझे यह इल्हाम हुआ था –

ينصرك الله من عنده ينصرك رجال نوحی الیھم من السّماء۔ یأتون من کُلّ فجٍّ عمیق۔ الا ان نصر اللّٰہ قریب۔ یأتیک من کلّ فجٍّ عمیق۔ لامُبدّل لکلمات اللّٰہ یتمّ نعمتہ علیک لیکون آیۃ للمؤمنین فبشّر ومَا انت بنعمت ربّک بمجنون۔ قُل ان کنتم تحبون اللّٰہ فاتّبعونی یحببکم اللّٰہ۔ انّا کفیناك المستھزئین۔ انت علٰی بیّنۃٍ من ربّک ۔ قل عندی شھادۃ من اللّٰہ فھل انتم مؤمنون۔ قل عندی شھادۃ من اللّٰہ فھل انتم مُسلمون۔ قل اعملوا علٰی مکانتکم انّی عامل فسوف تعلمون۔ و یخوّفُونک من دونہ۔ انّک

باعيننا سمّيتك المتوكّل يحمدك الله من عرشه۔ نحمدك ونصلّى۔

पृष्ठ 239, 240, 241 बराहीन अहमदिया।

अनुवाद – ख़ुदा अपनी ओर से तेरी सहायता करेगा। तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिन के दिलों में हम आकाश से इल्हाम करेंगे और वे दूर-दूर के मार्गों से तेरे पास आएंगे। ख़ुदा के वादों को कोई टाल नहीं सकता। वह अपनी नेमतें तुझ पर पूरी करेगा ताकि ख़ुदा का यह कार्य मोमिनों के लिए निशान हो अतः तू मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे। तू उसके फ़ज़्ल और अनुकम्पा से मज्नून (दीवाना) नहीं है। तू लोगों को कह दे कि यदि तुम ख़ुदा से प्रेम रखते हो तो आओ मेरा अनुकरण करो तो ख़ुदा भी तुम से प्रेम करेगा। और वे जो तुझ से और तेरे इल्हाम से हंसी करते हैं हम उनके लिए पर्याप्त हैं। अर्थात् तुझे सब्र करना चाहिए। तू खुले-खुले तर्क के साथ ख़ुदा की ओर से है। तू उनको कह दे कि मैं ख़ुदा की गवाही अपने पास रखता हूं। उनको कह दे कि देखो मेरे पास ख़ुदा की गवाही है। क्या अब भी तुम गर्दनें झुकाओगे या नहीं। और यदि तुम भी कुछ चीज़ हो तो अपने मकान पर फ़ैसले के लिए कोशिश करो और मैं भी करूंगा। फिर तुम देखोगे कि ख़ुदा किस के साथ है। और ये लोग ख़ुदा के अतिरिक्त जनों से तुझे डराएंगे। अर्थात् सरकार में झूठी जासूसियां करेंगे ताकि वह किसी अपराध में पकड़ें। और अपनी क़ौम को प्रेरणा देंगे ताकि तुझे क़त्ल कर दें। परन्तु तू हमारी आंखों के सामने है। उनकी शरारतों से तेरी कुछ भी हानि न होगी। मैंने तेरा नाम मुतवक्किल रखा। ख़ुदा अपने अर्श पर से तेरी प्रशंसा करता है। यह एक बड़ी भविष्यवाणी है जो आज से बीस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर हज़ारों लोगों में तथा प्रत्येक क़ौम में प्रकाशित हो चुकी है। इस भविष्यवाणी में एक यह वाक्य है कि लोग दूर-दूर से आएंगे और तेरी सेवा करेंगे।

अब देखो कि यह कैसा सर्वथा ग़ैब (परोक्ष) का कलाम है। क्योंकि बराहीन अहमदिया के समय में अपितु कई वर्ष इस से भी पहले जब यह इल्हाम हुआ था। उस समय मेरी हालत और श्रेष्ठता लोगों के दिलों में इतनी भी न थी कि कोई व्यक्ति दो कोस से भी मेरे पास आता। किन्तु इस भविष्यवाणी के पश्चात् लोग

हज़ारों कोसों से मेरे पास आए। पेशावर, बम्बई, हैदराबाद, कलकत्ता, मद्रास, बुखारा और काबुल के सीमान्त इत्यादि देशों से हार्दिक श्रद्धा के साथ मेरे पास पहुंचे और प्रत्येक ने अपनी-अपनी सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार उपहार और माल प्रस्तुत किए। मुझे कुछ आवश्यक नहीं कि इस का अधिक सबूत दूं क्योंकि मैं गुमान करता हूं कि विरोधियों में से ऐसा बेशर्म कोई न होगा जो इन स्पष्ट घटनाओं से इन्कार करे। एक उन में से जो दूर-दूर से आते हैं अख़्वैम हुब्बी फ़िल्लाह सेठ अब्दुर्रहमान साहिब मद्रासी हैं जो हर वर्ष मद्रास से संकल्प करके क़ादियान में पहुंचते हैं और दिल-व-जान से हमारे सिलसिले की सहायता के लिए तत्पर हैं। और यद्यपि उनकी सेवाएं उनकी श्रद्धा और आस्था के समान बहुत बढ़ी हुई हैं और आवश्यकता के समयों पर उन से हज़ारों रुपए की सहायता पहुंचती है। परन्तु एक अनिवार्य कर्तव्य की तरह एक सौ रुपया माहवार सिलसिले की सहायता के लिए उन्होंने निर्धारित कर रखा है जो बिना अवकाश प्रति माह पहुंचता रहता है। ऐसा ही अपनी सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार और दूर-दूर के दोस्त भी हैं जो हमेशा क़ादियान में आते और आर्थिक सेवाएं करते हैं। अब देखो यह भविष्यवाणी कैसी साफ़ और स्पष्ट है। ऐसा ही इसका भाग दूसरी भविष्यवाणी कि दूर-दूर से ख़ुदा की सहायता तुझे आएगी। इसका सत्यापन डाकखाने के रजिस्टरों से हो सकता है कि किस-किस ज़िले दूर-दूर देशों से लोग रुपया भेजते हैं। क्या आज से बीस वर्ष पूर्व किसी के गुमान में था कि इतना रुपया और अन्य उपहार आएंगे। यदि यह इन्सान का कार्य था तो किसी और को भी चाहिए था कि ऐसी राय प्रकट करता। फिर एक वाक्य उस भविष्यवाणी में यह है कि ख़ुदा प्रत्येक प्रकार की नेमत तुझ पर पूरी करेगा। अब बताओ कि इस तरीके पर जो ख़ुदा तआला का नबियों से मामला है कि कौन सी नेमत शेष रही है जो ख़ुदा ने मुझ पर पूरी नहीं की। क्या ख़ुदा का यह महान निशान नहीं कि हमारे इस सिलसिले के बढ़ जाने के कारण जब हर प्रकार से खर्च अधिक हो गए और केवल एक लंगर का खर्च ही एक हज़ार रुपया माहवार तक पहुंच गया और लगभग प्रत्येक माह में विज्ञापन प्रकाशित करने का खर्च तथा प्रत्येक महीने के सैकड़ों पत्रों के उत्तरों का खर्च और सिलसिले की

आवश्यकताओं के कारण नए मकान बनाने का खर्च और मदरसे के उस्तादों का खर्च हमारे लिए अनिवार्य हो गए। तो इन समस्त कार्यों को चलाने के लिए ग़ैब के पर्दे से ख़ुदा तआला ने सहायता की और हमेशा कर रहा है। तो इसी निशान के बारे में आज से बीस वर्ष पूर्व भविष्यवाणी की गई थी। देखो हमारे विरोधी मौलवी किस तंगी और कष्ट से गुज़ारा करते हैं और कैसे उनके कुछ लोग अब अपनी योजनाओं को छोड़ कर खेती बाड़ी का अपमान उठाने को भी तैयार हैं। परन्तु यहां आकाशीय बरकतों की वर्षा हो रही है। लोग श्रद्धा और विश्वास से हमारी चौखट पर गिरे जाते हैं। प्रत्येक सप्ताह में कई मौलवियों और इस्लामी विद्वानों के तौबः नामे पहुंच रहे हैं और लाखों लोगों के दिल गवाही दे रहे हैं कि इस्लाम में यही एक फ़िर्क़ा है जो इस्लामी बरकतों का मालिक है और जिसकी सच्चाई की चमकारें विरोधियों की आंखों को स्तब्ध कर रही हैं। यही एक फ़िर्क़ा (समुदाय) है जो ख़ुदा के निशान दिखाने के लिए मैदान में खड़ा है और यही एक समुदाय है जो क़ुर्आन की सच्चाइयां और अध्यात्म ज्ञान वर्णन करता है, और यही एक समुदाय है जिसने शत्रुओं की आस्थाओं की जड़ निकाल कर लोगों को दिखा दी है। फिर इन्हीं भविष्यवाणियों के समूह में एक यह भी भविष्यवाणी है कि

قل عندی شہادۃ من اللہ فھل انتم مؤمنون ---الخ

अर्थात् मेरी सच्चाई पर ख़ुदा गवाही दे रहा है और अपने आकाशीय निशानों से बता रहा है कि यह व्यक्ति मेरी ओर से है और ख़ुदा तआला इसी इल्हाम के बाद की इबारत में इस्लाम के समस्त मौलवियों, सूफ़ियों, सज्जादा नशीनों, इल्हाम और चमत्कार के दावेदारों और ऐसा ही इस्लाम के विरोधी दल के सरदारों को भी सामान्य दावत करके मुझे सम्बोधित करता है कि इन को कह दे कि यदि तुम सन्देह में हो और उन बरकतों पर जो मुझ पर उतरी हैं तुम्हारा विश्वास नहीं है और तुम स्वयं को बेहतर और या अपने धर्म को सच्चा समझते हो तो आओ इस फ़ैसले के लिए ऐसा करो कि अपने मकान पर ख़ुदा तआला से चाहो कोई ऐसा निशान और बरकतें तुम्हारा सम्मान प्रकट करने के लिए दिखा दे जिन से सिद्ध हो कि तुम्हें ख़ुदा के पास सानिध्य प्राप्त है, और मैं भी अपने मकान में ख़ुदा तआला

से चाहूंगा कि मेरा सम्मान और श्रेष्ठता प्रकट करने के लिए मुकाबले पर कोई ऐसी बरकतें तथा निशान प्रकट करे जिन से व्यापक तौर पर सिद्ध हो कि मुझे ख़ुदा के दरबार में सानिध्य का स्थान प्राप्त है। और फिर इसके बाद तुम्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा कि तुम्हारी ये सब ग़लतियां हैं कि तुम मेरे मुकाबले पर स्वयं को ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा), बरकत और समर्थन का पात्र समझते हो। फिर इसके साथ की इबारत में यह भविष्यवाणी करता है कि ये लोग सच्चाई के रंग में मुकाबला करने से असमर्थ होकर लोफ़रपन के तरीके को अपनाएंगे और डराना, गालियां देना, अपमान करना, इफ़्तिरा करना और इल्ज़ाम लगाना उनका आचरण होगा और कोशिश करेंगे कि अधिकारियों की ओर तुम खींचे जाओ। और अपनी क़ौम को बहकाएंगे ताकि उनमें से कोई तुझे क़त्ल कर दे, किन्तु ख़ुदा तेरा रक्षक होगा और वे अपने समस्त छलों में असफल रहेंगे। अब न्याय-प्रकृति पाठकगण तनिक ध्यानपूर्वक देखें कि ये भविष्यवाणियां उस पुस्तक में अर्थात् बराहीन अहमदिया में दर्ज हैं जिस के प्रकाशित करने पर भी बीस वर्ष गुज़र गए। क्या यह इन्सान की शक्ति है कि इस शक्ति और क़ुदरत से भरी हुई भविष्यवाणी इस बहादुरी के साथ समय से पूर्व छाप कर समस्त क़ौमों में प्रकाशित करे।

क्रम संख्या 49.	निशान का विवरण

लगभग अठारह वर्ष से एक यह भविष्यवाणी है –

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ جَعَلَ لَکُمُ الصِّھْرَ وَالنَّسَبَ

अनुवाद – वह ख़ुदा सच्चा ख़ुदा है जिसने तुम्हारा दामादी का संबंध एक शरीफ़ क़ौम से जो सय्यिद थे किया। और स्वयं तुम्हारे ख़ानदान को शरीफ़★ बनाया जो फ़ारसी ख़ानदान से परस्पर मिश्रित है। इस भविष्यवाणी को दूसरे इल्हामों में और भी व्यापक तौर पर वर्णन किया गया है, यहां तक कि उस शहर का नाम भी लिया गया था जो देहली है। और यह भविष्यवाणी बहुत से लोगों को सुनाई गयी थी जिनमें से एक शेख़ हामिद अली और मियां जान मुहम्मद

★**हाशिया :-** हमारे ख़ानदान की क़ौम स्पष्ट है और वह यह है कि वे क़ौम के बरलास

और कुछ दूसरे दोस्त हैं। और ऐसा ही हिन्दुओं में से शरमपत और मलावामल खत्रियान निवासी क़ादियान को समय से पूर्व यह भविष्यवाणी बताई गई थी और जैसा कि लिखा था ऐसा ही प्रकटन में आया। क्योंकि पुराने संबंधों और रिश्ते के बिना देहली में एक शरीफ़ और प्रसिद्ध ख़ानदान सादात में मेरी शादी हो गई। और यह ख़ानदान ख़्वाजा मीरदर्द की लड़की की सन्तान में से है जो देहली के प्रसिद्ध महान सादात में से हैं जिनको चुग़ताई शासन की ओर से बहुत से देहात बतौर जागीर दिए गए थे। और अब तक उस जागीर में से विभाजन होकर इस ख़ानदान के समस्त लोग जो ख़्वाजा मीर-दर्द के वारिस हैं अपने-अपने हिस्से पाते हैं। अब स्पष्ट है कि यह देहलवी ख़ानदान जिससे मेरा दामादी का संबंध है, केवल इसी कारण से श्रेष्ठता नहीं रखता है कि वह अहल-ए-बैअत और प्रमाणित सय्यद हैं बल्कि इस कारण से भी श्रेष्ठता रखता है कि ये लोग ख़्वाजा

शेष हाशिया - मुग़ल हैं। और हमेशा इस ख़ानदान के बड़े लोग अमीर और देश के शासक रहे हैं। वे समरकंद से किसी फूट के कारण बाबर बादशाह के काल में पंजाब में आए और इस इलाक़े की एक बड़ी हुकूमत उनको मिली तथा कई सौ देहात उनके स्वामित्त्व के थे जो अन्त में कम होते-होते 84 रह गए। और सिक्खों के युग में वे भी हाथ से जाते रहे। और पांच गांव शेष रह गए। और फिर एक गांव उन में से जिस का नाम बहादुर हुसैन★ था जिसे हुसैन नामक एक बुज़ुर्ग ने आबाद किया था। अंग्रेज़ी शासन काल में हाथ से जाता रहा। क्योंकि हमने स्वयं लापरवाही से एक मुद्दत तक इस गांव से कुछ वसूल नहीं किया था। और जैसा कि प्रसिद्ध चला आता है। हमारी क़ौम को सादात से यह संबंध रहा है कि हमारी कुछ दादियां शरीफ़ और प्रसिद्ध सादात ख़ानदान से हैं। परन्तु मुग़ल क़ौम के होने के बारे में ख़ुदा तआला के इल्हाम ने विरोध किया है, जैसा कि बराहीन अहमदिया पृष्ठ 242 में यह इल्हाम है خذوا التوحید التوحید یا ابناء الفارس अर्थात् तौहीद (एकत्व) को पकड़ो, तौहीद को पकड़ो हे फ़ारस के बेटो। इस इल्हाम से व्यापक तौर पर समझा जाता है कि हमारे बुज़ुर्ग वास्तव में बनी फ़ारस हैं। और अनुमान के क़रीब है कि उनको मिर्ज़ा की उपाधि बादशाह की ओर से बतौर उपाधि दिया गया हो। परन्तु इल्हाम ने इस बात का इन्कार नहीं किया कि माँ की ओर से हमारा ख़ानदान सादात से मिलता है अपितु

★ यह गांव बटाला से उत्तर की ओर तीन कोस की दूरी पर है। इसी से

मीर-दर्द की लड़की के लड़के हैं और देहली में यह ख़ानदान चुग़ताई हुक़ूमत के ज़माने में अपने सही वंश, प्रसिद्धि, कुलीनता और शराफ़त में ऐसा मशहूर रहा है कि इसी सादात ख़ानदान की श्रेष्ठता, प्रसिद्धि और बुज़ुर्गी के कारण कुछ नवाबों ने उनको लड़कियां दीं। जैसा कि रियासत लोहारू का ख़ानदान। निष्कर्षत: यह ख़ानदान अपनी व्यक्तिगत खूबियों और कुलीनता के कारण तथा ख़्वाजा मीरदर्द की लड़की की सन्तान होने के कारण ऐसे सम्मान से देखा जाता था कि मानो देहली से अभिप्राय इन्हीं परिजनों का अस्तित्व था। और चूंकि ख़ुदा तआला का वादा था कि मेरी नस्ल में से एक बड़ी बुनियाद हिमायत-ए-इस्लाम की डालेगा और उसमें से वह मनुष्य पैदा करेगा जो अपने अन्दर आकाशीय रूह रखता होगा। इसलिए उसने पसन्द किया कि इस ख़ानदान की लड़की मेरे निकाह में लाए और इस से वह सन्तान पैदा करे जो उन प्रकाशों को जिन का मेरे हाथ से बीजारोपण हुआ है दुनिया में अधिक से अधिक फैला दे। और यह अद्भुत संयोग है कि जिस प्रकार सादात की दादी का नाम शहरबानो था, इसी प्रकार मेरी यह पत्नी जो भावी ख़ानदान की मां होगी इस का नाम नुसरत जहां बेगम

शेष हाशिया - इल्हामों में इसकी पुष्टि है। और ऐसा ही कुछ कश्फ़ों में भी इस की पुष्टि पाई जाती है। इस स्थान पर यह अद्भुत रहस्य है कि जब ख़ुदा तआला ने यह इरादा किया कि सादात की सन्तान को दुनिया में प्रचुरता से बढ़ाए तो एक शरीफ़ औरत फ़ारसी नस्ल को अर्थात् शहर बानो को उनकी दादी बनाया और उस से अहल बैत और फ़ारसी ख़ानदान के ख़ून को परस्पर मिला दिया। और ऐसा ही इस स्थान पर भी जब ख़ुदा तआला का इरादा हुआ कि इस ख़ाकसार को दुनिया के सुधार के लिए पैदा करे और मुझ से बहुत सी सन्तान और नस्ल दुनिया में फैला दे जैसा कि उसके इस इल्हाम में है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 490 में दर्ज है। तो फिर दोबारा उस ने फ़ारसी ख़ानदान और सादात के ख़ून को परस्पर मिलाया और फिर मेरी सन्तान के लिए तीसरी बार इन दोनों ख़ूनों को मिलाया अन्तर केवल यह रहा कि हुसैनी ख़ानदान के स्थापित करने के समय पुरुष अर्थात् इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ातिमा रज़ियल्लाहु की सन्तान में से था। और इस जगह औरत अर्थात् मेरी पत्नी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की नस्ल में से अर्थात् सय्यिद है जिस का नाम बजाए शहरबानो के नुसरतजहां बेगम है। इसी से।

है। यह संयोग के तौर पर इस बात की ओर संकेत मालूम होता है कि ख़ुदा ने समस्त संसार की सहायता के लिए मेरे भविष्य के ख़ानदान की नींव डाली है। यह ख़ुदा तआला की आदत है कि कभी नामों में भी उसकी भविष्यवाणी छुपी होती है। तो इसमें वह भविष्यवाणी छुपी है जिस की व्याख्या बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 490, और पृष्ठ 557 में मौजूद है। और वह यह इल्हाम है-

سبحان اللہ تبارك وتعالیٰ زاد مجدك ینقطع اٰباءك ویبدءُ منك نُصرت بالرعب واحییت بالصدق ایّھا الصدّیق۔ نصرتَ وقالوا لات حین مناصٍ

"मैं अपनी चमकार दिखलाऊंगा अपनी कुदरत नुमाई (कुदरत के प्रदर्शन) से तुझ को उठाऊंगा। दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसको क़ुबूल न किया, लेकिन ख़ुदा उसे क़ुबूल करेगा और बड़े ज़ोरआवर हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।" और अरबी इल्हाम का अनुवाद यह है समस्त पवित्रताएं ख़ुदा के लिए हैं जो बड़ी बरकतों वाला और महान है। उसने तेरी ख़ानदानी बुज़ुर्गी को तेरे अस्तित्व के साथ बढ़ा दिया। अब ऐसा होगा कि भविष्यवाणी में तेरे बाप दादे का ज़िक्र काट दिया जाएगा और ख़ानदान का प्रारंभ तुझ से होगा, तुझे रोब के साथ नुसरत दी गई है और सिद्क़ (सच) के साथ तू हे सिद्दीक़ ज़िन्दा किया गया। सहायता तेरे साथ अनिवार्य हो गई और दुश्मनों ने कहा कि अब बचने का कोई स्थान नहीं। और उर्दू इल्हाम का सारांश यह है- कि मैं अपनी क़ुदरत के निशान दिखाऊंगा और एक चमक पैदा होगी जैसा कि बिजली से आकाश के किनारों में चमकती है इस चमक से मैं लोगों को दिखा दूंगा कि तू सच्चा है। यदि दुनिया ने क़बूल किया तो क्या हर्ज मैं अपना क़बूल करना लोगों पर ज़ाहिर कर दूँगा जैसा कि सख़्त हमलों के साथ तुझे झुठालाया गया ऐसा ही तीव्र आक्रमणों के साथ मैं तेरी सच्चाई प्रकट कर दूंगा। निष्कर्ष यह कि यहां अरबी इल्हाम में जैसा कि नुसरत का शब्द आया है। इसी प्रकार मेरी पत्नी का नाम नुसरत जहां बेगम रखा गया। जिसके यह मायने हैं

कि संसार को लाभ पहुंचाने के लिए आकाश से सहायता साथ होगी। और उर्दू इल्हाम जो अभी लिखा गया है एक महान भविष्यवाणी पर आधारित है। क्योंकि यह इल्हाम यह सूचना देता है कि एक वह समय आता है कि बहुत झुठलाया जाएगा और बड़ा तिरस्कार और अनादर होगा। तब ख़ुदा का स्वाभिमान जोश में आएगा और जैसा कि बड़ी सख़्ती के साथ झुठलाया गया ऐसा ही अल्लाह तआला सख़्त आक्रमणों के साथ तथा आकाशीय निशानों के साथ सच्चाई का सबूत देगा। और इस पुस्तक को पढ़ कर प्रत्येक न्यायवान जान लेगा कि यह भविष्यवाणी कैसी सफ़ाई से पूरी हुई और उपरोक्त इल्हाम अर्थात् यह इल्हाम कि الحمدللہ الّذی جَعَلَ الصّھر و النّسب जिसके मायने हैं कि ख़ुदा ने तुझे प्रत्येक पहलू तथा प्रत्येक ओर से ख़ानदानी कुलीनता का गौरव प्रदान किया और दामादी के रिश्ते का ख़ानदान दोनों चुने हुए हैं। अर्थात् जिस स्थान पर दामाद होने का संबंध है वह भी सादात का शरीफ़ ख़ानदान है। और तुम्हारे बाप का ख़ानदान भी जो बनी फ़ारस और बनी फ़ातिमा के ख़ून से मिश्रित है, ख़ुदा के नज़दीक गौरव और प्रतिष्ठा रखता है। यहां स्मरण रहे कि इस इल्हाम के अन्दर जो मेरे ख़ानदान की श्रेष्ठता वर्णन करता है एक महान रहस्य छुपा है और वह यह है कि औलिया अल्लाह और रसूल और नबी जिन पर ख़ुदा की दया और कृपा होती है और ख़ुदा उनको अपनी ओर आकृष्ट करता है वे दो प्रकार के होते हैं – (1) एक वे दो दूसरों के सुधार के लिए मामूर नहीं होते अपितु उन का कारोबार अपने स्वयं के सुधार तक ही सीमित होता है और उनका काम केवल यही होता है कि वे हर दम अपने नफ़्स को ही संयम और निष्कपटता में बढ़ाते रहते हैं और यथाशक्ति ख़ुदा तआला की सूक्ष्म से सूक्ष्म रज़ामन्दी के मार्गों पर चलते और उसके छोटे से छोटे आदेशों के पाबन्द रहते हैं और उन के लिए आवश्यक नहीं होता कि वे किसी ऐसे उच्च ख़ानदान तथा उच्च क़ौम में से हों जो उच्च वंश, शराफ़त, कुलीनता, अमारत और रियासत का ख़ानदान हो अपितु पवित्र आयत के अनुसार-

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللهِ أَتْقَاكُمْ★ (अलहुजुरात-14)

केवल उनका संयम देखा जाता है यद्यपि वे... उन क़ौमों में से हों जो इस्लाम में दूसरी क़ौमों के सेवक और नीची क़ौमें समझी जाती हैं। ...या उदाहरणतया ऐसा व्यक्ति हो कि उसके जन्म में ही सन्देह हो कि वैध सन्तान है या हराम (अवैध) का। ये समस्त लोग सच्ची तौब: से ख़ुदा के वलियों में दाख़िल हो सकते हैं क्योंकि वह कृपालु की दरगाह है और वदान्यता की लहरें बड़े जोश से जारी हैं। और उस अनश्वर कुद्दूस प्रेम रूपी दरिया में डूब कर भिन्न-भिन्न प्रकार के मैलों वाले उन समस्त मैलों से पवित्र हो सकते हैं जो उर्फ़ और आदत के तौर पर उन पर लगाए जाते हैं। और फिर इसके पश्चात् कि वे उस क़ुद्दूस ख़ुदा से मिल गए और उसके प्रेम में मुग्ध हो गए और उसकी प्रसन्नता में खोए गए बड़ी नीचता होती है कि उनकी किसी नीच क़ौम का ज़िक्र भी किया जाए। क्योंकि अब वे नहीं रहे और उन्होंने अपने व्यक्तिगत को छोड़ दिया और ख़ुदा में जा मिले और इस योग्य हो गए कि आदरपूर्वक उनका नाम लिया जाए। और जो व्यक्ति इस परिवर्तन के बाद उनका तिरस्कार करता है या दिल में ऐसा विचार लाता है वह अंधा है और ख़ुदा तआला के प्रकोप के नीचे है। और ख़ुदा का सामान्य क़ानून यही है कि इस्लाम (लाने) के बाद क़ौमों का अन्तर मिटा दिया जाता है और नीच-ऊंच का विचार दूर किया जाता है। हां पवित्र क़ुर्आन से यह भी निकलता है कि विवाह और निकाह में समस्त क़ौमें अपने क़बीलों और एक श्रेणी वाली क़ौमों या एक जैसी श्रेणी वाले लोगों और बराबरी का ध्यान रख लिया करें तो उत्तम है ताकि सन्तान के लिए किसी दाग़, तिरस्कार और उपहास का स्थान न हो। परन्तु इस विचार को सीमा से बढ़कर नहीं खींचना चाहिए। क्योंकि क़ौमों के अन्तर पर ख़ुदा के कलाम ने ज़ोर नहीं दिया। केवल एक आयत से बराबरी और वंश का ध्यान रखना निकलता है। और क़ौमों की वास्तविकता यह है कि एक लम्बे समय के बाद शरीफ़ से नीच और नीच से शरीफ़ बन जाती हैं। और

★ **अनुवाद** – तुम में से ख़ुदा तआला के नज़दीक वह अधिक बुज़ुर्ग है जो सबसे अधिक संयम के मार्गों पर चलता है। इसी से।

संभव है कि... जो हमारे देश में सब क़ौमों से निकृष्टतम समझे जाते हैं किसी युग में शरीफ़ हों। और अपने बन्दों के इन्क़िलाबों को ख़ुदा ही जानता है दूसरों को क्या ख़बर है। तो सामान्य रूप से ध्यान देने योग्य यही आयत है कि-

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللّٰهِ أَتْقَاكُمْ (अलहुजुरात-14)

जिसके मायने यह हैं कि तुम सब में ख़ुदा के नज़दीक बुज़ुर्ग और उच्च ख़ानदान वह है जो सर्वाधिक उस संयम के साथ जो सच्चाई से भरा हुआ हो, ख़ुदा तआला की ओर झुक गया हो और ख़ुदा से संबंध विच्छेद का भय हरदम, प्रतिपल तथा प्रत्येक कार्य, प्रत्येक हरकत, प्रत्येक स्थिरता, प्रत्येक आचरण, प्रत्येक आदत और प्रत्येक भावना व्यक्त करने के समय उसके दिल पर विजयी हो। वही है जो समस्त क़ौमों में से शरीफ़तर और समस्त ख़ानदानों में से बुज़ुर्गतर और समस्त क़बीलों में से उत्तम क़बीले में से है और इस योग्य है कि सब उस पर न्योछावर हों। निष्कर्ष यह है कि इस्लामी शरीअत का यह तो सामान्य क़ानून है कि समस्त दारोमदार संयम पर रखा गया है। किन्तु नबियों, रसूलों और मुहद्दिसों के बारे में जो ख़ुदा तआला की ओर से मामूर होकर आते हैं और समस्त क़ौमों के लिए आज्ञापक योग्य ठहरते हैं। सदैव से ख़ुदा तआला का एक विशेष क़ानून है जो हम नीचे लिखते हैं। हम इस से पूर्व अभी वर्णन कर चुके हैं कि ख़ुदा के ऐसे वली जो मामूर नहीं होते अर्थात् नबी, रसूल और मुहद्दस नहीं होते और उनमें से नहीं होते जो दुनिया को ख़ुदा के आदेश और इल्हाम से ख़ुदा की ओर बुलाते हैं ऐसे वलियों को किसी उच्च ख़ानदान या उच्च क़ौम की आवश्यकता नहीं। क्योंकि उन का सब मामला अपने अस्तित्व तक सीमित होता है, किन्तु उनके मुक़ाबले पर एक दूसरी प्रकार के वली हैं जो रसूल या नबी अथवा मुहद्दस कहलाते हैं और वे ख़ुदा तआला की ओर से हुकूमत और न्याय का एक पद लेकर आते हैं तथा लोगों को आदेश होता है कि उनको अपना इमाम, सरदार और पेशवा समझ लें। और जैसा कि वे ख़ुदा तआला की आज्ञा का पालन करते हैं इसके बाद ख़ुदा के उन नायबों की आज्ञापालन करें। इस पद के बुज़ुर्गों के संबंध में सदैव से ख़ुदा तआला

की यही आदत है कि उनको उच्च श्रेणी की क़ौम और ख़ानदान में से पैदा करता है ताकि उनके स्वीकार करने और उनके आज्ञापालन का जुआ उठाने में किसी को घृणा न हो। और चूंकि ख़ुदा नितान्त दयालु-कृपालु है इसलिए नहीं चाहता कि लोग ठोकर खाएं और उनको ऐसा इब्तिला सामने आए जो उनको इस महान सौभाग्य से वंचित रखे कि वे उसके मामूर को स्वीकार करने से इस प्रकार से रुक जाएं कि उस मनुष्य की नीच क़ौम की दृष्टि से उन पर नंग और लज्जा विजयी हो। और वे हार्दिक नफ़रत के साथ इस बात से घृणा करें कि उसके आज्ञाकारी बनें और उसको अपना बुज़ुर्ग ठहराएं और मानवीय भावनाओं एवं कल्पनाओं पर दृष्टि डालकर यह बात भली भांति प्रकट है कि यह ठोकर स्वाभाविक तौर पर मानव-जाति के सामने आ जाती है। उदाहरणतया एक मनुष्य जो ...एक गांव के शरीफ़ मुसलमानों की तीस-चालीस वर्ष से यह सेवा करता है कि दिन में दो बार उनके घरों की गन्दी नालियों को साफ़ करने आता है और उनके शौचालयों की गन्दगी उठाता है और एक-दो बार व्यभिचार में भी गिरफ़्तार होकर उसकी बदनामी हो चुकी है और कुछ वर्ष कारावास में क़ैद भी रह चुका है और कुछ बार ऐसे बुरे कामों पर गांव के नम्बरदारों ने उसे जूते भी मारे हैं तथा उसकी मां और दादियां और नानियां हमेशा से ऐसे ही गन्दे कार्य में व्यस्त रही हैं और सब मुर्दार खाते और गू उठाते हैं। अब ख़ुदा तआला की क़ुदरत पर विचार करके संभव तो है कि वह अपने कार्यों से तौबः करके मुसलमान हो जाए। और फिर यह भी संभव है कि उस पर ख़ुदा तआला का ऐसा फ़ज़्ल (कृपा) हो कि वह रसूल और नबी भी बन जाए और उसी गांव के शरीफ़ लोगों की ओर दावत का सन्देश लेकर आएं और कहे कि जो व्यक्ति तुम में से मेरी आज्ञा का पालन नहीं करेगा ख़ुदा उसे नर्क में डालेगा। परन्तु इस संभावना के बावजूद जब से दुनिया पैदा हुई है ख़ुदा ने ऐसा कभी नहीं किया। क्योंकि ऐसा करना उसकी हिकमत और हित के विरुद्ध है और वह जानता है कि लोगों के लिए यह एक विलक्षण ठोकर का स्थान है कि एक ऐसा मनुष्य जो पीढ़ी दर पीढ़ी नीच चल आता है तथा लोगों की

दृष्टि में वह न केवल नीच है अपितु उसका बाप-दादा, पड़दादा और जहां तक मालूम है क़ौम के नीच हैं और हमेशा दुष्ट और व्यभिचारी होते चले आए हैं और पशुओं की तरह अधम सेवाएं करते रहे हैं। अब यदि लोगों से उसका आज्ञापालन से घृणा करेंगे। क्योंकि ऐसे स्थान में घृणा करना मनुष्य के लिए एक स्वाभाविक बात है। इसलिए ख़ुदा तआला का अनादि कानून और सुन्नत यही है कि वह केवल उन लोगों को दावत का पद अर्थात् नुबुव्वत इत्यादि पर मामूर करता है जो उच्च ख़ानदान में से हों और व्यक्तिगत तौर पर भी अच्छे चाल चलन रखते हों। क्योंकि जैसा कि ख़ुदा तआला सामर्थ्यवान है। हाकिम भी है और उसकी हिकमत और हित चाहता है कि अपने नबियों और मामूरों को ऐसी उच्च क़ौम, ख़ानदान और व्यक्तिगत अच्छे चाल चलन के साथ भेजे ताकि कोई दिल उनके आज्ञापालन से इन्कार न करे। यही कारण है कि समस्त नबी अलैहिस्सलाम उच्च क़ौम और ख़ानदान से आते रहे हैं। इसी हिकमत और हित की ओर संकेत है कि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में हमारे सय्यिद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्व के बारे में इन दोनों ख़ूबियों की चर्चा की है, जैसा कि वह फरमाता है

لَقَدۡ جَآءَکُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِکُمۡ ★ (अत्तौब:128)

अर्थात् तुम्हारे पास वह रसूल आया है जो ख़ानदान, कबीला और क़ौम की दृष्टि से समस्त दुनिया से बढ़कर है। और सर्वाधिक पवित्र और बुज़ुर्ग ख़ानदान रखता है। एक और स्थान पर पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है

وَ تَوَکَّلۡ عَلَی الۡعَزِیۡزِ الرَّحِیۡمِ ﴿۲۱۸﴾ الَّذِیۡ یَرٰىکَ حِیۡنَ تَقُوۡمُ ﴿۲۱۹﴾ وَ تَقَلُّبَکَ فِی السّٰجِدِیۡنَ ﴿۲۲۰﴾ (अश्शुअरा 218 से 220)

अर्थात् ख़ुदा पर भरोसा कर जो विजयी और दयालु है। वही ख़ुदा जो

★ अन्फ़ुस के शब्द में एक क़िरअत ज़बर के साथ है अर्थात् फ़ीकी फ़त्ह के साथ और इसी क़िस्मत की हम यहां चर्चा करते हैं। और दूसरी क़िरअत भी अर्थात् अक्षर फ़ के पेश के साथ भी इस के समानार्थक है क्योंकि ख़ुदा क़ुरैश को सम्बोधित करता है कि तुम जो एक बड़े खनदान में से हो यह रसूल भी तो तुम्हीं में से है अर्थात् उच्च ख़ानदान है। इसी से

तुझे देखता है जब तू दुआ और बुलाने के लिए खड़ा होता है, वही ख़ुदा जो तुझे उस समय देखता है कि जब तू बीज के तौर पर ईमानदारों की नस्लों में चला आता था यहां तक कि अपनी सम्मानित और मासूम मां आमिना के पेट में पड़ा। और इनके अतिरिक्त और भी बहुत सी आयतें हैं जिनमें हमारे बुज़ुर्ग और पवित्र नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उच्च ख़ानदान, क़ौम की शराफ़त (कुलीनता) और बुज़ुर्ग कबीले का ज़िक्र है। और दूसरी ख़ूबी जो शर्त के तौर पर मामूरों के लिए आवश्यक है वह नेक चाल-चलन है क्योंकि बुरे चाल चलन से भी दिलों में नफ़रत पैदा होती है। और यह ख़ूबी भी स्पष्ट तौर पर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में पाई जाती है। जैसा कि अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है –

فَقَدۡ لَبِثۡتُ فِیۡكُمۡ عُمُرًا مِّنۡ قَبۡلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ (सूरह यूनुस :17)

अर्थात् इन विरोधियों को कह दे कि इस से पहले मैंने एक आयु तुम में व्यतीत की है। अतः क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि मैं किस स्तर का अमीन तथा सच्चा हूँ। अब देखो यह दोनों विशेषताएं जो नबूवत और मामूरियत के मर्तबे के लिए आवश्यक हैं अर्थात् प्रतिष्ठित ख़ानदान में से होना और स्वयं ईमानदार और नेक और ख़ुदा तरस और अच्छे चाल-चलन का होना क़ुर्आन करीम ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कमाल दर्जा पर सिद्ध किया है और आपके उत्तम चाल-चलन और अच्छे ख़ानदान पर स्वयं गवाही दी है और इस जगह मैं इस धन्यवाद के अदा करने से नहीं रुक सकता कि जिस प्रकार ख़ुदा तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता में अपनी वह्यी के द्वारा काफिरों को मुल्ज़िम ठहराया और फ़रमाया कि यह मेरा नबी उस उत्तम श्रेणी के चाल-चलन रखता है कि तुम्हें सामर्थ्य नहीं कि उसके पिछले चालीस वर्ष के जीवन में कोई ऐब और कमी निकाल सको, बावजूद इसके कि वह चालीस वर्ष तक दिन-रात तुम्हारे बीच ही रहा है और न तुम्हारे अंदर यह सामर्थ्य है कि उसके उच्च ख़ानदान में जो सम्मान और पवित्रता और हुकूमत का ख़ानदान है, तनिक भी आरोप लगा सको। फिर तुम सोचो कि जो व्यक्ति ऐसे उत्तम और पवित्र और

प्रतिष्ठित ख़ानदान से संबंध रखता है और उसका चालीस वर्ष का जीवन जो तुम्हारे सामने गुज़रा, गवाही दे रहा है कि झूठ गढ़ना और मनगढ़ंत बातें बनाना उसका काम नहीं है तो फिर इन विशेषताओं के साथ जबकि आसमानी निशान वह दिखला रहा है और ख़ुदा तआला की सहायताएं उसके साथ हैं और शिक्षा ऐसी लाया है जिसके मुकाबले पर तुम्हारी आस्थाएं सर्वथा गंदी और अपवित्र और शिर्क से भरी हुई हैं तो फिर उसके बाद तुम्हें इस नबी के सच्चा होने में कौन सा संदेह शेष है। इसी प्रकार से ख़ुदा तआला ने मेरे विरोधियों और झुठलाने वालों को मुल्ज़िम किया है। अत: बराहीने अहमदिया के पृष्ठ 512 में मेरे बारे में यह इल्हाम है, जिसको प्रकाशित हुए बीस वर्ष बीत चुके हैं और वह यह है -

ولقد لبثت فیکم عمرًا من قبلہٖ اَفَلَا تعقلون

अर्थात् उन विरोधियों से कह दे कि मैं चालीस वर्ष तक तुम में ही रहता रहा हूं और लम्बी अवधि तक मुझे देखते रहे हो कि मेरा काम इफ़्तिरा और झूठ नहीं है और ख़ुदा ने अपवित्र जीवन से मुझे सुरक्षित रखा है। तो फिर जो व्यक्ति इतने लम्बे समय तक पहले चालीस वर्ष तक प्रत्येक इफ़्तिरा, शरारत, षड्यंत्र और दुष्टता से सुरक्षित रहा और कभी उसने प्रजा पर झूठा न बोला तो फिर क्योंकर संभव है अपनी पुरानी आदत के विरुद्ध अब वह ख़ुदा तआला पर इफ़्तिरा करने लगा। इस स्थान पर स्मरण रहे कि शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्न: जिस ने देश में काफ़िर ठहराने का फ़ित्ना खड़ा किया और काफ़िर ठहराने का फ़ित्ना खड़ा किया और काफ़िर ठहराने का फ़ित्ना खड़ा किया और काफ़िर ठहराने, बुरा भला कहने, और गालियों से नहीं रुका जब तक कि ज़िला मजिस्ट्रेट ने अपने सामने खड़ा करके भविष्य में मुंह बन्द रखने का अहदनामा न लिया। यह मनुष्य मेरी प्रारंभिक आयु में मेरा सहपाठी भी रहा है। और वह तथा उसका भाई हैदर बख़्श दोनों मेरे मकान पर आते थे। एक बार एक पुस्तक भी उधार तौर पर ले गए थे जिसको अब तक वापस नहीं किया। अत: शेख़ मुहम्मद हुसैन को अच्छी तरह मालूम है कि मैं उस छोटी आयु में ही किस ढंग का आदमी था। फिर जब मेरी आयु चालीस वर्ष तक पहुंची तो ख़ुदा

तआला ने अपने इल्हाम और कलाम से सम्मानित किया और यह विचित्र संयोग हुआ कि मेरी आयु के चालीस वर्ष पूरे होने पर सदी का सिर भी आ पहुंचा। तब ख़ुदा तआला ने इल्हाम के द्वारा मुझ पर प्रकट किया कि तू उस सदी का मुजद्दिद और सलीबी फ़ित्नों का उपचारक है। और यह इस ओर संकेत था कि तू ही मसीह मौऊद है। फिर उसी युग में ख़ुदा ने मेरा नाम ईसा भी रखा। फिर बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में मेरे मसीह मौऊद होने की ओर स्पष्ट संकेत है, क्योंकि इल्हाम- ولن ترضٰی عنك الیهود ولا النصارٰی में जो इस पृष्ठ में दर्ज है जिसके अन्त में فاصبر کما صبراولوالعزم एक कठोर मुक़ाबला की ख़बर दी गई है जो पादरियों के साथ होगा। फिर उसके बाद होने वाले इल्हाम में जिसकी इबारत यह है - وامّا نرینّك بعض الذی نعدهم यह ख़ुशख़बरी दी गई है कि पादरियों पर तुम्हें विजय मिलेगी और उनके मक्रों पर ख़ुदा का मक्र विजयी होगा। यह महान विजय हदीस-ए-नबवी की दृष्टि से मसीह मौऊद से संबंध रखती है। इसलिए यह इल्हाम जो बराहीन अहमदिया में है जिस पर अब बीस वर्ष गुज़र गए हैं मुझे मसीह मौऊद ठहराता है और बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 556 में मेरा नाम ईसा रखा गया है और जो आयत हज़रत ईसा के बारे में थी वह इल्हाम के माध्यम से मुझ पर चरितार्थ की गई है और वह आयत यह है –

يٰعِيْسٰی اِنِّیْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَیَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰی يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

और फिर इस इल्हाम के बाद यह इल्हाम है जो इस पुस्तक के पृष्ठ 557 में दर्ज है और वह यह है – "मैं अपनी चमकार दिखाऊंगा, अपनी क़ुदरत नुमाई से तुम को उठाऊंगा। दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसको क़ुबूल न किया, लेकिन ख़ुदा उसे क़ुबूल करेगा और बड़े ज़ोर आवर हमलों से उसकी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा।"

यह इल्हाम आज से बीस वर्ष पूर्व दुनिया में प्रकाशित हो चुका है। और स्मरण रहे कि ये समस्त लक्षण मसीह मौऊद के हैं जो आसार में लिखे गए हैं। और यह एक

महान भविष्यवाणी है कि उस समय मुझे मसीह मौऊद ठहराया गया कि जबकि मुझे भी ख़बर नहीं थी कि मैं मसीह मौऊद हूं। चूंकि ख़ुदा तआला जानता था कि मसीह मौऊद होने के दावे में मेरा विरोध होगा और इस युग के मौलवी अपनी अदूरदर्शिता के कारण कठोर आक्रमणों और वहशियों जैसे जोशों के साथ झुठलाएंगे। इसलिए उसने यह भविष्यवाणी जो बरहीन अहमदिया में दर्ज है समय से पूर्व सुनाई और मुझे ख़ुशख़बरी दी कि इस झुठलाने के मुकाबले पर मैं भी शक्तिशाली आक्रमण करूंगा और समस्त लोगों को दिखाऊंगा कि यह मनुष्य मेरी ओर से है और सच्चा है।

और जैसा कि ख़ुदा तआला ने अत्याचारी विरोधियों दोषी करने के लिए मुझे यह हुज्जत प्रदान की कि अपने इल्हाम के द्वारा मुझे यह समझाया कि उन से पूछ मेरे चालीस वर्ष के जीवन में जो इस से पहले मैंने तुम में ही व्यतीत किया। मेरी कौन सी कमी या दोष पाया? मेरा कौन सा इफ़्तिरा या झूठ सिद्ध हुआ। ऐसा ही ख़ुदा तआला ने अपने इल्हाम के द्वारा मुझे यह हुज्जत भी सिखाई कि उनको कह दे कि रसूल और नबी और सब जो ख़ुदा की ओर से आते और सच्चे धर्म की ओर बुलाते हैं वे क़ौम के शरीफ़ और उच्च ख़ानदान में से होते हैं। और दुनिया की दृष्टि से भी उनका ख़ानदान अमारत और रियासत का ख़नादान होता है ताकि कोई व्यक्ति किसी प्रकार की घृणा करके उनको स्वीकार करने से वंचित न रहे। तो मेरा ख़ानदान ऐसा ही है जैसा कि बराहीन अहमदिया के इल्हाम पृष्ठ 490 में दर्ज इसी की ओर संकेत है और वह यह है –

سبحان اللہ تبارک و تعالٰی زاد مجدک ینقطع اٰباءک و یبدء منک

अर्थात् सब पवित्रताएं ख़ुदा के लिए हैं जिस ने तेरे ख़ानदान की बुज़ुर्गी से बढ़कर तुझे बुज़ुर्गी प्रदान की। अब से तेरे प्रसिद्ध बाप दादों का ज़िक्र कट जाएगा और ख़ुदा ख़ानदान का प्रारंभ तुझ से करेगा। जैसा कि इब्राहीम से किया।★

★ इल्हामों में कई जगह यह इशारा है कि ख़ुदा तुझे इब्राहीम की तरह बरकत देगा और तेरी नस्ल में बहुत वृद्धि करेगा और तू उनमें से कुछ को देखेगा। अपितु अधिकांश इल्हामों में इन समानताओं के कारण मेरा नाम इब्राहीम रखा गया है। (देखो पृष्ठ 561, 562 बराहीन अहमदिया। इसी से

फिर उच्च ख़ानदान के बारे में दूसरा इल्हाम यह है –

الحمدللہ الذی جعل لکم الصھر و النسب

अनुवाद – उस ख़ुदा को समस्त प्रशंसाएं हैं जिसने तेरी दामादी का रिश्ता उच्च वंश में किया। और ख़ुद तुझे उच्च वंश और शरीफ़ ख़ानदान बनाया और स्वयं यह तो हम अभी वर्णन कर चुके हैं कि जिन सादात के ख़ानदान में देहली में मेरी शादी हुई थी वह देहली के समस्त सादात में से सनदी होने में प्रथम श्रेणी पर हैं और अपने बापों की बुज़ुर्गी के अतिरिक्त वे ख़्वाजा मीर दर्द के पात्र हैं और अब तक देहली में ख़्वाजा मीर दर्द के वारिस हो कर प्रशंसनीय ख़्वाजा की गद्दी उन्हीं को मिली हुई है क्योंकि ख़्वाजा साहिब का कोई लड़का न था यही वारिस हैं। जो उनकी लड़की की सन्तान हैं। और उनकी सरदारी हिन्दुस्तान में एक प्रकाशमान नक्षत्र के समान चमकती है अपितु सोचने से मालूम होगा कि उनका ख़ानदान ख़्वाजा मीर दर्द के बापों के ख़ानदान से बढ़कर है। क्योंकि ख़्वाजा मीर दर्द ने उनकी श्रेष्ठता की स्वीकार करके उनके बुज़ुर्ग को लड़की दी और उस युग में यह विचार अब से भी अधिक था कि लड़की देने के समय उच्च ख़ानदान को ढूंढते थे। और ख़्वाजा मीरद दर्द ख़ुदा वाले और बुज़ुर्ग होने के कारण चुग़ताई शासन से एक बड़ी जागीर पाते थे। और दुनिया की हैसियत के अनुसार एक नवाब का पद रखते थे। और फिर उनकी मृत्यु के बाद वह जागीर के देहात उन्हीं में विभाजित हुए। और इस ख़ानदानी श्रेष्ठता के अतिरिक्त मेरे इल्हामों में जितनी इस बात की व्याख्या की गई है कि यह शुद्ध सय्यद और बनी फ़ातिमा हैं। यह एक विशेष गर्व का स्थान उन लोगों के लिए है और मैं सोच नहीं सकता कि समस्त पंजाब और हिन्दुस्तान अपितु समस्त इस्लामी दुनिया में कोई सादात ख़ानदान का ऐसा हो कि न केवल उनका सय्यद होना इस्लामी शासन ने स्वीकार करके उनको आदर किया हो। अपितु ख़ुदा ने अपने विशेष कलाम और गवाही से इसकी पुष्टि कर दी हो। यह तो उनके ख़ानदान का हाल है। और मैं अपने ख़ानदान के बारे में कई बार लिख चुका हूं कि वह एक शाही ख़ानदान है और बनी फ़ारस और बनी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु के ख़ून से एक मिश्रित है। या सामान्य ख्याति की दृष्टि से यों कहो

कि वह मुग़ल ख़ानदान और सादात ख़ानदान से एक मिश्रित ख़ानदान है परन्तु मैं इस पर ईमान लाता और इसी पर विश्वास रखता हूं कि हमारे ख़ानदान की तरकीब बनी फ़ारस और बनी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु से हैं। क्योंकि इसी पर ख़ुदा के इल्हाम की निरन्तरता ने मुझे विश्वास दिलाया है और गवाही दी है।

क्रम संख्या 50.	निशान का विवरण

एक बार जिस को लगभग इक्कीस वर्ष की अवधि हुई है मुझे यह इल्हाम हुआ –

اشکر نعمتی رأیت خدیجتی انّك الیوم لذو حظٍّ عظیمٍ

अनुवाद – मेरी नेमत का शुक्र कर। तूने मेरी ख़दीजा को पाया। आज तू एक बड़े भाग का मालिक है। बराहीन अहमदिया पृष्ठ 558. और इस समय के क़रीब ही यह भी इल्हाम हुआ था بِکر و ثیّبت अर्थात् एक कुंआरी और एक विधवा तुम्हारे निकाह में आएगी। यह बाद का इल्हाम मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्नः को भी सुना दिया गया था। किन्तु उपरोक्त इल्हाम जिसमें खदीजा के पाने का वादा है बराहीन अहमदिया पृष्ठ 558 में दर्ज होकर न केवल मुहम्मद हुसैन अपितु लाखों लोगों में प्रकाशन पा चुका था। हां कथित शेख मुहम्मद हुसैन एडीटर इशाअतुस्सुन्नः को इस पर सबसे अधिक सूचना है। क्योंकि उसने बराहीन अहमदिया के चारों भागों का रीव्यू लिखा था और उसे भली भांति मालूम था कि इन विशेषताओं की एक कुंवारी पत्नी का वादा दिया गया है जो ख़दीजा की सन्तान में से अर्थात् सय्यद होगी जैसा कि उपरोक्त इल्हाम में आया है कि तू मेरा धन्यवाद कर, इसलिए कि तूने ख़दीजा को पाया अर्थात् तू ख़दीजा की सन्तान को पाएगा। इसके समर्थन में वह इल्हाम है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 492 हाशिया द्वितीय पृष्ठ 496 में दर्ज है और वह यह है –

اردتُ ان استخلف فخلقت اٰدم. یا اٰدم اسکن انت و زوجك الجنة. یا
مریم اسکن انت و زوجك الجنة. یا احمد اسکن انت و زوجك الجنة

देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 492, 496 इसके ये मायने हैं- हे आदम जिस से नए सिरे से इस्लाम के प्रकाशों की बुनियाद पड़ेगी अर्थात् एक महान

नवीनीकरण होगा और बरकतें प्रकट होंगी तथा फ़ैज आवज (घोर अन्धकार) के युग की ग़लतियां और ग़लत तफ़्सीरें काटकर फेंक दी जाएंगी और एक नई जमाअत इस्लाम की सहायता के लिए उस से स्थापित होगी। तू अपनी पत्नी सहित स्वर्ग में दाख़िल हो। इसी दृष्टि से इस्लाम में मेरा नाम आदम रखा गया। क्योंकि ख़ुदा तआला जानता था कि नए अध्यात्म ज्ञान, नवीन वास्तविकताएं, नई ज़मीन, नया आकाश और नए निशान होंगे तथा यह कि मुझ से एक नया ख़ानदान आरंभ होगा। तो उस ने एक नए ख़ानदान के लिए मुझे इस इल्हाम में एक नई पत्नी का वादा दिया। और इस इल्हाम में संकेत किया कि वह तेरे लिए मुबारक होगी और तू उसके लिए मुबारक होगा और मरयम की तरह तुझे उस से पवित्र सन्तान दी जाएगी।★ तो जैसा कि वादा दिया गया था ऐसा ही प्रकटन में आया और ख़ुदा तआला ने चार लड़कों का फरवरी 1886 ई. के इल्हाम द्वारा वादा दिया और फिर प्रत्येक पुत्र के जन्म से पूर्व उस के जन्म के संबंध में वादा दिया और जैसा कि मैं इस से पूर्व लिख चुका हूं। यह ख़ुदा तआला का महान निशान है कि उसने इन हर चार लड़कों के पैदा होने का उस समय वादा दिया जबकि उनमें से एक भी मौजूद न था।⁕

★ बराहीन अहमदिया के पृष्ठ - 496 में यह इल्हाम दर्ज है अर्थात् इल्हाम- يا آدم اسكن انت وزوجك الجنة और ऐसा ही इल्हाम اشكر نعمتی رایت خدیجتی बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 558 में दर्ज है। चूंकि ये दोनों भविष्यवाणियां वर्तमान परिस्थितियों की दृष्टि से बिल्कुल अनुमान से दूर थीं, और इन के साथ कोई समझाना न था। इसलिए मैं उनकी व्याख्या और विवरण वास्तविक तौर पर न कर सका। विवश होकर बराहीन अहमदिया में एक चकित अवस्था में संक्षिप्त तौर पर अर्थ वर्णन कर दिए गए। इसी से

⁕ कुछ मूर्ख दिल के अंधे यह ऐतराज़ प्रस्तुत करते हैं कि 1, फ़रवरी 1886 ई. की भविष्यवाणी में जो एक मौऊद सुपुत्र का वादा था वह वादा जैसा कि प्रकट किया गया था पूरा नहीं हुआ। क्योंकि पहले लड़की पैदा हुई और उसके बाद जो लड़का पैदा हुआ जिसका नाम बशीर अहमद रखा गया था वह सोलह महीने का होकर मृत्यु पा गया। हालांकि 7 अगस्त 1887 ई. के विज्ञापन में उसी को बरकत वाला मौऊद ठहराया गया था। इस का उत्तर यह है कि यह ऐतराज़ इस प्रकार की दुष्टता है जो यहूदियों के ख़मीर में थी और अवश्य था कि ऐसा होता।

क्रम संख्या 51.	निशान का विवरण

मियां अब्दुल्लाह सिन्नौरी जो ग़ौसगढ़ इलाका पटियाला में पटवारी है एक बार उसे एक काम की आवश्यकता थी जिसके होने के लिए उसने हर प्रकार के यत्न भी किए और कुछ कारणों के पैदा होने से उसे उस काम के हो जाने की आशा भी हो गयी और फिर मेरी ओर भी याचना की ताकि उसके लिए दुआ की जाए। तो जब मैंने उसके बारे में ध्यान किया तो अविलम्ब यह इल्हाम हुआ – اے بسا آرزو کہ خاک شدہ तब मैंने उसको कह दिया कि यह काम कदापि नहीं होगा। और अन्ततः ऐसा ही प्रकटन में आया। और कुछ ऐसे अवसर आ

शेष हाशिया - क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक होठों से यह निकला था कि मसीह मौऊद की युग में मुसलमानों में से ऐसे भी लोग होंगे जो यहूदियों की विशेषता ग्रहण कर लेंगे और उनका काम इफ़्तिरा और जालसाज़ी होगा। भला आओ यदि सच्चे हो तो पहले इसका फ़ैसला कर लो कि हम ने कब और किस समय और किस विज्ञापन में यह प्रकाशित किया था कि इस पत्नी से पहले लड़का ही होगा और वह लड़का वही बरकत वाला मौऊद होगा जिसक 1, फ़रवरी 1886 ई. के विज्ञापन में वादा दिया गया था। कथित विज्ञापन में तो ये शब्द भी नहीं हैं कि वह बरकत वाला मौऊद अवश्य पहला ही लड़का होगा, अपितु उसकी विशेषता में कथित विज्ञापन में यह लिखा है कि वह तीन को चार करने वाला होगा। जिससे यही समझा जाता है कि वह चौथा लड़का होगा या चौथा बच्चा होगा परन्तु पहले बशीर के समय कोई तीन मौजूद न थे जिन को वह चार करता। हां हमने अपने विवेक से अनुमान के तौर पर विचार अवश्य किया था कि शायद यही लड़का मुबारक मौऊद हो। परन्तु यदि उस मूर्ख ऐतराज़ कर्ता के ऐतराज़ की बुनियाद केवल हमारा ही विवेक है जो इल्हाम के उद्गम से नहीं अपितु केवल हमारे ही सोच-विचार का परिणाम है तो अत्यन्त खेद का स्थान है क्योंकि वह इस विचार के दण्ड से इस्लाम की ऊंची चोटी से ऐसे नीचे को गिरेगा कि केवल कुफ्र और मुर्तद होने तक ही नहीं थमेगा अपितु नीचे को लुढ़कता, लुढ़कता नास्तिकता के अत्यन्त गहरे गढ़े में अपने दुर्भाग्य शाली अस्तित्व को डाल देगा। कारण यह कि विवेक की ग़लतियां क्या भविष्यवाणियों के समझने और उस का चरितार्थ ठहराने में तथा क्या अन्य यत्नों और कामों में प्रत्येक नबी और रसूल से हुई थीं और एक भी नबी उनसे बाहर नहीं यद्यपि उन पर स्थापित नहीं रखा गया। अब जबकि विवेक की ग़लती प्रत्येक नबी और रसूल से भी हुई है तो हम

पड़े कि वह काम होता-होता रह गया। इस भविष्यवाणी का गवाह स्वयं मियां अब्दुल्लाह सिन्नौरी और शेख़ हामिद अली निवासी थेह ग़ुलाम नबी है, जिसका कई बार इस पुस्तक में ज़िक्र आया है। ये दोनों साहिब हलफ़ उठा कर गवाही दे सकते हैं परन्तु हल्फ़ नमूना न. 2 के अनुसार होगा।

क्रम संख्या 52.	**निशान का विवरण**

जिस युग में सय्यद मुहम्मद हसन ख़ान साहिब पटियाला के प्रधान मंत्री थे उनकी मृत्यु से कुछ वर्ष पूर्व मुझे लुधियाना से पटियाला जाने का संयोग हुआ और उस समय मेरे साथ शेख हामिद अली और शेख अब्दुर्रहीम निवासी

शेष हाशिया - कुछ नीचे आते हुए कहते हैं कि यदि हम से कोई विवेचनात्मक ग़लती हुई भी तो वह नबियों की सुन्नत है। और इस आधार पर प्रहार करना सर्वथा मूर्खता और नादानी है। हां यदि हमारा कोई ऐसा इल्हाम प्रस्तुत कर सकते हो जिसका यह विषय हो कि ख़ुदा तआला कहता है कि अवश्य पहले ही गर्भ से वह मुबारक और आकाशीय मौऊद पैदा हो जाएगा और या यह कि दूसरे गर्भ में पैदा होगा और बचपन में नहीं मरेगा तो तुम्हें ख़ुदा की क़सम है कि वह इल्हाम प्रस्तुत करो। **तो सियाह रूए शबद हर कि दरोग़श बाशिद** (ताकि हर झूठे का मुंह काला हो जाए) और 7 आगस्त 1887 ई. का विज्ञापन ईमानदार के लिए पर्याप्त नहीं होगा। क्योंकि उसमें बरकत वाले और आकाशीय मौऊद की ख़ुदा तआला की ओर से कोई भविष्यवाणी नहीं है और अकेले मौऊद की भविष्यवाणियां इस जगह बतौर तर्क के काम नहीं आ सकतीं। क्योंकि प्रत्येक लड़का जो मेरे घर में इस पत्नी से पैदा हुआ मौऊद है। सबूत तो यह देना चाहिए कि वह लड़का जो तीन को चार करने वाला हो और ख़ुदा के प्रताप का द्योतक हो जो दुनिया को सन्मार्ग पर लाने वाला होगा। उसी के आने की ख़बर ख़ुदा के इल्हाम की हैसियत से विज्ञापन 7 अगस्त 1887 ई. में दी गई है। फिर यदि यह सच है कि इस विज्ञापन में इस मुबारक मौऊद की ख़बर इल्हाम की हैसियत से दी गई है तो एक मज्लिस में मुझे बुलाओ और उस इल्हाम को प्रस्तुत करो। आप थोड़ा सोच लें कि क्या बेईमानियों से यहूदियों ने कोई अच्छाई देखी ताकि आप को भी किसी अच्छाई की आशा हो। पहले शर्म वाला इन्सान बनना चाहिए और न्यायवान मर्द बनना चाहिए और फिर सीधे दिल से मेरे इल्हाम के शब्दों पर विचार करना चाहिए। यदि मैंने किसी विज्ञापन में कोई वाक्य विवेचन के तौर पर लिखा हो और अपना विचार व्यक्त किया हो तो वह प्रमाण नहीं

अम्बाला छावनी और फ़तह ख़ान नामक एक पठान था। ये दोनों मनुष्य अन्त में वर्णित मौलवियों के काफ़िर ठहराने के फ़तवे के समय में विरोधियों की प्रचुरता को देख कर विरोधी हो गए और अब तक विरोधी हैं। और ऐसा संयोग हुआ कि जब मैंने पटियाला की ओर जाने का इरादा किया तो ख़ुदा तआला ने रात को मुझ पर प्रकट किया कि इस सफर में कुछ हानि होगी और कुछ चिन्ता और ग़म आएगा। मैंने इस भविष्यवाणी से जो ख़ुदा तआला से मुझे मिली उपरोक्त साथियों को सूचना दे दी और हम रवाना हुए। जब पटियाला पहुंच कर अपने आवश्यक कार्यों से निवृत्त हो कर फिर वापस आने का इरादा किया तो अस्र की नमाज़ का समय था। मैंने नमाज़ पढ़ने के इरादे से चोग़ा उतारा ताकि वुज़ू करूं और उस चोग़े को सय्यद मुहम्मद हसन ख़ान पटियाला रियासत के प्रधान मंत्री के एक सेवक के सुपुर्द किया क्योंकि मंत्री साहिब अपने कुछ नौकरों के साथ मुझे छोड़ने के लिए रेल पर आए थे और उनके सेवकों ने मेरा चोग़ा अपने पास रखा और मुझे वुज़ू कराया। जब टिकट लेने का समय हुआ तो मैंने अपने चोग़े की जेब में हाथ डाला ताकि टिकट के लिए रुपया दूं। क्योंकि मैंने तीस रुपए के लगभग रूमाल में बांधकर जेब में रखे हुए थे। तब जेब में हाथ डालने के समय मालूम हुआ कि वह रूमाल रुपयों सहित कहीं गिर गया। संभवत: उसी समय गिरा जबकि चोग़ा उतारा था। उस समय मुझे वह ख़ुदा का इल्हाम याद आया

शेष हाशिया - हो सकता यदि इस पर हठ करोगे तो तुम्हें समस्त नबियों से इन्कार करना पड़ेगा और मुर्तद और नास्तिक होने के अतिरिक्त कहीं तुम्हारा ठिकाना न होगा। क्योंकि इस बात से कोई नबी भी बाहर नहीं कि कभी विवेचना के तौर पर उस से ग़लती न हई हो। यदि यह बात तुम्हारे नज़दीक तिरस्कार, झुठलाने और उपहास का स्थान है तो अपने उलेमा से ही पूछ लो कि तुम पर क्या फ़तवा हो सकता है। मैं आप लोगों की इन व्यर्थ मीन मेखों से नाराज़ नहीं हूं क्योंकि आप इस बकवास से ख़दा तआला की एक भविष्यवाणी को पूरा करते हैं और वह यह है –

"दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसको कुबूब न किया लेकिन ख़ुदा उसे क़ुबूल करेगा और बड़े ज़ोरदार हमलों से उसकी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा।" इसी से।

कि इस सफर मैं कुछ हानि होगी। परन्तु इल्हाम का यह दूसरा वाक्य कि कुछ ग़म और चिन्ता पहुंचेगी। इसके बारे में उस समय मुझे दो विचार आए। एक यह कि इतना रुपया नष्ट होने से निस्सन्देह मनुष्य होने की दृष्टि से ग़म हुआ और दूसरे मुझे दिल में यह विचार भी गुज़रा कि जब कथित मंत्री साहिब मुझे लेने के लिए रेल (स्टेशन) पर आए और उन्होंने मुझे अपनी गाड़ी में बिठाया तो कई हज़ार आदमी मुझे देखने के लए स्टेशन पर मौजूद थे। जो क़रीब हो हो कर हाथ मिलाते और कुछ हाथ चूमते थे तब मंत्री साहिब ने जो शिया धर्म थे दुखदायी शब्दों में वर्णन किया कि ये लोग वहशी मूर्ख क्या करते हैं। जैसे उनकी नज़र में इन लोगों का विनम्रतापूर्वक मिलना और इस प्रचुरता से स्वागत के लिए आना एक व्यर्थ बात थी। तब मुझे उन का यह वाक्य कष्ट का कारण हुआ और मुझे अफ़सोस हुआ कि इनके मस्तिष्क और हृदय में उन लोगों की जो ख़ुदा से मामूर होकर आते हैं सच्चा आदर नहीं और केवल दिखावे के तौर पर एक बड़े गिरोह के साथ चले आए हैं। तो मैंने रुपए की हानि के समय यह भी विचार किया कि यह कष्ट जो मंत्री साहिब के एक वाक्य से मुझे पहुंचा था उसी सीमा तक उस भविष्यवाणी का आशय समाप्त हो गया जिस के ये शब्द थे कि कुछ रंज-व-ग़म भी उठाना होगा। परन्तु मेरा यह विचार ग़लत था क्योंकि इस सफर में रंज-व-ग़म का एक और भाग शेष था जो वापस होने के समय दोराहा के स्टेशन पर पूरा हुआ। विवरण उसका यह है कि जब हम दोराहे के स्टेशन पर पहुंचे तो लुधियाना जहां हमने जाना था इस स्थान से दस कोस शेष रह गया। रात लगभग दस बजे गुज़र गई थी तब मेरे साथी शेख अब्दुर्रहीम ने एक अंग्रेज़ से पूछा कि क्या लुधियाना आ गया। उसने हंसी से या किसी अन्य मतलब से कहा कि आ गया। और हम इस बात के सुनने से सब के सब रेल पर से उतर आए और जब हम उतर चुके और रेल रवाना हो गयी तब हमें पता लगा कि यह दोराहा है, लुधियाना नहीं है। और वह ऐसी जगह थी कि बैठने के लिए भी चारपाई नहीं मिलती थी और न खाने के लिए रोटी। तब हमें बहुत खेद और अफ़सोस और हम-व-ग़म हुआ कि हम ग़लती से बेठिकाना उतर आए और साथ ही याद आया

कि अवश्य था कि ऐसा होता। तब सब के दिल हर्ष और प्रसन्नता से भर गए कि ख़ुदा तआला का इल्हाम पूरा हुआ। इस घटना और निशान के गवाह शेख हामिद अली और शेख अब्दुर्रहीम और फ़तह ख़ान हैं। यद्यपि ये दोनों इन दिनों में अपने दुर्भाग्य से कट्टर शत्रु हैं। परन्तु यह बयान बिल्कुल सच्चा है इसलिए यदि इन दोनों को हलफ़ दिया जाए तो संभव नहीं कि झूठ बोलें, परन्तु शर्त यह है कि हलफ़ नमूना न. 2 के अनुसार होगा। अब देखो कि निशान इसे कहते हैं जिस में ऐसे कट्टर विरोधी गवाह ठहराए गए। अब किस मुंसिफ़ और पवित्र हृदय और लज्जावान इन्सान का दिल सही नहीं है। और यदि अब भी सन्देह हो तो ऐसे मनुष्य को ख़ुदा तआला की क़सम है कि उनको उपरोक्त ढंग की क़समें देकर पूछे और ख़ुदा तआला से डरे और सोचे कि क्या इतने महान निशानों का एक भण्डार झूठे के समर्थन में ख़ुदा तआला दिखा सकता है?

क्रम संख्या 53.	**निशान का विवरण**

एक बार मौज़ा गांव ज़िला गुरदासपुर में मुझे जाने का संयोग हुआ और मेरे साथ शेख़ हामिद अली था। जब सुब्ह को हमने जाने का इरादा किया तो मुझे इल्हाम हुआ कि इस सफ़र में तुम्हारा और तुम्हारे साथी की कुछ हानि होगी। तो रास्ते में हामिद अली की एक नई चादर खो गयी और मेरा एक रूमाल खो गया। और मैं सोचता हूं कि उस समय हामिद अली के पास वही एक चादर थी जिस से उसको बहुत दुख पहुंचा। इस निशान का गवाह शेख हामिद अली है। जिस को सन्देह हो वह उस से हलफ़ देकर पूछ ले। परन्तु हलफ़ नमूना न. 2 के अनुसार होगा और शेख हामिद अली थेह यह ग़ुलाम नबी ज़िला तथा तहसील गुरदासपुर में रहता है।

क्रम संख्या 54.	**निशान का विवरण**

एक बार संयोग से मुझे पचास रुपए की आवश्यकता हुई और जैसा कि अहले फ़क्र और तवक्कुल पर कभी-कभी ऐसी आवश्यकता की हालतें आ जाती हैं। ऐसा ही यह हालत मेरे समक्ष आ गयी कि उस समय कुछ मौजूद न था। फिर मैं प्रात: काल सैर को गया और इस आवश्यकता के विचार ने मुझे यह जोश

दिया कि मैं इस जंगल में दुआ करूं तो मैंने एक एकान्त में जाकर उस नहर के किनारे पर दुआ की जो बटाला की ओर क़ादियान से लगभग तीन मील की दूरी पर है। जब मैं दुआ कर चुका तब तुरन्त दुआ के साथ ही यह इल्हाम हुआ जिस का अनुवाद यह है कि देख मैं तेरी दुआओं को कैसे शीघ्र स्वीकार करता हूं। तब मैं प्रसन्न हुआ और उस जंगल से क़ादियान की ओर वापस आया और सीधा बाज़ार की तरफ़ चल पड़ा ताकि क़ादियान के सब पोस्टमास्टर से मालूम करूं कि आज हमारे नाम कुछ रुपया आया है या नहीं। तो डाकखाने से एक पत्र द्वारा सूचना हुई कि किसी ने पचास रुपए लुधियाना से भेजे हैं और संभवतः गुमान होता है कि उसी दिन या दूसरे दिन वह रुपया मुझे मिल गया। इस निशान का गवाह शेख़ हामिद अली है जो पूछने के समय हलफ़ उठाकर वर्णन कर सकता है। परन्तु हलफ़ नमूना न. 2 के अनुसार होगा।

क्रम संख्या 55.	निशान का विवरण

एक बार कश्फ़ के तौर पर मुझे चवालीस या छियालीस से रुपए दिखाए गए फिर उर्दू में इल्हाम हुआ कि – माझे खान का बेटा और शम्सुद्दीन पटवारी ज़िला लाहौर भेजने वाले हैं। और जब यह इल्हाम और कश्फ़ हुआ तो मैंने हामिद अली तथा एक अन्य व्यक्ति कोडा नामक को जो अमृतसर के इलाक़े का रहने वाला था सूचना दी तथा कुछ अन्य लोगों को भी इस से सूचित किया जिन का इस समय मुझे नाम याद नहीं रहा। फिर जब डाक का समय हुआ तो एक कार्ड आया जिसमें यह रुपया लिखा हुआ था और विवरण दर्ज था कि चालीस रुपए माझे खान के बेटे की ओर से हैं और शेष चार या छः रुपए शम्सुद्दीन पटवारी की ओर से बतौर सहायता हैं और इसके साथ ही रुपया भी आ गया। तब उन लोगों के लिए अत्यन्त ईमानी शक्ति का कारण हुआ, जिन्होंने प्रथम यह इल्हाम सुना था और फिर उसी दिन और उसी संख्या और उसी विवरण से रुपया आता देखा। और समस्त गवाह हलफ़ उठाकर वर्णन कर सकते हैं कि यह घटना बिल्कुल सच है।

क्रम संख्या 56.	निशान का विवरण

एक बार मेरी पत्नी के सगे भाई सय्यद मुहम्मद इस्माईल का पटियाला से पत्र

आया कि मेरी मां का देहान्त हो गया है और इस्हाक़ मेरे छोटे भाई को जो अभी बच्चा है कोई संभालने वाला नहीं और फिर पत्र के अन्त में यह भी लिखा हुआ था कि इस्हाक का भी निधन हो गया। और मेरी पत्नी को बुलाया कि देखते ही चली आएं। इस पत्र के पढ़ने से बड़ी चिन्ता हुई। क्योंकि जिस समझ यह पत्र आया उस समय मेरी पत्नी एक तीव्र ज्वर से बीमार थी। ऐसी हालत में न मैं पत्र का निबंध उनको सुना सकता था। क्योंकि इस बड़े संकट को सुनकर उस बीमारी की हालत में उनके प्राण का भय था, और न गुप्त रख सकता था। क्योंकि ऐसा कठोर संकट और मातम को गुप्त रखना भी स्वाभाविक तौर पर मनुष्य से नहीं हो सकता। इस चिन्ता में एक थोड़ी ऊंघ होकर मुझे इल्हाम हुआ اِنَّ كَيْدَ كُنَّ عَظِيم अर्थात् हे औरतो! तुम्हारे छल बहुत बड़े हैं। जब मुझे यह इल्हाम हुआ तो साथ ही यह समझा गया कि यह वास्तविकता के विरुद्ध एक बहाना बनाया गया है। तब मैंने अविलम्ब इस इल्हाम को अख़्वैम मौलवी अब्दुल करीम साहिब के पास जो क़ादियान में मौजूद थे वर्णन किया और उन को कह दिया कि मुझे ख़ुदा तआला ने सूचना दे दी है। और फिर इल्हाम से पूर्ण सांत्वना पाकर महमूद की मां को उनकी बड़ी बीमारी की हालत में सूचना देना व्यर्थ और अनुचित समझा। परन्तु गुप्त तौर पर पड़ताल के लिए शेख़ हामिद अली को पटियाला में भेज दिया। वहां से बहुत शीघ्र उसने वापस आकर वर्णन किया कि इस्हाक़ और उसकी माता दोनों ज़िन्दा मौजूद हैं और इस पत्र लिखने का कारण केवल यह हुआ कि कुछ दिन इस्हाक़ और इस्माईल की मां बहुत बीमारी की हालत में शीघ्र उनकी लड़की उनके पास आ जाए। इसलिए कुछ तो बीमारी की घबराहट से और कुछ मिलने के शौक़ से यह वास्तविकता के विरुद्ध लिखा कर भेज दिया। अब मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी और शेख हामिद अली थेह ग़ुलाम नबी दोनों ज़िन्दा मौजूद है और कोई किसी के लिए अपना ईमान नष्ट नहीं कर सकता। उन से हलफ़ लेकर पूछो कि क्या जैसा कि लिखा गया ऐसा ही भविष्यवाणी प्रकटन में आई थी या नहीं? अब ख़ुदा के लिए यह भी थोड़ा सोचो कि क्या इस प्रचुरता और सफ़ाई से ग़ैब का ज्ञान और वह ज्ञान तौरात और क़ुर्आन के अनुसार सच्चे नबियों और मामूरों की निशानी है वह कि

मुफ़्तरी या झूठे को मिल सकता है। मैं सच-सच कहता हूं कि जिस प्रचुरता और सफ़ाई से ग़ैब का ज्ञान अल्लाह तआला ने अपने विशेष इरादे से मुझे प्रदान किया है यदि दुनिया में इस संख्या की बहुलता और पूर्ण प्रकटन की दृष्टि से कोई और भी मेरे साथ भागीदार है तो मैं झूठा हूं। किन्तु यदि इस बाहुल्य और पूर्ण प्रकटन की दृष्टि से कोई अन्य मेरे साथ भागीदार सिद्ध नहीं हो सकता तो फिर मेरे दावे से इन्कार करना बहुत बड़ा अन्याय है।

क्रम संख्या 57.	**निशान का विवरण**

लगभग बीस वर्ष का समय गुज़रा है कि एक बार कश्फ़ी तौर पर मुझे मालूम हुआ कि मुसलमानों में से एक व्यक्ति यह फ़ित्नः खड़ा करेगा कि मेरे काफ़िर ठहराने का फ़त्वा लिखा कर देश में प्रसारित करेगा। और इस देश के लगभग समस्त मौलवियों को इस ग़लती में लिप्त करेगा और यह सम्पूर्ण बोझ उसकी गर्दन पर होगा। अतः वह इल्हाम जो इस बारे में हुआ वह बराहीन अहमदिया जो इस बारे में हुआ वह बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 510 और 511 में इस प्रकार से दर्ज है –

اذ یمکر بک الذی کَفّر۔ اوقدلی یاھامان لعلّی اطّلع علٰی اِلٰہ
مُوسٰی وانّی لأظنہ من الکاذبین۔ تبّت یدا ابی لھب و تَبّ۔ ما کان
لہ ان یدخل فیھا الّا خائفا۔ وما اصابک فمن اللّٰہ الفتنۃ ھٰھنا
فاصبرکما صبر اولو العزم۔ الا انھا فتنۃ من اللّٰہ لیحبّ حبّا جمّا۔
حبّا من اللّٰہ العزیز الاکرم۔ عطاءً غیر مجذوذ۔

अनुवाद – उस मनुष्य के षड्यंत्र को स्मरण कर जो तेरे ईमान का इन्कारी हुआ। और तुझे काफ़िर ठहराया और तुझ पर कुफ्र का फ़त्वा लिखा तथा उसने इस काफ़िर ठहराने की योजना को दिलों में जमाने के लिए एक हामान को अपना पेशवा बना कर उसको कहा कि काफ़िर ठहराने के कारोबार को तू अपनी मुहर से पुख़्ता कर दे ताकि इस मनुष्य की वास्तविकता खुल जाए। क्योंकि मैं तो उसको झूठा समझता हूं। तो उस हामान ने ऐसा ही किया और सर्वप्रथम मेरे कुफ्र पर मुहर लगाई। अबू लहब के दोनों हाथ तबाह हो गए और वह भी मर गया। उसको उचित

न था कि डरने और भयभीत होने के अतिरिक्त इस काम में कुछ भी हस्तक्षेप करता। और जो कष्ट तुझ को पहुंचे वह ख़ुदा तआला की ओर से है। इस काफ़िर ठहराने के फ़त्वे के समय एक फ़ित्नः खड़ा होगा। अर्थात् बहुत से लोग कष्ट पहुंचाने पर तत्पर हो जाएंगे। तो उस समय सब्र कर जैसा कि दृढ़प्रतिज्ञ नबियों ने सब्र किया और स्मरण रख यह फ़ित्नः ख़ुदा तआला की ओर से है ताकि वह तुझ से अधिक से अधिक प्रेम करे। यह उसकी ओर से है जो विजयी और बुज़ुर्ग है। और यह ऐसा दान है जो फिर वापस नहीं लिया जाएगा। अब देखो कि यह भविष्यवाणी कैसे सफ़ाई से पूरी हुई। शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब इशाअतुस्सुन्नः ने यह फ़ित्ना उठाया और मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी ने फ़त्वे की इबारत को अपनी ओर सम्बद्ध करके और अपनी मुहर लगाकर तथा हमें हमारी समस्त जमाअत के साथ काफ़िर और इस्लाम के दायरे से बाहर ठहरा कर मुहम्मद हुसैन बटालवी की योजना को सम्पूर्ण देश में भड़का दिया। और इस काफ़िर ठहराने के फ़ित्ने से लगभग दस वर्ष पूर्व यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हो चुकी थी। अब तनिक सोचो कि यह किसी मनुष्य का अधिकार है कि ऐसा बड़ा शोर और कोलाहल जो समस्त पंजाब और हिन्दुस्तान में मचाया गया। इसके प्रकटन से दस वर्ष पूर्व सूचना दे दी। प्रत्येक सत्याभिलाषी को चाहिए कि बराहीन अहमदिया का पृष्ठ 510, 511 में भली भांति ध्यानपूर्वक दृष्टि डाले, और फिर इसी भविष्यवाणी के साथ इसी पृष्ठ में पांच-पांच पंक्ति ऊपर यह इल्हाम है

يظل ربّك عليك و يغيثك و يرحمك و ان لم يعصمك الناس فيعصمك الله من عنده يعصمك الله من عنده و ان لم يعصمك الناس

देखो पृष्ठ 510 बराहीन अहमदिया

अनुवाद – ख़ुदा तआला तुझ पर अपनी दया की छाया डालेगा और तेरा और तेरा न्यायकर्ता होगा और तुझ पर दया करेगा। यदि समस्त संसार नहीं चाहेगा कि तू ज़िन्दा और सम्मान के साथ शेष रहे तब भी ख़ुदा तुझे ज़िन्दा और सम्मान के साथ शेष रखेगा। ख़ुदा अवश्य तेरे जीवन और सम्मान में बरकत प्रदान करेगा यद्यपि समस्त संसार इसके विपरीत कोशिश करे। अब देखो कि इस इल्हाम

के अनुसार जिस के प्रकाशित होने पर बीस वर्ष गुज़र चुके हैं। मुझे अपमानित करने और मारने की कैसी-कैसी कोशिशें की गईं। यहां तक कि इस उपकारी सरकार तक झूठी जासूसियां पहुंचाई गईं। मुझ पर ख़ून के मुक़द्दमे बनाए गए और उन्हीं मौलवियों ने जिन्होंने शायद मरना नहीं अदालत में जाकर गवाहियां दीं कि निस्सन्देह यह ख़ूनी है इसको पकड़ लो। और इस बात के प्राप्त करने के लिए कोई योजना नहीं छोड़ी, कोई जोड़-तोड़ उठा न रखा ताकि किसी प्रकार मैं पकड़ा जाऊं और गिरफ़्तार किया जाऊं और मुझे ज़ंजीर तथा हथकड़ी पड़े तथा मेरा अपमान पर अपमान किया। यदि ये सच पर होते और इन का जोश ख़ुदा तआला की ओर से होता तो ख़ुदा तआला अवश्य इनकी सहायता करता। अतः यह अन्त में वर्णित भविष्यवाणी भी जो आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 510 में दर्ज होकर एक संसार में प्रकाशित हो गयी है, पूर्ण सफ़ाई से पूरी हुई।

क्रम संख्या 58.	निशान का विवरण

अन्य निशानों के अतिरिक्त यह भी एक महान निशान है जो हाल में अल्लाह तआला की ओर से प्रकट हुआ है। पाठकों को स्मरण होगा कि एक बुज़ुर्ग ने जो हर प्रकार से दुनिया में प्रतिष्ठित, रईस और ज्ञानी भी हैं। इस ख़ाकसार के बारे में एक दिल को कष्ट देने वाला वाक्य अर्थात् मसनवी रोमी का यह शेर पढ़ा था जो माह जून 1897 को पत्रिका "चौदवहीं सदी" में प्रकाशित हुआ था और वह यह है- چوں خدا خواہد کہ پردہ کس درد میلش اندر طعنۂ پاکاں برد

तो उस दुःख के कारण जो इस ख़ाकसार के दिल के पहुंचा उस बुज़ुर्ग के लिए दुआ की गई थी कि या तो ख़ुदा तआला उसको तौबः और शर्मिन्दगी प्रदान करे और या कोई चेतावनी उतारे। तो ख़ुदा ने अपने फ़ज़्ल और रहम से उसे तौबः करने का सामर्थ्य प्रदान किया और उस बुज़ुर्ग को इल्हाम के द्वारा सूचना दी कि इस ख़ाकसार की दुआ उसके बारे में स्वीकार की गई और ऐसा ही माफ़ी भी होगी। अतः उसने ख़ुदा से यह इल्हाम पाकर और भय के लक्षण देख कर नितान्त विनय और विनम्रता से हीलः करते हुए पत्र लिखा। वह पत्र कुछ

संक्षेप से पर्चा चौदहवीं सदी माह नवम्बर 1897 ई. में छप भी गया है। परन्तु चूंकि उस संक्षेप में बहुत सी ऐसी आवश्यक बातें रह गई हैं जिन से यह सबूत मिलता है कि ख़ुदा तआला क्योंकर अपने बन्दों की दुआओं को स्वीकार करता और उनके दिलों पर रोब डालता तथा भय के लक्षण प्रकट करता है। इसलिए मैं उचित समझता हूं कि उस पत्र को जो मेरे पास पहुंचा था, कुछ आवश्यक संक्षेप के साथ प्रकाशित कर दूं और कथित बुज़ुर्ग का यह असल पत्र इस कारण से भी प्रकाशित करने योग्य है कि मैं इस असल पत्र को बहुत से लोगों को सुना चुका हूँ और एक बड़ी जमाअत उसके निबन्ध से सूचना पा चुकी है तथा बहुत से लोगों को पत्रों द्वारा उसकी सूचना भी दी गई है। अब जबकि चौदहवीं सदी के पर्चे को वे लोग पढ़ेंगे तो अवश्य उनके दिल में ये विचार पैदा होंगे कि जो कुछ मौखिक तौर पर हमें सुनाया गया उसमें कई ऐसी बातें हैं जो प्रकाशित पत्र में नहीं हैं। और संभव है कि हमारे कुछ अदूरदर्शी विरोधियों को यह बहाना हाथ आ जाए कि जैसे हम ने उस पत्र में जो सुनाया गया अपनी ओर से कुछ बढ़ाया था। इसलिए आवश्यक मालूम होता है कि उस मूल पत्र को छाप दिया जाए। किन्तु स्मरण रहे कि चौदहवीं सदी के पत्र में जितना संक्षेप किया गया है यह किसी का दोष नहीं है। संक्षेप के लिए मैंने ही इजाज़त दी थी। परन्तु इस इजाज़त के इस्तेमाल में कुछ ग़लती हो गई है। इसलिए अब उसाक सुधार आवश्यक है। इस समस्त क़िस्से को लिखने से उद्देश्य यह है कि हमारी जमाअत और समस्त सत्याभिलाषियों के लिए यह भी ख़ुदा का एक निशान है।

यहां यह भी स्मरण रहे कि कथित बुज़ुर्ग जिन का पत्र नीचे लिखा जाता है कुछ सामान्य लोगों में से नहीं हैं अपितु जहां तक मेरा विचार है वह एक बड़े ज्ञानवान और समय के उलेमा में से हैं, तथा कई लोगों से मैंने सुना है कि उनको इल्हाम भी होता है और इस पत्र में उन्होंने अपने इल्हाम का वर्णन भी किया है। इस सब बातों के अतिरिक्त वह बुज़ुर्ग पंजाब के प्रतिष्ठित रईसों और जागीदारों में से हैं। और एक लम्बे समय से अंग्रेज़ी सरकार की ओर से एक्स्ट्रा असिसटेण्ट के पद पर भी सुशोभित हैं। चूंकि पर्चा चौदहवीं सदी में भी इस बुज़ुर्ग

के पद और श्रेणी की चर्चा हो चुकी है। इसलिए इतना यहां भी लिखा गया और कथित बुज़ुर्ग ने जो मेरे नाम उज़्र के उद्देश्य से 29 अक्टूबर 1897 ई. को पत्र लिखा था जिस का ख़ुलासा चौदहवीं सदी में छपा है। इस पत्र को उपरोक्त हित में कुछ वाक्यों को पृथक करते हुए नीचे लिखता हूं। और वह यह है –

"अख़बार चौदहवीं सदी वाला मुजरिम"★ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम मेरे सरदार और मेरे आक़ा! अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि व बरकातुहू। एक ख़ताकार अपनी ग़लतकारी से इक़रार करता हुआ (इन नियाज़नामः के द्वारा) क़ादियान के मुबारक स्थान पर (जैसे) उपस्थित होकर आपके रहम का अभिलाषी होता है। 1, जुलाई 1897 ई. से 1, जुलाई 98 ई. तक जो इस गुनाहगार को मुहलत दी गई। अब आसमानी बादशाहत में आपके मुक़ाबले में अपने आप को मुजरिम (अपराधी) ठहराता है (इस अवसर पर मुझे इल्हाम हुआ कि जिस प्रकार आपकी दुआ स्वीकार हुई इसी प्रकार मेरी याचना तथा ख़ाकसारी स्वीकार होकर हज़रत अक्दस के पास से माफ़ी और रिहाई दी गई मुझे अब अधिक उज़्र करने की आवश्यकता नहीं फिर भी इतना अवश्य कहना चाहता हूं कि मैं प्रारंभ से आप की इस दावत पर बहुत ध्यानपूर्वक चिन्तन करता रहा और मेरी पड़ताल ईमानदारी और साफ़ दिली पर आधारित थी। यहां तक कि 90 प्रतिशत विश्वास की श्रेणी पर पहुंच गया – (1) आपके शहर के आर्य विरोधियों ने गवाही दी कि आप बचपन से सच्चे और पवित्र थे (2) आप जवानी से हर समय ख़ुदा-ए-वाहिद हय्यो क़य्यूम (जीवित और क़ायम रहने वाले ख़ुदा) की इबादत में निरन्तर व्यय करते रहे। اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (अत्तौब:120) (3) आप की उत्तम वर्णन शैली समस्त रब्बानी उलेमा से साफ़-साफ़ पृथक दिखाई देता है। आप की समस्त पुस्तकों में एक ज़िन्दा रूह है (فِيْهَا هُدًى وَّ نُوْرٌ) (अलमाइदह-45) आप का मिशन किसी फ़साद और वर्तमान सरकार की (जो

★यह शीर्षक आदरणीय बुज़ुर्ग ने अपने पत्र के सर पर लिखा था चूंकि इस शीर्ख में नितान्त विनय है जो मनुष्य का उसकी कमाल ख़ाकसारी के कारण ख़ुदा की रहमत के उतरने का स्थान बनाता है। इसलिए हमने उसको जैसा कि मूल पत्र में था, लिख दिया है। इसी से

समस्त परिस्थितियों से आज्ञा पालन और कृतज्ञता के योग्य है) बग़ावत का मार्ग दर्शन नहीं करता। اِنَّ اللہ لا یحبُّ فی الارض الفساد यहां तक कि मेरे बहुत से मेहरबान दोस्तों ने कि उन से आपके मामलों पर मैं हमेशा बहस करता था, मुझे क़ादियानी के नाम से सम्बोधित किया। फिर यह कि इसके बावजूद क्यों? मेरे मुँह से मस्नवी का वह शेर निकला? इसका कारण यह था कि मैं जब लाहौर में उनके पास गया तो मुझ को अपने विश्वसनीय दोस्तों के द्वारा (जिन से पहले मेरी बहस रहती थी) ख़बर मिली कि आप से ऐसी बातें प्रकटन में आई हैं जिस से किसी ईमानदार मुसलमान को आप को विरोधी समझने में कोई संकोच नहीं रहा।

(1) आपने दावा रसूल होने का किया है और ख़ातमुल मुर्सलीन होने का भी साथ-साथ दावा कर दिया है। जो एक सच्चे मुसलमान के दिल पर सख़्त चोट लगाने वाला वाक्य था कि जो सम्मान ख़तमे रिसालत का ख़ुदा के दरबार से मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही (फिदाका रूही या रसूलल्लाह) को मिल चुका है उसका कोई और कब हक़दार हो सकता है।

(2) आप ने फ़रमाया है कि तुर्क तबाह होंगे और उन का बादशाह बड़े अपमान से क़त्ल किया जाएगा और दुनिया के मुसलमान मुझ से विनती करेंगे कि मैं उनके लिए एक बादशाह नियुक्त कर दूं। यह एक भयावह और विनाशकारी भविष्यवाणी इस्लामी जगत के लिए थी। क्योंकि आज समस्त पवित्र स्थान जो ख़ुदा वन्द के प्राचीन और नवीन काल से चले आते हैं उन की सेवा तुर्कों और उनके बादशाह के हाथ में है। इन स्थानों का तुर्कों की पराजय की हालत में निकल जाना एक अनिवार्य और निश्चित बात है जिस के सोचने से एक भयावह और भयानक दृश्य दिखाई देता है कि इस अवसर पर दुनिया के प्रत्येक मुसलमान पर अनिवार्य हो जाएगा कि इन इबादतगाहों को अपवित्र हाथों से बचाने के लिए अपने प्राणों तथा मालों की क़ुर्बानी चढ़ाए। कैसा संकट और परीक्षा का समय मुसलमानों पर आ पड़ेगा कि या तो वे बाल-बच्चा घरबार प्यारे देश को अलविदा कहकर उन पवित्र इबादतगाहों की ओर चल पड़ें या उस अनश्वर और हमेशा

के जीवन वाले ईमान से अलग हो जाएं।

رَبَّنَا لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا (अलबक़रह- 287)

यही रहस्य है जो मुसलमान तुर्कों से प्रेम करते हैं कि उनकी भलाई में उनके धर्म और दुनिया की भलाई है। अन्यथा तुर्कों का कोई विशेष उपकार हिन्दुस्तान के मुसलमानों पर नहीं अपितु हमे बड़ा गिला है कि हमारी पिछली सदी की विश्वव्यापी तबाही (जब कि मराठों और सिक्खों के हाथ से हिन्दुस्तान के मुसलमान बर्बाद हो रहे थे) उन्होंने हमारी कोई ख़बर नहीं ली। इस कृतज्ञता की अधिकारी केवल अंग्रेज़ी सरकार है, जिसने मुसलमानों को उस से मुक्ति दिलाई। तो हमारी सहानुभूति का वही विशेष कारण है जो ऊपर वर्णन किया गया और इस पर विचार करके दिल में यह ख़याल पैदा हुआ कि ऐसे कठोरतम संकट के समय तो मुसलमानों के एक सच्चे पथ-प्रदर्शक का यह काम होता कि वह विनयपूर्वक गिड़गिड़ाकर ख़ुदा के सामने इस विनाश से बेड़े को बचाता। क्या हज़रत नूह के बेटे से अधिक तुर्क गुनाहगार थे। तो बजाए इसके कि उन के लिए ख़ुदा के पास सिफ़ारिश की जाती, न हंसी से ऐसी उल्टी बात बनाई जाती।

(3) और यह कि हज़रत अक़्दस ने हज़रत मसीह के बारे में अपनी पुस्तकों में कठोर तिरस्कारपूर्ण शब्द लिखे हैं, जो ख़ुदा के दरबार में एक मान्य के बारे में यथायोग्य न थे। जिसको ख़ुदावन्द अपनी रूह और कलिमः ठहराए जिनके लिए यह उपाधि हो–* وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ फिर उसका अपमान और भर्त्सना क्योंकर हो सकती है। ये बातें मेरे दिल में भरी थीं और उनकी जिज्ञासा के लिए मैं फिर कोशिश कर रहा था कि ये कहां तक सही हैं कि अचानक हुज़ूर का विज्ञापन तुर्की राजदूत के बारे में जो निकला, प्रस्तुत हुआ तो सहसा मेरे मुंह से (किसी अन्य के कलाम के अतिरिक्त) मसनवी का शे'र निकल गया जिस पर आप को दुःख हुआ (और दुख होना चाहिए था)।

(1) रिसालत के दावे के बारे में मुझे स्वयं इज़ाला-औहाम देखने से तथा आप के वह रूहानी और मुर्दा दिलों को ज़िन्दा करने वाले लेक्चर से जो जल्सा महोत्सव लाहौर में प्रस्तुत हुआ मेरी तसल्ली हो गयी। जो केवल इफ़्तिरा और

* अर्थात - इस लोक तथा परलोक में अत्यंत प्रतिष्ठित और सानिध्यप्राप्त - अनुवादक

इल्ज़ाम हुज़ूर अक़्दस के अस्तित्व पर किसी ने बांधा।

(2) तुर्कों के बारे में आप के उसी विज्ञापन (मेरी दावे की अर्ज़ी) से मेरी तसल्ली हो गयी। आपने जितनी आलोचना की वह आवश्यक और उचित थी।

(3) हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में भी एक अकारण इल्ज़ाम पाया गया। यद्यपि आपने यसू के बारे में कुछ लिखा है जो एक इल्ज़ामी तौर पर है जैसा कि एक मुसलमान शाइर (कवि) एक शिया के मुकाबले पर मौलाना अली रज़ियल्लाहु के बारे में लिखता है –

آں جوانے بروت مالیدہ   بہر جنگ و وغا سگالیدہ

वह जवान जो खूबियों से भरा हुआ है और जंग-ओ-पुकार में बहुत महारत रखता है।

برخلافت دلش بسے مائل   لیک بوبکر شد درمیاں حائل

ख़िलाफ़त को प्राप्त करने के लिए इसका दिल बहुत इच्छुक था लेकिन अबू बकर[रज़ि॰] बीच में आ गए।

तो भी हज़रत यदि ऐसा न करते मेरे विचार में तो बहुत अच्छा होता। ★ جَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ..................... (अन्नहल-126)

★ हज़रत मसीह के लिए कोई अनादर का वाक्य मेरे मुंह से नहीं निकला। यह सब विरोधियों का गढ़ा हुआ झूठ है। हां चूंकि वास्तव में कोई ऐसा यसू मसीह नहीं गुज़रा जिसने ख़ुदाई का दावा किया हो और आने वाले नबी ख़ातमुल अंबिया को झूठा ठहराया हो और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को डाकू कहा हो। इसलिए मैंने कष्ट कल्पना के तौर पर उसके बारे में अवश्य वर्णन किया है कि ऐसा मसीह जिसके ये वाक्य हों सच्चा नहीं हो सकता। परन्तु हमारा मसीह इब्ने मरयम जो स्वयं को बन्दा और रसूल कहलाता है और ख़ातुमल अंबिया का सत्यापनकर्ता है उस पर हम ईमान लाते हैं और आयत جَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ का यह आशय नहीं है कि हम इतनी नर्मी करें कि चापलूसी कर के घटना के विरुद्ध बात का सत्यापन कर लें। क्या हम ऐसे व्यक्ति को जो ख़ुदाई का दावा करे और हमारे रसूल को भविष्यवाणी के तौर पर कज़्ज़ाब ठहराए और हज़रत मूसा का नाम डाकू रखे, सत्यनिष्ठ कह सकते हैं। क्या ऐसा करना उत्तम वाद-विवाद है? कदापि नहीं, अपितु कपटाचारियों जैसा जीवन चरित्र तथा बेईमानी का एक विभाग है। इसी से

परन्तु इन बातों के अतिरिक्त जिस से मेरा दिल तड़प उठा और उस से यह आवाज़ आने लगी कि उठ और माफ़ी मांगने में जल्दी कर, ऐसा न हो कि तू ख़ुदा के दोस्तों से लड़ने वाला हो। ख़ुदावन्द करीम सम्पूर्ण रहमत (दया) है – كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ (अलअन्आम-13) दुनिया के लोगों पर जब अज़ाब उतारता है तो अपने बन्दों की नाराज़गी के कारण مَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا (बनी इस्राईल-16) आप का ख़ुदा के साथ मामला है तो कौन है जो ख़ुदाई सिलसिले में हस्तक्षेप करे। ख़ुदा तआला की उस अन्तिम महान किताब की हिदायत याद आई जो मोमिन आले फ़िरऔन के किस्से में वर्णन की गई कि जो लोग ख़ुदा के सिलसिले का दावा करें उनको झुठलाने के लिए दिलेरी और पहल नहीं करनी चाहिए न यह कि उनका इन्कार किया जाए।

اِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ وَ اِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ يَعِدُكُمْ

(अलमोमिन-29)

परन्तु यह मेरा हार्दिक विचार ही नहीं रहा अपितु इस का ज़ाहिरी प्रभाव महसूस होने लगा। कुछ ऐसी बुनियादें बज़ाहिर पड़ने लगीं जिसमें....... (अऊज़ुबिल्लाह) (में अज़ाब का) चरितार्थ हो जाने लगा (अर्थात् भय के लक्षण प्रकट हुए)।

चौदह सौ वर्ष होने को आते हैं कि ख़ुदा के एक चुने हुए के मुंह से ये शब्द हमारी क़ौम के लिए निकले...... तो क्या क़ुदरत को هباءًا منثورًا करने का विचार है (تُبْتُ اِليك يا ربّ) फिर एक ख़ुदा के मक़्बूल के मुंह से वही वाक्य सुनकर मुझे कुछ ख़याल न हो।

अत: ये भौतिक खतरे मुझ को इस पत्र को लिखते समय सब के सब उड़ते हुए दिखाई दिए (जिन का विवरण मैं फिर किसी समय करूंगा) इस समय तो मैं एक अपराधी गुनाहगारों की तरह आप के सामने खड़ा होता हूं और क्षमा मांगता हूं। (मुझे उपस्थित होने में भी कुछ बहाना नहीं, परन्तु कुछ परिस्थितियों में भौतिक उपस्थिति से क्षमा किए जाने का पात्र हूं।) शायद जुलाई 1898 ई. से पूर्व उपस्थित ही हो जाऊं। आशा है कि कुदुस के दरबार से भी आप को राज़ी

नामः देने के लिए तहरीक फ़रमाई जाए कि نَسِـىَ ولـم نجـدله عزمًـا कानून का भी यही सिद्धान्त है कि जो अपराध जान-बूझ कर न किया जाए वह राज़ीनामः और क्षमा के योग्य होता है। فاعفوا واصفحُوْاانّ الله يحبّ المحسـنين

मैं हूं हुज़ूर का सेवक

हस्ताक्षर (बुज़ुर्ग) रावलपिण्डी 29 अक्टूबर 1897 ई.

यह पत्र आदरणीय बुज़ुर्ग का है जिसको हम ने कुछ विनय और ख़ाकसारी के शब्द पृथक करके छाप दिया है। इस पत्र में प्रशंसित बुज़ुर्ग इस बात का इक़रार करते हैं कि उनको इस ख़ाकसार की दुआ के स्वीकार होने के बारे में इल्हाम हुआ था तथा इस बात का इक़रार भी करते हैं कि उन्होंने बाहरी रूप से भी यह के लक्षण देखे जिनके कारण अधिकतर रोब उन के दिल पर छा गया और दुआ की स्वीकारिता का निशान दिखाई दिए। अतः इस योग्य जगह यह बात प्रकट करने योग्य है कि डिप्टी आथम के बारे में जो कुछ शर्त के तौर पर वर्णन किया गया था वह वर्णन बिल्कुल उसी वर्णन से समान है जो इस बुज़ुर्ग के बारे में किया गया। अर्थात् जैसा कि उस अज़ाब की भविष्यवाणी में एक शर्त रखी गई थी वैसा ही उसमें भी एक शर्त थी। और इन दोनों लोगों में अन्तर यह है कि यह बुज़ुर्ग अपने अन्दर ईमानी प्रकाश रखता था और सच से प्रेम करने का सौभाग्य उसके जौहर में था। इसलिए उसने भय के लक्षण देख कर और ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर उसे गुप्त रखना न चाहा और अत्यन्त विनय और ख़ाकसारी से जहां तक कि मनुष्य विनय कर सकता है समस्त परिस्थितियां सफाई से लिख कर अपना उज्रनामः भेज दिया। परन्तु आथम चूंकि ईमान के प्रकाश और सौभाग्य के जौहर से वंचित था इसलिए अत्यन्त भयावह और हताश होने के बावजूद भी यह सौभाग्य उसे प्राप्त न हुआ। और भय का इक़रार करके फिर इफ़्तिरा के तौर पर उस भय का कारण हमारे उन काल्पनिक आक्रमणों को ठहराया जो केवल उसी के दिल की योजना थी। हालांकि उसने पन्द्रह महीने तक अर्थात् मीआद के अन्दर कभी प्रकट न किया कि हमने या हमारी जमाअत में से किसी ने उस पर आक्रमण किया था। यदि हमारी ओर

से उसके क़त्ल करने के लिए आक्रमण होता तो चाहिए था कि मीआद के अन्दर उसी समय जब आक्रमण हुआ था शोर डालता और अधिकारियों को सूचना देता। यदि हमारी ओर से एक भी आक्रमण होता तो क्या कोई स्वीकार कर सकता है कि उस आक्रमण के समय ईसाइयों में शोर न पड़ता। फिर जिस हालत में आथम ने मीआद गुज़ारने के बाद यह वर्णन किया कि मेरे क़त्ल करने के लिए विभिन्न समयों और स्थानों में तीन आक्रमण किए गए थे अर्थात् एक अमृतसर में और एक लुधियाना में और एक फ़ीरोज़पुर में। तो क्या कोई न्यायप्रिय समझ सकता है कि उन तीनों आक्रमणों के बावजूद जो ख़ून करने के लिए थे आथम और उसके दामाद जो एक्स्ट्रा असिसटेण्ट था, और उसकी समस्त जमाअत चुप बैठी रहती? और आक्रमण करने वालों का कोई भी निवारण न करती और कम से कम इतना भी न करती कि अख़बारों में छपवा कर एक शोर डाल देती और यदि नितान्त नर्मी करती तो सरकार से नियमानुसार संगीन ज़मानत तलब कराती। क्या कोई दिल स्वीकार कर लेगा कि मेरी ओर से तीन आक्रमण हों और आथम तथा उसकी समस्त जमाअत चुप रहें, बात तक बाहर निकले। क्या कोई बुद्धिमान इस बात को स्वीकार कर सकता है विशेषतौर पर जिस हालत में मेरे अवैध आक्रमणों का सबूत मेरी भविष्यवाणियों की सारी कलई खोलता था और ईसाइयों को स्पष्ट विजय प्राप्त होती थी। अत: आथम ने ये झूठे इल्ज़ाम इसलिए लगाए कि भविष्यवाणी की मीआद के अन्दर उसका भयभीत और हताश होना प्रत्येक पर खुल गया था वह भय के कारण मरा जाता था औरर यह भी संभव है कि यह भय के लक्षण उस पर इस प्रकार प्रकट हुए हों जैसा कि यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम पर प्रकट हुए थे। इसलिए उसने इल्हामी शर्त से फ़ायदा उठाया किन्तु दुनिया से प्रेम करके गवाही को गुप्त रखा और क़सम न खाई तथा नालिश न करने से प्रकट भी कर दिया कि वह अवश्य ख़ुदा तआला के भय और इस्लामी श्रेष्ठता से भयभीत रहा। इसलिए वह गवाही को छुपाने के बाद दूसरे इल्हाम के अनुसार शीघ्रतर मर गया। बहर हाल यह मुक़द्दमा कि जो इस सौभाग्यशाली और नेक

प्रकृति बुज़ुर्ग का मुक़द्दमा है आथम के मुक़द्दमे से बिल्कुल समरूप है और इस पर प्रकाश डालता है। ख़ुदा तआला इस बुज़ुर्ग की ग़लती को क्षमा करे और उस से राज़ी हो। मैं उस से राज़ी हूं और उसे माफ़ी देता हूं। चाहिए कि हमारी जमाअत का प्रत्येक व्यक्ति उसके लिए ख़ैर की दुआ करे और उसको भी चाहिए कि भविष्य में ख़ुदा तआला से डरता रहे।

क्रम संख्या 59.	निशान का विवरण

ख़ुदा तआला के सब निशानों में से एक यह निशान है कि वह मुक़द्दमा जो मुंशी मुहम्मद बख़्श डिप्टी इन्सपेक्टर बटाला की रिपोर्ट के आधार पर दायर होकर मिस्टर डोई साहिब मजिस्ट्रेट ज़िला गुरदासपुर की अदालत में मुझ पर चलाया गया था जो फ़रवरी 1899 ई. को इस प्रकार से फ़ैसला हुआ कि उस इल्ज़ाम से मुझे बरी कर दिया गया। इस मुक़द्दमे के अंजाम से ख़ुदा तआला ने समय से पूर्व मुझे इल्हाम द्वारा सूचना दे दी कि अन्ततः वह मुझे शत्रुओं के बुरे इरादे से सलामत और सुरक्षित रखेगा और विरोधियों के प्रयास व्यर्थ जाएंगे। फिर ऐसा ही घटित हुआ। जिन लोगों को इस मुक़द्दमे की ख़बर थी उन पर गुप्त नहीं कि विरोधियों ने मुझ पर इल्ज़ाम क़ायम करने के लए कुछ कम प्रयास नहीं किया था, अपितु विरोधी गिरोह ने नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया था और कथित अफ़सर ने मेरे विरुद्ध बड़े ज़ोर से गवाही दी थी। परन्तु जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है इस से पूर्व कि यह मुक़द्दमा दायर हो मुझे ख़ुदा तआला ने अपने इल्हाम द्वारा सूचना दी थी कि तुम पर ऐसा मुक़द्दमा शीघ्र होने वाला है और यह सूचना पाने के बाद मैंने दुआ की और वह दुआ स्वीकार होकर अन्ततः मेरी बरीयत हुई और फैसले से पूर्व यह इल्हाम भी हुआ कि तेरा सम्मान और प्राण सुरक्षित रहेगा और दुश्मनों के आक्रमण जो इसी बुरे उद्देश्य के लिए हैं उनसे तुझे बचाया जाएगा।★ इस इल्हाम

★इस इल्हाम से मैंने यहां के तन्मय और पक्षपाती आर्य लाला शरमपत और लाला मलावामल को भी समय से पूर्व ख़बर दी थी। अर्थात् जब मैंने एक सच्ची गवाही के लिए उन को कहा और उन की ओर से इन्कार की निशानियां देखीं तो तब मैंने कहा कि तुम्हारी कुछ भी परवाह नहीं मुझे ख़ुदा ने ख़ुशख़बरी दे दी है कि इस मुक़द्दमे से तुम्हें बचा लूंगा। इसी से।

से और उन सब सूचनाओं से जो समय से पूर्व ज्ञात हुईं मैंने अपने दोस्तों में से एक बहुत बड़ी जमाअत को ख़बर कर दी थी। तो उनमें से अख़्वैम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब भेरवी और अख़्वैम मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी और अख्वैम शेख़ रहमतुल्लाह साहिब ताजिर गुजराती और अख़्वैम सेठ अब्दुर्रहमान साहिब हाजी अल्लाह रखा ताजिर मद्रासी और अख़्वैम मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए.वकील और अख़्वम ख्वाजा कमालुद्दीन साहिब बी.ए. वकील इत्यादि दोस्त हैं। जो दो सौ से भी कुछ अधिक होंगे औरर ये सब दोस्त ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कह सकते हैं कि उन को समय से पूर्व इस मुक़द्दमे के पैदा होने और अन्त में बरी होने की ख़बर दी गई। और न केवल वही इसके गवाह हैं अपितु बिल्कुल अदालत के कमरे में मिस्टर ब्रून साहिब और मौलवी फ़ज़लदीन साहिब व चीफ़ कोर्ट के वकीलों को भी इस से ऐसे अवसर पर सूचना दी गई जिस से उन को भी मानना पड़ा कि ये ग़ैब की बातें और ख़ुदा की भविष्यवाणियां हैं जो आज पूरी हुईं। ये अन्त में जिनका ज़िक्र किया गया है वे दो प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं जो मेरे सिलसिले में दाख़िल भी नहीं हैं। अर्थात् एक मौलवी फ़ज़्लदीन साहिब वकील चीफ़ कोर्ट और दूसरे मिस्टर ब्रूम साहिब जो चीफ़ कोर्ट के एक प्रतिष्ठित वकील यूरोपियन और धर्म के ईसाई हैं और बरी होने के लिए जो समय से पूर्व दुआ की गई थी वह 'हक़ीक़तुल महदी' के प्रथम पृष्ठ में एक शेर में इस प्रकार से वर्णन की गई है –

خود بروں آ از پئے ابراءِ من   اے تو کہف وملجأ وماوائے من

अर्थात् हे ख़ुदा कि तू मेरी शरण और मेरा आराम-स्थल है मेरे बरी करने के लिए स्वयं अलख दिखा।

अब देखो कि यह दुआ कैसी स्वीकार हुई और किस प्रकार मेरे विरोधियों की वे समस्त कोशिशें जो मुझे दण्ड दिलाने के लिए की गई थीं बरबाद गईं।

और स्मरण रहे कि यह भविष्यवाणी केवल बरी करने तक ही सीमित नहीं थी अपितु इसके तो बहुत भाग थे जो बड़े ज़ोर-शोर से पूरी हो गई। यह मुक़द्दमा पुलिस की ओर से खड़ा किया गया था और पुलिस का उद्देश्य यह था कि इसमें

कोई दण्ड या कम से कम कोई संगीन ज़मानत हो जाए। मुंशी मुहम्मद बख़्श डिप्टी इन्सपेक्टर बटाला की ओर से इस की बुनियाद पड़ी। और हम स्वीकार करते हैं कि कथित मुंशी साहिब ने अपनी समझ और अपनी नेक नीयत की सीमा तक इस प्रकार से अपने सुपुर्द कर्त्तव्य को अदा करना चाहा। परन्तु चूंकि ख़ुदा तआला के ज्ञान में था कि मुझ से कोई आपराधिक हरकत नहीं हुई, इसलिए उसने समय से पूर्व मुझे तसल्ली दी और मुझे सूचना दी कि इस मुक़द्दमे में पुलिस वाले अपने उद्देश्यों में असफल रहेंगे और मुहम्मद हुसैन एडीटर इशाअतुस्सुन्नः का भविष्य के लिए गालियां देने से मुंह बन्द किया जाएगा।★ और अभी मिस्टर डोई साहिब अदालत की कुर्सी पर इज्लास करके शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी के बारे में बात कर रहे थे कि भविष्य में वह काफ़िर ठहराने और गालियां देने से रुके। और सय्यिद बशीर हुसैन साहिब और मुंशी मुहम्मद बख़्श साहिब डिप्टी इन्सपेक्टर बटाला अदालत में उपस्थित थे कि उसी समय पुस्तक 'हकीक़तुल महदी' जिस के पृष्ठ-12 पर ये भविष्यवाणियां हैं, ठीक अदालत के कमरे में मौलवी फ़ज़्लदीन साहिब लीडर चीफ़ कोर्ट और मिस्टर ब्रून साहिब प्लीडर चीफ़ कोर्ट के हाथ में दिया गया था और वे कुर्सियों पर बैठे हुए अदालत के सामने उन भविष्यवाणियों को पढ़ रहे थे और कह रहे थे कि इस समय यह भविष्यवाणी पूरी हुई। और कमरे से बाहर निकल कर मिस्टर ब्रून साहिब ने शेख़ रहमतुल्लाह साहिब ताजिर को भी कहा कि भविष्यवाणी पूरी हो गई और इन आदरणीय वकीलों के मुंह से ये बातें जो उन के

★ क़ुदरत का यह अद्भुत कारोबार है कि मुहम्मद हुसैन को मिस्टर डोई साहिब ने मुक़द्दमे से इस मतलब से पृथक कर दिया था कि जो उसके बारे में इल्ज़ाम है उसकी बाद में जांच-पड़ताल होगी। परन्तु मेरे मुक़द्दमे की अन्तिम पेशी पर मुहम्मद हुसैन स्वयं बिना किसी संबंध के मात्र तमाशा देखने के लए अदालत में उपस्थित हो गया। तब अदालत ने उसको उपस्थित पाकर अविलम्ब उस से इन निबंध के नोटिस पर हस्ताक्षर करा लिए कि भविष्य में वह गाली गलौज, काफ़िर ठहराने और झुठलाने से रुका रहेगा। उसको उस समय किसी ने बुलाया नहीं था, केवल ख़ुदा का इरादा उसके खींचकर लाया ताकि उसका यह पवित्र इल्हाम पूरा हो कि मुहम्मद हुसैन का मुंह गालियां देने से बन्द किया जाएगा। इसी से।

पद और कार्य से कुछ अनुकूलता भी नहीं रखतीं, इसलिए सहसा निकल गईं कि उन्होंने कई पेशियों में चश्मदीद देखा था कि मुझे दण्ड दिलाने के लिए पुलिस की ओर से (यद्यपि नेक नीयत से) तथा कथित शेख़ की ओर से कैसी जान-तोड़ कोशिशें हो रही थीं, परन्तु ख़ुदा तआला ने न केवल यह किया कि उनके तबाह करने वाले इरादों से मुझे बचा लिया अपितु समय से पूर्व मुझे सूचना दे दी कि वे इन इरादों में असफल रहेंगे तो इस खुली-खुली भविष्यवाणी के देखने से जो इस मुक़द्दमे के अंजमा के लिए ख़ुदा तआला की ओर से हुई उनके दिलों पर प्रभाव हुआ। और वह भविष्यवाणी जो 'हक़ीकतुल महदी' के पृष्ठ 12 में दर्ज है उसके शब्द ये हैं –

انّ اللّٰہ مع الّذین اتّقوا وَالّذین ھم محسنون۔ انت مع الّذین اتّقوا وانت معی یا ابراھیم ۔یأ تیك نصرتی اِنّی انا الرّحمٰن۔ یا ارض ابلعی ماءك۔ غیض الماء وقُضِیَ الامر۔ سَلامٌ قولًا من ربّ رّحیم۔ وامتازوا الیوم ایّھا المُجرمون۔ انا تجالدنا فانقطع العدوّ واسبابه۔ ویلُ لّھم انّٰی یؤفکون یعضّ الظّالم علٰی یدیه ویوثق وانّ اللّٰہ مع الا برار وانّهٗ علٰی نصرھم لقدیر شاھت الوجوہ انّهٗ من اٰیة اللّٰہ وانّهٗ فتح عظیم انت اسمی الا علٰی وانت منّی بمنزلة محبُوبین ۔اخترتك لنفسی۔ قل انّی امرت وانا اوّل المؤمنین۔

देखो पृष्ठ 12 'हक़ीकतुलमहदी'

अनुवाद – ख़ुदा संयमियों के साथ है और तू संयमियों के साथ है और तू मेरे साथ है। हे इब्राहीम! मेरी मदद तुझे इस मुक़द्दमे में पहुंचेगी। मैं रहमान हूं। हे ज़मीन तू अपने पानी को निगल जा अर्थात् वास्तविकता के विरुद्ध और फ़ित्नः खड़ा करने वाली शिकायतों को वापस ले ले कि वे स्वीकार नहीं की जाएंगी और हाकिम उन का पाबन्द नहीं होगा तो पानी अर्थात् शिकायतों का पानी जो इस मुक़द्दमे का आधार था सूख गया और बात का फ़ैसला हुआ।

अर्थात् भविष्य में इसी प्रकार तुम्हारे पक्ष में फैसला होगा और शत्रुओं की योजना समाप्त हो जाएगी वह फ़ैसला क्या है यह है कि तू पुलिस और मुहम्मद हुसैन की शिकायतों के प्रभाव से सुरक्षित रहेगा। अर्थात् सलामती के साथ इल्ज़ाम से बाहर रहेगा। यह ख़ुदा का आदेश है जो रब्ब और रहीम है। अर्थात् आकाश पर तेरी सलामती और बरी होने का आदेश हो गया है। अब पृथ्वी पर भी ऐसा ही होगा, और आदेश दिया गया कि अपराधी इस से पृथक हों। अर्थात् मुकद्दमें में पराजित, असफल और लज्जित रहें। हम आकाश से उतर कर लड़े यहां तक कि शत्रु और उसे सामान काटे गए अर्थात् जिन बातों की बुनियाद पर मुक़द्दमा खड़ा किया गया था वे बातें अदालत में काटी जाएंगी अर्थात् विश्वसनीय नहीं रहेंगी और शत्रु भी काटे जाएंगे अर्थात् पराजित और असफ़ल रहेंगे और अदालत के कमरे से विजय प्राप्त करके नहीं निकलेंगे। स्पष्ट है कि पुलिस की ओर से यह रिपोर्ट मेरे बारे में थी कि इस व्यक्ति ने अदालत के नोटिस के अहद को तोड़ा है और इल्हाम के माध्यम से मुहम्मद हुसैन को अज़ाब की धमकी दी है। इसलिए पुलिस की इच्छा और खुशी इस बात में न थी कि अदालत मुझ को इस मुक़द्दमे में बिना ज़मानत और बिना दण्ड के छोड़ दे। पुलिस ने ज़ोर लगाने में भी कोई कमी नहीं की थी और स्वयं उसके पद का कर्त्तव्य था कि अपनी पैदा की हुई बात को सबूत तक पहुंचाए परन्तु ख़ुदा ने जो दिलों को जानता और वास्तविकताओं से परिचित है पुलिस को उसकी इस इच्छा और इरादे से साफ़ असफ़ल रखा। इसी ओर संकेत है जो इस इल्हाम ने किया है – انا تجالدنا فانقطع العدوّ واسبابه इस इल्हाम में ख़ुदा तआला ने यह जलताया है कि हम भी वकीलों की तरह पुलिस और मुहम्मद हुसैन से लड़ेंगे और अन्ततः विजय हमारी होगी। और हम उनके समस्त तर्क, कारण, प्रमाण और साक्ष्य के काग़ज़ों को टुकड़े-टुकड़े करके फेंक देंगे। तत्पश्चात् मुहम्मद हुसैन के बारे में फ़रमाया कि अत्याचारी अपने हाथ काटेगा और अपनी शरारतों से रोका जाएगा अर्थात् मुहम्मद हुसैन से इस प्रकार के नोटिस पर हस्ताक्षर कराए

जाएंगे कि फिर वह गालियां देने, काफ़िर ठहराने और झुठलाने से रुकेगा।★ फिर फ़रमाया – ख़ुदा नेकों के साथ होगा और वह उनकी सहायता पर समर्थ है। मुंह काले हो जाएंगे अर्थात् जो कुछ मुक़द्दमा करने वाले की कामना थी वे अत्यन्त शर्म के साथ इस से वंचित रहेंगे और उनमें कुछ जो कुछ कहते थे कि हम यह करेंगे और यह करेंगे। ख़ुदा उनको पराजित करेगा, और वे ऐसे शर्मिन्दा होंगे कि शर्म के कारण मुख पर कालिमा आ जाएगी उस दिन ख़ुदा का यह निशान प्रकट होगा और यह महान विजय होगी। क्योंकि ख़ुदा विरोधियों की समस्त योजनाओं को असफल करेगा। अपितु यह इसलिए भी महान विजय होगी कि ख़ुदा ने उस आने वाले दिन से पहले ख़बर दे दी है। और फिर फ़रमाया कि तू मेरे सर्वोच्च नाम (अल्लाह) का द्योतक है। अर्थात् तुझे हमेशा विजय होगी। और यह मसीह मौऊद की विशेष निशानी है कि वह विजय रहेगा। और फिर फ़रमाया तू मेरे प्यारों में से है। मैंने तुझे अपने लिए चुना। तू लोगों को कह दे कि मैं सब से पहला मोमिन हूं। और यह भविष्यवाणी जो इस वैभव के साथ की गई थी 24

★हाशिया :- यह सच है कि इस नोटिस पर मेरी ओर से भी इस अहद के साथ हस्ताक्षर हैं कि मैं फिर मुहम्मद हुसैन की मौत या अपमान के लिए कोई भविष्यवाणी नहीं करूंगा। परन्तु यह ऐसे हस्ताक्षर नहीं हैं जिन से हमारे कारोबार में कुछ भी हानि हो। अपितु मुद्दत हुई कि मैं पुस्तक अंजाम-ए-आथम के अन्तिम पृष्ठ में स्पष्ट विज्ञापन दे चुका हूं कि हम भविष्य में उन लोगों को सम्बोधित नहीं करेंगे जब तक स्वयं उन की ओर से तहरीक न हो अपितु इस बाते में एक इल्हाम भी प्रकाशित कर चुका हूं जो मेरी पुस्तक 'आईना कमालात इस्लाम' में दर्ज है। और मैं हमेशा इस इल्हाम के बाद मुहम्मद हुसैन से मुंह फेर लेता था और उसे सम्बोधित करने योग्य नहीं समझता था। परन्तु उसकी कुछ गन्दी कार्यवाहियों और ऐसी बुरी कार्रवाई के बाद जो उसने जाफ़र ज़टल्ली के साथ मिल कर की थी। मुझे आवश्यक तौर पर इसके बारे में कुछ लिखना पड़ा था। मुझे यह भी अफ़सोस है कि इन लोगों ने केवल शरारत से यह भी मशहूर किया है कि अब इल्हाम प्रकाशित करने का निषेध हो गया परन्तु थोड़ी शर्म करके सोचें कि यदि इल्हाम के दरवाज़े बन्द हो गए थे तो मेरी बाद की पुस्तकों में क्यों इल्हाम प्रकाशित हुए। इसी पुस्तक को देखें कि क्या इसमें इल्हाम कम हैं? इसी से।

फ़रवरी 1899 ई. को शुक्रवार के दिन पूरी हो गई। इस भविष्यवाणी के पूरा होने के बाद मुहम्मद हुसैन एडीटर इशाअतुस्सुन्नः ने अपनी पुरानी आदत के अनुसार यह ऐतराज़ किया था कि आदेश में बरी का शब्द नहीं अपितु डिस्चार्ज का शब्द है और मालूम होता है कि इस ऐतराज़ को उसने एक बड़ा ऐतराज़ समझा है। इसलिए उसने पैसा अखबार और 'अख़बार-ए-आम' में इसको प्रकाशित भी किया है। और इस से उसका उद्देश्य यह मालूम होता है ताकि जन साधारण पर यह प्रकट करे कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। और इस प्रकार से धोखा देकर उनको हिदायत से वंचित रखे। परन्तु उसके दुर्भाग्य से उसका यह धोखा देना बुद्धिमानों के हृदयों पर प्रभाव नहीं कर सकता। अपितु इस पुस्तक के प्रकाशित होने के बाद उसकी यह हरकत अत्यन्त लज्जा का कारण होगा। स्मरण रहे कि अंग्रेज़ी भाषा में किसी को जुर्म (अपराध) से बरी समझने या बरी करने के लिए दो शब्द हैं। एक डिस्चार्ज (Discharge) दूसरा अक्विट (Acquit)। डिस्चार्ज उस जगह बोला जाता है कि जहां अधिकृत हाकिम की दृष्टि में जुर्म का प्रारंभ से ही कुछ सबूत न हो और सबूत न होने के कारण आरोपी को छोड़ा जाए। और अक्विट उस जगह बोला जाता है जहां पहले आरोप सिद्ध हो जाए और अभियोग पत्र लगाया जाए। फिर आरोपी अपनी सफ़ाई का सबूत देकर उस आरोप से रिहाई पाए। इन दोनों शब्दों में कानूनी तौर पर अन्तर यह है कि डिस्चार्ज बह बरी होने का प्रकार है कि जहां आरोप (जुर्म) सिद्ध न हो सके। और अक्विट बरी होने का वह प्रकार है कि जहां जुर्म सिद्ध हो जाने के बाद तथा अभियोग पत्र लिखने के बाद अन्त में सफ़ाई सिद्ध हो जाए। और अरबी में बरीयत का शब्द उन दोनों अर्थों पर आधारित है जो व्यक्ति आरोप से दूर रहे अर्थात् आरोप का लगना उस पर सिद्ध न हो या आरोप लगने के बाद उसकी सफ़ाई सिद्ध हो। दोनों हालतों में अरबी भाषा में उसका नाम बरी होता है। तो जब डिस्चार्ज के शब्द का अनुवाद अरबी में किया जाएगा तो बरी के अतिरिक्त अन्य कोई शब्द नहीं जो इसके अनुवाद में लिख सकें। क्योंकि डिस्चार्ज के शब्द से कानून का उद्देश्य केवल इतना नहीं है कि यों ही छोड़ा जाए अपितु उद्देश्य यह है कि सबूत के अभाव की स्थिति में छोड़ा जाए। और

इस उद्देश्य के अदा करने के लिए केवल बरी का शब्द है और यह अरबी शब्द है। तथा फ़ारसी में ऐसा कोई शब्द नहीं जो इस उद्देश्य को अदा कर सके। रिहाई का शब्द इस उद्देश्य को अदा नहीं करता केवल द्विअर्थी बात के तौर पर बोल सकते हैं। कारण यह कि रिहाई के शब्द का अर्थ केवल इतना है कि किसी को छोड़ा जाए चाहे चिड़ियों को पिंजरे में से छोड़ा जाए। परन्तु कानून निर्माताओं का यह उद्देश्य कदापि नहीं है कि वे डिस्चार्ज के शब्द से केवल छोड़ना अभिप्राय लें और उसके साथ और कोई शर्त न हो। अपितु उन के नज़दीक डिस्चार्ज के शब्द में आवश्यक तौर पर यह शर्त है कि जिस व्यक्ति को डिस्चार्ज किया जाए उस पर आरोप सिद्ध न हो या उस आरोप का पर्याप्त सबूत न हो और जबकि डिस्चार्ज के शब्द के साथ क़ानूनविदों के नज़दीक एक शर्त भी है जिसका हमेशा फ़ैसलों में ज़िक्र भी होता है तो किसी स्थिति में इसका अनुवाद रिहाई नहीं हो सकता। क्योंकि रिहाई का शब्द केवल छोड़ने या छोड़े जाने के अर्थों पर चरितार्थ पाता है और कोई अतिरिक्त बात इसके अर्थ में नहीं। अत: स्पष्ट हो कि डिस्चार्ज का अनुवाद क़ानूनविदों के आशय के अनुसार फ़ारसी में हो ही नहीं सकता। अपितु इस अर्थ को अदा करने के लिए केवल बरी का शब्द है जो अरबी है। अरब की ये दो कहावतें हैं कि انا بری من ذالک और انا مُبرّء من ذالک पहले कथन के ये मायने हैं कि मुझ पर कोई आरोप सिद्ध नहीं किया गया। और दूसरे के ये मायने हैं कि मेरी सफ़ाई सिद्ध की गई है। देखो लिसानुल अरब और ताजुलउरूस तथा अरब के शब्द कोश की विस्तृत पुस्तकें जिन में बरी के शब्द के मायने विभिन्न परिवर्तनों की शैली में किए गए हैं और पवित्र क़ुर्आन में भी ये दोनों परिवर्तन दो मायनों पर आए हैं। पहले फ़रमाया है –

وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا (अन्निसा-113)

अर्थात् जो व्यक्ति कोई ग़लती या गुनाह करे और फिर किसी ऐसे व्यक्ति पर वह गुनाह लगावे जिस पर वह गुनाह एक प्रमाणित बात नहीं तो उसने एक

खुले-खुले आरोप और गुनाह का बोझ अपनी गर्दन पर लिया। अत: इस जगह ख़ुदा तआला ने बरी के शब्द से उस व्यक्ति को अभिप्राय लिया है जिस पर कोई गुनाह सिद्ध न हुआ हो। और यदि कोई हमारे इस वर्णन का विरोध करके यह कहे कि इस जगह बरी के शब्द से ये मायने अभिप्राय नहीं हैं अपितु यह अभिप्राय है कि ऐसे व्यक्ति पर गुनाह लगाए जिसने साक्ष्यों के माध्यम से अदालत में अपना निष्पाप होना पूर्ण सबूत को पहुंचा दिया हो और गवाहों के द्वारा अपना निर्दोष होना सिद्ध कर दिया हो तो ये मायने सर्वथा दूषित और पवित्र क़ुर्आन के आशय के व्यापक रूप विरुद्ध और विपरीत हैं। क्योंकि यदि यह मायने इस आयत के हैं तो फिर इस स्थिति में यह बड़ी खराबी अनिवार्य आती है कि ख़ुदा तआला के नज़दीक ऐसे व्यक्ति पर आरोप लगाना कोई गुनाह न हो जिस पर वह गुनाह सिद्ध नहीं है अपितु उसके बारे में गुनाह हो जिसने अपने निर्दोष होने पर अदालत में गवाह दे दिए हों और अपनी निर्दोष होना पूर्ण सबूत को पहुंचा दिया हो। और ये मायने इस्लाम के समस्त गिरोहों की सहमति से ग़लत हैं। इसी कारण से इस्लाम के समस्त उलेमा के नज़दीक ऐसे लोग भी इस आयत की पकड़ के नीचे हैं जो पर्दा नशीन औरतों पर व्यभिचार (ज़िना) का आरोप लगाए और यद्यपि उन औरतों के कर्मों के बारे में पता न हों। परन्तु इस आयत में उन का नाम बरी रखा। क्योंकि शरई तौर पर उन पर अपराध का सबूत नहीं। अत: क़ुर्आन के इस स्पष्ट आदेश से सिद्ध हुआ कि जिस पर शरई तौर पर अपराध का सबूत न हो वह बरी है और यह भी सिद्ध हुआ कि अरब की भाषा भी इस का नाम बरी रखती है। क्योंकि क़ुर्आन से बढ़कर अरब के मुहावरे जानने के लिए अन्य कोई माध्यम नहीं। और इसी आयत के अर्थ की समर्थक पवित्र क़ुर्आन की वह आयत है जो सूरह अन्नूर की तीसरी आयत है और वह यह है –

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (अन्नूर-5)

अर्थात् जो लोग सच्चरित्र औरतों पर व्यभिचार का आरोप लगाएं और उस आरोप के सिद्ध करने के लिए चार गवाह न ला सकें तो उनको अस्सी कोड़े मारो और भविष्य में कभी उनकी गवाही स्वीकार न करो। और ये लोग स्वयं ही व्यभिचारी हैं। इस जगह مُحصنات (मुहसनात) के शब्द के वही मायने हैं जो पहली आयत में बरी के शब्द के मायने हैं। अब यदि मौलवी मुहम्मद हुसैन के एडीटर इशाअतुस्सुन्नः के कथनानुसार बरी के शब्द का चरितार्थ केवल वह व्यक्ति हो सकता है कि जिस पर पहले अभियोग लगाया जाए और फिर गवाही की साक्ष्य से उसकी सफ़ाई सिद्ध हो जाए और नालिश का सबूत डिफेन्स के सबूत से टूट जाए तो इस दशा में अर्थात् यदि बरी के शब्द में जो आयत ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا (अन्निसा आयत :113) में है। यही आशय क़ुर्आन का है। तो किसी औरत पर व्यभिचार का आरोप लगाना कोई अपराध न होगा। सिवाए इस स्थिति के कि उसने विश्वसनीय गवाहों के द्वारा अदालत में सिद्ध कर दिया हो कि वह व्यभिचारिणी नहीं। और इस से यह अनिवार्य होगा कि हज़ारों पर्दानशीन औरतें जिनका दुष्कर्म सिद्ध नहीं यहां तक नबियों की औरतें, सहाबा की औरतें और अहले बैत में से औरतें आरोप लगाने वालों से इस स्थिति के अतिरिक्त छुटकारा न पा सकें और न बरी कहलाने की पात्र ठहर सकें जब तक कि अदालतों में उपस्थित होकर अपनी पाक दामिनी का सबूत दें। हांलाकि ऐसी समस्त औरतों के बारे में जिन का दुष्कर्म सिद्ध न हो ख़ुदा तआला ने सबूत का बोझ आरोप लगाने वालों पर रखा है और उनको बरी और (مُحْصَنٰت) (नेक औरतों) के नाम से पुकारा है। जैसा कि इसी आयत ثُمَّ لَمْ يَأْتُوْا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ से समझा जाता है। और यदि किसी विरोधी को नबियों की औरतों (पत्नियों) को और उनके सहाबा की पत्नियों और समस्त शरीफ़ लोगों की पत्नियों की हमारे विरोध के लिए कुछ परवाह न हो तो फिर थोड़ी शर्म करके अपनी पत्नियों के बारे में ही कुछ इन्साफ़ करे कि क्या यदि उन पर कोई व्यक्ति उनके सतीत्व के विपरीत कोई ऐसा आरोप लगाए जिस का कोई सबूत नहीं तो क्या वे पत्नियां आयत يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا की चिरतार्थ ठहर कर बरी समझी जा सकती हैं। और ऐसा आरोप लगाने वाला दण्डनीय ठहरता है या वे

इस हालत में बरी समझी जाएंगी जबकि वे अपनी सफ़ाई और सतीत्व के गवाह अदालत में गुज़ार दें और जब तक वे गवाहियों के द्वारा अपने सतीत्व का अदालत में सबूत न दें तब तक जो व्यक्ति चाहे उनके सतीत्व पर आक्रमण करे और उनके बरी न ठहराए। क्या उपरोक्त आयत में अर्थात् आयत يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا में बरी के शब्द का यही आशय है कि इसमें गुनाह का सिद्ध न होना पर्याप्त नहीं, अपितु सुदृढ़ गवाहियों के द्वारा बेगुनाही और सफ़ाई सिद्ध होनी चाहिए। शर्म! शर्म! शर्म! तो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्नः को ख़ुदा तआला की क़सम देता हूं कि इसका उत्तर अवश्य दें। और उनके दोस्तों को भी उसी पवित्र हस्ती की क़सम देता हूं कि उन से अवश्य उत्तर लें। ताकि प्रत्येक झूठे का मुंह काला हो जाए। और दूसरा प्रकार बरी का जिसमें दोषी व्यक्ति अपने निर्दोष होने का सबूत देता है उसका नाम पवित्र क़ुर्आन में **मुबर्रा** रखा है जैसा कि फ़रमाता है –

اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ (अन्नूर-27)

अब मोमिनों के लिए आवश्यक है कि इस बहस में ख़ुदा तआला के फैसले को स्वीकार करे। और यदि नहीं करेगा तो वह इस आयत के नीचे आएगा जो पवित्र क़ुर्आन की सूरह अन्निसा में है और वह यह है -

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا (अन्निसा-66)

हे पैग़म्बर तुम्हारे ही रब्ब की क़सम है कि जब तक ये लोग अपने परस्पर झगड़े तुम ही से फ़ैसला न कराएं और केवल फ़ैसला ही नहीं अपितु जो कुछ तुम फ़ैसला कर दो उस से किसी प्रकार दु:खी हों अपितु पूर्ण आज्ञापालन और हार्दिक सहमति और प्रफुल्लता से उसे स्वीकार कर लें। तब तक ये लोग ईमान से वंचित हैं। अब फ़रमाइए शेख़ जी! पवित्र क़ुर्आन क्या कहता है। मिस्टर डोई साहिब के फ़ैसले के अनुसार जो सबूत का अभाव अपराध के आधार पर किया गया है मेरा नाम पवित्र क़ुर्आन ने बरी रखा है या नहीं? और क्या आपको यह क़ुर्आन का फ़ैसला स्वीकार है या नहीं? अफ़सोस कि यह समस्त लज्जाएं

पक्षपात और झूठ बोलने के दण्डस्वरूप आपके सम्मुख आ रही हैं। इस से पूर्व आपने عجب (अजब) के सिले में बहस करके तथा इस बात पर हठ करके कि عجب का सिल: केवल مِن (मिन) आता है لام (लाम) नहीं आता, कैसी सख़्त शर्मिन्दगी उठाई थी। यदि आप उसी समय कान को हाथ लगाते और भविष्य में बकवास और व्यर्थ बातों से पृथक रहते तो इसमें आप का बड़ा सम्मान था। परन्तु आपने अकारण मेरे बारे में अख़बारों में छपवा दिया कि यह मनुष्य बरी नहीं हुआ। हालांकि इस से पूर्व कप्तान डगलस साहिब ने डॉक्टर क्लार्क के मुक़द्दमे में डिस्चार्ज के मायने बरी लिखवाए थे★ तो आपने डंक मारने के लिए इसी को उत्तम समझा और अख़बरों में एक शोर मचा दिया। अब इस लेख के प्रकाशित होने के बाद आप जितने शर्मिन्दा होंगे उस का कौन अनुमान कर सकता है। शायद किसी वकील ने हंसी से आपको कह दिया होगा कि डिस्चार्ज के मायने रिहाई है बरियत नहीं है। किन्तु अब आप बच्चों की तरह इस पाठ को याद रखें कि क़ानून बनाने वालों का यह आशय कदापि नहीं है कि प्रत्येक स्थान पर डिस्चार्ज के मायने केवल रिहाई है अपितु जब सबूत के अभाव के स्थान में किसी दोषी को डिस्चार्ज करते हैं तो ऐसे फ़ैसले में डिस्चार्ज के शब्द से इस प्रकार की रिहाई अभिप्राय होती है जो किसी जुर्म के सबूत के न पाने के कारण दोषी (आरोपी) को मिलती है। आप इतना तो होश-व-हवास रखते होंगे कि इस बात को समझ सकें कि किसी मजिस्ट्रेट को अधिकार नहीं है कि बिना किसी रिहाई के कारण के अपराधी को यों ही छोड़ दे। अत: आप के स्मरण रहे कि क़ानून बनाने वालों ने एक विभाजन दिखाने के लिए बरियत के दो अर्थ के अलग-अलग नाम कर दिए हैं। अर्थात् एक डिस्चार्ज जिस से ऐसे फ़ैसलों में वह रिहाई के योग्य दोषी (आरोपी) अभिप्राय है जो जुर्म के अभाव के कारण रिहा किया जाता है जिसको अरबी बरी कहते हैं। दूसरे अक्विट जो सफ़ाई सिद्ध होने के बाद छोड़ा जाता है जिसको अरबी में मुबर्रा बोलते हैं। और

★अफ़सोस इस मौलवी पर जिस से एक अंग्रेज़ अरबी के मुहावरे का अधिक परिचित सिद्ध हो। इसी से।

यह कानून का बोध भ्रम है कि डिस्चार्ज से प्रत्येक स्थान पर केवल रिहा किया हुआ अभिप्राय लिया जाए। अपितु ठीक-ठीक क़ानून का आशय यह है कि ऐसे समस्त मुक़द्दमों में जहां आरोपी सबूत के अभाव में छोड़े जाते हैं डिस्चार्ज के शब्द से ऐसा रिहा किया जा चुका अभिप्राय होता है जिस पर अपराध सिद्ध नहीं हो सका और वही जिसको अरबी में बरी कहते हैं। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन की गवाही से मालूम हो चुका है।★ हां चूंकि डिस्चार्ज के शब्द के अनुवाद करने वाले इस बारीक बहस को अच्छी तरह अदा नहीं कर सके। इसलिए उन्होंने यह ग़लती खाई है कि डिस्चार्ज का अनुवाद वर्णन करने में एक ऐसे शब्द को प्रस्तुत किया है अर्थात् रिहाई को जो डिस्चार्ज के पूर्ण अर्थ का चरितार्थ नहीं हो सकता। चूंकि अंग्रेज़ी हो या फ़ारसी यह एक ऐसी लच्चर और अपूर्ण भाषाएं हैं जो पूरे लच्चर और अपूर्ण भाषाएं हैं जो पूरे अर्थ को अदा नहीं कर सकीं। इसलिए अनुवाद करने वालों को यह ठोकर लगी और उन की ठोकर अन्य बहुत से सरल स्वभाव लोगों की ठोकर का कारण हुई। यदि वह अरबी में जो एक बड़ा ज्ञान का भण्डार अपने अन्दर रखती है, इस शब्द का अनुवाद करते और डिस्चार्ज का नाम **बरी** रखते और अक्विट का नाम मुबर्रा रखते तो इस धोखा देने वाली ग़लती से सुरक्षित रहते। और हम अब भी क़ानून बनाने वालों को स्मरण कराते हैं कि यह विभाजन अत्यन्त आपत्तिजनक है, यद्यपि प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है कि जो परिभाषा चाहे स्थापित करे। परन्तु जब कि अरबी में दो शब्द **बरी** और **मुबर्रा** साफ़ मौजूद हैं डिस्चार्ज और अक्विट के मुक़ाबले पर नितान्त उचित हैं। तो फिर इन तकल्लुफ़ों में पड़ने की क्या आवश्यकता थी। अन्ततः इस का

★ अरबी भाषा और पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आयतों की दृष्टि से समस्त मनुष्य जो दुनिया में हैं क्या पुरुष और क्या स्त्री बरी कहलाने के पात्र हैं जब तक उन पर कोई अपराध सिद्ध न हो। तो क़ुर्आन के अनुसार बरी के मायने ऐसे विशाल हैं कि जब तक किसी पर किसी अपराध का सबूत न हो वह बरी कहलाएगा। क्योंकि मनुष्य के लिए बरी होना स्वाभाविक हालत है और गुनाह एक दोष है जो पीछे से संलग्न होता है। इसलिए इसके लिए सबूत की आवश्यकता है। इसी से।

परिणाम यह हुआ कि कुछ सरल स्वभाव लोग क़ानून और क़ानून के निर्माताओं के आशय से बहुत दूर जा पड़े। अन्यथा हाकिमों के सकड़ों फैसलों को खोल कर देखो कि वे अपने जजमेण्ट में किसी को डिस्चार्ज करने से पूर्व यही लिखते हैं कि चूंकि अपराध करने का सबूत नहीं या यह कि आरोप सिद्ध नहीं था यह कि साक्ष्य पर्याप्त नहीं था यह कि नालिश के कारण सन्तोषजनक नहीं इसलिए आरोपी डिस्चार्ज किया जाता है अर्थात् रिहा किया जाता है। अब देखो कि इस रिहाई का आधार सबूत का अभाव ठहराते हैं। इसलिए डिस्चार्ज के शब्द का अनुवाद ऐसे शब्द के साथ होना चाहिए जिस से वह शर्ती रिहाई समझी जाती है। और वह बरी का शब्द है। इसलिए यह बात एक निश्चित, निर्णीत, अटल और अवश्यमेव है कि डिस्चार्ज का अनुवाद बरी है और अक्विट का अनुवाद मुबर्रा। और यही आशय कानून बनाने वालों का था। जिसका अनुवादक स्पष्ट तौर पर वर्णन नहीं कर सके। यह अन्तर स्मरण रखने योग्य है कि बरी वह है जिस पर अपराध सिद्ध नहीं और उसके अपराधी ठहराने के लिए कोई कारण पैदा तो हुए परन्तु सफ़ाई के कारणों ने उन को तोड़ दिया और उन पर विजयी हो गए। तो अब क्या इन्साफ़ है कि ऐसे व्यक्ति के लिए जिसका प्रारंभ से ही दामन पवित्र दिखाई देता है और उसके दोषी करने के लिए कोई कारण पैदा ही नहीं हुआ केवल रिहा किया हुआ नाम प्रस्तावित किया जाए और उसकी पाक दामनी के प्रकाश की ओर जो विरोधपूर्ण प्रयासों के बावजूद बुझ न सका कुछ भी ध्यान न हो और उस की कुछ भी अभिव्यक्ति न की जाए। अपितु इन्साफ़ की रूह निस्सन्देह यह चाहती है कि प्रत्येक को उसका अधिकार दिया जाए। तो जिस व्यक्ति की ऐसी नेक चलनी है कि उस पर आक्रमण करने का ही मार्ग बन्द है उसको सामान्य अर्थों की दृष्टि से केवल रिहा किया हुआ कहना बहुत अन्याय है। क्या उसको किसी ने उपकार के तौर पर रिहा किया? वह तो अपने व्यक्तिगत निर्दोष होने के कारण अनुचित आक्रमणों से सुरक्षित रहा, यहां तक कि आक्रमण की अग्नि उस को स्पर्श भी न कर सकी। और वह तो एक प्रकार से दूसरे प्रकार के बरी होने वाले से अपनी उच्च श्रेणी के नेक आचरण

के कारण श्रेष्ठतर और उच्चतर रहा। क्योंकि इस प्रकार के बरी पर जो अंग्रेज़ी में अक्विट कहलाता है यह समय आ गया कि वह अपराधी ठहराया गया। और उस पर अभिप्राय पत्र लगाया गया और शायद उसको हथकड़ी भी पड़ी। परन्तु यह मनुष्य जो डिस्चार्ज किया गया उसकी नेक चलनी की चमक ने उसको उन समस्त अपमानों से सुरक्षित रखा। इसलिए क़ानून के बनाने वालों पर यह आरोप लगाना कि उन्होंने इस प्रकार की बरियत को केवल रिहाई समझा तथा कुछ भी सम्मान न दिया एक लज्जाजनक बदगुमानी है। हां हम यह अवश्य कहेंगे कि वह भाषा के अपूर्ण होने के कारण या किसी अन्य कारण से अपनी भाषा के शब्द को जो डिस्चार्ज है वास्तविक और सही अनुवाद की शैली में जिसमें अधिकार रखने वाले को अपना अधिकार पहुंचता था अदा नहीं कर सकते और यह एक ग़लती है जो विचार की कमी से प्रकटन में आई और दृढ़ संभवाना है कि अंग्रेज़ी में केपवल उनको ऐसा शब्द मिला जो केवल रिहाई के मायने देता था। अतः यह अंग्रेज़ी भाषा का दोष है जो उनके आगे ऐसा शब्द प्रस्तुत न कर सकी जो उनको अभीष्ट और आशय को पूर्णरूप से अदा कर सकता। परन्तु हमें उनकी न्यायपूर्ण तबियत से आशा है कि उन्हें जब कभी इस ग़लती पर सूचना होगी तो इसका सुधार अवश्य कर देंगे।

हमारे इस सम्पूर्ण सबूत से जो हमने यहां प्रस्तुत किया है, प्रत्येक मुंसिफ़ और ईमानदार ज्ञात कर लेगा कि जो शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी ने केवल झूठी शेखी की अभिव्यक्ति के लिए मेरे बारे में प्रकाशित किया है कि जैसे मैं इस मुक़द्दमे में कि जो मुन्शी मुहम्मद बख़्श डिप्टी इन्सपेक्टर बटाला ने उठाया था बरी नहीं हुआ। यह कितना ग़लत और वास्तविकता के विरुद्ध है सिवाए इसके कि कल्पना के तौर पर स्वीकार भी कर लें कि डिस्चार्ज के मायने बरी नहीं हैं और जो कुछ अंग्रेज़ी डिक्शनरियों में इस शब्द के मायने बरी लिखे हैं उन्होंने झूठ बोला है। फिर भी मुहम्मद हुसैन का यह बड़ा दुर्भाग्य है कि जिस मतलब के लिए उसने यह समस्त ताना-बाना कानून के आशय को छोड़कर अपितु ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम पवित्र क़ुर्आन को छोड़कर बनाया था वह मतलब भी

उसको प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि इस मन्सूबाबाज़ी से उसका असल मतलब यह था ताकि किसी प्रकार लोगों के दिलों में यह जमा दे कि यह भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। क्योंकि डिस्चार्ज किए गए हैं न कि बरी। इस मतलब से वह हर प्रकार से असफ़ल और नाकाम ही रहा। क्योंकि वह भविष्यवाणी जो पुसत्क 'हक़ीक़तुल महदी' के पृष्ठ-12 में लिखी गई है उसमें बरीयत का शब्द नहीं है अपितु सलाम का शब्द है जिस के मायने ये हैं कि शत्रुओं के उस आक्रमण से और उनके उस बुरे मतलब से जो इस आक्रमण का कारण हुआ सुरक्षित रखा जाएगा। जैसा कि पृष्ठ-12 की वह इबारत यह है –

"يأتيك نصرتی۔ انّی الرّحمٰن ۔یاارض ابلعی ماءك۔ غیض الماء وقُضی الامر۔ سلامٌ قولًا من ربٍّ رّحیمٍ"

अर्थात् इस मुक़द्दमे में मेरी सहायता तुझे पहुंचेगी और मैं जो रहमान हूं रहमत (दया) करूंगा। हे ज़मीन अपना पानी निगल जा। पानी ख़ुश्क किया गया अर्थात् शिकायतों का कुछ प्रभाव शेष न रहा और मुक़द्दमा का फैसला हो गया। और वह फ़ैसला यह है कि سلامٌ قولًا مِنْ رَّبٍّ رّحیم अर्थात् सलामती होगी और कोई हानि नहीं पहुंचेगी। यह ख़ुदा का कथन है जो मेहरबान प्रतिपालक है। अर्थात् यह भविष्यवाणी कदापि ग़लत नहीं होगी क्योंकि ख़ुदा की ओर से है। अब देखो कि इस जगह भविष्यवाणी में سلامٌ का शब्द है जिसके मायने यह हैं कि जो मुक़द्दमा उठाने से हानि पहुंचाने का इरादा किया गया है और उस पर नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया गया है। इस इरादे में विरोधी असफ़ल रहेंगे और अन्ततः तुम बच कर चले आओगे। इस जगह बरियत का शब्द ही नहीं। चूंकि अल्लाह तआला जानता था कि यह ज़ालिम शेख जो सीमा से बढ़ गया है इस भविष्यवाणी को छुपाने के लिए भी बरियत के शब्द व्यर्थ झगड़ा करेगा। तो उसने इस भविष्यवाणी में बरियत का शब्द न कहा अपितु इसके स्थान पर سلامٌ का शब्द रख दिया। अब ध्यानपूर्वपक देखो कि यद्यपि इस विरोध में पवित्र क़ुर्आन मुहम्मद हुसैन को सर्वथा काज़िब (झूठा) और ख़यानत

करने वाला ठहराता है।★ और इस मुक़द्दमे में जिस आधार पर कि मैं छोड़ा गया हूं मेरा नाम बरी रखता है। परन्तु ऐसी ख़ुली-खुली विजय के बावजूद यदि कष्ट कल्पना के तौर पर यह मान भी लें कि शेख मुहम्मद हुसैन इस मुक़द्दमे में मुझे बरी न ठहराने में सच्चा है। हालांकि अल्लाह तआला जानता है कि स्पष्ट तौर पर झूठा है, परन्तु फिर भी वह अपने असल उद्देश्य से वंचित है। क्योंकि भविष्यवाणी में जिसको प्रत्येक व्यक्ति ''हक़ीक़तुल महदी'' के पृष्ठ-12 और पंक्ति-11 में पढ़ सकता है बरी का शब्द मौजूद नहीं है अपितु سلامۃ का शब्द है जो सम्मान और प्राण के सलामत रहने को बताता है।

और फिर इस भविष्यवाणी के साथ दो भविष्यवाणियां और हैं। अर्थात् इसी पृष्ठ-12 की पंक्ति में 12 और 13 में जिस की इबारत यह है –

انا تجالدنا فانقطع العدوّ واسبابة يعضّ الظالم علىٰ يد يه و يُوثق

अर्थात् हम विरोधी से तलवार के साथ लड़े, यहां तक कि विरोधी टूट गया अर्थात् हम विरोधी से तलवार के साथ लड़े, यहां तक कि विरोधी टूट गया अर्थात् उसके हाथ कुछ शेष न रहा और उसके सब सामान भी टूट गए और ज़ालिम अर्थात् मुहम्मद हुसैन अपने हाथ काटेगा और अपनी शरारतों से रोका जाएगा। अब देखो यह कितनी महान भविष्यवाणी है जिसमें ख़बर दी गई कि मुक़द्दमा

★ मैं मुहम्मद हुसैन को कुछ इल्ज़ाम नहीं देता और न मुझे कुछ आवश्यकता है कि उसको झूठा और बेईमान कहूं, किन्तु ख़ुदा तआला का कलाम पवित्र क़ुर्आन जिस पर वह ईमान लाने का दावा करता है उसको क़ाज़िब और ख़ाइन ठहराता है। काज़िब इसलिए के ख़ुदा तआला इस प्रकार के मुकद्दमें में जैसा कि यह मुकद्दमा है जिस आधार पर कि फैसला पाया व्यक्ति रिहा किया हुआ का नाम बरी रखता है और मुहम्मद हुसैन इस नाम का इन्कार करता है। फिर मुहम्मद हुसैन चाहे तो स्वयं इक़रार कर सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति जो क़ुर्आन के वर्णन के विरुद्ध कुछ वर्णन करे वह झूठा है। और ख़ाइन इसलिए है कि मुहम्मद हुसैन ने मौलवी और अहले इल्म कहला कर एक ख़ुले-खुले सच को छुपाया है और इस से बढ़कर अन्य कोई ख़यानत बेईमानी नहीं कि जिस सच बात को स्वयं क़ुर्आन प्रकट कर चुका है उसको छुपाया जाए। इसी से।

करने वाले अपने प्रयासों में असफल रहेंगे और उनके मुक़द्दमे के समस्त कारण जो बनाए गए थे टूट जाएंगे, तथा इस में ख़बर दी गई है कि मुहम्मद हुसैन गालियां देने और दिलवाने से बन्द किया जाएगा। और भविष्य में उसके गन्दे और अपवित्र लेखों का अन्त हो जाएगा। स्मरण रहे कि यह व्यक्ति गाली देने में हद से बढ़ गया था। जिस व्यक्ति को उसके गन्दे लेखों का ज्ञान होगा जो मेरे बारे और मेरे अहले बैत आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में इस असभ्य तीव्र स्वभाव शेख ने सर्वथा अन्याय और सच को पसन्द न करने की आदत से इशाअतुस्सुन्नः में प्रकाशित किए हैं या जाफ़र जटल्ली के अखबार में प्रकाशित कराए हैं।★ जो इस समय तक मेरे पास मौजूद हैं और मिस्ल मुकद्दमें में सम्मिलित हो चुके हैं उसका दिल बोल उठेगा कि गाली देने में इस व्यक्ति की नौबत कहां तक पहुंची थी और फिर कैसी इस भविष्यवाणी के अनुसार इस लज्जाजनक बेशर्मी और मुंहफट होने से बन्द किया गया है। किस के ज्ञान में था कि यह गालियां बकने और अपशब्दों का सिलसिला इस प्रकार से बन्द किया जाएगा। मैं विश्वास रखता हूं कि प्रत्येक शालीन व्यक्ति जिस की प्रकृति में दोष न हो और जिस के स्वभाव में कुछ खोट न हो और जिसके माता और पिता दोनों ओर से कुलीन होने में कुछ विघ्न न हो वह कभी इस बात पर राज़ी नहीं होगा कि आदरणीय शिष्ट लोगों के बारे में तथा सादात की शान में और उन नेक स्त्रियों के बारे में जो नुबुव्वत के ख़ानदान में से तथा अहले बैत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में से हैं ऐसी गन्दी गालियां और अपवित्रता से भरे हुए इफ़्तिरा मुंह पर लाए। और दुनिया में किसी क़ौम में कोई ऐसा शिष्ट नहीं है कि यदि वे समस्त गन्दे काग़ज़ जिन का नाम उस ने इशाअतुस्सुन्नः रखा है उन अखबारों के पर्चे सहित जो समय-समय पर इस व्यक्ति के सहपंथी दोस्त जाफ़र ज़टल्ली ने निकाले जिनमें ये गन्दी बातें हैं उसके सामने रखी जाएं तो

★यद्यपि नोटिस के अब तक अपना मुंह बन्द कर लिया है परन्तु गालियां देने की कार्रवाई उसका दोस्त जाफ़र जटल्ली नोटिस के बाद बराबर कर रहा है। देखो अख़बार ख़ादिमुल हिन्द लाहौर 15 सितम्बर 1899 ई. और ऐसा ही अख़बार जाफ़र ज़टल्ली लाहौर। इसी से

वह यह राय व्यक्त कर सके कि कोई सुशील मनुष्य, नेक, प्रकृति, नेक असल (कुलीन), संयमी और शिष्ट ऐसे लेखों को वैध भी रख सकता है इस से नज़र हटाते हुए कि उसके हाथ से ये बातें प्रकाशित हों इस व्यक्ति और इसके दोस्त जाफ़र ज़टल्ली की मौजूद हैं जिस समय कोई मांगे मैं प्रस्तुत कर सकता हूं, यही मनुष्य है जो एकेश्वरवादी समुदाय का एडवोकेट कहलाता है तो जब इस समुदाय के एडवोकेट की ये हालतें हैं तो उन लोगों की हालतें जिन पर इसका प्रभाव है स्यवं अनुमान कर लें। मैं इस मनुष्य की कठोर गालियों से अत्यन्त अत्याचार पीड़ित और हानि पहुंचाया हुआ हूं। मैं चाहता हूं कि किसी अवसर पर अदालत पुनः उन काग़ज़ों पर विचार करे जो मिस्ल में सम्मिलित हो चुके हैं जो इस मनुष्य की पद्धति और आचरण का नमूना हैं।

मैं इस से अधिक नहीं कहूंगा और अब विरधियों में से किस दिल पर मुझे आशा हो सकती है कि वह इन समस्त गन्दे, अश्लील और गालियों के शब्दों पर सूचना पाकर सच बात कहे। मेरी समस्त शिकायत ख़ुदा तआला के पास है और मुझे उस पर ईमान है कि

مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ

(अज़्ज़िलज़ाल-8,9)

अब यहां इस लेख से केवल यह अभीष्ट है कि यह भविष्यवाणी किस उच्च श्रेणी की है कि इस से पूर्व कि कुछ भी ज्ञान हो कि मजिस्ट्रेट का अन्तिम आदेश क्या होगा, ख़ुदा तआला ने अपने पवित्र कलाम के द्वारा उस आदेश से ऐसे समय में सूचना दे दी कि मैं विश्वास रखता हूं कि उस समय स्वयं मजिस्ट्रेट को भी मालूम न होगा कि मैं यह आदेश दूंगा। और फिर इस बात से मुझे गिरफ़्तार कराने के लिए सामान एवं कारण इकट्ठे किए थे वे बेकार जाएंगे और ख़ुदा उन से मुझे बचा लेगा। और फिर इस इल्हाम की चौदहवीं पंक्ति में समय से पूर्व यह भी वर्णन किया गया है कि उन लोगों के मुंह काले होंगे जिन की मनोकामना यह थी कि यह मनुष्य पकड़ा जाए और उसे अदालत से दण्ड

हो और ख़ुदा उन्हें विजय प्रदान करेगा। अतः इल्हाम के ये शब्द है –

شاهت الوجوه من اٰية الله و انّه فتح عظيم

अर्थात् मुंह काले होंगे। यह ख़ुदा का निशान है और महान विजय है।

अब न्याय करके देखो कि इस से बढ़कर और क्या भविष्यवाणी होगी कि अधिकृत हाकिम मुकद्दमें का आशय जो समय से पूर्व स्वयं हाकिम को भी मालूम नहीं होता वह इसमें अन्तिम आदेश से पहले बताया गया है। हां यदि यह कहो कि संभव है कि ये समस्त इल्हाम आदेश के बाद लिखे गए हों तो इसके सबूत के लिए यह पर्याप्त है कि मेरी यह पुस्तक ' 'हक़ीक़तुल महदी' ' अन्तिम आदेश से पहले प्रकाशित हो चुकी थी और स्वयं एक प्रति सरकार में पहुंच चुकी थी। अतः सरकारी रजिस्टर से इस बात को पूर्ण सबूत मिल सकता है। दूसरे एक यह भी सबूत है कि अन्तिम आदेश से पहले ठीक अदालत के कमरे में मैंने यह पुस्तक अपने वकीलों मिस्टर ब्रोन साहिब और मौलवी फ़ज़्लदीन साहिब चीफ़ कोर्ट के प्लीडर्स को दी थी और उन्होंने पढ़कर कहा था कि यह भविष्यवाणी सफ़ाई से पूरी हो गयी। इसलिए मिस्टर ब्रोन साहिब और मौलवी फ़ज़्लदीन साहिब हलफ़ उठाकर यह गवाही दे सकते हैं कि उनको समय से पूर्व इस भविष्यवाणी पर सूचना मिली।

क्रम संख्या 60.	निशान का विवरण

जब मुझ पर टैक्स लगाया गया और उस पर आपत्ति की गई तो हम छोटी मस्जिद में जो हमारी खिड़की के साथ है बैठकर कुल आय-व्यय का हिसाब कर रहे थे और मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. तथा ऐसे ही जमाअत के कई अन्य लोग वहीं मौजूद थे और ख्वाजा के कई अन्य लोग वहां मौजूद थे और ख़्वाजा जमालुद्दीन साहिब बी.ए. मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी आय और व्यय से संबंधित पेपर्स देख रहे थे तो उस समय मुझ पर एक कश्फ़ी अवस्था छाकर दिखाया गया कि बटाला का हिन्दू तहसीलदार जिसके पास यह मुक़द्दमा टैक्स का था बदल गया। और उसके बदले मैंने एक अन्य व्यक्ति कुर्सी पर बैठा देखा जो मुसलमान था। और इस कश्फ़ के साथ कुछ मामले ऐसे प्रकट हुए जो

शुभ अंजाम और विजय का शुभ सन्देश देते थे। तब मैंने उसी समय यह कश्फ़ उपस्थित लोगों को सुना दिया, और उनको पूर्णरूप से तसल्ली दी कि इस मुक़द्दमे का अंजाम अच्छा होगा और कार्य किसी ऐसे मुसलमान आदमी के सुपुर्द होगा कि वह इन्साफ़ को ध्यान में रखकर पूरी छान-बीन कर देगा। फिर इसके बाद ऐसा हुआ कि हिन्दू तहसीलदार अचानक बदल गया और उसके स्थान पर मियां ताजुद्दीन साहिब जो अब तहसीलदार बटाला हैं आए और उन्होंने नेक नीयत, धीरे-धीरे, इन्साफ़, पूर्ण प्रयास और चांज-पड़ताल से असल सच्चाई को मालूम कर लिया और जो कुछ मालूम हुआ रिपोर्ट द्वारा डिप्टी कमिश्नर साहिब बहादुर ज़िला गुरदासपुर मिस्टर डेक्सन साहिब की सेवा में सूचना दे दी। और शुभ संयोग यह हुआ कि कथित साहिब भी दक्ष, न्यायप्रिय और नेक नीयत थे। उन्होंने लिख दिया कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का एक ख्याति प्राप्त फ़िर्क़ा (समुदाय) है जिनके बारे में हम बदगुमानी नहीं कर सकते। अर्थात् जो कुछ मनाही किया गया है वह वास्तविक और सही है इसलिए टैक्स माफ़ और मिस्ल मुक़द्दमा दाखिल दफ़्तर हो। यह एक ऐसी भविष्यवाणी थी कि मुक़द्दमे के अंजाम से पूर्व एक बड़ी जमाअत को सुना दी गई थी। क्योंकि हमारे यहां भविष्यवाणियों के लिए यह एक नियम निर्धारित हो चुका है कि जो कुछ ख़ुदा तआला की ओर से भविष्यवाणी के तौर पर प्रकट होता है तुरन्त समस्त जमाअत को उस से सूचना दी जाती है और जो लोग उपस्थित नहीं होते उनको पत्रों द्वारा सूचित किया जाता है। तो ऐसा ही इस भविष्यवाणी में भी किया गया। वे समस्त निष्कपट प्रतिष्ठित लोग ज़िन्दा मौजूद हैं जिन को यह भविष्यवाणी सुनाई गई थी और वे हलफ़ उठाकर इस की पुष्टि कर सकते हैं।

क्रम संख्या 61.	**निशान का विवरण**

अक्टूबर 1897 ई. के प्रारंभ में मुझे दिखाया गया कि मैं एक गवाही के लिए एक अंग्रेज़ हाकिम के पास उपस्थित किया गया हूं। और उस हाकिम ने मुझ से पूछा कि आप के पिता का क्या नाम है। परन्तु जैसा कि गवाही के लिए दस्तूर है मुझे क़सम नहीं दी और फिर 21 जमादिउल अव्वल में तद्नुसार 8 अक्टूबर 1897 ई. मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि इस मुक़द्दमे का सिपाही आ गया है।

अत: ऐसा ही प्रकटन में आया जैसा कि यह स्वप्न देखा था। और सिपाही एक सम्मन लेकर आया और मालूम हुआ कि एडीटर अख़बार नाज़िमुल हिन्द निवासी लाहौर ने मुझे गवाह लिखवा दिया है जिस पर मौलवी रहीम बख़्श प्रायवेट सेक्रेटरी नवाब बहावलपुर ने लाइबल का मुक़द्दमा मुल्तान में किया था और मैंने गवाही के लिए मुल्तान में ही जाना था। तो जब मैं इस सम्मन के निर्देशानुसार मुल्तान में पहुंचा और अदालत में गवाही के लिए उपस्थित हुआ तो जैसा कि स्वप्न में देखा था सब कुछ वैसा ही प्रकटन में आया और हाकिम को कुछ ऐसी भूल हो गई कि वह मुझे क़सम देना भूल गया। और जब मेरा इक़रार हो चुका तो उस समय उसे क़सम देना याद आया। और कानून का कर्त्तव्य पूरा करने के लिए फिर मुझ से क़सम ली। इस निशान के कुछ एक दो गवाह नहीं अपितु मेरी जमाअत के लोगों का एक बहुत बड़ा गिरोह गवाह है। जिनमें से ख्वाजा कमालुद्दीन साहिब बी.ए.प्लीडर, मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए.प्लीडर, अख़्वैम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब और अख़्वैम मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी हैं। अब देखते जाओ और विचार करते जाओ कि क्या ये मनुष्य के काम हैं, और क्या किसी सच्चे प्रतिभाशाली के हृदय में गुज़र सकता है कि जो लोग सैकड़ों कोस से हिदायत पाने के लिए मेरे पास आते हैं तथा सच्चाई की तलाश में सैकड़ों रुपया मेरी खुशी के लिए खर्च करते हैं और मेरे लिए अपने प्रियजनों, स्वजनों तथा दोस्तों को त्याग बैठे हैं। वे इस गन्दी एवं अपवित्र कार्रवाई को मुझ से देख कर मैं झूठे गवाह उनको ठहराऊं और झूठ बोलने के लिए उनको विवश करूं। फिर भी यह समस्त गंद देख कर सच्चे हृदय से मेरे साथ रह सकें और अपने मालों को मेरे मार्ग में न्योछावर करने को तैयार हों। और अपने प्राणों को मेरे लिए संकट में डालें और अपने सम्मान को मिट्टी में मिला दें। फिर आप लोग भी तो इन्सान हैं। क्या आप लोगों की अन्तर्आत्मा यह फ़त्वा देती है कि आप लोग अपने किसी गुरू या पीर की ऐसी शिक्षा के बाद जो सर्वथा व्यभिचार, इफ़्तिरा और झूठ गढ़ने पर आधारित हो फिर उसे मुक़द्दस और ईमानदार ठहराएं और वह आप से झूठी गवाहियां दिलाना चाहे तो उसको अकारण वली और चमत्कारी बनाने के लिए झूठ

भी बोल दें और फिर उसकी ऐसी पाप पूर्ण कार्रवाइयों के साथ उसको अच्छा आदमी समझते रहें। फिर जब कि तुम अपने नफ़्सों को ऐसा नहीं पाते तो फिर क्यों दूसरों पर इतनी बदगुमानी करते हो कि वे ऐसे मूर्ख और पागल हो गए हैं कि वे मेरे लिए पवित्र क़ुर्आन उठाकर और झूठ की स्थिति में अपने बेटों की मौत की दुआ करके मेरे लिए गवाही दें। और ऐसे आदमी न एक एक न दो अपितु कई हज़ार हों कभी दुनिया में हुआ या हो सकता है कि सैकड़ों प्रतिष्ठित लोगों ने जो अहले इल्म, (विद्वान), अहले अक़्ल (बुद्धिमान) और अहले मर्तबा (पदाधिकारी) हों अपने किसी ऐसे गुरू या पीर के लिए जो बात-बात में मिथ्यावादी, मुफ़्तरी और झूठा हो इस प्रकार से अपने ईमान को बर्बाद किया हो। अतः भाइयो! कुछ तो सोचो, कुछ तो ख़ुदा के लिए भय करो। ख़ुदा की रहमत से क्यों निराश होते हो। निस्सन्देह समझो कि यदि यह इन्सान का कारोबार होता तो ऐसे मुफ़्तरी इन्सान को प्रत्येक पहलू से कभी सहायता न पहुंच सकती। क्या तुम्हें शक्ति है कि जिन सबूतों और प्रकाशित लेखों और हलफ़ी गवाहियों के साथ ये निशान हो गए हैं। इसका उदाहरण इसी संख्या और विवरण के साथ प्रस्तुत कर सको देखो मैं तुम्हें पहले से कहता हूं कि तुम कदापि प्रस्तुत नहीं कर सकोगे यद्यपि तुम यत्न करते-करते मर भी जाओ। क्योंकि तुम्हारे साथ ख़ुदा नहीं है और तुम्हारी दुआएं आकाश पर नहीं जातीं। इसलिए सोचो कि चमत्कार क्या होता है। यही तो है कि तुम करोड़ों हो कर एक व्यक्ति के मुकाबले पर असमर्थ हो। क़ुर्आन को खोलकर देखो कि वह जो सच्चा और सामर्थ्यवान ख़ुदा है वह मोमिनों को वादा देता है कि उनकी हमेशा विजय होगी। परन्तु तुम्हारा काल्पनिक ख़ुदा कैसा ख़ुदा है जो प्रत्येक मैदान में तुम्हें लज्जित करता है। उसने तुम्हें खाक में मिला दिया और तुम्हारी कुछ भी सहायता न की। देखो तुम इस बात को कब चाहते थे कि पृथ्वी पर ऐसे बड़े निशान मेरे हाथ से प्रकट हों जिन का तुम मुकाबला न कर सको। और तुम इस बात को कब चाहते थे कि आकाश पर मेरे सत्यापन के लिए रमज़ान में चन्द्र और सूर्य-ग्रहण हो। अर्थात् रोज़ों के महीने में चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण हो। परन्तु तुम्हारे दुर्भाग्य से ये दोनों बातें प्रकटन में आ गईं। यदि ख़ुदा तम्हारे साथ होता तो तुम्हें ये निरन्तर

लज्जाएं क्यों पहुंचतीं। मेरे निशानों के लिए इस से बढ़कर और क्या सबूत होगा कि कम से कम हज़ार ईमानदार, नेक चलन, मेरी जमाअत में से क़सम उठाकर और पवित्र क़ुर्आन हाथ में लेकर यह गवाही दे सकते हैं कि उन्होंने मेरे निशान अपनी आंखों से देखे हैं। और यदि मेरी जमाअत से नज़र हटाकर अन्य लोगों की गवाहियां भी चाही जाएं जो मेरी जमाअत में से नहीं हैं। अपितु कुछ हिन्दू, कुछ ईसाई, कुछ सिक्ख और कुछ विपरीत आस्था मुसलमान हैं तो मैं इस बात का सबूत दे सकता हूं अपितु ख़ुदा तआला की क़सम खाकर यह बात कहता हूं कि यदि वे समस्त गवाह अरफ़ात के मैदान में खड़े किए जाएं जो मेरे निशानों के देखने के गवाह हैं अर्थात् उस मैदान में खड़े किए जाएं जहां बैतुल्लाह के हज करने के दिनों में दुनिया के समस्त हाजी खड़े होते हैं तो वह सम्पूर्ण मैदान उन गवाहों से भर जाए और बहुत से शेष रहें जो उसमें समा न सकें। तो अब बताओ कि क्या इस से बढ़कर दुनिया में कोई सबूत हो सकता है। और वर्णन करो कि अब इस बात में कौन सी कमी शेष रह गई कि मैं ख़ुदा की ओर से हूं। बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम मौजूद है कि ख़ुदा आकाश से भी निशान दिखाएगा और पृथ्वी से भी। इसलिए अब ख़ुदा के लिए खड़े हो जाओ और गवाही दो कि इस इल्हाम के अनुसार जो मेरे इन समस्त निशानों से एक लम्बे समय पूर्व अपितु लगभग बीस वर्ष हो चुका है ख़ुदा ने कैसे-कैसे रोब पूर्ण निशान दिखाए। आकाश पर सूर्य एवं चन्द्रमा को रमज़ान के महीने में अंधकारमय किया ताकि हदीस की भविष्यवाणी के अनुसार मनुष्यों पर हुज्जत पूर्ण करे। और पृथ्वी पर कुछ दुआएं लोगों की कुशलता के लिए या गालियां देने वाले लोगों के अज़ाब के लिए स्वीकार कीं ताकि मुस्तजाबुद्दावत होना (जिसकी दुआएं स्वीकार होती हैं) वली होने की निशानी है पूर्ण सबूत को पहुंच जाए।

कुछ अन्यायी जिन को ख़ुदा तआला का भय नहीं ख़ुदा के बन्दों को धोखा देने के लिए बे सिर-पैर का इफ़्तिरा प्रकाशित करते हैं जिन से उनका मतलब यह होता है कि मेरे मसीह मौऊद होने के दावे की प्रतिष्ठा को कम करें। उदाहरणतया वे कहते हैं कि किसी युग में अमुक व्यक्ति ने भी महदी या मसीह मौऊद होने

का दावा किया था। और इस से मतलब यह होता है ताकि मेरे दावे को लोगों की दृष्टि में हल्का और तुच्छ ठहराएं। किन्तु इन लोगों में यदि कुछ सत्यप्रियता और इन्साफ़ का तत्त्व होता तो ये लोग सोचते कि सबूत रहित दावा क्या महत्त्व रख सकता है। यदि कल्पना के तौर पर मान भी लिया जाए कि मुझ से पहले किसी युग में किसी ने मसीह मौऊद या महदी होने का दावा किया था या अब करता है तो ऐसे बिना सबूत दावे तो ख़ुदा तआला के उन नबियों के युग में मानते हैं। परन्तु उन दावों की सच्चाई की न आकाश ने गवाही दी और न पृथ्वी ने। और वे लोग बहुत शीघ्र अपमानित तथा तबाह हो गए और उनकी जमाअतें तितर-बितर हो गईं और वे पवित्र नबियों की तरह निशान न दिखा सके। इसलिए यदि सच्चाई के सम्मान और श्रेष्ठता में ऐसी बेहूदा मीन-मेखों से कुछ विघ्न आ सकता है तो फिर नऊज़ुबिल्लाह किसी नबी की नुबुव्वत और किसी रसूल की रिसालत स्थापित नहीं रह सकती। क्योंकि ऐसा तो कोई भी नबी नहीं जिसके मुक़ाबले पर झूठों ने दावे न किए हों। अत: ऐसे ऐतराज़ मात्र जहालत और पक्षपात से पैदा होते हैं। हां जो व्यक्ति हृदय की निष्कपटता से सत्य का अभिलाषी है उस का यह अधिकार है कि अपनी हार्दिक सन्तुष्टि के लिए आकाशीय निशान मांगे। तो इस पुस्तक के देखने से प्रत्येक सत्याभिलाषी को ज्ञात होगा इस बन्दे को ख़ुदा तआला से उसी की कृपा और समर्थन से इतने निशान प्रकट हुए हैं कि इस तेरह सौ वर्ष की अवधि में उम्मत के लोगों में से किसी अन्य में उसका उदाहरण तलाश करना एक असंभव मांग है। उदाहरण के तौर पर उन्हीं निशानों के जो इस पुस्तक "तिर्याक़ुल क़ुलूब" में बतौर नमूना वर्णन किए गए हैं मस्तिष्क में रख कर फिर प्रत्येक चिश्ती क़ादिरी, नक्शबन्दी, सुहरवर्दी इत्यादि में उनकी तलाश करो और समस्त वे लोग जो इस उम्मत में क़ुतुब, ग़ौस और अब्दाल के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। उनके सम्पूर्ण जीवन में इनका उदाहरण ढूंढो। फिर यदि उदाहरण मिल सके तो जो चाहो कहो, अन्यथा स्वाभिमानी और शक्तिमान ख़ुदा से डर कर धृष्टता और ग़ुस्ताख़ी से रुक जाओ। आश्चर्य नहीं कि इस जगह कुछ जाहिल यह कहें कि वे चमत्कार जो हमारे शेख़ और पीरों के प्रसिद्ध हैं इस मनुष्य ने कहां दिखाए हैं। जैसा कि हज़रत

अब्दुल क़ादिर रज़ियल्लाहु ने बारह वर्ष की डूबी नौका दरिया में से निकाली। अर्थात् समस्त लोगों को जो दरिया में मर चुके थे नए सिरे से ज़िन्दा किया। और एक बार फ़रिश्ता मलकुल मौत आदरणीय हज़रत के किसी मुरीद की जान निकाल कर ले गया था। तो आपने उस मुरीद की मां के विलाप करने पर दया करके तुरन्त आकाश की ओर उड़ान भरी और अभी फ़रिश्ता पहले आकाश तक नहीं पहुंचा था कि आपने उसको पकड़ लिया और उस से अपने मुरीद की रूह वापस देने के लिए निवेदन किया। तब फ़रिश्ते ने कुछ टाल-मटोल की तो आप प्रताप और क्रोध में आ गए। और एक लाठी मलकुल मौत की पिण्डली पर मारी, और हड्डी को तोड़ दिया और उसके थैले से जिसमें इन्सानों की जानें भरी थीं जो उस दिन की कार्रवाई थी छीन ली और समस्त रूहों को छोड़ दिया। तब सारी रूहें उस दिन अपने-अपने शरीरों में वापस आकर ज़िन्दा हो गईं और उस मुरीद की रूह भी शरीर में वापस आ कर वह मुरीद भी ज़िन्दा हो गया। तब फ़रिश्ता रोता हुआ ख़ुदा तआला के पास गया और क़िस्सा वर्णन किया और अपनी टूटी हुई पिण्डली दिखाई तो ख़ुदा तआला ने फ़रमाया कि तूने अच्छा नहीं किया कि मेरे प्यारे अब्दुल क़ादिर को कष्ट दिया और यह काम तो उसका एक छोटा सा काम है। यदि वह चाहता तो समस्त उन रूहों को जो दुनिया के प्रारंभ से मरती चली आई थीं एक पल में ज़िन्दा कर देता। और एक रिवायत यह है कि जब फ़रिश्ते ने ख़ुदा के आगे रो-रो कर यह फ़रियाद की तो ख़ुदा तआला ने उत्तर दिया कि चुप रह! अब्दुल क़ादिर अपने कार्यों में सर्वशक्तिमान है मैं कुछ नहीं कर सकता। ऐसा ही हज़रत अली रज़ियल्लाहु का एक चमत्कार है कि जब जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मेराज हुआ तो आप प्रकाश के सैकड़ों पर्दे पार करके ख़ुदा तआला तक पहुंचे।

केवल एक पर्दा शेष रहा तो आप ने कहा कि हे ख़ुदा ! मैं तो इतना परिश्रम करके केवल दर्शन के लिए आया था, परन्तु यहां मध्य में एक पर्दा रोक है। मुझ पर दया कर और यह पर्दा मध्य से उठा दे ताकि मुझे दर्शन प्राप्त हो। तब अल्लाह तआला ने दया करके मध्य से उठा लिया ताकि मुझे दर्शन प्राप्त हो। तो क्या देखते

हैं कि जिसको ख़ुदा समझे बैठे थे वह हज़रत अली ही हैं। फिर यह सुनाकर कहा जाता है कि अली मुर्तज़ा की यह शान है शेख़ैन को उन से तुलना ही क्या। ऐसी ही और बहुत सी करामत हैं जो इस युग के जाहिल लोग प्रस्तुत करते हैं परन्तु इन समस्त बातों का उत्तर यह है कि ये करामात नहीं हैं और न चीज़ों के सिद्ध करने के नियमों की दृष्टि से इन का कुछ सबूत है। अपितु जाहिल मुरीदों तथा श्रद्धालुओं ने इफ़्तिरा के तौर पर ये समस्त बातें बनाई है जिन में से कुछ तो व्यापक कुफ्र हैं। और यदि बिना किसी प्रमाण के प्रत्येक भ्रम को यों ही मान लेना है तो फिर हिन्दुओं ने क्या गुनाह किया है कि उनके देवताओं के चमत्कार नहीं माने जाते। यह कितना बड़ा चमत्कार है कि महादेव की लटों से गंगा निकली और कृष्ण ने क्या-क्या चमत्कार दिखाए। इसलिए यह बात स्मरण रखने योग्य है कि हमेशा से दुनिया में यह स्वाभाविक विशिष्टता है कि बनी आदम के अधिकतर लोग झूठ इफ़्तिरा और अतिश्योक्ति की ओर झुक जाता करते हैं। इन्हीं फ़ित्नों के कारण तो सच्चे गवाहों और चश्मदीद गवाहियों की आवश्यकता पड़ी। अत: स्पष्ट है कि यदि किसी सुन्नी या शिया के हाथ में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग के बाद ऐसे रोशन सबूतों और चश्मदीद गवाहियों के साथ जैसा कि हम ने अपने निशान प्रस्तुत किए किसी अपने बुज़ुर्ग के चमत्कार होते तो इतनी मुद्दत तक वे कदापि खामोश न बैठ सकते। एक युग हुआ कि हम ने अनेकों बार इन लोगों को क़समें दीं कि यदि आप लोगों के पास इन निशानों का उदाहरण मौजूद है तो अवश्य प्रस्तुत कीजिए। परन्तु कोई भी प्रस्तुत न कर सका और स्पष्ट है कि सबूत के बिना जो कुछ वर्णन किया जाए वह स्वीकार करने योग्य नहीं। अपितु ऐसे किस्से जो उपन्यासों की तरह तबियत प्रसन्न करने के लिए बनाए गए हैं चमत्कार की संज्ञा नहीं दी जा सकती। खेद कि यह एक ऐसा युग है कि ये लोग दावा और सबूत में अन्तर नहीं कर सकते। और यदि किसी दावे पर सबूत पूछा जाए तो एक और दावा प्रस्तुत कर देते हैं और नहीं जानते कि दावा किसको कहते हैं और सबूत किस को। भला यदि इस से पूर्व भी किसी ने इमाम महदी होने का दावा किया है तो आओ हमें बताओ हम सुनने को तैयार हैं कि आकाश ने उनकी

सच्चाई पर कौन सी गवाही दी। क्या कभी उनके युग में भी रमज़ान में सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण हुआ। और सबूत दो कि उन्होंने कौन-कौन से निशान दिखलाए। और वे गवाह प्रस्तुत करो जिन्होंने उस युग में उन निशानों को देखा और इस बात का सत्यापन किया कि वास्तव में उनसे आकाशीय निशान प्रकटन में आए जिन को उन्होंने अपनी आंखों से देखा। परन्तु सबूत के बिना केवल दावों को प्रस्तुत करना केवल अफ़सोस करने योग्य विचार है। हम कब इस से इन्कार करते हैं कि दुष्ट लोग हमेशा सच्चों के मुक़ाबले पर झूठे दावे करते रहे हैं। अनुसंधान योग्य तो यह बात है कि ऐसे दावेदारों ने आकाशीय निशान भी दिखाए या नहीं। मैंने ऐसे निशान दिखाए हैं कि जिन्होंने इस युग के उलेमा और फ़ुक़रा का मुंह बन्द कर दिया है। और कोई विरोधी उनका मुक़ाबला नहीं कर सका। अपितु एक शर्मिन्दगी के साथ खामोश रह गए। अब थोड़ा बताओ कि क्या इस से पहले यह शर्मिन्दगी किसी के मुक़ाबले पर किसी युग में इस्लाम के उलेमा के सामने आई। अपितु वही लोग लज्जित और अपमानित होते रहे जिन्होंने ऐसे झूठे दावे किए। तो अब स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न पैदा होता है कि इस युग में इस्लाम के उलेमा को ये लज्जाएं क्यों पेश आईं? यहां तक कि न वे मुक़ाबले पर पवित्र क़ुर्आन के मआरिफ़ वर्णन कर सके और न अरबी भाषा में कुछ सरस-सुबोध लिख सके, और न आकाशीय निशानों के मुकाबले पर कोई निशान दिखा सके। क्या ख़ुदा मोमिन की सहायता करता है या काफ़िरों की? भला बताओ तो सही कि पवित्र क़ुर्आन में किस गिरोह की सहायता और मदद का वादा है और इल्हामी खुशख़बरी का इनाम किस को दिया जाता है। कोई उठे और हमें इस बात का सबूत दे कि मेरी तरह कभी कोई मुफ़्तरी और कज़्ज़ाब मुझ से पूर्व किसी युग में मैदान में खड़ा हुआ और उसने समय के उलेमा के मुक़ाबले पर वे निशान तथा वे आकाशीय समर्थन प्रस्तुत किए जिन से सम्बोधित लोग दंग और निरुत्तर रह गए। और उनमें से कोई भी मुकाबले पर न आ सका। भला यदि सच्चे हो तो ऐसे किसी महदी का नाम तो बताओ जिसने मेरी तरह समस्त उलेमा, फ़ुक़रा और गद्दी निशानों को पराजित और असमर्थ किया हो और उसके मुकाबले पर उन से कुछ भी न बन पड़ा हो। मैं तो इस बात पर

ईमान रखता हूं कि इस्लाम के उलेमा और फ़ुक़रा यदि अपनी बहस में सच्चाई पर हों तथा मुत्तक़ी और परहेज़गार हों तो कभी किसी से धार्मिक बहस और ख़ुदा के समर्थन के मामलों में पराजित नहीं हो सकते अपितु सहायता हमेशा उन्हीं के लिए आकाश से उतरती है। ख़ुदा तआला का यह निश्चित वादा है कि मोमिन जो वास्तव में मोमिन और सच्चाई पर हैं हमेशा विजयी और सफल रहेंगे तथा किसी काफ़िर दज्जाल से नीचा नहीं देखेंगे। तो फिर क्या कारण है कि अब मोमिनों ने नऊज़ुबिल्लाह एक काफ़िर दज्जाल से नीचे देखा। अर्थात् वह व्यक्ति जो उनकी आंख में काफ़िर दज्जाल और कज़्ज़ाब है उसके मुकाबले पर ठहर न सके। दुआएं उसी की स्वीकार हुईं। ग़ैब का ज्ञान उसी को दिया गया। आकाशीय निशान उसी से प्रकट हुए। क़ुर्आन का बोध उसी को दिया गया, ख़ुदा के समर्थन उसी के साथ रहे और मोमिन उसके मुकाबले पर कुछ भी न दिखा सके। फिर यह क्या बात है यह गंगा उल्टी क्यों बहने लगी। क्या ख़ुदा में वादा ख़िलाफ़ी पैदा हो गई कि मोमिन हमेशा विजयी और सफ़ल रहेंगे या वे वादे केवल पहले युगों तक सीमित थे और अब उनका पूरा करना समाप्त हो गया है। यदि कोई मौलवी, या फ़क़ीर या गद्दीनशीन यह ऐतराज़ प्रस्तुत करे कि हमें किसने बुलाया जो हम नहीं आए और किसने पूछा कि हमने उत्तर नहीं दिया। तो इसका उत्तर यही है कि हमारी पुस्तकें तथा हमारे विज्ञापन देखें कि हमने इस बारे में सैकड़ों विज्ञापन प्रकाशित किए और ये निशानों का संग्रह भी हमने यहां इस उद्देश्य से लिखा है कि प्रत्येक व्यक्ति इन निशानों को पढ़ कर अपने दिल में सोचे कि अब तक किस ने इन निशानों के मुकाबले पर अपने निशान दिखाए और ख़ुदा ने इतना समर्थन किस का किया? क्या हमारा या उनका? और जब इन निशानों के उदाहरण पर समर्थ न हो सके तो क्या यह न्याय की शर्त न थी कि ऐसे व्यक्ति को स्वीकार करते जिस के मुकाबले से असमर्थ हो गए।

آسمان و مہ و خورشید شہادت دادند تا تو تکذیب زِ نادانی و غفلت نکنی
چوں ترا نصرتِ حق نیست چو اخیار نصیب شرطِ انصاف نباشد کہ زِ حق دم بزنی

(अनुवाद - आकाश चाँद और सूर्य ने गवाही दी ताकि लापरवाही और अज्ञानता से उसे न झुठलाए। जब तुझे ख़ुदा की सहायता प्राप्त नहीं जो ख़ुदा के नेक लोगों को मिलती है तो फिर न्याय की माँग यह नहीं कि तू ख़ुदा के सामने दम मारे।)

क्रम संख्या 62.	**निशान का विवरण**

29 जुलाई 1897 ई. को मैंने स्वप्न में देखा कि पश्चिम की ओर से एक बिजली मेरे मकान की ओर चली आती है और न उसके साथ कोई आवाज़ है और न उसने कुछ हानि की है अपितु वह एक चमकदार सितारे की तरह धीरे-धीरे मेरे मकान की ओर चली आती है और मैं उसे दूर से देख रहा हूं। फिर जबकि वह निकट पहुंची तो मेरे दिल में तो यही है कि यह बिजली है परन्तु मेरी आंखों ने केवल एक छोटा सा सितारा देखा जिसको मेरा दिल बिजली समझता है। तत्पश्चात् मेरा दिल इस कश्फ़ से इल्हाम की ओर स्थानान्तरित किया गया। और मुझे इल्हाम हुआ कि مَا هٰذَا اِلَّا تَهْدِيْدُ الْحُكَّام अर्थात् यह जो देखा इसका सिवाए इसके कुछ प्रभाव नहीं कि अधिकारियों की ओर से कुछ डराने की कार्रवाई होगी इस से अधिक कुछ नहीं होगा। फिर इसके बाद इल्हाम हुआ قَدِ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ मोमिनों पर एक इब्तिला आया अर्थात् इस मुक़द्दमे के कारण तुम्हारी जमाअत एक परीक्षा में पड़ेगी, फिर इसके बाद यह इल्हाम हुआ कि

لِيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الْمُجَاهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَ لِيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِيْن

यह मेरी जमाअत की ओर सम्बोधन है कि ख़ुदा ने ऐसा किया ताकि ख़ुदा तुम्हें जतला दे कि तुम में से वह कौन है जो उसके मामूर के मार्ग में सच्चे दिल से प्रयास करता है और वह कौन है जो अपने बैअत के दावे में झूठा है। फिर ऐसा ही हुआ। एक गिरोह तो इस मुक़द्दमे और दूसरे मुक़द्दमे में जो मिस्टर डोई साहिब की अदालत में फ़ैसला हुआ। सच्चे दिल और पूर्ण हमदर्दी से तड़पता फिरा। और उन्होंने अपनी आर्थिक एवं प्राणों के प्रयासों में अन्तर नहीं रखा। और कष्ट उठा कर अपनी सच्चाई दिखाई। तथा दूसरा गिरोह वह भी था कि एक कण भर हमदर्दी में भागीदार न हो सका तो उनके लिए वह खिड़की बन्द हो जो इन

सच्चों के लिए खोली गई। फिर यह इल्हाम हुआ कि –

صادق آں باشد کہ ایام بلا ے گذارد بامحبت باوفا

अर्थात् ख़ुदा की नज़र में सच्चा वह व्यक्ति होता है कि जो बला के दिनों को प्रेम और वफ़ा के साथ गुज़ारता है। तत्पश्चात् मेरे दिल में एक और उचित कलिमा डाला गया परन्तु न इस प्रकार से कि जो खुले-खुले इल्हाम का रूप होता अपितु (गुप्त) इल्हाम के तौर पर दिल इस बात से भर गया और वह यह थी-

گر قضا را عاشقے گردو اسیر بوسد آں زنجیر را کز آشنا

अर्थात् यदि संयोगवश कोई आशिक क़ैद में पड़ जाए तो उस ज़ंजीर को चूमता है जिसका कारण वह क़ैद हुआ। फिर इसके बाद यह इल्हाम हुआ –

انّ الّذی فرض علیك القرآن لرآدّك الٰی معاد۔ انّی مع الا فواج اٰتیك بغتۃ۔ یأ تیك نُصرتی۔ انّی انا الرّحمٰن ذوالمجد والعلٰی

अर्थात् वह सामर्थ्यवान ख़ुदा जिस ने तुझ पर क़ुर्आन फ़र्ज़ किया फिर तुझे वापस लाएगा। अर्थात् अंजाम अच्छा और कुशल होगा। मैं अपनी सेनाओं के साथ (जो फ़रिश्ते हैं) अकस्मात तौर पर तेरे पास आऊंगा। मैं दया करने वाला हूं। मैं ही हूँ जो बुज़ुर्गी और बुलन्दी से विशिष्ट है अर्थात् मेरा ही बोल बाला रहेगा। तत्पश्चात् यह इल्हाम हुआ कि विरोधियों में फूट और एक व्यक्ति का अपमान, अनादर और जनता की ओर से भर्त्सना (और फिर अन्तिम आदेश बरी होना) अर्थात् निर्दोष ठहराना। फिर इसके बाद इल्हाम हुआ وَفِیْهِ شَیْئٌ अर्थात् बरीअत तो होगी पर उसमें कुछ चीज़ होगी (यह उस नोटिस की ओर संकेत था जो बरी करने के बाद लिखा गया था कि मुबाहसे का ढंग नर्म चाहिए) फिर इसके साथ यह भी इल्हाम हुआ कि بلجت آیاتی कि मेरे निशान रोशन होंगे और उनके सबूत अधिक से अधिक प्रकट हो जाएंगे (अतः ऐसा ही हुआ कि उस मुक़द्दमे में जो सितम्बर 1899 में मिस्टर जो. आर. ड्रीमण्ड साहिब की अदालत में फैसला हुआ। अब्दुल हमीद अपराधी ने दोबारा इक़रार किया कि मेरा पहला बयान झूठ था और फिर इल्हाम हुआ لواء فتح अर्थात् विजय का

झण्डा। फिर इसके बाद इल्हाम हुआ –

انّما امر نا اذا اَرَدْنا شیئاً ان نقول له کن فیکون

अर्थात् हमारे मामलों के लिए हमारा यही कानून है कि जब हम किसी चीज़ का होना चाहते हैं तो हम कहते हैं कि हो जा तो वह हो जाती है। अब स्पष्ट हो कि इस भविष्यवाणी से समय से पूर्व पांच सौ के लगभग लोगों को सूचना दी गई थी। अतः मौलवी अब्दुल करीम साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. अख़्वैम ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब, अख़्वैम मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब और अख़्वैम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब और अख़्वैम मौलवी हकीम फ़ज़्ल दीन साहिब इत्यादि इतने गवाह हैं कि यदि उनके केवल नाम लिखे जाएं तब भी इसके लिए बहुत से पृष्ठों की आवश्यकता है। और इन समस्त लोगों को समय से पूर्व बताया गया था कि ऐसा इब्तिला आने वाला है और शीघ्र ही ऐसा मुक़द्दमा दायर होगा। परन्तु अन्त में बरी होना और ख़ुदा की कृपा होगी और किसी अपमान का सामना नहीं होगा। तो यह मुक़द्दमा इस प्रकार से पैदा हुआ कि एक व्यक्ति अब्दुल हमीद नामक को कुछ ईसाइयों ने जो डॉक्टर हेनरी मार्टिन से सम्बन्ध रखने वाले थे सिखलाया कि वह अदालत में यह कहे कि उसको अवश्य ग़ुलाम अहमद ने अर्थात् इस लेखक ने क़ादियान से इस उद्देश्य से भेजा है ताकि डॉक्टर क्लार्क का क़त्ल कर दे। और न केवल सिखलाया अपितु धमकी भी दी कि यदि वह ऐसा बयान नहीं देगा तो वह क़ैद किया जाएगा तथा एक यह भी धमकी दी कि उसका फोटो लेकर उसको कहा गया कि यदि वह भाग भी जाएगा तो इस फ़ोटो के द्वारा फिर पकड़ा जाएगा। अतः उस ने ज़िला अमृतसर के मजिस्ट्रेट के सामने यह इज़्हार दे दिया और मेरी गिरफ़्तारी के लिए वारंट जारी हुआ। मैं यहां पाठकों की पूर्ण दिलचस्पी के लिए डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट अमृतसर के आदेश की नक़ल नीचे लिखता हूं और वह यह है –

"अब्दुल हमीद और डाक्टर क्लार्क के बयान प्रकट करते हैं कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी ने अब्दुल हमीद को डॉक्टर क्लार्क निवासी अमृतसर के क़त्ल करने की प्रेरणा दी।

इस बात के विश्वास करने के लिए कारण है कि कथित मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद शान्ति भंग करने वाला होगा या कोई गिरफ़्त योग्य कार्य करेगा जो इस ज़िले में शान्ति भंग करने का कारण होगा। इस बात की इच्छा की गई है कि इस से शान्ति की सुरक्षा के लिए ज़मानत मांगी जाए। घटनाएं इस प्रकार की हैं कि जिस से उसकी गिरफ़्तारी के लिए वारंट का प्रकाशित करना धारा 14, दस्तूर फ़ौजदारी के अन्तर्गत आवश्यक मालूम होता है इसलिए मैं उसकी गिरफ़्तारी के लिए वारंट जारी करता हूं और उसके निर्देश देता हूं कि वह आकर बयान करे कि क्यों धारा 107 के अन्तर्गत दस्तूर फ़ौजदारी शान्ति की सुरक्षा के लिए एक वर्ष के लिए बीस हज़ार रुपए का मुचल्का और बीस हज़ार रुपए की दो अलग-अलग ज़मानतें उस से न ली जाएं।"

हस्ताक्षर ए.ई.मार्टिन

ज़िला मजिस्ट्रेट अमृतसर 1, अगस्त 1897 ई.

इस आदेश की तिथि से जो 1, अगस्त 1897 ई. से प्रकट है कि वारंट 1 अगस्त 1897 ई. को जारी हुआ था। और इस वारंट से तात्पर्य यह था कि ताकि मुझे गिरफ़्तार करके उपस्थित किया जाए। और दण्ड से पूर्व गिरफ़्तारी का अपमान पहुंचाया जाए। परन्तु यह ग़ैबी (अदृश्य) अधिकार एक सत्याभिलाषी के ईमान को कितना बढ़ाता है कि बावजूद इसके कि अमृतसर से ऐसा वारंट जारी हुआ। परन्तु ख़ुदा तआला ने जैसा कि उपरोक्त वर्णित इल्हामों में उस का वादा था, इस वारंट से भी अद्भुत तौर पर सुरक्षित रखा। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यदि आदेशानुसार यह वारंट अदालत से जारी हो जाता तो इस से पूर्व कि 7 अगस्त 1897 का आदेश मिस्ल के बदलने के लिए जारी होता, वारंट का पालन (तामील) हो जाता। क्योंकि अमृतसर और क़ादियान में केवल पेंतीस कोस की दूरी है। और वह आदेश जो 7 अगस्त 1897 ई. को ज़िला मजिस्ट्रेट अमृतसर ने इस मुक़द्दमे के बारे में दिया था वह यह है –

"मैंने वारंट का जारी करना रोक दिया है क्योंकि यह मुक़द्दमा मेरे अधिकार में नहीं है।"

देखो इण्डियन ला रिपोर्ट न. 11, कलकत्ता 713, 12 कलकत्ता 133 और 6 इलाहाबाद और 26 लिखित 7 अगस्त 1897 ई.। इस आधेश की तामील यह है कि जब ज़िला मजिस्ट्रेट साहिब अमृतसर 1, अगस्त 1897 को मेरी गिरफ़्तारी के लिए वारंट जारी कर चुके तो उनको 7 अगस्त 1897 को अर्थात् आदेश से छ: दिन बाद उपरोक्त निर्देश पर विचार करने से पता लगा कि इस आदेश में ग़लती हुई और उन्होंने समझा कि मेरे अधिकार मैं नहीं था कि मैं एक ऐसे दोषी की गिरफ़्तारी के लिए जो दूसरे ज़िले में निवास रखता है वारंट जारी करता। तब उन्होंने अपने वारंट के आदेश को जो अदालत से निकल चुका था इस प्रकार से रोकना चाहा कि 7 अगस्त 1897 को साहिब मजिस्ट्रेट ज़िला गुरदासपुर के नाम तार दी कि हम से वारंट के जारी करने में ग़लती हुई है, वारंट को रोक दिया जाए। किन्तु यदि वह वारंट वास्तव में 1, अगस्त 1897 को जारी हो जाता तो इतने समय के पश्चात् अर्थात् 7 अगस्त 1897 ई. को उसे रोकना एक व्यर्थ बात थी। क्योंकि इन दोनों ज़िलों में थोड़ी ही दूरी थी मुद्दत से उस वारंट का पालन हो चुका होता और गिरफ़्तारी का अपमान तथा संकट हमारे सामने आ जाता। परन्तु ख़ुदा तआला की क़ुदरत ऐसी हुई जिसका भेद हमें अब तक मालूम नहीं कि वह वारंट छ: दिन गुज़र जाने के बावजूद अदालत मजिस्ट्रेट ज़िला गुरदासपुर में न पहुंच सका। यहां तक कि तार पहुंचने पर ज़िला मजिस्ट्रेट आश्चर्य में पड़े कि यह कैसा वारंट है जिसके रोकने के लिए तार आई। अत: कुछ भी पता नहीं लगता कि वह वारंट जारी हो कर कहां गया। कुछ आश्चर्य नहीं कि किसी अहलेमद की लापरवाही से बस्ते में पड़ा रहा हो। और फिर अन्त में यह क़ानून भी निकल आया कि अन्य ज़िले में किसी दोषी के नाम वारंट जारी नहीं हो सकता। अब जब एक नज़र से मनुष्य उन इल्हामों को देख जिन को अभी हम लिख आए हैं जिनमें दया और सहायता का वादा है और दूसरी ओर इस बात को सोचे कि अमृतसर की अदालत का पहला वार ही ख़ाली गया तो निस्सन्देह उस को इस बात पर विश्वास आ जाएगा कि यह

ख़ुदा तआला का दख़ल था ताकि वह अपने इल्हामी वादे के अनुसार अपने बन्दे को प्रत्येक अपमान से सुरक्षित रखे। क्योंकि गिरफ़्तार होकर अदालत में प्रस्तुत किया जाना और हथकड़ी के साथ अधिकारियों के समक्ष उपस्थित होना यह भी एक अपमान है जिस से शत्रुओं को प्रसन्नता पहुंचती है। फिर इसके पश्चात् ऐसा हुआ कि जैसा कि अभी हम वर्णन कर आए हैं। इस मुक़द्दमे के समस्त पेपर ज़िला मजिस्ट्रेट गुरदासपुर के पास भेजे गए और जब ये पेपर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ज़िला गुरदासपुर के पास पहुंच गए तो दूसरा निशान ख़ुदा तआला की ओर से यह प्रकटन में आया कि ज़िला मजिस्ट्रेट गुरदासपुर अर्थात् कप्तान एम. डब्ल्यू. डगलस साहिब के दिल में ख़ुदा तआला ने यह डाल दिया कि इस मुक़द्दमे में वारंट जारी करना उचित नहीं, अपितु सम्मन पर्याप्त होगा। इसलिए उन्होंने 9, अगस्त 1897 ई. को मेरे नाम एक सम्मन जारी किया जिसकी नक़ल नीचे लिखता हूं और वह यह है –

"न. 4 सम्मन बनाम प्रतिवादी धार 152 के अन्तर्गत मज्मुआ

दस्तूर फ़ौजदारी बअदालत कप्तान डगलस साहिब मजिस्ट्रेट ज़िला

बनाम मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद पुत्र मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा क़ौम मुग़ल निवासी क़ादियान मुग़लां परगना बटाला, ज़िला गुरदासपुर

जो कि उपस्थित होना तुम्हारा उत्तर देने के उद्देश्य से आरोप धारा 107 दस्तूर फ़ौजदारी अवश्य है। इसलिए तुम को इस तहरीर के द्वारा आदेश होता है कि तिथि 10 अगस्त 1897 ई. स्वयं या अधिकृत अथवा जैसा हो अवसर पर बटाला ज़िला मजिस्ट्रेट के पास उपस्थित हो। और इस बारे में ताकीद जानो।

हस्ताक्षर मजिस्ट्रेट ज़िला गुरदासपुर

9 अगस्त 1897 ई."

अब सोच कर देखो कि जो आदेश ज़िला मजिस्ट्रेट अमृतसर ने जारी किया था वह कैसा अग्नि बरसाने वाला वारंट था और यह सम्मन कैसे नर्म शब्दों में है। परन्तु ऐसा संयोग हुआ कि मेरे विरोधियों को इस बात की बिल्कुल ख़बर न हुई कि वारंट का आदेश परिवर्तित होकर सम्मन जारी हुआ है। अपितु वे लोग तो पहले इस धोखे में रहे कि मुक़द्दमा अमृतसर की अदालत में ही है।

और बड़ी रुचि से दो समय रेल पर जाकर देखते थे कि किस समय यह व्यक्ति गिरफ़्तार होकर अमृतसर आता है। और फिर उनको यह पता तो मिल गया कि मिस्ल मुक़द्दमा ज़िला गुरदासपुर में स्थानांतरित हो गई है परन्तु यह पता न मिला कि अब ज़िला गुरदासपुर से वारंट नहीं भेजा गया अपितु सम्मन भेजा गया है। इसलिए इस तमाशे को देखने के लिए आए कि यह व्यक्ति वारंट से गिरफ़्तार होकर आएगा और उसका अपमान हमारी अत्यधिक प्रसन्नता का कारण होगा और हम अपने आप को कहेंगे कि हे नफ़्स अब प्रसन्न हो कि तू ने अपने शत्रु को अपमानित होते देख लिया, परन्तु यह मनोकामना पूरी न हुई। परन्तु इसके विपरीत स्वयं उनको अपमान का कष्ट उठाना पड़ा। 10 अगस्त को इस दृश्य के लिए अहले हदीस के एडवोकेट मौलवी मुहम्मद हुसैन इस तमाशे को देखने के लिए कचहरी में आए थे ताकि इस दरगाह के बन्दे को हथकड़ी पड़ी हुई और कान्सटेबिलों के हाथ में गिरफ़्तार देखें और शत्रु के अपमान को देखकर खुशियां मनाएं। परन्तु उनको यह बात नसीब न हो सकी अपितु एक दुखित दृश्य देखना पड़ा और वह यह कि जब मैं ज़िला मजिस्ट्रेट साहिब की कचहरी में उपस्थित हुआ तो उन्होंने नर्मी और सम्मान पूर्वक व्यवहार किया और अपने करीब मेरे लिए कुर्सी बिछवा दी तथा नर्म शब्दों से मुझ को यह कहा कि यद्यपि डॉक्टर क्लार्क आप पर क़त्ल के प्रयत्न का इल्ज़ाम लगाता है परन्तु मैं नहीं लगाता। ख़ुदा तआला की क़ुदरत है कि यह डिप्टी कमिश्नर एक दक्ष, बुद्धिमान और न्यायवान प्रकृति का मजिस्ट्रेट था। उसके दिल में ख़ुदा ने बिठा दिया कि मुक़द्दमा निराधार और झूठा है और अकारण कष्ट दिया गया है। इसलिए प्रत्येक बार जो मैं उपस्थित हुआ वह सम्मानपूर्वक पेश आया और मुझे कुर्सी दी और जब मैं उसकी अदालत से बरी किया गया तो उस दिन मुझ को कचहरी के बीच में मुबारकबाद दी। मुअह्हदीन (अहले हदीस) के एडवोकेट साहिब जो बटाला के मौलवी हैं तथा ईसाइयों की ओर से गवाह थे जिन का नाम लेने की अब आवश्यकता नहीं। उन्होंने जब अदालत में मेरा इतना सम्मान देखा कि यह तो एक दोषी था और उसे सम्मानपूर्वक कुर्सी दी गई तो मौलवी साहिब इस कच्चे लालच

में पड़े कि मुझे साहिबे ज़िला से कुर्सी मांगनी चाहिए जबकि इस दोषी (आरोपी) को मिली है तो मुझे तो बहरहाल मिलेगी। तो जब वह गवाही के लिए बुलाए गए तो उन्होंने आते ही पहले यही प्रश्न किया कि मुझे कुर्सी मिलनी चाहिए परन्तु खेद कि डिप्टी कमिश्नर बहादुर साहिब ने उनको झिड़क दिया कि तुम्हें कुर्सी नहीं मिल सकती। यह तो रईस हैं और इनका पिता कुर्सी नशीन था इसलिए हमने कुर्सी दी। तो जो लोग मेरा अपमान देखने के लिए आए थे उन का यह अंजाम हुआ। और यह भी ख़ुदा तआला का एक निशान था कि जो कुछ मेरे लिए इन लोगों ने चाहा वह स्वयं उन के साथ घटित हुआ, अन्यथा मुझे अदालतों से कुछ संबंध न था। मेरी आदत नहीं थी कि किसी को मिलूं और न मेरा किसी से कुछ परिचय था। फिर इसके बाद ख़ुदा तआला की यह कृपा हुई कि मैं सम्मानपूर्वक बरी किया गया और अधिकृत हाकिम ने एक मुस्कराहट के साथ मुझे कहा कि आप को मुबारक हो आप बरी किए गए। तो यह ख़ुदा तआला का एक भारी निशान है कि बावजूद इस के कि क़ौमों ने मुझे अपमानित करने कि लिए सहमति कर ली थी। मुसलमानों की ओर से मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब अहले हदीस के एडवोकेट थे और हिन्दुओं की ओर से लाला राम भज दत्त साहिब वकील थे तथा ईसाइयों की ओर से डॉक्टर हेनरी मार्टिन क्लार्क साहिब थे और जंगे अहज़ाब की तरह सहमति से इन क़ौमों ने मुझ पर चढ़ाई की थी। परन्तु ख़ुदा तआला ने ज़िला मजिस्ट्रेट को ऐसा विवेक प्रदान किया कि वह मुकद्दमें की वास्तविक सच्चाई तक पहुंच गया। तत्पश्चात् ऐसा संयोग हुआ कि स्वयं अब्दुल हमीद ने अदालत में इक़रार कर लिया कि ईसाइयों ने मुझे सिखलाकर यह गवाही दिलाई थी अन्यथा यह बयान सर्वथा झूठ है कि मुझे क़त्ल के लिए प्रेरणा दी थी और मजिस्ट्रेट साहिब ज़िला ने इसी अन्तिम बयान को सही समझा और बड़े ज़ोर-शोर का एक चिट्ठा लिख कर मुझे बरी कर दिया। और ख़ुदा तआला की यह अद्‌भुत शान है कि ख़ुदा तआला मेरे बरी होने को पूर्ण करने के लिए उसी अब्दुल हमीद से फिर दोबारा मेरे पक्ष में गवाही दिलाई ताकि वह इल्हाम पूरा हो जो बराहीन अहमदिया में आज से बीस वर्ष पूर्व लिखा गया है और वह यह है-

فبرّأه الله ممّا قالوا و كان عند الله وجيها

अर्थात् ख़ुदा ने उस व्यक्ति को उस इल्ज़ाम से जो उस पर लगाया जाएगा बरी कर दिया है अर्थात् बरी कर दिया जाएगा और वह इज़हार जो अब्दुल हमीद ने हाल में 12 सितम्बर 1899 ई. को ज़िला मजिस्ट्रेट साहिब की अदालत में अर्थात् मिस्टर जे. आर. ड्रीमण्ड के समक्ष दिया है वह यह है –

आरोपी का बयान

"मैंने बयान, जिनका अभियोग पत्र में वर्णन है अवश्य लिखवाए थे। हुज़ूर दया करें। मेरा पहला बयान झूठा है (अर्थात् वह बयान जिसमें लिखाया था कि मैं मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की ओर से क़त्ल करने के लिए भेजा गया था) उन्होंने अर्थात् ईसाइयों ने मुझे तस्वीर दिखाई और कहा कि जेल ख़ाने में जाओगे मेरे कोई गवाह नहीं है केवल भगत प्रेमदास और एक क्रिश्चियन वहां मौजूद थे जब कि मुझ को सिखलाया गया। इस का कोई सबूत नहीं है। स्थान पठानकोट, सत्यापन अदालत

यह बयान हमारे समक्ष और सुनवाई में लिखा गया तथा दोषी को पढ़कर सुनाया गया उसने सही स्वीकार किया।"

अब देखो कि इस ख़ुदा के बन्दे की कैसी सफ़ाई से बरीअत सिद्ध हुई। स्पष्ट है कि इस मुकद्दमे में अब्दुल हमीद के लिए अत्यन्त हानिप्रद था कि अपने पहले बयान को झूठा ठहराता क्योंकि इस से यह बहुत बड़ा अपराध सिद्ध होता है कि उसने दूसरे पर अकारण क़त्ल की प्रेरणा का इल्ज़ाम लगाया और ऐसा झूठ उस दण्ड को चाहता है जो क़त्ल का प्रयास करने वाले का दण्ड होता है। यदि वह अपने दूसरे बयान को झूठा ठहराता जिसमें मेरी बरीअत व्यक्त की थी तो इसमें कानून की दृष्टि से दण्ड कम था। इसलिए उसके लिए लाभप्रद मार्ग यही था कि वह दूसरे बयान को झूठा कहता। परन्तु ख़ुदा ने उसके मुंह से सच निकलवा दिया। जिस प्रकार ज़ुलैख़ा के मुंह से हज़रत यूसुफ़ के मुकाबले पर

और एक मुफ़्तरी स्त्री के मुंह से हज़रत मूसा के मुकाबले पर सच निकल गया था।★ तो यही उच्च स्तर की बरीअत है जिसको यूसुफ़ और मूसा के किस्से से समरूपता है और इसी की ओर इस इल्हामी भविष्यवाणी का संकेत था कि بَرَّأَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا क्योंकि यह पवित्र क़ुर्आन की वह आयत है जिसमें हज़रत मूसा की बरीअत का हाल जतलाना अभीष्ट है। अत: मेरे क़िस्से को ख़ुदा तआला ने हज़रत यूसुफ़ और हज़रत मूसा के क़िस्से से समानता दी और स्वयं इल्ज़ाम लगाने वाले के मुंह से निकलवा दिया कि यह इल्ज़ाम झूठा है। अत: यह कितना महान निशान है और ख़ुदा के कितने अद्भुत हस्तक्षेप इसमें एकत्र हैं। فَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى ذٰلِكَ

क्रम संख्या 63.	निशान का विवरण

उन समस्त निशानों में से एक निशान यह है कि संभवत: पच्चीस वर्ष का समय गुज़र गया है कि मैं गुरदासपुर में था कि मुझे यह स्वप्न आया कि मैं एक जगह चारपाई पर बैठा हूं और उसी चारपाई पर मेरे बाईं ओर मौलवी अब्दुल्लाह साहिब (स्वर्गीय) ग़ज़नवी बैठे हैं जिन की सन्तान अब अमृतसर में रहती है। इतने में मेरे दिल में केवल ख़ुदा तआला की ओर से एक तहरीक पैदा हुई कि मौलवी साहिब को चारपाई से नीचे उतार दूं। अत: मैंने अपनी जगह को छोड़ कर मौलवी साहिब की जगह की ओर रुजू किया। अर्थात् चारपाई के जिस हिस्से पर वह बाईं ओर बैठे हुए थे उस हिस्से में मैंने बैठना चाहा। तब उन्होंने वह जगह छोड़ दी और वहां से खिसक कर पाइंती की ओर कुछ अंगुल की दूरी पर जा बैठे। तब फिर मेरे दिल में डाला गया कि इस जगह से भी मैं उन

★स्मरण रहे कि ज़ुलैख़ा वह स्त्री थी जो हज़रत यूसुफ़ पर व्यभिचार का इल्ज़ाम लगाने वाली थी इन दोनों औरतों के दो विपरीत बयान थे। उदाहरणतया ज़ुलैख़ा का पहला बयान यह था कि यूसुफ़ ने उस पर आपराधिक आक्रमण किया जो व्यभिचार के इरादे से था और दूसरा बयान बिल्कुल अब्दुल हमीद की तरह उसने बादशाह के सामने यह दिया कि मेरा पहला बयान झूठा है और वास्तव में यूसुफ़ इस इल्ज़ाम से पवित्र है और अवैध आक्रमण मेरी ओर से था। तो ख़ुदा ने दूसरे बयान पर मेरी तरह यूसुफ़ की बरीअत प्रकट की। इसी से।

को उठा दूं। फिर मैं उनकी ओर बढ़ा तो वह उस जगह को भी छोड़ कर फिर कुछ अंगुल भर पीछे हट गए। फिर मेरे दिल में डाला गया कि इस जगह से भी उनको और अधिक पाइंती की ओर किया जाए। तब फिर वह कुछ अंगुल पाइंती की ओर खिसक कर हो बैठे। फिर मैं ऐसा ही उनकी ओर खिसकता गया और वह पाइंती की ओर खिसकते गए। यहां तक कि उनको अन्त में चारपाई से उतरना पड़ा। और वह ज़मीन पर जो मात्र ख़ाक थी और उस पर चटाई इत्यादि कुछ भी न थी उतरकर बैठ गए। इतने में आकाश से तीन फ़रिश्ते आए। उनमें से एक का नाम ख़ैराती था। वे भी उनके साथ ज़मीन पर बैठ गए और मैं चारपाई पर बैठा रहा। तब मैंने उन फ़रिश्तों और मौलवी अब्दुल्लाह साहिब को कहा कि आओ मैं एक दुआ करता हूं तुम आमीन कहो। तब मैंने यह दुआ की कि رَبِّ اذْهَبْ عَنِّی الرِّجْسَ وَطَهِّرْنِی تَطْهِیْرًا इसके पश्चात् वे तीनों फ़रिश्ते आकाश की ओर उठ गए और मौलवी अब्दुल्लाह साहिब भी आकाश की ओर उठ गए और मेरी आंख खुल गई और आंख खुलते ही मैंने देखा कि एक उच्च शक्ति मुझ को ज़मीनी जीवन से बुलन्दतर खींच कर ले गई और वह एक ही रात थी जिसमें ख़ुदा ने मेरा सर्वांगीण सुधार कर दिया। और मुझ में वह परिवर्तन आया कि जो इन्सान के हाथ से या इन्सान के इरादे से नहीं हो सकता। और जैसा कि मैंने मौलवी अब्दुल्लाह साहिब के ख़ाक पर बैठने और आकाश पर जाने की ताबीर की थी उसी प्रकार घटित हो गया। क्योंकि वह इसके बाद शीघ्रतर मृत्यु पा गए और उनका शरीर ख़ाक में और उनकी रूह आकाश पर गई।

और उन्हीं दिनों में शायद उस रात से पूर्व या उस रात के पश्चात् मैंने कश्फ़ी (स्वप्न की) अवस्था में देखा कि एक व्यक्ति जो मुझे फ़रिश्ता मालूम होता है, परन्तु स्वप्न में महसूस हुआ कि उसका नाम शेर अली है। उसने मुझे एक जगह लिटा कर मेरी आंखें निकाली हैं और साफ़ की हैं और उनमें से मैल और गन्दगी फेंक दी और प्रत्येक रोग और कम देखने का तत्त्व निकाल दिया है और एक स्वच्छ प्रकाश जो आंखों में पहले से मौजूद था परन्तु कुछ मवाद के नीचे दबा हुआ था

उसको एक चमकते हुए सितारे के समान बना दिया है। और यह कार्य करके फिर वह व्यक्ति ग़ायब हो गया और मैं उस कश्फ़ी अवस्था से बाहर आ गया। मैंने इस स्वप्न की बहुत से लोगों को सूचना दी थी। अत: उनमें से साहिबज़ादा सिराजुलहक़ सिरसावी और मीर नासिर नवाब साहिब देहलवी हैं।

क्रम संख्या 64.	निशान का विवरण

समस्त निशानों में से एक यह है कि जब मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी मेरे इस स्वप्न के अनुसार मृत्यु पा गए जो मैंने उनकी मृत्यु के बारे में देखा था तो मैंने उन्हीं दिनों में कि जब थोड़े ही दिन उनकी मृत्यु पर गुज़रे थे उनको स्वप्न में देखा तो मैंने उन के पास अपना यह स्वप्न वर्णन किया कि मैंने देखा है कि मेरे हाथ में एक अत्यन्त चमकीली और रोशन तलवार है जिसका क़ब्ज़ा मेरे हाथ में और नोंक आकाश की ओर है और बहुत चमकदार है तथा उसमें से एक चमक निकलती है जैसा कि सूर्य की चमक। और मैं कभी उसको दायीं ओर चलाता हूं और कभी बाईं ओर। और प्रत्येक बार जो मैं वार करता हूं तो मुझे मालूम होता है कि दुनिया के किनारों तक वह तलवार अपनी लम्बाई के कारण काम करती है तथा मैं हर समय महसूस करता हूं कि सूर्य की बुलन्दी तक उस की नोंक पहुंचती है। और वह एक बिजली के समान है जो एक पल में हज़ारों कोस चली जाती है। और यद्यपि वह दाएं-बाएं मेरे हाथ से पड़ती है। परन्तु मैं देखता हूं कि हाथ तो मेरा है किन्तु शक्ति आकाश से है। और प्रत्येक बार जो मैं दायीं ओर या बायीं ओर उसको चलाता हूं तो हज़ारों लोग पृथ्वी के किनारों तक उस से टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। यह स्वप्न था जो मैंने स्वर्गीय अब्दुल्लाह साहिब के पास वर्णन किया तथा विषय यही था। और शायद उस समय अन्य शब्दों में वर्णन किया गया हो या यही शब्द हों। स्वर्गीय अब्दुल्लाह साहिब ने मेरे स्वप्न को सुनकर वर्णन किया कि इस की ताबीर (स्वप्नफल) यह है कि तलवार से अभिप्राय हुज्जत का पूर्ण करना और प्रचार को पूर्ण करना तथा अकाट्य तर्कों की तलवार है। और यह जो देखा कि वह तलवार दायीं और पृथ्वी के किनारों तक मार करती है तो इस से अभिप्राय बौद्धिक तर्क इत्यादि हैं जिन से प्रत्येक फ़िर्क़े पर हुज्जत पूर्ण होगी। फिर

इसके बाद उन्होंने फ़रमाया कि जब मैं दुनिया में था तो मैं प्रत्याशी था कि ऐसा इन्सान दुनिया में भेजा जाएगा। तत्पश्चात् आंख खुल गई।

وھٰذہٖ رؤیاء صادقۃ من ربّی ولعنۃ اللّٰہ علی الّذین یفترون علی اللّٰہ ویقولون اُلھمناواُنبئنا وارانا اللّٰہ وما اُلھموا وما اُنبئوا ومااراھم اللّٰہ من شیء الالعنۃ اللّٰہ علی الکاذبین

और इस स्वप्न में यह भविष्यवाणी थी कि बहुत से आकाशीय निशान मुझ से प्रकट होंगे। अतः ऐसा ही प्रकटन में आया और जैसा कि इसी पुस्तक में मैंने वर्णन किया है। इस कश्फ़ के बाद मुझ से इतने आकाशीय निशान प्रकटन में आए कि जब तक ख़ुदा किसी के साथ न हो और उसको प्रथम श्रेणी का फ़ज़्ल (कृपा) न हो ऐसे निशान प्रकट नहीं हो सकते। और इस स्वप्न के गवाह साहिबज़ादा सिराजुल हक़ तथा अन्य दोस्त हैं जो एक बड़ा समूह है।

क्रम संख्या 65.	**निशान का विवरण**

अल्लाह तआला के समस्त महान निशानों में से एक वह निशान है जो डिप्टी अब्दुल्लाह आथम के बारे में प्रकटन में आया। इस निशान की असल बुनियाद वह इल्हाम है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-241 और पंक्ति 11, 12, 13 में दर्ज है और वह यह है –

ولن ترضٰی عنک الیھود ولا النّصارٰی وخرَقُوا لہٗ بنین وبناتٍ بغیر علم قُل ھُو اللّٰہ احد۔ اللّٰہ الصّمد لم یلد ولم یُولد ولم یکن لہٗ کفوًا احد۔ ویمکرون ویمکر اللّٰہ واللّٰہ خیر الماکرین۔ الفتنۃ ھٰھنا فاصبرکما صبراولوالعزم۔ وقُل ربّ ادخلنی مُدخل صدق وامّا نرینّک بعض الّذی نعدھم اونتوفّینّک

देखो पृष्ठ 241, बराहीन अहमदिया।

अनुवाद – जो यहूदी प्रवृत्ति रखने वाले मुसलमान हैं और जो ईसाई पादरी हैं वे तुझ से कदापि राज़ी नहीं होंगे जब तक तू वैसा ही न हो जाए जैसे कि वे हैं। और पादरियों ने इसके बिना कि उन को कोई ज्ञान दिया जाता यों ही

अपने निराधार विचारों के अनुकरण से ख़ुदा तआला के लिए बेटे और बेटियां बना रखी है। उन को कह दे वह सच्चा ख़ुदा एक ख़ुदा है जो किसी का बाप नहीं और न किसी का बेटा। और न कोई उसका सजातीय है। और वह समय आता है कि ये लोग अर्थात् ईसाई पादरी तुझे झुठलाने के लिए कुछ षड्यन्त्र करेंगे। अर्थात् कुछ ऐसी कार्रवाई करेंगे जिस से उनका यह उद्‌देश्य होगा कि तुझे किसी प्रकार से अपमान पहुंचे और तू पदाधिकारियों तथा पब्लिक की दृष्टि में आपत्तिजनक ठहरे। और या तेरा सम्मान एवं जीवन ख़तरे में पड़े। तब उनके षड्यन्त्रों के मुक़ाबले पर ख़ुदा भी एक षड्यन्त्र करेगा। अर्थात् यह कि उनकी बुरी सोच की स्कीमों को खंडित कर देगा। अर्थात् उन स्कीमों में जो तेरे सम्मान और प्राणों को ख़तरे में डालने के लिए जाएंगे। उनमें ये लोग विफल रहेंगे। और ख़ुदा उनके समस्त विरोधपूर्ण यत्नों को तबाह और निष्फल कर देगा। ये वे दिन होंगे जब कि लोग तेरे लिए एक बड़ा फ़ित्नः खड़ा करेंगे। अर्थात् कुछ झूठी घटनाएं बना कर तुझे बदनाम करना चाहेंगे और तुझ पर झूठे आरोप लगा कर तुझे अदालतों में खीचेंगे ताकि तुझे क़ैद किया जाए या मृत्यु-दण्ड मिले। और वे यहूदी स्वभाव मुसलमान उनके सहायक और सहयोगी हो जाएंगे। अतः जब तू ऐसा समय देखे कि तुझे कष्ट पहुंचाने तथा अपमानित करने के लिए उन लोगों ने सहमति कर ली है और न केवल तुझे झुठलाने अपितु तेरे प्राणों और सम्मान पर भी आक्रमण करना चाहते हैं और झूठे आरोप लगा कर तुझे पदाधिकारियों तक खींचते है और कुछ मुद्‌दई तथा कुछ उनके गवाह हैं। और कुछ मुफ़्तरी तथा कुछ उनके सत्यापनकर्ता हैं। तो तुझ पर अनिवार्य है कि तू उस समय सब्र करे। जैसा कि ख़ुदा तआला के दृढ़ प्रतिज्ञ नबियों ने सब्र किया तथा तुझ पर अनिवार्य है कि उस समय तू यह दुआ करे कि हे मेरे माबूद तू मेरी सच्चाई प्रकट कर। अर्थात् इस फ़ित्ने के समय ये लोग चाहेंगे कि तेरी सच्चाई को लोगों और अधिकारियों की दृष्टि में संदिग्ध कर दे। इसलिए तू ख़ुदा से दुआ कर कि उन दिनों में इन लोगों के षड्यन्त्रों से सामान्य लोग मुक्ति पाएं। और प्रजा एवं अधिकारियों की दृष्टि में तेरी सच्चाई प्रकट हो जाए। और फिर

फ़रमाया – कि हमारी ओर से भी यह वादा है कि संभवतः हम भावी युग में तुझे दिखा देंगे कि इन लोगों के लिए जो वादा किया गया था (अर्थात् रूहानी एवं बैद्धिक तर्क़ों द्वारा सलीब को तोड़ना) इस वादे में से बहुत कुछ हमने तेरे जीवन में ही पूरा कर दिया है। अर्थात् जो कुछ तेरे प्रकटन का मूल उद्देश्य ठहराया गया है। अर्थात् रूहानी एवं बौद्धिक तर्कों द्वारा सलीब को तोड़ना। इस उद्देश्य में से बहुत कुछ तेरे जीवन में ही प्रकट हो जाएगा।

यह बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणी है जो सफ़ीर हिन्द प्रेस के छापा में पृष्ठ 241 में मौजूद है, और प्रत्येक मामूली समझ का आदमी भी इस भविष्यवाणी पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालकर समझ सकता है कि इस भविष्यवाणी में उन समस्त घटनाओं की ओर संकेत है कि जो डिप्टी आथम से लेकर डॉक्टर क्लार्क के इक्दामे क़त्ल के मुक़द्दमे तक प्रकटन में आए। क्योंकि सर्वप्रथम आथम ने अपनी शर्म एवं लज्जा छुपाने के लिए जो उसकी भयग्रस्त अवस्था से उस पर आई थी मुझ पर तीन झूठे आरोप लगाए जिनको वह सिद्ध न कर सका। तत्पश्चात् दूसरे ईसाइयों ने केवल अन्यायपूर्वक अमृतसर इत्यादि स्थानों में शोर मचाया और सर्वथा अन्यायपूर्वक मुझे झुठलाया और गालियां दीं और फिर इस पर बस न करके अन्ततः मुझ पर इक़्दामे क़त्ल का एक मुक़द्दमा किया गया जिसको डॉक्टर हेनरी मार्टिन क्लार्क के दोस्तों ने बनाया। यह मुक़द्दमा भी वास्तव में जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में है इन समस्त घटनाओं की समय से पूर्व सूचना दी गई है। और इस वाक्य में कि तू नबियों के समान सब्र कर। जतलाया गया कि केवल तेरी तक्ज़ीब और हंसी नहीं होगी और न केवल गालियां दी जाएंगी अपितु तेरे मारे जाने के लिए भी प्रयास किया जाएगा, जैसा कि नबियों के लिए किया गया। और उनमें से कुछ अदालत की ओर खींचे गए। और फिर अन्तिम इल्हाम में यह संकते था कि तू ज़िन्दा रहेगा। और उनके मक्र तुझे मार नहीं सकेंगे जब तक तू हमारे कुछ वादों को अपनी आंख से देख ले। हां वे कई प्रकार के मक्र और स्कीमें बनाएंगे और जिस प्रकार हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम तथा हमारे सय्यद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

मुकाबले पर झुठालने, क़त्ल और बदनामी के लिए विभिन्न प्रकार की स्कीमें बनाई गईं उन्हीं के समान ये स्कीमें भी होंगी। यह उस भविष्यवाणी की समस्त ठीक-ठीक व्याख्या है जो आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में मौजूद है। फिर यदि आज तक कोई फ़ित्नः कोई षड्यन्त्र और स्कीम इंजील के उपदेशकों की ओर से प्रकटन में न आता तो यह भविष्यवाणी जन सामान्य की दृष्टि में आपत्तिजनक ठहर जाती। किन्तु चूंकि यह ख़ुदा तआला की ओर से थी और अवश्य था कि अपने समय पर इसका प्रकटन हो। इसलिए ख़ुदा तआला ने इसके पूरा करने के लिए यह अवसर प्रस्तुत किया कि मई और जून 1893 ई. में मुझ में और डिप्टी अब्दुल्लाह आथम में मुबाहसः हुआ।★ और मुबाहसा से पूर्व कई बार डिप्टी अब्दुल्लाह आथम मुझ से आकाशीय निशान मांग चुका था। इसलिए जिस समय मुबाहसः समाप्त हुआ तो ख़ुदा तआला ने चाहा कि वह उस निशान से वंचित न रहे। इसलिए उसके बारे में यह भविष्यवाणी की गई कि वह मुबाहसः समाप्त होने के दिन से पन्द्रह महीने तक हाविय: में डाला जाएगा बशर्ते कि सच्चाई की ओर रुजू न करे। तत्पश्चात् डिप्टी अब्दुल्लाह आथम के हृदय पर भविष्यवाणी का इतना भय छा गया कि वह उस भय से बदहवास हो गया। और उसका चैन और आराम जाता रहा और भविष्यवाणी की धाक से उसमें एक ऐसा परिवर्तन आया कि उस ने अचानक अपनी पुरानी आदतें छोड़ दीं। स्मरण रहे कि उसका यह पुराना तरीक़ा था कि वह हमेशा कुछ मुसलमानों से मुबाहसः किया करता और इस्लाम के खण्डन में पुस्तकें लिखा करता था, और इस्लाम तथा इस्लाम के नबी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम का अपमान किया करता था। परन्तु इस भविष्यवाणी के बाद उसका मुंह ऐसा बन्द हो गया कि भविष्यवाणी की मीआद में अनादर का एक अक्षर भी उसके मुंह से न निकल सका और न इस्लाम के मुकाबले पर कुछ लिख सका, और न किसी से मौखिक वार्तालाप किया। अपितु उसके मुख पर मुहर लग गई और ख़ामोश

★ यह मुबाहसः 21 मई 1893 ई. से आरंभ हुआ और 5 जून 1893 ई. को समाप्त हुआ। इसी से।

तथा शोकग्रस्त रहने लगा। और प्रत्येक न्याय प्रकृति ईसाई जिस ने उसको उस युग में देखा होगा जबकि वह भविष्यवाणी की मीआद में जीवन व्यतीत कर रहा था। यदि चाहे तो गवाही दे सकता है कि भविष्यवाणी की सच्चाई का भय आथम को अन्दर ही अन्दर खा गया था। यहां तक कि जब उसको विश्वास हो गया कि मैं नहीं बचूंगा तब उसने उचित समझा कि अपनी प्रिय बेटियों से जो उसको बहुत ही प्यारी थीं अन्तिम मुलाक़ात कर ले। तब इस विचार से उसने अमृतसर का निवास छोड़ दिया और जीवन का कुछ भाग अपनी लड़की के पास लुधियाना में व्यतीत किया और कुछ भाग फ़ीरोज़पुर में अपनी दूसरी लड़की के पास रहता रहा। और इन दोनों स्थानों में उसकी दो लड़कियां थीं जो अपने पतियों के घरों में आबाद थीं। अन्ततः वह इसी मुसाफ़िरों जैसी हालत में उन दिनों के क़रीब ही फ़ीरोज़पुर में मृत्यु पा गया। और चूंकि वह ईसाइयत की दृढ़ता पर स्थापित न रह सका तथा उसने भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से भयभीत होकर अपना वह पुराना क्रियात्मक तरीका त्याग दिया जो इस्लाम के विरोध और इन्कारियों के आक्रमणों का तरीक़ा था जिसके कारण वह लिखित और भाषण के तौर पर डंक मारा करता था, ग़ुर्बत, विनम्रता और खामोशी ग्रहण की। इसलिए ख़ुदा तआला ने जो नितान्त सहनशील है और किसी के एक कण भर अमल को भी नष्ट करना नहीं चाहता उसके इतने रुजू का उसको यह लाभ दिया कि वह उस वादे के अनुसार भविष्यवाणी की मीआद में मृत्यु से अमन में रहा। क्योंकि अवश्य था कि ख़ुदा तआला अपने वादे का ध्यान रखता। और इसके बाद यह शीघ्रता फ़िरोज़पुर में ही मर गया कि ख़ुदा तआला के इल्हाम में यह भी था कि वह भविष्यवाणी की शर्त से यदि शर्त का पाबन्द हुआ तो लाभ उठाएगा। परन्तु यदि वह अपने इस रुजू को जिस के कारण वह भविष्यवाणी की मीआद के अन्दर नहीं मरेगा गुप्त रखेगा और घोषणा के तौर पर गवाही नहीं देगा कि उसने भविष्यवाणी से डर कर अपना कुछ सुधार कर लिया है। जिसका उसने अपने लेख के द्वारा पहले ही इक़रार किया था तो वह इसके बाद शीघ्रतर पकड़ा जाएगा और मर जाएगा। अतः ऐसा ही प्रकटन में आया। और वह हमारे अन्तिम विज्ञापन से छः माह के

अन्दर मर गया। यदि वह ग़ुर्बत, खामोशी और भय पर क़ायम रहता जो उसने भविष्यवाणी की मीआद में ग्रहण की थी तो उसे लम्बा जीवन दिया जाता तथा वह बीस वर्ष तक और जीवित रह सकता था। परन्तु चूंकि उस का मुंह ख़ुदा की ओर से फिर गया और वह उस भय पर स्थापित न रहा सका जो भविष्यवाणी के युग में उसके हृदय में था। और भविष्यवाणी के गुज़रने के बाद उसने ऐसा विचार कर लिया कि जैसे यह समस्त भय उसका केवल अनुचित और कायरता थी। इसलिए उसे शीघ्रतर मृत्यु का प्याला पिलाया गया। और भविष्यवाणी के युग के पश्चात् वह न केवल इसलिए पकड़ा गया कि उसने अपने पहले विचार को अपने हृदय में सही न समझा, अपितु इसलिए भी कि वह अपने भय को छुपाने के लिए कुछ इफ़्तिरा भी किए और ईसाई क़ौम को प्रसन्न करने के लिए उसने यह प्रसिद्ध किया कि मैं जो भविष्यवाणी के दिनों में इतना कांपता और डरता रहा, यह कांपना, भय और रोना-धोना मेरा इस कारण से था कि मुझ पर तीन आक्रमण किए गए थे। सांप छोड़ा गया था और लुधियाना में कुछ सवार क़त्ल के लिए आए थे और ऐसा ही फ़ीरोज़पुर में भी क़त्ल के लिए आक्रमण हुआ था। परन्तु प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि ये तीन आक्रमणों का बहाना उसके बरी होने को सिद्ध नहीं करता अपितु इस से तो उसका और भी दोषी होना सिद्ध होता है। उस के लिए तो उत्तम था कि ऐसे व्यर्थ बहाने प्रस्तुत ही न करता और खामोश रहता क्योंकि इन बहानों ने उसे कुछ लाभ नहीं दिया। अपितु इन से तो वह साफ़ आरोप के नीचे आ गया। क्योंकि जिस हालत में उसकी जान लेने के लिए उस पर तीन आक्रमण मैंने किए थे तो ऐसे आक्रमणों के बाद जिन की नौबत तीन तक पहुंच चुकी थी वह क्यों भविष्यावणी की मीआद के अन्दर खामोश बैठा रहा। वह तो लम्बे समय तक एक्स्ट्रा असिसटेन्ट भी रह चुका था उसे भली भांति मालूम था कि वह कानूनी निवारण से नितान्त आसानी से अमन में आ सकता था। क्या उसको फ़ौजदारी कानून की धारा 107 याद नहीं रही थी या ताज़ीराते हिन्द की इक्दामे क़त्ल की धारा उसके मस्तिष्क से मिट गई थी। वह इस हालत में कि हमारी ओर से उसके क़त्ल के लिए तीन आक्रमण हुए

थे बड़ी आसानी से अदालत में नालिश कर सकता था कि अमन भंग करने की आशंका दूर करने के लिए एक भारी संख्या की मुझ से ज़मानत ली जाए। अपितु वह उन तीन आक्रमणों की जांच-पड़ताल करा कर मुझे दण्ड दिला सकता था। और कम से कम यह कि पुलिस में रिपोर्ट दे सकता था कि ऐसी अवैध कार्रवाई मेरे लिए निरन्तर की गई हैं।

अब स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न पैदा होता है कि उसने ऐसा क्यों न किया। न भविष्यवाणी के समय में और न उस समय के बाद यह कार्रवाई की। अपितु कुछ ईसाइयों ने उसे बहुत ही उकसाया कि हम तेरे स्थान पर मुक़द्दमे की पैरवी करेंगे तू केवल हस्ताक्षर कर दे। तो उसने साफ़ इन्कार कर दिया। इसका क्या कारण है? इसका यही कारण है कि वह अपने हृदय में ख़ूब जानता था कि ये तीनों आक्रमणों का बहाना सर्वथा झूठा और निराधार है और केवल उस भय को छुपाने के लिए बनाया गया है जो प्रत्येक समय भविष्यवाणी के दिनों में उसके चेहरे पर प्रकट था अन्यथा साफ़ प्रकट है कि जब मेरे मुबाहसे का नाम ईसाइयों ने जंगे मुक़द्दस रखा था तो इस जंग में इस से अधिक और क्या विजय हो सकती थी कि वह तीनों आक्रमणों के अवसर पर सिद्ध कर दिखाता कि भविष्यवाणी को सच्चा करने के लिए कैसी शरारत और कमीनापन प्रकटन में आया और यह कैसी अपवित्र कार्यवाही हुई कि पहले झूठी भविष्यवाणी की गई और फिर भविष्यवाणी के पूरा करने के लिए यह लज्जाजनक कार्य किया कि तीन आक्रमण किए। कौन बुद्धिमान इस बात पर विश्वास करेगा कि एक धार्मिक प्रतिद्वन्द्वी की ओर से तीन आक्रमण हों और ईसाई साहिबान जिन का दिन-रात मीन मेख निकालना काम है वे खामोश रहें और शत्रु के साथ कृपालुओं जैसे आचरण के साथ व्यवहार करें। स्पष्ट है कि इस बुरी और उपद्रव पूर्ण कार्रवाई की क़लई खोलना उनके लिए तो एक महान विजय थी। लानत है ऐसी अन्तर्आत्मा पर कि जो ऐसी मोटी बात को भी समझ न सके। क्या वह क़ौम जो इफ़्तिरा के तौर पर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हज़ारों आरोप लगाती और सामने से एक बात सुनने को सहन नहीं करती अपितु तुरन्त अधिकारियों की ओर रुजू करते हैं उन्होंने मुझ पर यह

अहसान किया कि सवारों और प्यादों को प्राण लेने के लिए आक्रमण करते देखा फिर भी सच्चों और धैर्यवानों के समान चुप रहे। हालांकि ऐसे अवसर पर तो एक नबी भी चुप नहीं रह सकता। हज़रत मसीह ने भी इल्ज़ाम देने के समय जीभ को बन्द नहीं रखा। क्योंकि जिस ख़ामोशी का धर्म पर दुष्प्रभाव पड़े और झूठा सच्चा समझा जाए या एक सच्चा झूठा समझा जाए वह ख़ामोशी अवैध है। फिर आथम साहिब ने इन आक्रमणों को देखकर निरन्तर पन्द्रह महीने तक क्यों ऐसी ख़ामोशी ग्रहण की। भला कोई ईसाई है जो इसका कारण बताए? या ऐसे मुसलमान हज़रात जो जल्दी से कह देते हैं कि यह भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई उत्तर दें। फिर केवल इसी पर बस नहीं, मैंने स्वयं बात को पुनः हिला कर आथम को क़सम खाने के लिए बुलाया कि यदि वह भविष्यवाणी से नहीं डरा अपितु तीन आक्रमणों से डरा तो क़सम खाए परन्तु उसने क़सम भी नहीं खाई। जबकि समस्त ईसाइयों के बुज़ुर्ग क़सम खाते रहे। ये सब झूठे बहाने हैं कि क़सम खाना मना है फिर मैंने चार हज़ार रुपया देना किया कि क़सम खा कर चार हज़ार रुपया ले लें। परन्तु तब भी क़सम न खाई। अब प्रकट है कि जिस हालत में इल्हामी भविष्यवाणी में स्पष्ट शर्त मौजूद थी जिस से किसी दुश्मन और दोस्त को इन्कार नहीं। और फिर आथम साहिब ने ऐसे क्रियात्मक और कथनात्मक नमूने दिखाए जो स्पष्ट तौर पर सिद्ध करते थे कि वह गुप्त तौर पर अवश्य इल्हामी शर्त के पाबन्द हो गए थे। तो फिर इसके बाद यह कहना कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई, क्या यह ईमानदारी है या बेईमानी? पक्षपात् का हाल यह है कि यूनुस की भविष्यवाणी पर ऐतराज़ नहीं करते जो पूरी न हुई हालांकि वह बिना शर्त के थी। परन्तु इस भविष्यवाणी में तो व्यापक शर्त थी और यह शर्त के पहलू से पूरी हो गई और फिर गवाही को छुपाने के बाद दूसरे पहलू से भी पूरी हो गई। तो क्या इस की सच्चाई को न मानना ईमानदारी और न्याय है? आथम ने मुझ पर तीन आक्रमणों के आरोप लगाएं इन आरोपों में सबूत का भार उसकी गर्दन पर था जिस से वह भार मुक्त नहीं हुआ। यहां तक कि वह इस संसार से गुज़र गया।

इस जगह एक आवश्यक बात का वर्णन करना सत्याभिलाषियों के लिए

लाभप्रद होगा कि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम पर ख़ुदा तआला की हुज्जत पूरी करने के लिए हम से जो कुछ प्रकटन में आया और भविष्यवाणी के पूरा होने के बाद ईसाइयों ने जो कुछ अमृतसर और इलाहाबाद इत्यादि स्थानों में वास्तविकता के विरुद्ध प्रसिद्ध किया और जो कुछ मेरे बारे में गालियां दी गईं और ख़ुदा तआला के इल्हाम को झुठलाया गया ये सब घटनाएं आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी के तौर पर वर्णन किए हैं। इस भविष्यवाणी का सारांश यही है कि महदी माहूद के साथ ईसाइयों का कुछ मुबाहस: और शास्त्रार्थ होगा। पहले तो एक मामूली बात होगी। परन्तु फिर वह एक बड़ा मामला हो जाएगा जिसकी जगह-जगह चर्चा होगी और शैतान आवाज़ देगा कि इस विवाद में जो मुसलमानों और ईसाइयों के मध्य होगा सच आले ईसा के साथ है और आकाश से आवाज़ आएगी अर्थात् इल्हामी तौर पर जतलाया जाएगा कि सच आले मुहम्मद के साथ है। अन्तत: ख़ुदा का इल्हाम पवित्र हृदयों को जो रूहानी तौर पर आले मुहम्मद कहलाते हैं यह विश्वास करा देगा कि ईसाइयों का कोलाहल सिद्ध था और सच अहले इस्लाम के साथ है।★ अत: ऐसा ही घटित हुआ। और जब आथम के जीवन के समय तथा उसके मरने के बाद हमारी वे पुस्तकें और विज्ञापन प्रकाशित हुए जिनमें अत्यन्त साफ़ एवं तार्किक तौर पर सिद्ध किया गया था कि आथम के बारे में जो भविष्यवाणी थी वह पूर्ण सफ़ाई से पूरी हो गई तो समस्त न्यायवानों और ईमानदारों ने अपनी ग़लती का इक़रार किया। क्योंकि वह भविष्यवाणी ऐसी सफ़ाई, शक्ति और श्रेष्ठता से भरपूर थी कि न केवल एक पहलू से अपितु दो पहलू से सिद्ध हो गयी थी। अर्थात् एक यह पहलू कि आथम ने इल्हामी शर्त का पालन करके और अपनी पहली आदतों से रुजू करके ख़ुदा तआला

★ **हाशिया** – इस हदीस में शब्द आले ईसा और आले मुहम्मद केवल रूपक के तौर पर वर्णन किया गया है। और स्पष्ट है कि दुनिया के रिश्तों की दृष्टि से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की कोई आल नहीं थी तो यहां निस्सन्देह ईसा से अभिप्राय वे लोग हैं जो यह दावा करते हैं कि ईसा ख़ुदा है और हम उस ख़ुदा के बेटों की तरह हैं और मर कर

के पवित्र वादे के अनुसार कुछ हद तक मुहलत मिलने का लाभ उठा लिया। हां चूंकि उसका रुजू पूर्णरूप से न था इसलिए मुहलत भी पूर्णरूप से न मिली। और दूसरे इस पहलू से यह भविष्यवाणी सिद्ध हुई कि जब आथम ने ख़ुदा तआला की मुहलत देने की क़द्र न की और सच की गवाही न दी अपितु इस निशान को

शेष हाशिया - उनकी गोद में सोते हैं। तो इसी क़रीने से आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी कोई दुनिया का रिश्ता अभिप्राय नहीं है। अपितु आल से अभिप्राय वे लोग हैं जो बेटों की तरह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रूहानी माल के वारिस ठहरते हैं। अपितु प्रत्येक स्थान पर आल के शब्द से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि का यही अभिप्राय है न कि दुनिया के रिश्ते जो एक निचली और फ़ानी बात है जो मृत्यु के साथ ही لَا اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ की तलवार से टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। नबी का नफ़्स कभी इस बात पर राज़ी नहीं हो सकता कि आल के शब्द से केवल उसका यह मतलब हो कि सामान्य सांसारिक लोगों की तरह एक नीच और फ़ानी (नश्वर) रिश्ते का अनुयायी बनाना चाहे। स्पष्ट है कि नबी की नज़र आकाश पर होती है और उसके सम्मान की विशालता और हिम्मत की सीमा इस से पाक है कि वह बार-बार ऐसे रिश्तों को प्रस्तुत करे जिनके साथ ईमान और सच्चाई तथा संयम समवाय नहीं है और क्योंकर हो सकता है कि अल्लाह तआला तो यह कहे कि ये दुनिया के रिश्ते इसी दुनिया तक समाप्त हो जाते हैं और क़यामत में रिश्ते नहीं रहेंगे। परन्तु उस का नबी एक तुच्छ से रिश्ते पर ही बल देता रहे जो लड़की की सन्तान है। सच तो यह है कि ख़ुदा तआला के पवित्र और महान अंबिया जो जो वाक्य मुंह पर लाते हैं वे इतनी वास्तविकताएं और अध्यात्म ज्ञान अपने अन्दर रखते हैं कि जैसे पृथ्वी से आरंभ हो कर आकाश तक जा पहुंचते हैं। या यों कहो कि आकाश से पृथ्वी तक सूर्य की किरण की तरह उतरते हैं और वे समस्त वाक्य उस वृक्ष की तरह होते हैं जिसकी जड़ नितान्त सुदृढ़ और पृथ्वी के पाताल तक पहुंची हुई हो शाखें आकाश में दाख़िल हों। परन्तु वही वाक्य जब जन-सामान्य की बोलचाल में आते हैं तो पशुओं के समान जन सामान्य अपनी सीमित समझ और बुद्धि की कमी के कारण अत्यन्त नीच अर्थों में उनको ले आते हैं जो रूहानीयत की दृष्टि से लज्जाजनक होते हैं। क्योंकि उनकी दुनिया की अक़्लों को आकाश से कुछ भी संबंध नहीं होता। और वे नहीं जानते कि रूहानी प्रकाश क्या चीज़ है। इसलिए वे शीघ्रतर अपनी मोटी समझ के अनुसार नबी के उच्च उद्देश्यों और उच्चतर संकेतों को केवल दुनिया के तथा फ़ानी (नश्वर) रिश्तों ही समाप्त कर देते हैं। और वे नहीं समझ

तीन आक्रमणों के बहाने से गुप्त रखना चाहा तो ख़ुदा तआला के बहाने से गुप्त रखना चाहा तो ख़ुदा तआला ने शीघ्रतर उसको पकड़ लिया। हां ख़ुदा तआला ने लेखराम की भविष्यवाणी की तरह प्रतापी और प्रकोपी रंग में उस से मामला न किया, क्योंकि उस ने नर्मी से अपना बर्ताव रखा। और लेखराम की तरह

शेष हाशिया - सकते कि इस फ़ानी और अस्थायी रिश्ते के पीछे से पीछे अन्य प्रकार के रिश्ते भी होते हैं। और ऐसा हीऔर प्रकार की आल होती है जो मरने के बाद समाप्त नहीं हो सकती और निषेध لا انساب بينهم के नीचे नहीं आती। ने केवल इस प्रकार की आल जो फ़िदक जैसे एक नाम के बाग़ और कुछ वृक्षों के लिए लड़ते फिरें। और उत्तेजित होकर कभी अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो को बुरा कहें और कभी उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को। अपितु ख़ुदा के प्यारों और मान्य पुरूषों के लिए रूहानी आल की उपाधि नितान्त उचित है। और वह रूहानी आल अपने रूहानी नाना से वह रूहानी विरासत पाते हैं जिसको किसी हड़प करने वाले का हाथ हड़प नहीं कर सकता और वे उन बाग़ों के वारिस ठहरते हैं जिन पर कोई दूसरा अवैध क़ब्ज़ा कर ही नहीं सकता। अतः यह नीच विचार कुछ इस्लामी फ़िर्क़ों में उस समय आ गए हैं जबकि उनकी रूह मुर्दा हो गई और उसको रूहानी तौर पर आल होने का कुछ भी हिस्सा न मिला। इसलिए रूहानी माल से लावारिस होने के कारण उनकी अक़्लें मोटी हो गईं और उन के हृदय गन्दे और अदूरदर्शी हो गए। इसमें किसी ईमानदार को आपत्ति है कि हज़रत इमाम हुसैन और इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ख़ुदा के चुने हुए, साहिबे कमाल, साहिब इफ़्फ़त और अस्मत और हिदायत के इमाम थे। और वे निस्सन्देह दोनों अर्थों की दृष्टि से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आल (संतान) थे परन्तु आपत्ति इस बात में है कि क्यों 'आल' की उच्चतम प्रतिष्ठा को छोड़ा गया है और निम्नतम पर गर्व किया जाता है आश्चर्य है कि इमाम हसन रज़ि० और हुसैन रज़ि० के आल होने की वह उच्चतम प्रकार या अन्य किसी के आल होने की जिस के अनुसार वे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रूहानी माल के वारिस ठहरते हैं और स्वर्ग के सरदार कहलाते हें, ये लोग इसका तो कुछ वर्णन ही नहीं करते और एक नश्वर रिश्ते को बार-बार प्रस्तुत किया जाता है जिसके साथ रूहानी विरासत एक दूसरे के लिए अनिवार्य नहीं। और यदि नश्वर संबंध जो शारीरिक संबंध से पैदा होता है आवश्यक तौर पर ख़ुदा तआला के निकट अधिकार रखता तो सबसे प्रथम क़ाबील को यह अधिकार मिलता जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का पहलौठा बेटा और पैग़म्बर पुत्र था। और फिर उस के बाद

तेज़ी और नितान्त स्तर की गालियों का प्रदर्शन न किया। इसलिए ख़ुदा तआला ने जो सहनशीलों के साथ सहनशील और कठोर जीभ वालों के साथ कठोरता से व्यवहार करता है। उसके साथ नर्मी की। जैसे ख़ुदा तआला की जमाली रंग की भविष्यवाणी का नमूना अय्यूब नबी की भविष्यवाणी के समान डिप्टी आथम

शेष हाशिया - हज़रत नूह आदम द्वितीय के उस बेटे को अधिकार मिलता जिसने ख़ुदा तआला की ओर से ⁕ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ का सम्बोधन पाया। अत: अहले मारिफ़त और हक़ीक़त का यह मत है कि यदि हज़रत इमाम हुसैन और इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हुमा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निम्न कोटि रिश्तें की दृष्टि से आल भी न होते तब भी इसके कारण कि वे रूहानी रिश्ते की दृष्टि से आकाश पर आल ठहराए गए थे वे निस्सन्देह आंहज़त सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रूहानी माल के वारिस होते जबकि फ़ानी (नश्वर) शरीर का एक रिश्ता होता है तो क्या रूह का कोई भी रिश्ता नहीं। अपितु सही हदीस से और स्वयं पवित्र क़ुर्आन से भी सिद्ध है कि रूहों में भी रिश्ते होते हैं और अनादि काल से दोस्ती और दुश्मनी भी होती है। अब एक बुद्धिमान इन्सान सोच सकता है कि क्या अविनाशी और अनश्वर तौर आले रसूल होना गर्व का स्थान है या शारीरिक तौर पर आले रसूल होना जो बिना संयम और पवित्रता तथा ईमान के कुछ भी चीज़ नहीं। इस से कोई यह न समझे कि हम अहले बैअत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मान-हानि करते हैं। अपितु इस लेख से हमारा उद्देश्य यह है कि इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शान के योग्य केवल शारीरिक तौर पर आले रसूल होना नहीं क्योंकि वह बिना रूहानी संबंध के तुच्छ है। और वास्तविक संबंध उन ही स्वजनों का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है कि जो रूहानी तौर पर उसकी आल में दाख़िल हैं। रसूलों के मआरिफ़ और रूहानी प्रकाश रसूलों के लिए सन्तान के स्थान पर हैं जो उनके पवित्र अस्तित्त्व से पैदा होते हैं। और जो लोग उन मआरिफ़ तथा प्रकाशों से नया जीवन प्राप्त करते हैं और एक नवीन जन्म उन प्रकाशों द्वारा पाते हैं। वही हैं जो रूहानी तौर पर आले मुहम्मद कहलाते हैं। और उपरोक्त भविष्यवाणी में शैतान का यह आवाज़ देना कि सच आल ईसा के साथ है। यह शैतान का वाक्य इस कारण से भी झूठ है कि वह रूहानी तौर पर मुश्रिकों को हज़रत ईसा की आल ठहराता है। क्योंकि हज़रत ईसा को ख़ुदा कहने वाले आकाश पर उनके साथ कुछ हिस्सा नहीं पा सकते और न उनके वारिस ठहर सकते हैं। फिर वे रूहानी तौर पर उनके आल क्योंकर हो सकते हैं। इसी से।

⁕ निस्संदेह वह तो सर से पैर तक असत कर्म करने वाला है.

में प्रकट किया। और उसकी जलाली (प्रतापी) रंग की भविष्यवाणी का नमूना जो प्रकोप, कठोरता और भय से पूर्णतः भरी हुई थी, लेखराम में पूरी हुई। और प्रत्येक सत्याभिलाषी को इन दोनों व्यक्तियों की कार्य पद्धति से एक सीख मिल सकती है कि ख़ुदा ने कैसे नर्मी करने वाले और जीभ को बन्द रखने वाले से, जो डिप्टी आथम था, नर्मी की और किसी भयंकर मृत्यु के साथ उसे नहीं मारा अपितु इल्हामी शर्त को याद करके जब देखा कि आथम डरा और उसने कार्य पद्धति में परिवर्तन किया तब ख़ुदा ने भी उस से नर्मी की। और उसके रुजू के कारण दो वर्ष से भी कुछ अधिक उसे और मुहलत दे दी। परन्तु दूसरा व्यक्ति अर्थात् लेखराम को उसकी गालियों, निन्दा, मुंह फट्टता और अन्तिम श्रेणी की धृष्टता तथा अश्लीलता के कारण कुछ भी मुहलत न दी अपितु उसे ऐसे समय में पकड़ लिया जबकि अभी उसकी भविष्यवाणी की मीआद में से लगभग दो वर्ष शेष रहते थे। फिर आथम ने अपने जितने डरने, कांपने और हताश होने के कारण भविष्यवाणी की मीआद के दिन अधिक करा लिए। उतने ही लेखराम ने अपनी गालियों एवं कठोर कलिमा के कारण भविष्यवाणी की मीआद के दिन कम करा लिए। अर्थात् अब्दुल्लाह आथम ने भविष्यवाणी को सुन कर भय प्रकट किया और वह भविष्यवाणी के सम्पूर्ण दिनों में डरता रहा और रोता रहा और अनादर का एक शब्द भी उसके मुंह से न निकला। अपितु बुरी संगत से भी मुंह फेर कर गोशा नशीन और एकान्तवासी हो गया और अपनी बहस, मुबाहसे की आदतों एवं गालियों से रुजू कर लिया अपितु भयभीत होकर बिल्कुल ख़ामोश हो गया। इसलिए ख़ुदा ने जो दयालु और कृपालु ख़ुदा है अपनी इल्हामी शर्त और वादे के अनुसार उसके जीवन के दिन कुछ बढ़ा दिए। परन्तु लेखराम भविष्यवाणी को सुनकर और भी धृष्ट हो गया और पहले से भी अधिक गालियां निकालने और ख़ुदा के पवित्र नबियों को बुरा कहना आरंभ कर दिया। इसलिए ख़ुदा ने उस के जीवन के दिनों में से लगभग दो वर्ष कम कर दिए। जैसा कि आथम के दिन लगभग इतने ही बढ़ा दिए। तो यह एक मारिफ़त का नुक्तः है जिस से ख़ुदा तआला की दो विभिन्न आदतें उन दो व्यक्तियों के साथ प्रकटन में आईं जिन्होंने दो विभिन्न

तौर पर अपने जौहर व्यक्त किए। निस्सन्देह अध्यात्म ज्ञानियों के लिए यह विचित्र मनमोहक दृश्य है क्योंकि भय और नर्मी के कारण एक के जीवन के दिन बढ़ाए गए और दूसरे के दिन धृष्टता और गालियों के कारण उतने ही घटाए गए। और निस्सन्देह लेखराम का क़िस्सा डिप्टी आथम के क़िस्से का दूसरा चरण (मिस्रा) है। और आथम के क़िस्से से आनन्द उठाने के लिए आवश्यक है कि उसके साथ लेखराम से संबंधित भविष्यवाणी का किस्सा भी पढ़ा जाए। और जो व्यक्ति इन दोनों क़िस्सों को परस्पर मिला कर नहीं देखेगा संभव है कि वह अच्छी तरह इस मारिफ़त की बारीकी को न समझ सके और वे दो रंग जो जलाली और जमाली रूप में प्रकट हुए हैं उनका आनन्द किसी को कब आ सकता है जब तक कि इन दोनों क़िस्सों पर सामने से उसकी दृष्टि न पड़े। इसीलिए हमने उचित समझा कि इस भविष्यवाणी के बाद लेखराम वाली भविष्यवाणी को दर्ज करें। ताकि मालूम हो कि जितनी यह आथम के बारे में भविष्यवाणी नर्म तौर पर स्नेह और आहिस्तगी के साथ प्रकटन में आई। यहां तक कि आथम का जनाज़ा भी फ़िरोज़पुर में चुपके से उठाया गया और कुछ आदमी खामोशी की अवस्था में उसके कफ़न दफ़्न से निवृत होकर आ गए और कोई उपद्रव का जमावड़ा न हुआ। किन्तु लेखराम की मृत्यु पर क़यामत का शोर मच गया और लाहौर के गली कूचों में हिन्दुओं के विलाप की वह क़यामत क़ायम हुई कि लाहौरियों की आंख ने शायद राजा शेर सिंह के मरने के बाद उसका उदाहरण न देखा होगा और जनाज़ा ऐसे जन समूह के साथ निकला कि जैसे वह दिन हिन्दुओं के लिए महशर (क़यामत) का दिन था।

और हम उन लोगों के बारे में क्या कहें और क्या लिखें जिन्होंने केवल अन्याय करते हुए यह कह दिया कि आथम के बारे में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। प्रिय पाठको! तुम हमारे इस सम्पूर्ण वर्णन को जो आथम के बारे में किया गया है पहले ध्यानपूर्वक पढ़ो और स्वयं ही इन्साफ़ से गवाही दो कि क्या यह भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। क्या यह सच नहीं है कि इस भविष्यवाणी के इल्हाम में लौटने की शर्त थी। और फिर क्या यह सच नहीं कि आथम ने अपने कथनों से अपने कार्यों से, अपनी गतिविधियों से, अपने ठहराव से, अपने भयभीत होने से और भयात्मक

मुख और अत्यन्त दु:ख की अवस्था, अपने निराधार तथा बेसबूत इफ़्तिराओं, और अपनी क़सम से पृथक होने तथा अपनी नालिश से विरक्त होने और अपने इक़रार से कि भविष्यवाणी के दिनों में मैं डरता रहा हूं, अपनी पहली आदतों को सर्वथा त्यागने से सिद्ध कर दिया है कि उसने इल्हामी भविष्यवाणी के सुनने के बाद अवश्य अपनी विरोधपूर्ण आदतों तथा धार्मिक विरोध और ऐसा ही हर प्रकार की धृष्टता और गुस्ताख़ी तथा गालियों से अवश्य रुजू किया था और न केवल रुजू अपितु उसका दिल भय से भर गया और उसका आराम जाता रहा। यह हमारी ओर से केवल दावा नहीं अपितु ये वे बातें हैं जिन में से कुछ का उसने स्वयं इक़रार किया और कुछ को पब्लिक ने स्वयं अपनी आंखों से देख लिया। तथा कुछ उसकी क्रियात्मक हालतों से मालूम हो गया था। परन्तु यह बड़े आश्चर्य का स्थान है कि इतनी स्पष्टता, इतने करीने और इतनी साफ़ गवाहियों के बावजूद फिर भी हमारे विरोधी मौलवियों और उनके अनुयायियों ने इस भविष्यवाणी का इन्कार कर ही दिया। चाहिए था कि वे उस निशान पर जो ज्ञान संबंधी मआरिफ़ भी साथ रखता था जिससे एक भविष्यवाणी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पूरी होती थी और जिस के बिना लेखराम वाला निशान केवल एक आंख की तरह रह जाता था और इन दो निशानों का क्रम बिगड़ता था जो जमाली और जलाली रंग में ख़ुदा की विशेषताओं का पूरा चेहरा दिखलाते थे, सीमा से अधिक अपितु अधिक से अधिक खुशी मनाते और आकाशीय निशान की क़द्र करते और सुजाखों की तरह इल्हामी शर्त को देखते और आथम के कथन और कर्म में इस का सबूत पाकर खुशी से उछलते। यह एक छोटी सी बात नहीं थी कि इस भविष्यवाणी और लेखराम वाली भविष्यवाणी को एक दूसरे के सामने रख कर एक सत्याभिलाषी को ख़ुदा की झलकियों की मारिफ़त प्राप्त होती थी कि मानो इस दर्पण से ख़ुदा नज़र आ जाता था। तथा जमाली एवं जलाली क़ुदरत के रहस्य खुलते थे और यह भी मालूम होता था कि इस भविष्यवाणी के प्रभाव ने आथम की प्रकृति और आदत पर कितना विलक्षण प्रभाव डाला। यहां तक कि उसके सुनने के बाद आथम, आथम न रहा और यद्यपि उसको एक थोड़ी मुहलत मिली परन्तु फिर भी भविष्यवाणी के

प्रभाव ने उसको न छोड़ा। किन्तु खेद कि हमारे उलेमा के दिल ने न माना कि ख़ुदा के निशान को स्वीकार करें। अब भी उचित है कि वे इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ें और एक अन्वेषक जैसा दिल और मस्तिष्क लेकर थोड़ा सोचें कि अब इन सबूतों के बाद भविष्यवाणी की सच्चाई में कौन सी कमी शेष है। क्या हमारे ज़िम्मे कोई सबूत का भार है जिससे हम भारमुक्त नहीं हुए। क्या यह सच नहीं कि हमने अपने दावे को बहुत से सबूतों से तर्कसंगत करके दिखा दिया है। परन्तु आथम ने सच को छुपाने के लिए जो दावा किया था कि मैं तीन आक्रमणों से डरा, न कि भविष्यवाणी से। इस दावे से वह भार मुक्त नहीं हुआ यहां तक कि मर गया। प्रियजनो! अब जंवामर्दी और संयम के मार्ग से सच्चाई को स्वीकार करो और मुझे इस बात की बहुत प्रसन्नता है कि कुछ मौलवी साहिबान अब तौब: नामे भेज रहे हैं और युद्ध के विज्ञापन मैत्री के पत्रों से परिवर्तित कर रहे हैं। अधिकतर असमतल स्वभाव साफ़ और सीधी सड़कों की तरह बनती जाती हैं और दिलों के वीरान तथा सुनसान जंगल कश्मीर की घाटी की तरह फूल-पत्तियों से भरते जाते हैं, अयोग्यता और सुस्ती का रोग कम होता जाता है और जो कुछ पहले दिनों में उन पर कठिन था वह अब आसान होता जाता है। अब मैं देखता हूं कि प्रत्येक सद्स्वभाव के लिए यह मार्ग साफ़ और विशाल है कि मुझे और मेरे निशानों को आसानी से स्वीकार कर लें, जबकि वे अपने पहले वलियों के ऐसे विलक्षण निशान स्वीकार करते हैं कि जिन के बारे में उनके पास कोई पर्याप्त सबूत नहीं। तो कोई कारण नहीं कि ऐसे निशानों के स्वीकार करने के लिए एक बड़ी सेना के समान उन के सामने खड़े हैं और एक दूसरे पर अपने सबूत एवं सफ़ाई का प्रकाश डाल रहे हैं। किसी प्रकार की बाधा उन के सामने आए अपितु उन के लिए यह अत्यन्त प्रसन्नता का अवसर है कि यह दिन उन्होंने देखा उस युग को अभी कुछ बहुत समय नहीं हुआ कि जब एक पादरी बाज़ार में खड़ा होकर ऐतराज़ करता था कि नऊज़ुबिल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कोई चमत्कार नहीं हुआ। तब सच्चे मोमिनों के दिलों पर कितना आघात पहुंचता था और यद्यपि पुस्तकों और अख़बार से उत्तर दिया जाता था परन्तु पक्षपाती शत्रु कब मानता था। और अब वह युग है

कि कोई पादरी हमारे सामने खड़ा नहीं हो सकता और ख़ुदा तआला के निशान इस प्रकार उतर रहे हैं जैसा कि बरसात की वर्षा। अतः यह धन्यवाद का अवसर था न यह कि सब से पहले आप ही इन्कार करना शुरू कर दें। यह कितने गर्व की बात थी कि अब भी इस्लाम में विलक्षण निशान दिखाने वाले मौजूद हैं और दूसरी क़ौमों में मौजूद नहीं। तनिक सोचें कि यह तमाम कार्रवाई इस्लाम के लिए थी या किसी और उद्देश्य के लिए? अब इस्लाम मेरे प्रकटन के बाद उस बुलंदी के मीनार पर है कि जिसके मुकाबले पर समस्त धर्म निचाई में पड़े हुए हैं क्योंकि ज़िंदा धर्म वही होता है जो अपने साथ ताज़ा-ताज़ा निशान रखता है। वह धर्म नहीं बल्कि पुराने किस्सों का समूह है जिसके साथ ज़िंदा निशान नहीं हैं। अतः यह कितनी प्रसन्नता की बात है कि अब इस्लामी प्रतिष्ठा मेरे प्रकटन से एक उत्तम श्रेणी की उन्नति पर है। उसका नूर शत्रु को निकट आने नहीं देता। क्या इसमें संदेह है कि जो इससे पहले इस्लामी निशानों का वर्णन किया जाता था वह शत्रुओं की नज़र में केवल दावा था, अब वह सूर्य के समान चमक रहा है और हर एक उपदेशक अपने इरादों में मेरी ओर से सहायता प्राप्त कर रहा है और मेरे नेक इरादों को ख़ुदा की सहायता हर समय सहारा दे रही है। अब हम दुश्मन को केवल एक बात में गिरा सकते हैं कि उसका धर्म मुर्दा और निशानों से खाली है और अब हर एक मुसलमान ज़िंदा और मौजूद निशान दिखला सकता है जबकि पहले ऐसा नहीं था। ख़ुशी मनाओ और उछलो कि ये इस्लाम की सरबुलन्दी के दिन हैं।

क्रम संख्या 66.	**निशान का विवरण**

और उस भयावह तथा अज़ीमुशान निशानों के अतिरिक्त पंडित लेखराम की मौत का निशान भी है जिस के घटित होने के न एक न दो अपितु बिट्रिश इण्डिया के समस्त हिन्दू, मुसलमान और ईसाई गवाह हैं अपितु हमारी उपकारी सरकार भी इस निशान की गवाह है। अल्लाह अल्लाह यह कैसा भय़ावह और भयंकर निशान प्रकट हुआ है जिसने आंखों वालों को ख़ुदा का चेहरा दिखा दिया। और शाहे ईरान खुसरो परवेज़ और उस के क़त्ल किए जाने की घटना जो हमारे सय्यिद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के

अनुसार पर प्रकटन में आई थी। इस ज़िन्दा निशान से दोबारा आँखों के सामने आ गया। स्पष्ट हो कि हमारे सय्यिद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो बड़े निशान थे जो एक उन में से आथम के क़िस्से के समान और दूसरा लेखराम के वृत्तान्त से समानता रखता था। इस संक्षिप्त वर्णन का विवरण यह है कि जैसा कि सही बुख़ारी के पृष्ठ-5 में वर्णित है। आंजनाब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक पत्र इस्लाम की दावत का क़ैसरे रोम की ओर लिखा था और उसकी इबारत जो कथित पृष्ठ बुख़ारी में दर्ज है यह थी –

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ من محمدٍ عبد اللّٰہ ورسُوله الیٰ ھرقل عظیم الرّوم۔ سلام علی من اتبع الھدیٰ۔ امّا بعد فانّی ادعوك بدعایة الاسلام اَسلِم تَسۡلِم یؤتك اللّٰہ اجرك مرّتین۔ فان تولّیت فانّ علیك اثم الیریسیین۔ ویا اھل الکتاب تعالوا الیٰ کلمة سواء بیننا وبینکم ان لا نعبد الا اللّٰہ ولا نشرك بہٖ شیئًا ولا یتّخذ بعضنا بعضًا اربابًا من دُون اللّٰہ۔ فان تولّوا فقولوا اشھدوا باَنّا مسلمون۔

अर्थात् यह पत्र मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर से जो ख़ुदा का बन्दा और उसका रसूल है रोम के सरदार हिरकल की ओर है। सलामती हो उस पर जो हिदायत के मार्गों का अनुकरण करे और तत्पश्चात् तुझे मालूम हो कि इस्लाम की दावत की ओर तुझे बुलाता हूं। अर्थात् वह धर्म जिसका नाम इस्लाम है जिस के ये मायने हैं कि इन्सान ख़ुदा के आगे अपनी गर्दन रख दे और उसकी श्रेष्ठता तथा प्रताप के फैलाने के लिए और उसके बन्दों की हमदर्दी के लिए खड़ा हो जाए। इसकी ओर मैं तुझे बुलाता हूं। इस्लाम में दाख़िल हो जा ताकि यदि तू ने यह धर्म स्वीकार कर लिया तो फिर सलामत रहेगा और असमय की मृत्यु और तबाही तुझ पर नहीं आएगी और यदि ऐसा न किया तो फिर मौत और हाविय: सामने है। और तू ने इस्लाम को स्वीकार कर लिया तो ख़ुदा तुझे दो प्रतिफल देगा। अर्थात् एक यह कि तू ने मसीह अलैहिस्सलाम को स्वीकार

किया और दूसरा यह प्रतिफल मिलेगा कि तू ने अन्तिम युग के नबी पर ईमान लाया। परन्तु यदि तू ने मुंह फ़ेरा और इस्लाम को स्वीकार न किया तो स्मरण रख कि तेरे कर्मचारी और साथी और तेरी प्रजा का गुनाह भी तेरी ही गर्दन पर होगा। हे अहले किताब! एक ऐसे कलिमः की ओर आओ जो तुम में और हम में बराबर है। अर्थात् दोनों शिक्षाएं इंजील और क़ुर्आन की इस पर गवाही देती हैं और दोनों फ़िर्क़ों के नज़दीक वह मान्य है किसी को इस में मतभेद नहीं और वह यह है कि हम केवल उस ख़ुदा की उपासना करें जो भागीदार रहित, एक है और किसी चीज़ को उसके साथ भागीदार न करें, न किसी इन्सान को न किसी फ़रिश्ते को, न चन्द्रमा को, न सूर्य को न वायु को न अग्नि को और न किसी अन्य वस्तु को। और हम में से कुछ ख़ुदा को छोड़ कर अपने जैसे दूसरों को ख़ुदा और प्रतिपालक न बना लें। और ख़ुदा ने हमें कहा है कि यदि इस आदेश को सुन कर ये लोग न रुकें और अपने बनावटी ख़ुदाओं से पृथक न हों तो फिर उन को कह दो कि तुम गवाह हो कि हम ख़ुदा के उस आदेश पर स्थापित हैं कि इबादत और आज्ञापालन के लिए उसी की चौखट पर गर्दन रखना चाहिए। और वह इस्लाम जिस को तुम ने स्वीकार न किया हम उसको स्वीकार करते हैं।

यह पत्र था जो हमारे सय्यद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ैसरे रोम की ओर लिखा था और उसको निश्चित तौर पर हलाकत और तबाही का वादा न दिया अपितु उसकी सलामती और नासलामती के लिए शर्ती वादा था और सही बुख़ारी के उसी पृष्ठ से मालूम होता है कि क़ैसरे-रोम ने कुछ सच की ओर रुजू कर लिया था इसलिए ख़ुदा तआला की ओर से एक मुद्दत तक उसको मुहलत दी गई। किन्तु चूंकि वह उस रुजू पर क़ायम न रह सका और उसने गवाही को छुपाया। इस लिए कुछ मुहलत के बाद जो उसके रुजू के कारण थी पकड़ा गया और उस का रुजू उसके इस बात से मालूम होता है जो सही बुख़ारी के पृष्ठ-4 में इस प्रकार से वर्णित है। इस कलिमें से मालूम होता है कि सही बुख़ारी के पृष्ठ 4 में इस प्रकार से वर्णित है-

فان كان ما تقول حقّافسيملك موضع قدمى ها تين. وقد

كنتُ اعلم انّه خارج ولم اكن اظنّ انّهٗ منكم. فلو انّى اعلم انّى اُخلص اليه لتجشّمتُ لقاء. ولوكنتُ عنده لغسلتُ عن قدميه

इस इबारत का अनुवाद करने से पूर्व यह बात हम स्मरण करा देते हैं कि घटना उस समय की है जबकि क़ैसर-ए-रोम ने अबू सुफ़्यान को जो व्यापार के सिलसिले में अपनी जमाअत के साथ शाम देश में उतरा हुआ था, अपने पास बुलाया। और उस समय क़ैसर अपने देश की सैर करता हुआ बैतुल मक़्दस में अर्थात् यरोशलम में आया हुआ था और क़ैसर ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अबू सुफ़्यान से जो उस समय कुफ़्र की अवस्था में था बहुत सी बातें पूछीं। और अबू सुफ़्यान ने इस कारण कि उस दरबार में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक सफ़ीर (दूत) भी मौजूद था जो इस्लाम की तब्लीग़ का एक पत्र लेकर क़ैसर-ए-रोम की ओर आया था, सत्य बोलने के अतिरिक्त चारा न पाया। क्योंकि क़ैसर ने उन बातों के पूछने के समय कह दिया था कि यदि यह व्यक्ति घटनाओं के वर्णन करने में कुछ झूठ बोले तो इसको झुठलाना चाहिए। तो अबू सुफ़्यान ने भेद खुलने के भय से सच-सच ही कह दिया। और क़ैसर ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संबंध में जितनी कुछ हालतें पूछी थीं वे सच्चाई की पाबन्दी से वर्णन कर दीं। यद्यपि उसका दिल नहीं चाहता था कि सही तौर पर वर्णन करे। परन्तु सर पर जो झुठलाने वाले मौजूद थे वह भय संलग्न हो गया और झूठ बोलने में अपनी बदनामी की आशंका हुई। जब वह सब कुछ क़ैसरे रोम के समक्ष वर्णन कर चुका तो उस समय क़ैसर ने वह बात कही जो उपरोक्त इबारत में वर्णित है जिस का अनुवाद यह है कि यदि ये बातें सच हैं जो तू कहता है तो वह नबी जो तुम में पैदा हुआ है शीघ्र ही वह इस जगह का मालिक हो जाएगा जिस जगह ये मेरे दोनों क़दम हैं। और क़ैसर ज्योतिष विद्या में बहुत महारत रखता था। इस विद्या के माध्यम से भी उसको ज्ञात हुआ कि यह वही मुज़फ़्फ़र और मन्सूर नबी है जिसका तौरात और इंजील में वादा दिया गया है। और फिर उसने कहा कि मुझे तो मालूम था कि नबी शीघ्र अवतरित होने वाला है किन्तु मुझे यह ख़बर नहीं थी कि वह तुम में से निकलेगा। और यदि मैं जानता कि मैं उस तक पहुंच सकता

हूं तो मैं प्रयास करता कि उसको देखूं। और यदि मैं उसके पास होता तो अपने लिए यह सेवा ग्रहण करता कि उसके पैर धोया करूं। यह वह उत्तर है जो क़ैसर ने पत्र के पढ़ने के बाद दिया। अर्थात् उस पत्र के पढ़ने के बाद जिसमें क़ैसर को उसके विनाश और मरने की शर्ती धमकी दी गयी थी। और यद्यपि क़ैसर ने اسلم تسلم की शर्त को जो पत्र में थी पूर्ण रूप से अदा न किया और ईसाई जमआत से पृथक न हुआ। परन्तु फिर भी उसके उपरोक्त वर्णन से पाया जाता है कि उसने इस्लाम की ओर कुछ झुकाव किया था और यही कारण था कि उसको मुहलत (छूट) दी गयी और उसकी हुकूमत पर पूर्ण रूप से तबाही नहीं आई और न वह शीघ्रतर मरा। अब जब हम डिप्टी आथम के हाल को रोम के क़ैसर के हाल के साथ तुलना करके देखते हैं तो वे दोनों हाल एक दूसरे से ऐसे समान पाए जाते हैं कि जैसे आथम क़ैसर है या क़ैसर आथम है। क्योंकि इन दोनों ने शर्ती भविष्यवाणी पर किसी सीमा तक पालन किया। इसलिए ख़ुदा की दया ने नर्मी और आहिस्तगी के साथ उन से मामला किया। और उन दोनों की आयु को कुछ मुहलत दे दी। परन्तु चूंकि वे दोनों ख़ुदा के नज़दीक गवाही के छुपाने के अपराधी ठहर गए थे। और आथम के समान क़ैसर ने भी गवाही को छुपाया था। क्योंकि उस ने अन्त में अपनी हुकूमत के कर्मचारियों को अपने बारे में बदगुमान पाकर इन शब्दों से सांत्वना दी थी कि वे मेरी पहली बातें जिन में मैंने इस्लाम में दिलचस्पी व्यक्त की थी और तुम्हें प्रेरणा दी थी वे बातें मेरे दिल से नहीं थीं अपितु मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था कि तुम ईसाई धर्म में कितने सुदृढ़ हो। परन्तु लेखराम का हाल किस्रा से अर्थात् खुसरो परवेज़ के समान है। क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पत्र पहुंचने पर उसने बहुत क्रोध व्यक्त किया और आदेश दिया कि उस व्यक्ति को गिरफ़्तार करके मेरे पास लाना चाहिए।★ तब उसने यमन के गवर्नर के नाम

★इस स्थान पर इस बात का जतला देना लाभ से ख़ाली न होगा कि खुसरो पर्वेज़ के समय में अरब का अधिकतर भाग ईरान के शासन-केन्द्र के अधीन था और यद्यपि अरब का देश एक वीराना समझ कर जिस से कुछ टैक्स प्राप्त नहीं हो सकता था छोड़ा गया था। परन्तु फिर भी कहने को वह देश इसी हुकूमत के अधीनस्थ देशों में गिना जाता था किन्तु हुकूमत की शहरी

एक ताकीदी पत्र लिखा कि वह व्यक्ति जो मदीने में पैग़म्बर होने का दावा करता है जिसका नाम मुहम्मद है (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसे अविलम्ब गिरफ़्तार करके मेरे पास भेज दो। उस गवर्नर ने इस सेवा के लिए अपने फ़ौजी अफ़सरों में से जो शक्तिशाली आदमी नियुक्त किए ताकि वे किस्रा के इस आदेश को पूर्ण करें। जब वे मदीने में पहुंचे और उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में व्यक्त किया कि हमें यह आदेश है कि आप को गिरफ़्तार करके अपने ख़ुदावन्द किस्रा के पास उपस्थित करें। तो आप ने उनकी इस बात की कुछ परवाह न करके फ़रमाया कि मैं इसका उत्तर कल दूंगा। दूसरी सुबह जब वे उपस्थित हुए तो आपने फ़रमाया कि आज रात मेरे ख़ुदावन्द ने तुम्हारे ख़ुदा वन्द को (जिसको वे बार-बार ख़ुदावन्द करके पुकारते थे) उसी के बेटे शेरविय: को उस पर हावी करके क़त्ल कर दिया है। फिर ऐसा ही हुआ और जब ये लोग यमन के उस शहर में पहुंचे जहां फ़ारस की हुकूमत का गवर्नर रहता था तो अभी तक उस गवर्नर को किस्रा के क़त्ल किए जाने की कुछ भी ख़बर नहीं पहुंची थी। इसलिए उसने बहुत आश्चर्य लिया। परन्तु यह कहा कि इस आदेश की अवज्ञा के लिए हमें शीघ्र कुछ नहीं करना चाहिए, जब तक कुछ दिन तक कि राजधानी की डाक की प्रतीक्षा न कर लें। तो जब कुछ दिन बाद डाक पहुंची तो उन काग़ज़ों में से एक पत्र यमन के गवर्नर के नाम निकला जिसको शेरविय: किस्रा के शासक ने लिखा था। विषय यह था कि "ख़ुस्रो मेरा बाप ज़ालिम था और उस के ज़ुल्म के कारण हुकूमत के

शेष हाशिया - राजनीति का अरब पर कोई दबाव न था और न वे इस हुकूमत के राजनीतिक कानून के अधीन जीवन व्यतीत करते थे अपितु बिल्कुल आज़ाद थे और एक प्रजातंत्रीय हुकूमत के रंग में एक जमाअत दूसरों पर अपनी क़ौम में अमन और न्याय स्थापित रखने के लिए हुकूमत करती थी। जिन में से कुछ की राय को आदेशों के लागू करने में सब से अधिक सम्मान दिया जाता था और उन की एक राय किसी सीमा तक जमाअत की राय के समतुल्य समझी जाती थी। फिर दुर्भाग्य से किस्रा को उत्तेजित करने का यह भी कारण हुआ कि उसने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी प्रजा में से एक व्यक्ति समझा परन्तु इस चमत्कार के पश्चात् जिसकी चर्चा मूल इबारत में की गई है अटल तौर पर फ़ारस की हुकूमत के संबंध अरब देश से पृथक हो गए उस समय तक कि वह सम्पूर्ण देश उन के क़ब्ज़े में आय गया। इसी से।

मामलों में खराबी पड़ती जाती थी। इसलिए मैंने उसको क़त्ल कर दिया है। अब तुम मुझे अपना शहंशाह समझो और मेरा आज्ञापालन करो। और एक नबी जो अरब में पैदा हुआ है जिसकी गिरफ़्तारी के लिए मेरे बाप ने तुम्हें लिखा था उस आदेश को अभी स्थगित रखो।" और जैसा कि अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि क़ैसर और आथम का क़िस्सा परस्पर बिल्कुल समान है। ऐसा ही हम इस जगह भी इस बात के लिखने के बिना नहीं रह सकते कि इसी प्रकार लेखराम का क़िस्सा किस्रा अर्थात् खुस्रो परवेज़ के क़िस्से से अत्यधिक समानता रखता है। क्योंकि जिस प्रकार किसी हिन्दू ने जो स्वयं को नवमुस्लिम कहता था लेखराम के पेट पर वार किया उसी प्रकार शेरविय: ने ख़ुस्रो के पेट पर वार किया। और इन दोनों घटनाएं लेखराम और किस्रा से उस समय ख़बर दी गई थी जबकि किसी को यह विचार भी न था कि ऐसी घटना शीघ्र ही हम सुनेंगे और जैसा कि हम पहले वर्णन कर चुके हैं कि जो कुछ आथम और क़ैसर-ए-रोम को ख़ुदा के अज़ाब का सामना हुआ वह जमाली रंग में था और उस शर्त के अनुसार जब कि वे दोनों उस शर्त के कुछ पाबन्द हो गए थे। उनके एक थोड़े समय तक छूट (मुहलत) दी गई थी। परन्तु जो ग़ैब की ख़बर लेखराम और किस्रा अर्थात् खुस्रो पर्वेज़ के बारे में की गई थी वह शर्त के बिना थी। और ये दोनों घटनाएं लेखराम और किस्रा की जलाली (प्रतापी) रंग में प्रकटन में आई थीं। और जैसा कि समस्त मुसलमानों की यह आस्था है कि किस्रा का मारा जाना एक बड़ा चमत्कार था कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कट्टर शत्रु था ऐसा ही यदि मुसलमान चाहें तो गवाही दे सकते हैं कि लेखराम का मारा जाना भी एक बड़ा चमत्कार था क्योंकि वह भी हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कट्टर शत्रु और गाली देने वाला था। हां किस्रा और लेखराम में यह अन्तर था कि किस्रा एक बादशाह था जो अपनी शत्रुता के जोश में तलवार से काम ले सकता था और लेखराम एक ब्राह्मण सामान्य हिन्दुओं में से था। जिस के पास गाली, अश्लील बातें और अत्यन्त लज्जाजनक गालियों के अतिरिक्त और कुछ न था। और किस्रा हमारे सय्यद-व-मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जान से मारना चाहता था। और लेखराम ने भी आंजनाब की पवित्र

प्रतिष्ठा, ईमानदारी तथा नुबुव्वत के पवित्र झरने पर आक्रमण करना चाहा। इसलिए ख़ुदा ने जो अपने प्यारों के लिए स्वाभिमानी है किस्रा की घटना से तेरह सौ वर्ष के पश्चात् फिर अपने पवित्र नबी के सम्मान और ईमानदारी की सहायता के लिए लेखराम की मृत्यु से वह चमत्कार दोबारा दिखाया जो फ़ारस की राजधानी में विशेष ऐवान-ए-शाही में शेरविया के हाथ से दिखाया गया था। इस से प्रत्येक इन्सान को पाठ मिलता है कि ख़ुदा के प्यारों और चुने हुओं के सम्मान या प्राणों पर आक्रमण करना अच्छा नहीं है।

गन्दुम अज़गन्दुम बरोयद जौज़ जो अज़ मुकाफ़ाते अमल ग़ाफ़िल मशो

(अर्थात-गेहूं से गेहूं ही उगेगा और जौ से जौ ही उगेगा। इसलिए हे संबोधित! कर्म के बदले से बेपरवाह न हो जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे।)

और हदीस शरीफ़ में आया है -

إذا هَلك كِسۡرٰی فَلا كِسۡرٰی بعدهٗ

अर्थात् जब किस्रा मर जाएगा तो दूसरा किस्रा पैदा नहीं होगा जो अन्याय, अत्याचार और ज़ुल्म में उसका स्थानापन्न हो। इस हदीस से परिणाम निकल सकता है कि किसी बद ज़ुबान, अश्लील बातें करने वाला और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शत्रु मरने के बाद जो किसी क़ौम में हो। फिर ऐसी ही आदत का कोई और इन्सान उस क़ौम के लिए पैदा होना असंभव विचार है। क्योंकि ख़ुदा हमेशा अपने सत्यनिष्ठों के बारे में गालियां और गन्दी बातें सुनना नहीं चाहता।

अब हम यह बताना चाहते हैं कि यह लेखराम वाली भविष्यवाणी कितनी स्पष्ट और ज़ोरो शोर से क़त्ल की घटना से पांच वर्ष पूर्व बताई गई थी। तो स्पष्ट हो कि जब लेखराम ने अत्यन्त आग्रहपूर्वक अपनी मृत्यु के लिए मुझ से भविष्यवाणी चाही। तो मुझे दुआ के बाद यह इल्हाम हुआ عجلٌ جسد له خوار अर्थात् यह निष्प्राण बछड़े की तरह है له نصب وعذاب जिसमें मारे जाने के समय बछड़े की तरह एक आवाज़ निकलेगी और इसमें प्राण नहीं तथा इसके लिए नसब और अज़ाब है। लिसानुल अरब में जो अरब शब्दकोश में एक पुरानी और विश्वसनीय पुस्तक है नसब शब्द के मायने अन्य कई मायनों के अतिरिक्त

एक यह भी लिखे हैं कि जब कहा जाए - نصب فلان لفلان तो इसके यह मायने होंगे कि किसी व्यक्ति ने उस व्यक्ति पर प्राण लेने के लिए आक्रमण किया और शत्रुता के मार्ग से उसके फ़ना करने के लिए पूरी-पूरी कोशिश की। अत: लिसानुल अरब के इस स्थान में अपने शब्द ये हैं -

نصب فلان لفلان نصبًا اِذا قصدله و عاداه و تجرّ د

जिसके यही मायने हैं जो ऊपर किए गए। देखो लिसानुल अरब शब्द 'नसब' पृष्ठ 258 पंक्ति न. 2 और خوار का शब्द अरब शब्दकोश में बछड़े की आवाज़ के लिए आता है। परन्तु जब इन्सान पर इस शब्द को प्रयोग करते हैं तो उस अवसर पर करते हैं जबकि कोई मक़्तूल क़त्ल होने के समय बछड़े के समान आवाज़ निकालता है। जैसा कि उसी लिसानुलअरब में خوار के शब्द के वर्णन में पृष्ठ 345 में इन मायनों की पुष्टि के लिए एक हदीस लिखी है और वह यह है -

وفی حدیث مقتل اُبی بن خلف فخرّ یخور کما یخور الثو

अर्थात् जब उबय्यिब्ने ख़लफ़ क़त्ल किया गया तो यों आवाज़ निकालता था जैसे कि बैल आवाज़ निकालता है। और कभी خوار का शब्द अरब की भाषा में उस हथियार की आवाज़ पर बोला जाता है जो चलाया जाता है। अत: लिसानुल अरब के उसी पृष्ठ 345 में एक प्रसिद्ध शाइर का इस मुहावरे के हवाले में एक शेर लिखा है और वह यह है -

يَخُرْنَ اِذَا اُنفذن فی سَاقِطِ النَّدٰی
وَاِنْ كَانَ يَوْمًا ذَا أَهَاضِيْبَ مُخْضِلا

अर्थात् उन तीरों में से जो चलाए जाते हैं और फिर निकाले जाते हैं बछड़े की आवाज़ के समान एक आवाज़ आती है यद्यपि ऐसा दिन हो जिसमें निरन्तर वर्षा हुई हो और प्रत्येक वस्तु को तर कर देती हो और शेर में जो शब्द ساقط النّدیٰ आया है उसके यह मायने हैं कि जो वृक्षों पर वर्षा होकर फिर वृक्षों पर जो कुछ पानी एकत्र हो कर फिर वह पृथ्वी पर पड़ता है उस पानी का नाम 'साक़ित' है और 'साक़ित' जंगली वृक्षों को कहते हैं जिन को हिन्दी में 'बन' कहते हैं। और शाइर

का इस स्थान पर मतलब यह है कि वह अपने तीरों की सफ़ाई, दृढ़ता तथा उनकी तेज़ी की प्रशंसा करता है कि उनमें से चलाने और फेरने के समय एक आवाज़ होती है। और यद्यपि अत्यन्त झड़ी लगी हुई हो, तथा निरन्तर वर्षाएं हो रही हों उन तीरों को उत्तम कारीगरी के कारण और लकड़ी के उत्तम प्रकार के होने के कारण कोई हानि नहीं पहुंचती। इसलिए इस अत्यन्त विश्वसनीय पुस्तक से जो 'लिसानुल अरब' है से सिद्ध होता है कि خوار और خوار के शब्द को इन्सान पर उस हालत में भी बोलते हैं कि जब वह क़त्ल होने के समय फ़रियाद करता है और क़त्ल होने के समय जो हथियार की आवाज़ होती है उसका नाम भी خوار है।

और जैसा कि अभी हम लिख चुके हैं कि यह भविष्यवाणी अर्थात् -

عِجْلٌ جَسَد له خوار لَهٗ نصب وعَذاب

अपने इन दो शब्दों की दृष्टि से जो خوار (ख़्वार) और نصب (नसब) है लेखराम के क़त्ल होने पर संकेत करती है। इसी के अनुसार ख़ुदा तआला के समझाने से हम ने वह शेर और कुछ पंक्तियां गद्य की लिखी हैं जो पुस्तक आईना कमालात-ए-इस्लाम के पांचवे परिशिष्ट में दर्ज हैं जिन पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालकर एक बुद्धिमान समझ सकता है कि उन वर्णनों से साफ़ स्पष्ट होता है कि लेखराम अपनी स्वाभाविक मृत्यु से नहीं अपितु क़त्ल द्वारा भविष्यवाणी के अर्थ के अनुसार इस नश्वर संसार से कूच करेगा। अत: इस परिशिष्ट के पृष्ठ 12 की इबारत जो इस मृत्यु की अवस्था पर मार्ग दर्शन करती है यह है -

> "अब मैं इस भविष्यवाणी को प्रकाशित करके समस्त मुसलमानों, आर्यों, ईसाइयों और अन्य फ़िर्क़ों (समुदायों) पर प्रकट करता हूं कि यदि इस व्यक्ति पर छ: वर्ष की मुद्दत में आज की तिथि से कोई ऐसा अज़ाब न उतरा जो साधारण कष्टों (रोगों) से निराला और विलक्षण (अर्थात् स्वाभाविक मौतों से जो आदत में दाख़िल हैं पृथक हो) और अपने अन्दर ख़ुदा का भय रखता हो (अर्थात् इन्सान समझ सकता हो कि यह एक अचानक आई

हुई आपदा है जो दिलों पर एक डराने वाला प्रभाव करती है) तो समझो कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं और न उसकी रूह से मेरा यह बोलना है, और यदि मैं इस भविष्यवाणी में झूठा निकला (अर्थात् यदि भयानक रूप से लेखराम की मृत्यु न हुई) तो प्रत्येक दण्ड भुगतने के लिए मैं तैयार हूं। और इस बात पर राज़ी हूं कि मुझे गले में रस्सा डालकर किसी सूली पर खींचा जाए। और मेरे इस इक़रार के बावजूद यह बात भी स्पष्ट है कि किसी इन्सान का अपनी भविष्यवाणी में झूठा निकलना स्वयं समस्त बदनामियों से बढ़कर बदनामी है। इस से अधिक क्या लिखूं। अब आर्यों को चाहिए कि सब मिलकर दुआ करें कि यह अज़ाब उनके इस वकील से टल जाए।'' इति

और इसी परिशिष्ट के पृष्ठ-1 पर लिखा हुआ काव्य जो लेखराम की मृत्यु की सूरत पर बुलन्द आवाज़ से दलालत करता है यह है -

عجب نوریست در جانِ محمد عجب لعلے ست در کانِ محمد

अनुवाद - मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान में एक अद्‌भुत प्रकाश है मुहम्मद की खान में एक विचित्र और दुर्लभ लअल है।

ز ظلمتہا دلے آنگہ شود صاف کہ گردد از محبّانِ محمدؐ

अनुवाद - दिल उस समय अंधकार से पवित्र होता है जब वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोस्तों में दाख़िल होता है।

عجب دارم دلِ آں ناقصاں را کہ رُو تابند از خوانِ محمدؐ

अनुवाद- मैं उन मूर्खों के दिलों पर आश्चर्य करता हूं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्तरख़्वान से मुख फेरते हैं।

ندانم ہیچ نفسے در دو عالم کہ دارد شوکت و شانِ محمدؐ

अनुवाद - दोनों लोकों में मैं किसी व्यक्ति को नहीं जानता जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समान शान-शौकत रखता हो।

خدا زاں سینہ بیزارست صدبار کہ ہست از کینہ دارانِ محمدؐ

अनुवाद - ख़ुदा उस व्यक्ति से अत्यन्त विमुख है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वैर रखता हो।

خدا خود سوزد آں کِرم دنی را کہ باشد از عدُوّانِ محمد

अनुवाद - ख़ुदा स्वयं उस नीच कीड़े को जला देता है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शत्रुओं में से हो।

اگر خواہی نجات از مستیء نفس بیا در ذیلِ مستانِ محمدؐ

अनुवाद - यदि तू नफ़्स की बद मस्तियों से मुक्ति चाहता है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मस्तानों में से हो जा।

اگر خواہی کہ حق گوید ثنایت بشو از دِل ثناخوانِ محمدؐ

अनुवाद - यदि तू चाहता है कि ख़ुदा तेरी प्रशंसा करे तो हे दिल से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यशोगान करने वाला बन जा।

اگر خواہی دلیلے عاشقش باش محمدؐ ہست بُرہانِ محمدؐ

अनुवाद - यदि तू उसकी सच्चाई का प्रमाण चाहता है तो उसका प्रेमी बन जा क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही स्वयं मुहम्मद का प्रमाण है।

سرے دارم فِدائے خاکِ احمد دِلم ہر وقت قُربانِ محمدؐ

अनुवाद - मेरा सिर अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैरों की ख़ाक पर न्योछावर है और मेरा दिल हर समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान रहता है।

بگیسُوئے رسول اللہ کہ ہستم نثار رُوئے تابانِ محمدؐ

अनुवाद - रसूलुल्लाह के बालों की क़सम कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि प्रकाशमय चेहरे पर फ़िदा हूं।

دریں رہ گر کشندم ورببسوزند نتابم رُو زِ ایوانِ محمدؐ

अनुवाद - इस मार्ग में यदि मुझे क़त्ल कर दिया जाए या जला दिया जाए तो फिर भी मैं मुहम्मद की बरगाह से मुंह नहीं फेरूंगा।

بکارِ دیں نترسم از جہانے   کہ دارم رنگ ایمانِ محمدؐ

अनुवाद - धर्म के मामले में मैं सम्पूर्ण संसार से भी नहीं डरता कि मुझ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रंग है।

بسے سہل ست از دُنیا بُریدن   بیادِ حُسن و احسانِ محمدؐ

अनुवाद - दुनिया से संबंध विच्छेद करना अत्यन्त आसान है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्दरता एवं उपकार को स्मरण करके।

فِدا شُد در رہش ہر ذرّہءِ من   کہ دِیدم حُسن پنہانِ محمدؐ

अनुवाद - उसके मार्ग में मेरा प्रत्येक कण क़ुर्बान है क्योंकि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुप्त सौन्दर्य देख लिया है।

دِگر اُستاد را نامے ندانم   کہ خواندم در دبستانِ محمدؐ

अनुवाद - मैं किसी और उस्ताद का नाम नहीं जानता। मैं तो केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदरसे का पढ़ा हुआ हूं।

بدیگر دلبرے کارے ندارم   کہ ہستم کشتۂ آنِ محمدؐ

अनुवाद - और किसी प्रियतम से मुझे वास्ता नहीं कि मैं तो केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाज़-व-अदा का मक़्तूल हूं।

مرا آں گوشۂ چشمے بباید   نہ خواہم جُز گلستانِ محمدؐ

अनुवाद - मुझे तो उसी आंख की हमदर्दी की नज़र चाहिए। मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता।

دلِ زارم بہ پہلویم مجوئید   کہ بستیمش بہ دامانِ محمدؐ

अनुवाद - मेरे ज़ख़्मी दिल को मेरे पहलू में तलाश न कर कि उसे तो हमने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामन से बांध दिया है।

من آں خوش مُرغ از مُرغانِ قدسم   کہ دارد جا بہ بستانِ محمدؐ

अनुवाद - मैं क़ुदुस के परिन्दों में से वह श्रेष्ठतम परिन्दा हूं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ में बसेरा रखता है।

توجانِ ما منوّر کردی از عشق   فدایت جانم اے جانِ محمدؐ

अनुवाद - तू ने इश्क़ (प्रेम) के कारण हमारी जान को प्रकाशमान कर दिया हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुझ पर मेरे प्राण फ़िदा हों।

دریغا گر دہم صدجاں دریں راہ   نباشد نیز شایانِ محمد

अनुवाद - यदि इस मार्ग में सौ प्राणों से क़ुर्बान हो जाऊं तो भी अफ़सोस रहेगा कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा के यथायोग्य नहीं।

چہ ہیبت ہا بدادند ایں جواں را   کہ ناید کس بمیدانِ محمدؐ

अनुवाद - इस जवान को कितना रोब दिया गया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मैदान में कोई भी (मुकाबले पर) नहीं आता।

الا اے دشمن نادان وبے راہ   بترس از تیغِ بُرّانِ محمدؐ

अनुवाद - हे मूर्ख और गुमराह शत्रु होशियार हो जा और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की काटने वाली तलवार से डर।

رہِ مولا کہ گُم کردند مُردم   بجو در آل و اعوانِ محمدؐ

अनुवाद - ख़ुदा के उस मार्ग को, जिसे लोगों ने भुला दिया है, तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आल और अन्सार में ढूंढ।

الا اے منکر از شانِ محمدؐ   ہم از نورِ نمایانِ محمدؐ

अनुवाद - ख़बरदार हो जा! हे वह व्यक्ति जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चमकते हुए प्रकाश का इन्कारी है।

کرامت گرچہ بے نام و نشان ست   بیا بِنگر زِ غلمانِ محمدؐ

अनुवाद - यद्यपि करामत अब समाप्त है परन्तु तू आ और उसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दासों में देख ले।

लेखराम पेशावरी के बारे में एक भविष्यवाणी

अब इन समस्त शेरों से और उपरोक्त गद्य से साफ तौर पर स्पष्ट है कि लेखराम की मृत्यु के लिए तेज़धार तलवार की ओर संकेत किया गया है और मृत्यु के प्रकार को भयानक प्रकार वर्णन किया गया है जो सामान्य मौतों से निराली है और स्वयं शब्द نصب (नसब) तथा خوار (ख़्वार) का भी मार्ग दर्शन करता था कि यह मृत्यु क़त्ल के द्वारा होगी परन्तु फिर भी चूंकि अल्लाह तआला को अभीष्ट था कि इस भविष्यवाणी को अधिक से अधिक स्पष्ट करे। इसलिए उस स्वच्छन्द हकीम (ख़ुदा) ने केवल इस भविष्यवाणी पर ही जिसमें शब्द 'नसब' तथा 'ख़्वार' का मौजूद है पर्याप्त नहीं समझा। अपितु इसकी व्याख्या और विवरण के लिए कई इल्हामी भविष्यवाणियां इसके साथ सम्मिलित कर दीं जिनको हम अभी वर्णन करेंगे। परन्तु इस स्थान पर पूर्ण अफ़सोस से लिखा जाता है कि कुछ मूर्खों का पक्षपात से यह हाल हो गया है कि उन्होंने इस भविष्यवाणी के अर्थों की ओर तनिक ध्यान नहीं दिया और न उस व्याख्या मौजूद है जिसमें साफ़ लिखा है कि यह एक विलक्षण और भयानक निशान होगा न कि मामूली मृत्यु। परन्तु इन ऐतराज़ कर्ताओं ने मूर्खता से शब्द 'नसब' को जो क़त्ल की मृत्यु पर दलालत करता था और 'ख़्वार' के शब्द को जो उस हालत को बताता था जबकि मक़्तूल के मुंह से क़त्ल किए जाने के समय बैल की तरह एक आवाज़ निकलती है कि उपेक्षा कर दी है और यदि कष्ट कल्पना के तौर पर शब्द 'नसब' और 'ख़्वार' भविष्यवाणी में न होता और केवल अज़ाब का शब्द ही होता तब भी वह मृत्यु पर ही मार्गदर्शन करता था। क्योंकि जितने पूर्ण नमूने तौरात और पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किए गए हैं वे सब मृत्यु के साथ थे। नूह की क़ौम को अज़ाब हुआ वह क्या था? पानी के द्वारा मृत्यु थी। लूत की क़ौम को अज़ाब हुआ वह क्या था? पत्थर बरसाने से मृत्यु थी। अस्हाबुलफ़ील की क़ौम को अज़ाब हुआ, वह क्या था? कंकरियों के द्वारा मृत्यु थी। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधियों को अज़ाब

हुआ, वह क्या था? तलवार के द्वारा मृत्यु थी। ऐसा ही बहुत सी उम्मतों पर उनके पापों की अधिकता के कारण अज़ाब होते रहे, वे क्या थे? सब मौत थे। क्या कोई सिद्ध कर सकता है कि जो दुनिया में नबियों के विरोधियों पर आकाश से अज़ाब उतरते रहे वे मृत्यु की सीमा तक नहीं पहुंचे थे, केवल ऐसे थे जैसे उस्ताद बच्चों को झिड़की देता है या कोई हल्का सा दर्द हो जाता है। अल्लाह अल्लाह पक्षपात कितना बढ़ गया है कि मेरी शत्रुता के लिए अब नूह की क़ौम के अज़ाब और लूत की क़ौम के अज़ाब और नमरूद की क़ौम के अज़ाब और आद एवं समूद के अज़ाब और सालेह नबी की क़ौम के अज़ाब और हज़रत मूसा के शत्रुओं पर जो अज़ाब उतरे उसके यही अर्थ किए जाते हैं कि वे लोग मरे नहीं थे ताकि किसी प्रकार लेखराम की भविष्यवाणी को झुठलाया जाए। ये लोग झुठलाने के लिए हर ओर हाथ-पैर मार कर यह बहाना भी प्रस्तुत करते हैं कि नर्क में जो अज़ाब होगा उसमें मृत्यु कहां है। इसका उत्तर यह है कि समस्त नारकी पहले मृत्यु का ही अज़ाब उठाकर फिर नर्क तक पहुंचते हैं। मृत्यु के बिना नर्क में कौन गया। और नर्क में भी मृत्यु होती यदि ख़ुदा तआला का यह वादा न होता कि फिर मृत्यु नहीं होगी। किन्तु इसके बावजूद ख़ुदा तआला ने नारकियों को ज़िन्दा भी नहीं किया। जैसा कि वह फ़रमाता है –

اِنَّهٗ مَنۡ یَّاۡتِ رَبَّهٗ مُجۡرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا یَمُوۡتُ فِیۡهَا وَ لَا یَحۡیٰی (ताहा-75)

अर्थात् जो व्यक्ति अपराधी होने की हालत में मरेगा उसके लिए नर्क है कि वह उसमें न मरेगा और न ज़िन्दा रहेगा। अब देखो कि नारकी के लिए जीवन भी नहीं यद्यपि हमेशा के अज़ाब के पूरा करने के लिए मृत्यु भी नहीं। इसके अतिरिक्त लेखराम पर तो इसी दुनिया में अज़ाब का यह वादा था कि न कि आख़िरत में। फिर यह अज़ाब नूह की क़ौम के अज़ाब या लूत की क़ौम के आज़ाब या दूसरी उन क़ौमों के अज़ाब से समान होना चाहिए जो दुनिया में हुए जिस अज़ाब से वे लोग मर गए न कि नर्क के अज़ाब से जो इस दुनिया के बाद होगा। कितना पक्षपात है और कैसे हाथ-पैर मार रहे हैं कि किसी प्रकार ख़ुदा के निशानों को ख़ाक में मिला दें। तो चूंकि अल्लाह तआला जानता था कि इन लोगों की तामसिक वृत्तियां

भिन्न-भिन्न प्रकार के तर्क प्रस्तुत करेंगी ताकि ख़ुदा तआला के एक चमकते हुए निशान को किसी प्रकार टाल दें। ऐसा न हो कि वह उनके दिल में उतरे और उन के सीने को ख़ुदा की मारिफ़त (पहचान) से प्रकाशित करे। इसलिए सर्वज्ञ और दूरदर्शी ख़ुदा ने कई बार कई इल्हामों में इस भविष्यवाणी को वर्णन किया और खुले-खुले तौर पर उसको समझाकर वे इबारतें मेरी पुस्तक में दर्ज कराईं जो अभी लिख चुका हूं।

अब मैं उचित समझता हूं कि इस स्थान पर उन दूसरे इल्हामों और कश्फ़ों की भी चर्चा करूं जो इसी भविष्यवाणी के विवरण तथा व्याख्या में वर्णन किए गए। परन्तु इतना वर्णन कर देना लाभ से ख़ाली नहीं कि इन लोगों का एक यह भी ऐतराज़ है कि जब एक बार ख़ुदा तआला ने वर्णन कर दिया था कि लेखराम पर नसब और अज़ाब छः वर्ष तक उतरने वाला है तो दूसरी भविष्यवाणियों की क्या आवश्यकता थी। इसका उत्तर यह है कि दूसरी भविष्यवाणियां इस भविष्यवाणी के लिए बतौर विवरण और व्याख्या के हैं ताकि मूर्ख ऐतराज़कर्ता पर सर्वांगपूर्ण तौर पर समझाने का प्रयास पूर्ण किया जाए। और यदि यह वैध नहीं है कि ख़ुदा तआला अपने कुछ इल्हामों की दूसरे इल्हामों से व्याख्या करे तो यह ऐतराज़ स्वयं ख़ुदा तआला की किताब पर होगा कि उदाहरणतया जबकि उसने सूरह इख़्लास में एक बार फ़रमा दिया था कि

قُلۡ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ ۔ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۔ لَمۡ يَلِدۡ وَلَمۡ يُوۡ لَدۡ ۔ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ (अलइख़्लास 2 से 5)

तो फिर क्या ज़रूरी था कि बारम्बार इन निबंधों का पवित्र क़ुर्आन में ज़िक्र करता और अकारण अपने कलाम को लम्बा करता। अब देखना चाहिए कि यह मूर्ख फ़िर्क़ा मेरी भविष्यवाणी पर ऐतराज़ करके किस प्रकार ख़ुदा के कलाम पवित्र क़ुर्आन को भी ऐतराज़ का स्थान ठहराता है। अब हम शेष इल्हामों को जो इस भविष्यवाणी के लिए बतौर व्याख्या, है नीचे लिखते हैं और पाठकों से आशा रखते हैं कि वे ध्यानपूर्वक विचार करें और जान बूझ कर ख़ुदा तआला

के निशानों को झुठला कर पूछताछ का निशान न बनें। स्पष्ट हो कि उपरोक्त भविष्यवाणी के विवरण और व्याख्या के लिए एक और इल्हाम है जो लेखराम की मृत्यु से लगभग पांच वर्ष पूर्व प्रकाशित किया गया। अत: वह मेरी पुस्तक 'करामातुस्सादिक़ीन' के अन्त में टाइटल पेज के अन्तिम पृष्ठ पर आठवीं पंक्ति में दर्ज है। और वह इबारत जिसमें इल्हाम की चर्चा की गई है यह है –

ومنھا ما وعدَنی ربّی واستجاب دعائی فی رجل مفسد عدوّاللّٰہ ورسُولہ المسمّی لیکھرام الفشاوری واخبرنی انّہ من الھالکین انّہ کان یسبّ نبیّ اللّٰہ ویتکلّم فی شانہ بکلمات خبیثۃ فدعوت علیہ فبشّرنی ربّی بموتہ فی ستّ سنۃ انّ فی ذالک لاٰیۃ للطّالبین۔

अर्थात् मेरे निशानों में से जो ख़ुदा ने मेरे समर्थन में प्रकट किए वह भविष्यवाणी है जो मेरी दुआ स्वीकार हो कर एक उपद्रव फैलाने वाले व्यक्ति के संबंध में जो अल्लाह और रसूल का शत्रु था जिसका नाम लेखराम था और पेशावर ज़िले का रहने वाला था, मुझे बताई गई। और ख़ुदा ने उसके बारे में मुझे सूचना देकर मुझ से वादा किया कि वह उस को मार देगा। यह व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां दिया करता था और उसकी प्रतिष्ठा में अपमान के शब्द बोला करता था। तो मैंने उस पर बद्-दुआ की ओर ख़दा ने मेरी दुआ स्वीकार करके मुझे ख़ुशख़बरी दी और कहा कि मैं छ: वर्ष की मीआद में लेखराम को मारूंगा। इस भविष्यवाणी में उन लोगों के लिए जो ख़ुदा के प्रत्याशी हैं एक बड़ा निशान है।

समस्त हिन्दू, मुसलमान और ईसाई ब्रिटिश इण्डिया के रहने वाले इस बात के गवाह हैं और स्वयं सरकार भी गवाह है जिसकी सेवा में यह अरबी भविष्यवाणी वाली पुस्तक भेजी गई थी कि यह मृत्यु की भविष्यवाणी जो लेखराम के बारे में उसके क़त्ल होने से लगभग पांच वर्ष पूर्व की गई थी और लाखों लोगों में प्रसिद्ध हो चुकी थी। इसमें बार-बार विज्ञापनों द्वारा साफ़-साफ़ कह दिया था कि यह मृत्यु किसी साधारण बीमारी से नहीं होगी अपितु एक भयानक निशान के साथ

अर्थात् ज़ख़्म के साथ घटित होगी और दिलों को हिला देगी।★ अब देखो कि यह भविष्यवाणी कैसे साफ़ शब्दों में बता रही है कि ख़ुदा ने अटल तौर पर इरादा किया है कि लेखराम को छ: वर्ष की मुद्दत तक भयावह ढंग से मारे। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि जब पहली भविष्यवाणी जिस में 'नसब' और अज़ाब का शब्द है, की गई तो मूर्ख विरोधियों ने यह ऐतराज़ करना आरंभ किया कि अज़ाब की भविष्यवाणी क्या वास्तविकता रखती है। अज़ाब तो सर दर्द से भी हो सकता है और यद्यपि मौखिक भाषणों में उन्हें कहा गया कि इस स्थान पर अज़ाब से अभिप्राय मृत्यु ही है जैसा कि 'नसब' का शब्द बता रहा है। परन्तु उन्होंने नितान्त पक्षपात से ऐतराज़ करना न छोड़ा। पवित्र क़ुर्आन के स्थान प्रस्तुत किए गए जहां नूह की क़ौम के बारे में और लूत की क़ौम के बारे में और फ़िरऔन की क़ौम के बारे में अज़ाब का ज़िक्र था जिस से व्यापक मृत्यु अभिप्राय थी। तब भी उन्होंने न माना। अन्त में ख़ुदा तआला के दरबार में ध्यान किया गया कि वह एक खुले-खुले इल्हाम से लेखराम की मृत्यु से सूचित करे। तब ख़ुदा तआला ने वह इल्हाम प्रदान किया जो ऊपर लिखा गया है जिसमें अरबी इबारत में पूर्ण व्याख्या और विवरण सहित लेखराम की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी की गई है कि वह छ: वर्ष के अन्दर मार दिया जाएगा। किन्तु इस इल्हाम के बाद भी पक्षपाती प्रकृतियों का शोर कम न हुआ और उन्होंने कहा कि लोग हमेशा बीमारियों से मरते ही हैं और स्वस्थ भी होते हैं। यह कुछ भविष्यवाणी नहीं और अन्याय करते हुए यह न सोचा कि निस्सन्देह मृत्यु का सिलसिला जारी तो है परन्तु यह किसी इन्सान के अधिकार में नहीं कि किसी की मृत्यु के लिए कोई तिथि निर्धारित कर सके। परन्तु फिर भी पक्षपाती अख़बारों ने शोर मचाया कि यह भविष्यवाणी गोल मोल है और यद्यपि

★ यह इबारत जो पुस्तक बरकातुद्दुआ के अन्तिम पृष्ठ में है कि इस भविष्यवाणी का निशान दिलों को हिला देगा। इसके यह मायने हैं कि उस समय बहुत शोर उठेगा और भविष्यवाणी भयानक रूप में अचानक आशा के विरुद्ध प्रकट होगी जिस से दिल कांप जाएंगे। अर्थात् लेखराम की मृत्यु भयावह और डरावनी रूप पर घटित होगी जिस से सहसा कोलाहल मच जाएगा और दिलों पर चोट पहुंचेगी। इसी से।

ख़ूब समझाया गया कि अब तो इल्हाम के द्वारा स्पष्ट शब्दों में मृत्यु की सूचना दी गई। परन्तु वे अन्याय करते हुए लोगों को धोखा देते रहे और कहते रहे कि मृत्यु का सिलसिला भी तो मनुष्यों के लिए जारी है। इसमें भयावह निशान कौन सा है। अत: 'अनीस हिन्द' मेरठ ने जो हिन्दुओं की ओर से मेरठ में एक अख़बार निकलता है अपने 25 मार्च 1893 ई. के पर्चे में भी यही ऐतराज़ किया और यह लिखा कि ऐसी भविष्यवाणी लाभप्रद नहीं होगी और इसमें सन्देह शेष रह जाएंगे। परन्तु चूंकि मुझ को अल्लाह तआला ने अपने निरन्तर इल्हामों से भली भांति समझा दिया था कि इस भविष्यवाणी से अभिप्राय मृत्यु ही है। और मृत्यु भी क़त्ल की मृत्यु और भयावह मृत्यु। इसलिए मैंने अनीस हिन्द मेरठ के एडीटर को भी वह मुँह-तोड़ उत्तर दिया जिसको मैंने अपनी पुस्तक बरकातुद्दुआ के टायटल पेज के पृष्ठों में उन्हीं दिनों में भविष्यवाणी के घटित होने से लगभग पांच वर्ष पूर्व प्रकाशित कर दिया है। मैं उचित समझता हूं कि वह उत्तर जो लेखराम के क़त्ल से एक लम्बे समय पूर्व मेरी पुस्तक 'बरकातुद्दुआ' के टायटल पेज पर छप कर प्रसारित हो चुका है। इस स्थान पर उस पुस्तक में से नक़ल कर दूं। तो वह यह है –

स्वीकृत दुआ का नमूना

अनीस हिन्द मेरठ और हमारी भविष्यवाणी पर ऐतराज़

इस अख़बार का पर्चा प्रकाशित 25 मार्च 1893 ई. जिसमें मेरी उस भविष्यवाणी के बारे में जो लेखराम पेशावरी के संबंध में मैंने प्रकाशित की थी कुछ नुक्त:चीनी है, मुझे मिला। मुझे मालूम हुआ है कि कुछ और अखबारों पर भी यह सच्ची बात असह्य गुज़री है तथा वास्तव में मेरे लिए प्रसन्नता का स्थान है कि यों स्वयं विरोधियों के हाथों उसकी प्रसिद्धि और प्रकाशन हो रहा है। इसलिए मैं इस समय नुक्त: चीनी के उत्तर में केवल इतना लिखना पर्याप्त समझता हूं कि जिस तौर और तरीक़े से ख़ुदा तआला ने चाहा उसी प्रकार से किया। मेरा इसमें हस्तक्षेप नहीं। हां यह प्रश्न कि ऐसी भविष्यवाणी लाभप्रद नहीं होगी और उसमें सन्देह शेष रह जाएंगे। इस ऐतराज़ के बारे में भली-भांति समझता हूं कि यह समय से पूर्व है। मैं

इस बात का स्वयं इक़रारी हूं और अब पुनः इक़रार करता हूं कि यदि जैसा कि ऐतराज़ कर्ताओं ने विचार किया है भविष्यवाणी का निष्कर्ष अन्त में यही निकला कि कोई मामूली तप आया या मामूली तौर पर कोई दर्द हुआ या हैज़ा हुआ और फिर स्वास्थ्य की असली हालत स्थापित हो गई। तो वह भविष्यवाणी नहीं समझी जाएगी और निस्सन्देह मक्र और छल होगा। क्योंकि ऐसे रोगों से तो कोई भी ख़ाली नहीं। हम सब कभी न कभी बीमार हो जाते हैं। अतः इस स्थिति में निस्सन्देह मैं उस दण्ड के योग्य ठहरूंगा जिस की चर्चा मैंने की है। परन्तु यदि भविष्यवाणी का प्रकटन उस प्रकार से हुआ कि जिसमें ख़ुदा के प्रकोपीय निशान साफ़-साफ़ और खुले-खुले तौर पर दिखाई दें तो फिर समझो कि ख़ुदा तआला की ओर से है असल वास्तविकता यह है कि भविष्यवाणी की व्यक्तिगत श्रेष्ठता और रोब दिनों और समयों के निर्धारित करने की मुहताज नहीं। इस बारे में तो अज़ाब के उतरने के समय की एक सीमा निर्धारित करना पर्याप्त है। फिर यदि भविष्यवाणी वास्तव में एक महा रोब के साथ प्रकट हो तो वह स्वयं दिलों को अपनी ओर खींच लेती है और ये समस्त विचार तथा नुक़्तः चीनियां जो समय से पूर्व दिलों में पैदा होती हैं ऐसी समाप्त हो जाती है कि न्यायप्रिय अहले राय एक लज्जा के साथ अपनी रायों से रुजू करते हैं। इसके अतिरिक्त यह ख़ाकसार भी तो प्रकृति के नियम के अधीन है। यदि मेरी ओर से इस भविष्यवाणी की बुनियाद केवल इतनी है कि मैंने केवल डींग के तौर पर कुछ संभावित बीमारियों को मस्तिष्क में रख कर तथा अटकल से काम लेकर यह भविष्यवाणी प्रकाशित की है तो जिस व्यक्ति के बारे में यह भविष्यवाणी है वह भी तो ऐसा कर सकता है कि इन्हीं अटकलों की बुनियाद पर मेरे बारे में कोई भविष्यवाणी कर दे अपितु मैं राज़ी हूं कि बजाए छः वर्ष के जो मैंने उसके बारे में मीआद निर्धारित की है वह मेरे लिए दस वर्ष लिख दे। लेखराम की आयु इस समय शायद अधिक से अधिक तीस वर्ष की होगी और वह एक जवान, दृढ़ ढांचा उत्तम स्वास्थ्य का आदमी है और इस ख़ाकसार की आयु इस समय पचास वर्ष से कुछ अधिक है और कमज़ोर तथा शाश्वत रोगी और भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों में ग्रस्त है। फिर इसके बावजूद मुक़ाबले में स्वयं ज्ञात हो

जाएगा कि कौन सी बात इन्सान की ओर से है और कौन सी बात ख़ुदा तआला की ओर से।★ और ऐतराज़ कर्ता का यह कहना कि "ऐसी भविष्यवाणियों का अब युग नहीं है।" एक मामूली वाक्य है जो प्राय: लोग मुंह से बोल दिया करते हैं। मेरी समझ में तो सुदृढ़ और पूर्ण सच्चाइयों को स्वीकार करने के लिए यह एक ऐसा युग है कि शायद इसका उदाहरण पहले युगों में कोई भी न मिल सके। हां इस युग से कोई छल गुप्त नहीं रह सकता परन्तु यह तो सत्यनिष्ठों के लिए और भी प्रसन्नता का स्थान है क्योंकि जो व्यक्ति छल और सच में अन्तर करना जानता है वही सच्चाई का दिल से सम्मान करता है और खुशी के साथ दौड़कर सच्चाई को स्वीकार कर लेता है। और सच्चाई में कुछ ऐसा आकर्षण होता है कि वह स्वयं स्वीकार करा लेती है। स्पष्ट है कि युग सैकड़ों ऐसी नई बातों को स्वीकार करता जाता है जो लोगों के बाप दादों ने स्वीकार नहीं की थीं। यदि युग सच्चाइयों का प्यासा नहीं तो फिर क्यों एक महान इन्क़िलाब इसमें आरंभ है। युग निस्सन्देह वास्तविक सच्चाइयों का दोस्त है न कि दुश्मन। और यह कहना कि युग बुद्धिमान है और सीधे-सादे लोगों का समय गुज़र गया है। यह दूसरे शब्दों में युग की भर्त्सना है कि मानो यह युग एक ऐसा बुरा युग है कि वह सच्चाई को वास्तविक तौर पर सच्चाई पाकर फिर उस को स्वीकार नहीं करता। परन्तु मैं कदापि स्वीकार नहीं करूंगा कि वास्तव में ऐसा ही है। क्योंकि मैं देखता हूं मेरी ओर अधिकतर रुजू करने वाले और मुझ से लाभ उठाने वाले वही लोग हैं जो नवीन शिक्षा प्राप्त हैं कि कुछ उन में से बी.ए. और एम.ए. तक पहुंचे हुए हैं। और मैं यह भी देखता हूं कि यह नवीन शिक्षा प्राप्त लोगों का समूह सच्चाइयाँ बड़े शौक से स्वीकार करता

★ यह सत्य और असत्य का मुक़ाबला लेखराम की उस भविष्यवाणी से जो उसने मेरे बारे में की थी बड़ी सफ़ाई से प्रकट हो गया है क्योंकि लेखराम ने मेरे बारे में 1892 ई. में विज्ञापन दिया था कि यह व्यक्ति तीन वर्ष की मुद्दत में हैज़े से मर जाएगा। अत: मुद्दत हुई कि उसकी भविष्यवाणी की मीआद गुज़र गई और मैं ख़ुदा की कृपा से ज़िन्दा सुरक्षित मौजूद हूं। परन्तु मेरी भविष्यवाणी ने जिसकी छ: वर्ष की मीआद थी ऐसे समय में उसको मृत्यु का प्याला पिला दिया कि अभी ढ़ाई वर्ष भविष्यवाणी में से शेष थे। इसी से।

है और केवल इतना ही नहीं बल्कि एक नौ-मुस्लिम और शिक्षा प्राप्त यूरेशियन अंग्रेज़ों का गिरोह जिनका निवास मद्रास क्षेत्र में है हमारी जमाअत में सम्मिलित और समस्त सच्चाइयों पर विश्वास रखते हैं। अब मैं सोचता हूं कि मैंने वे सब बातें लिख दी हैं जो एक ख़ुदा से डरने वाले आदमी के समझने के लिए पर्याप्त हैं। आर्यों का अधिकार है कि मेरे इस निबंध पर भी अपनी ओर से जिस प्रकार चाहें हाशिए चढ़ाएं। मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं। क्योंकि मैं जानता हूं कि इस समय इस भविष्यवाणी की प्रशंसा करना या निन्दा करना दोनों समान है। यदि यह ख़ुदा तआला की ओर से है और मैं भली भांति जानता हूं कि उसी की ओर से है, तो अवश्य भयावह निशान के साथ घटित होगी और दिलों को हिला देगी और यदि उस की ओर से नहीं तो फिर मेरा अपमान प्रकट होगा। और यदि मैं उस समय तुच्छ तावीलें करूंगा तो यह और भी अपमान का कारण होगा। वह अस्तित्व अनादि, पवित्र और पुनीत जो समस्त अधिकार अपने हाथ में रखता है वह झूठे को कभी सम्मान नहीं देता। यह बिल्कुल ग़लत बात है कि लेखराम से मुझे कोई व्यक्तिगत शत्रुता है। मुझे व्याक्तिगत तौर पर किसी से भी शत्रुता नहीं, अपितु उस व्यक्ति ने सच्चाई से शत्रुता की और एक ऐसे कामिल और मुक़द्दस को जो समस्त सच्चाइयों का झरना था, अपमानपूर्वक स्मरण किया। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि अपने एक प्यारे का संसार सम्मान व्यक्त करे।

والسلام علی من اتبع الھدٰی

फिर ठीक उसी समय जबकि मैं अनीस हिन्द मेरठ के ऐतराज़ का उत्तर लिख रहा था, रात के समय लेखराम के दोबारा क़त्ल किए जाने की मुझे सूचना दी गई। तो इसी बरकातुद्दुआ के अन्तिम पृष्ठ, टायटल पेज के हाशिए पर वह ख़बर दर्ज है और वह यह है -

लेखराम पेशावरी के बारे में एक और सूचना

आज जो 2 अप्रैल 1893 ई. तदनुसार 14 रमज़ान 1310 हिज्री है, सुबह के समय थोड़ी सी ऊंघ की अवस्था में मैंने देखा कि मैं एक विशाल मकान में

बैठा हुआ हूं और कुछ दोस्त भी मेरे पास मौजूद हैं। इतने में एक व्यक्ति बलवान शरीर, रोबदार शक्ल जैसे उसके चेहरे से ख़ून टपकता है। मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। मैंने दृष्टि उठा कर देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह एक नई मख़्लूक़ और आदतों का व्यक्ति है जैसे इन्सान नहीं। बहुत क्रूर और भयानक फरिश्तों में से है। और उसकी धाक दिलों पर छाई हुई थी। और मैं उसको देखता ही था कि उसने मुझ से पूछा कि लेखराम कहां है तथा एक अन्य व्यक्ति का नाम लिया कि वह कहां है?★तब मैंने उस समय समझा कि यह व्यक्ति लेखराम और उस दूसरे व्यक्ति को दण्ड देने के लिए मामूर कौन है। हां यह निश्चित तौर पर स्मरण रहा है कि वह दूसरा व्यक्ति उन्हीं कुछ लोगों में से था जिसके बारे में मैं विज्ञापन दे चुका था और यह रविवार का दिन और चार बजे सुबह का समय था ⁂ इस पर

★ यह अब तक मालूम नहीं कि यह व्यक्ति कौन है। इसी से।

⁂ यह इस बात की ओर संकेत था कि रविवार के दिन लोग प्रातः उठते ही कहेंगे कि अब लेखराम संसार में कहां है। क्योंकि शनिवार को लेखराम क़त्ल होकर और जलाने वाली अग्नि से ख़ाक होकर बेनाम-व-निशान रह जाएगा और रविवार को उसके जीवन का समस्त क़िस्सा स्वप्न और कल्पना हो जाएगा-

हरीफ़े कि दर शंबा मीदाश्त जांबयक　　शंबा अज़ वे नुमांद निशां

अनुवाद - वह अहंकारी शत्रु जो शनिवार के दिन जीवित था परंतु रविवार को उसका नामोनिशान नहीं रहेगा

कुजा हस्त इमराज़े आं लेखराम　　बयकशंबा गोयन्द हर खासो आम

अनुवाद - और रविवार के दिन प्रत्येक विशिष्ट एवं सामान्य यही कहेगा कि अब लेखराम कहां है।

बदीं उमर मीदाश्त तबए दुरुश्त　　न इन्सां कि दस्ते ख़ुदायश बकुश्त

अनुवाद - इस आयु में वह सख्त और बुरा स्वभाव रखता था। उसमें मानवता नहीं थी इसलिए ख़ुदा तआला के हाथ ने उसे क़त्ल कर दिया।

अतः फरिश्ता जो रविवार की सुबह खूनी आंखों के साथ नज़र आया यह इस बात की ओर संकेत था कि वह शनिवार को लेखराम को क़त्ल करके रविवार को अपनी खूनी आंखें दुनिया को दिखाएगा। अर्थात रविवार की सुबह होते ही सामान्य तौर पर शोर पड़ जाएगा कि लेखराम क़त्ल होकर इस संसार से गुज़र गया।

ख़ुदा की भूरि-भूरि प्रशंसा।

फिर जब निश्चित एवं अटल तौर पर यह मामला निर्णय पा गया कि मेरी दुआ के स्वीकार होने पर आकाश पर यह तय हो चुका है कि लेखराम एक पीड़ा दायक अज़ाब के साथ क़त्ल किया जाएगा। तो मैंने उसी पुस्तक 'बरकातुद्दुआ' के पृष्ठ-28 में सय्यद अहमद खान साहिब के.सी.एस.आई. को सम्बोधित करके कुछ शेरों में उन पर प्रकट किया कि यदि दुआ के स्वीकार होने में आप को सन्देह है तो आप प्रतीक्षक रहें कि लेखराम के बारे में मैंने दुआ की है किस प्रकार से उसकी स्वीकारिता प्रकट होती है। और मैंने उस पुस्तक बरकातुद्दुआ के पृष्ठ 2,3,4 की ओर उनको ध्यान दिलाया और शेर के नीचे उन पृष्ठों के निशान लिख दिए। अत: वे शेर ये हैं –

رُوئے دلبر از طلبگاراں نمی دارد حجاب   می درخشد درخورو می تابد اندر ماہتاب

अनुवाद - यार का चेहरा अभिलाषियों से गुप्त नहीं है वह सूर्य में भी चमकता है और चन्द्रमा में भी।

لیکن آں رُوئے حسیں از غافلاں ماند نہاں   عاشقے باید کہ بردارند از بہرش نقاب

अनुवाद - परन्तु वह सुन्दर चेहरा लापरवाहों से गुप्त है सच्चा प्रेमी चाहिए ताकि उसके लिए नक़ाब उठाया जाए।

دامنِ پاکش ز نخوتہا نمی آید بدست   ہیچ راہے نیست غیر از عجز و درد و اضطراب

अनुवाद - उसका पवित्र दामन अहंकार से हाथ नहीं आता उसके लिए सिवाए दर्द और बेचैनी के कोई मार्ग नहीं है।

بس خطرناک است راہ کوچہ ٔ یار قدیم   جاں سلامت بایدت از خود ر ویہاسر بتاب

अनुवाद - उस अनादि महबूब का मार्ग बहुत ख़तरनाक है यदि तुझे जान की सलामती चाहिए तो स्वच्छंदता को त्याग दे।

تاکلامش فہم و عقل ناسزایاں کم رسد   ہر کہ ازخودگم شود او یابد آں راہِ صواب

अनुवाद - अयोग्य लोगों की बुद्धि उसके कलाम की तह तक नहीं पहुंच सकती जो अहंकार का त्याग करने वाला हो उसी को वह सही मार्ग मिलता है।

مشکلِ قرآں نہ از ابنائِ دُنیا حل شود ذوق آں میداند آں مستے کہ نوشد آں شراب

अनुवाद - क़ुर्आन को समझने की समस्या अहले दुनिया से हल नहीं हो सकती। इस शराब का स्वाद वही जानता है जो उस शराब को पीता है।

اے کہ آگاہی ندا د ندت ز انوارِ دروں در حقِ ما ہرچہ گوئی نیستی جائے عتاب

अनुवाद - हे वह व्यक्ति जिसे आन्तरिक प्रकाशों की कुछ ख़बर नहीं तू जो कुछ भी हमारे पक्ष में कहे रुष्ट होने का कारण नहीं।

از سرِ وعظ و نصیحت ایں سخنہا گفتہ ایم تامگرزیں مرہمے بہ گردد آں زخمِ خراب

अनुवाद - हम ने नसीहत और भलाई के तौर पर ये बातें कही हैं ताकि वह खराब ज़ख़्म इस मरहम से अच्छा हो।

ازدُعا کن چارہء آزار انکارِ دُعا چوں علاجِ مے زمے وقتِ خمار والتہاب

अनुवाद - दुआ के इन्कार का इलाज दुआ ही से कर जैसे नशा उतरने के समय शराब का इलाज शराब से ही किया जाता है।

اے کہ گوئی گر دعاہا را اثر بودے کجاست سوئے من بشتاب بنمایم ترا چوں آفتاب

अनुवाद - हे वह मनुष्य जो कहता है कि यदि दुआओं में असर है तो दिखाओ कहां है। अत: मेरी ओर दौड़ कि मैं तुझे सूर्य के समान दुआ का असर दिखाऊं।

ہاں مکن انکار زیں اسرار قدرتہائے حق قصہ کوتہ کن بہ بیں ازما دعائے مستجاب ★

अनुवाद - ख़बरदार ख़ुदा की क़ुदरत के भेदों का इन्कार न कर, बात समाप्त कर और हम से स्वीकार हो चुकी दुआ देख ले।

देखो पृष्ठ 2,3,4 टायटल पेज पुस्तक "बरकातुद्दुआ"

★हाशिया :- इस शेर में सय्यद अहमद ख़ान साहिब को सम्बोधित करके कहा गया है कि आप जो इस बात से इन्कारी हैं जो दुआएं स्वीकार होती हैं यह आप का विचार सर्वथा ग़लत है। इस पर तर्क यह है कि मैंने दुआ की है कि लेखराम क़त्ल के द्वारा से छ: वर्ष के अन्दर मारा जाए और ख़ुदा ने मुझे सूचना दे दी है कि वह दुआ स्वीकार हो गई है। और यह कि सय्यद अहमद ख़ान अन्तिम परिणाम तक ज़िन्दा रह कर स्वयं अपनी आंख से देख लेगा कि दुआ के अनुसार लेखराम छ: वर्ष के अन्दर क़त्ल किया गया। अत: सय्यिद अहमद ख़ान साहिब की मृत्यु न हुई कि 6 मार्च 1898 ई. आ गया जिसमें शनिवार के दिन लेखराम मारा गया। इसी से

अब यह भी जानना चाहिए कि इस भविष्यवाणी का स्पष्टीकरण केवल इस सीमा तक ही नहीं कि इसमें लेखराम की मृत्यु की ख़बर दी गई तथा यह भी कहा गया कि मामूली रोगों के द्वारा मृत्यु नहीं होगी अपितु भयावह निशान के साथ मृत्यु होगी। अपितु इसके साथ की एक दूसरी भविष्यवाणी में मृत्यु का दिन और तिथि भी बताई गई है। जैसा कि मेरी पुस्तक करामतुस्सादिक़ीन के पृष्ठ-54 में इसी बारे में एक अरबी शे'र है जो लगभग चार वर्ष लेखराम के क़त्ल की घटना से पहले कथित पुस्तक में छप कर समस्त क़ौमों में प्रसारित हो चुका है वही शेर है जिस पर हिन्दू अखबारों★ ने लेखराम के क़त्ल के समय ज़ोर दिया

★ पर्चा अखबार समाचार में जो एक हिन्दू पर्चा है लिखा है कि हमारा माथा तो उसी समय ठनका था जब लेखक मौऊद मसीही ने अपनी पुस्तक में सार्वजनिक घोषणा की थी कि लेखराम ईद को मारा जाएगा। देखो (पर्चा अख़बार समाचार) किन्तु स्मरण रहे कि इस एडीटर ने इस वर्णन में ग़लती की है कि हमने लेख़राम के क़त्ल किए जाने के लिए ईद का दिन भविष्यवाणी की दृष्टि से बताया था। अपितु जैसा कि इस शेर से प्रकट होता है कि जो हमने मूल इबारत में लिख दिया है। शेर में ईद के बाद का दिन बताया गया था। चूंकि इस शेर की भविष्यवाणी को सैकड़ों लोगों पर मौखिक तौर पर प्रकट किया गया था इसलिए हिन्दुओं में भी इसकी प्रसिद्धि हो चुकी थी इसलिए इस हिन्दू एडीटर ने कुछ ग़लती के साथ इस शेर की भविष्यवाणी को याद रखा। और फिर जब लेखराम क़त्ल किया गया तो महामान्य सरकार के उकसाने के लिए प्रस्तुत कर दिया। इस शेर में जो शब्द ستعرف يوم العيد है। कुछ मूर्खों ने इस पर यह ऐतराज़ किया है कि इसमें भविष्यवाणी का तो कुछ ज़िक्र नहीं। केवल ईद के दिन का ज़िक्र है, परन्तु बहुत अफ़सोस है कि यदि उनको अरबी का कुछ भी ज्ञान होता तो ऐसा न कहते। क्योंकि पहले चरण में साफ़ लिखा है कि بَشَّرنی رَبِّی और यह शब्द हमेशा भविष्यवाणी के लिए आता है। इसके अतिरिक्त यदि ईद के दिन से मामूली ईद का दिन ही अभिप्राय हो तो यह मायने होंगे कि तुझे ईद के दिन के आने की तेरा रब्ब समय से पूर्व ख़ुशख़बरी देता है और जब ईद आएगी तो तू उसको पहचान लेगा और ईद, ईद के साथ मिली हुई होगी। अब देखो कि इन अर्थों में कितनी व्यर्थ बातें और खराबियां इकट्ठी हैं। पहले ईद के बारे में जो एक सामान्य दिन है भविष्यवाणी करना और फिर इस सामान्य ईद में कौन सी बारीक वास्तविकता है जिसे पहचानने की आवश्यकता होगी, वह तो पहले ही पहचाना हुआ दिन है। और फिर इसके

था और सरकार में उसे प्रस्तुत किया था और यह शेर मचाया था कि यदि इस भविष्यवाणी करने वाले का लेखराम के क़त्ल की घटना में षड्यंत्र नहीं है तो क्यों और किन साधनों से सूचना पाकर लेखराम के मारे जाने से चार वर्ष पूर्व इस मनुष्य ने प्रसिद्ध किया कि वह ईद के दिन मारा जाएगा। और वह शेर यह है करामातुस्सादिक़ीन के पृष्ठ 54 में दर्ज है

وبشّرنی ربّی وقال مُبشّرًا
ستعرف یوم العیدو العید اقرب

अर्थात् मेरे ख़ुदा ने एक भविष्यवाणी के पूरा होने की मुझे ख़ुशख़बरी दी और ख़ुशख़बरी देकर कहा कि तू ईद के दिन को पहचानेगा जबकि निशान प्रकट होगा और ईद का दिन निशान के दिन से बहुत क़रीब तथा साथ मिला हुआ होगा। इस भविष्यवाणी के समझने में हिन्दू अख़बारों से यह ग़लती हुई है कि उन्होंने यह समझ लिया कि जैसे यह ख़बर दी गई है कि लेखराम ईद के दिन क़त्ल होगा। हालांकि कथित शेर में साफ़ यह वाक्य है कि ईद उस दिन से अक़रब होगी अर्थात् अत्यंत निकट होगी और उस दिन में तथा ईद के दिन में कोई दूरी नहीं होगी। और ऐसा ही प्रकटन में आया। क्योंकि ईद 1, शव्वाल को जुम्अः के दिन हुई और दूसरी शव्वाल को शनिवार के दिन 6 मार्च 1897 में मारा गया। इसके अनुसार जो इल्हामी शेर में दर्ज था कि लेखराम के मारे जाने का दिन ईद के दिन के साथ मिला हुआ होगा और मध्य में कोई फ़ासला नहीं होगा। और इल्हामी शेर से प्रकट है कि इस शेर में साफ़ शब्दों में वर्णन कर दिया गया था कि दूसरी शव्वाल को शनिवार के दिन लेखराम क़त्ल किया जाएगा। और वास्तव में यह समस्त वर्णन संक्षिप्त तौर पर इस भविष्यवाणी में मौजूद था कि عجل جسد له خوار क्योंकि सामिरी का बछड़ा हाथों से काटा गया था। फिर चूंकि उपमेय और उपमान में घटनाओं का समान होना आवश्यक है। इसलिए

शेष हाशिया- क्या अर्थ कि ईद-ईद के साथ मिली हुई होगी। मिलने का शब्द तो परस्पर विपरीत चीज़ों को चाहता है जिन का मुक़ाबला दिखाना आवश्यक है। अब जबकि ईद एक ही चीज़ है तो दूसरी चीज़ कौन सी हुई जिसके साथ मुक़ाबला हुआ। इसी से।

मानना पड़ा कि कि लेखराम जिसको सामरी के बछड़े से समानता दी गई है हाथों से काटा जाए। और चूंकि सामरी के बछड़े के काटे जाने का दिन शनिवार का दिन था और यहूदियों की एक ईद भी थी। इसलिए भविष्यवाणी की समानता के पूर्ण करने की दृष्टि से आवश्यक हुआ कि इस घटना के क़रीब एक ईद हो और शनिवार का दिन भी हो। तो यह भविष्यवाणी इस समानता की आवश्यकता के कारण उन समस्त घटनाओं की ओर संकते कर रही थी जो सामरी के बछड़े के सामने आई थी यहां तक कि जैसा कि सीमरी का बछड़ा टुकड़े-टुकड़े करके जलाया गया था। ऐसा ही लेखराम के साथ मामला हुआ क्योंकि पहले क़ातिल ने उसकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े किया। फिर डॉक्टर ने उसके ज़ख़्म को छुरी के साथ अधिक खोला। फिर उसके शव पर डॉक्टरी परीक्षा की छुरी चली। फिर उसके शव पर डॉक्टरी परीक्षा की छुरी चली। अत: सामरी के बछड़े की तरह तीन बार इन्सान के हाथों ने उसको टुकड़े-टुकड़े किया और फिर वह सामरी के बछड़े की तरह दरिया में डाला गया। कलाम का ख़ुलासा यह है कि जो कुछ उस सामरी के बछड़े के साथ हुआ। यहां तक कि ख़ुदा ने चाहा कि ईद का दिन और शनिवार का दिन भी सामरी के बछड़े की तरह लेखराम के हिस्से में आए तो एक दक्ष और प्रवीण के लिए यही भविष्यवाणी عجل جسد له خوار की इस बात को समझने के लिए पर्याप्त थी कि लेखराम किस दिन और किस उत्सव पर मरेगा और उसकी मृत्यु किस प्रकार से होगी। परन्तु ख़ुदा तआला ने मोटी बुद्धि वालों पर दया करके दूसरे इल्हामों में इस भविष्यवाणी की और भी विवरण तथा व्याख्या कर दी है और व्यापक शब्दों में बता दिया कि मृत्यु क़त्ल द्वारा होगी और ईद से एक दिन बाद यह घटना होगी। इस स्थान पर स्मरण रहे कि इस भविष्यवाणी में कुछ और सूक्ष्म संकेत भी हैं जो इस स्थान पर चर्चा करने योग्य हैं। उन सब में से एक यह है कि सामरी ने हाथ से बनाकर बछड़े को क़ौम के सामने पवित्र करके प्रकट किया था और उसकी यह कला बताई थी कि यह निर्जीव होने के बावजूद बैल की तरह आवाज़ करता है और उसकी आवाज़ के कारण यह प्रसिद्ध किया था कि जैसे जिब्राईल के क़दमों की ख़ाक

उसके पेट में है और उसकी बरकत से वह बैल की तरह आवाज़ निकालता है। किन्तु वास्तव में यह उसका समस्त झूठ था असल वास्तविकता यह मालूम होती है कि जैसे आजकल कुछ खिलौने ऐसे बनाए जाते हैं कि वायु के अन्दर और बाहर आने से उनमें से एक आवाज़ निकलती है। या जैसे कुछ ज़मींदार अपने खेतों पर चमड़े का एक ढोल सा बना लेते हैं और उसमें से एक भेड़िए के समान एक आवाज़ निकलती है। ऐसा ही यह भी एक खिलौना था। और क़ौम को धोखा देने के लिए तथा उस बछड़े को एक मुक़द्दस सिद्ध करने के लिए यह एक झूठा और निराधार वर्णन सामरी ने प्रस्तुत कर दिया कि रसूल के क़दमों की ख़ाक की बरकत से यह आवाज़ आती है। ताकि वे लोग इस बछड़े को बहुत ही मुक़द्दस समझ लें और ताकि सामरी एक चमत्कारी इन्सान माना जाए। और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शोभा और सम्मान कम हो जाए। पवित्र क़ुर्आन ने इस बात की कदापि पुष्टि नहीं की कि वास्तव में वह आवाज़ रसूल के चरणों की ख़ाक के कारण थी। केवल सामरी का कथन नक़्ल कर दिया है। और जैसा कि पवित्र क़ुर्आन की आदत है जो कभी काफ़िरों के कथन नक़्ल करता है और स्पष्ट तौर पर ग़लत होने के कारण उन कथनों के खण्डन करने की आवश्यकता नहीं देखता अपितु केवल क़ाइल का झूठा या पापी होना वर्णन करके बुद्धिमानों मूल वास्तविकता समझने के लिए सर्तक करता है। ऐसा ही इस स्थान पर भी उसने किया। फिर अब सामरी के इस झूठी योजना की समानता उसी प्रकार पूरी भी हो जाएं। तीसरा पहलू इस भविष्यवाणी का यह है कि यह किस प्रकार से पूरी हुई। क्या समस्त लोगों ने और प्रत्येक इस देश के फ़िर्क़ों में से मालूम कर लिया कि जैसा कि वर्णन किया गया था लेखराम इस भयावह मृत्यु से मरा जिस से समस्त हिन्दुओं के दिल हिल गए या लोगों को इस बात में सन्देह रहा कि शायद अब तक ज़िन्दा है। या यह कि किसी भयावह या शोर करने वाली मृत्यु से नहीं मरा अपितु मामूली तौर पर किसी ज्वर या खंसी या बवासीर से मर गया है जिस पर न कोई शोर उठा और न दिलों पर चोट लगी। और स्पष्ट है कि क़त्ल की मृत्यु से बढ़कर और कोई भी रूप मृत्यु का ऐसा

नहीं जो दुनिया में भय और शोर एवं कोलाहल को फैलाए और दिलों को हिला दे और वैरों को खड़ा करे। तथा स्वयं भविष्यवाणी में स्पष्ट शब्दों में क़त्ल की ओर संकेत भी था। अब इस छानबीन से स्पष्ट है कि इस भविष्यवाणी के तीनों पहलू ऐसी उच्चश्रेणी पर तथा व्यापक सबूत हैं जिन से बढ़कर कल्पना नहीं कर सकते। देखो कि किसी ज़ोर शोर से बरकातुद्दआ के टायटल पेज में समय से पूर्व प्रकाशित किया गया था कि यदि भविष्यवाणी का ख़ुलासा यही निकला कि कोई मामूली ज्वर आया या दर्द हुआ तो समझो कि यह भविष्यवाणी ख़ुदा तआला की ओर से नहीं है। वह विज्ञापन जिस में मैंने इल्हाम عجل جسد له خوار लिखा है जो पुस्तक आईना कमालाते इस्लाम के साथ सम्मिलित हैं। इस इल्हाम के नीचे जो व्याख्या है उसकी सम्पूर्ण इबारत ध्यानपूर्वक पढ़ो। तत्पश्चात् वह समस्त इबारत ध्यान से पढ़ो जो बरकातुद्दुआ के टाइटल पेज में दर्ज है फिर वे शेर ध्यान से पढ़ो जो इल्हाम عجل جسد له خوار के साथ विज्ञापन में दर्ज हैं जिनके अन्त में एक हाथ बना हुआ है जो लेखराम की ओर संकेत कर रहा है। और फिर वह कश्फ़ ध्यान से पढ़ो जो बरकातुद्दुआ के अन्तिम पृष्ठ के हाशिए पर है। और वह अरबी शेर पढ़ो जो करामातुस्सादिक़ीन के पृष्ठ-54 में है अर्थात् ستعرف يوم العيد والعيد اقرب और फिर वह अरबी भविष्यवाणी पढ़ो जो करामतुस्सादिक़ीन के अन्त में टाइटल पेज के पृष्ठ में स्पष्ट मौत के शब्द से है जिसमें छ: वर्ष की मीआद है। अब इन्साफ़ से सोचो कि क्या इतनी ग़ैब की बातें वर्णन करना मुफ़्तरी इन्सान का काम है? ख़ुदा से डरो और जान बूझ कर सच्चाई का ख़ून मत करो।

क्रम संख्या 67.	निशान का विवरण

ايّها النّاس قد ظهرت آيات الله لتائيدى وتصديقى و
شهدت لى شهداء الله من تحت ارجلكم ومن فوق رءوسكم
ومن يمينكم ومن شمالكم ومن انفسكم ومن آفاقكم
فهل فيكم رجل أمين ومن المستبصرين اتّقوا الله ولا

تکتموا شہادات عیونکم ولا تؤثروا الظّنون علی الیقین
ولا تقدّمُوا قصصًا غیر ثابتۃ علٰی مارئیتم باعینکم ان کنتم
متّقین واعلموا انّ اللّٰہ یعلم بما فی صدورکم ونیّاتکم ولا
یخفٰی علیہ شیء من حسناتکم وسیّاٰ تکم وانّ اللّٰہ علیم
بما فی صدور العالمین انکم رئیتم اٰیات اللّٰہ ثمّ نبذتم
دلائل الحقّ وراء ظھورکم واعرضتم عنھا متعمّدین وقد
کنتم منتظرین مجدّدًا من قبل فاذا جاء داعی اللّٰہ فولّیتم
وجوھکم مستکبرین أ تنتظرون مجدّدًا ھوغیری وقد
مرّ علٰی رأس المائۃ من سنین وقدمُلئت الارض جورًا وظلمًا
وسبق مساجد اللّٰہ مایُعبد فی دیور الضالین ففکّروا فی
انفسکم أ تجعلون رزقکم انّکم تکذبون الصادقین انّکم
کفرتم بمسیح اللّٰہ وآیاتہ وما کان لکم ان تتکلموا فیہ
وفیھا الّا خائفین

रोमी हुकूमत के एक प्रतिष्ठित पदाधिकारी हुसैन कामी के बारे में जो भविष्यवाणी 24 मई 1897 ई. और 25 जून 1897 ई. के विज्ञापन में दर्ज है, वह पूर्ण सफ़ाई से पूरी हो गई

मैंने अपने विज्ञापन 24 मई 1897 ई. में यह भविष्यवाणी प्रकाशित की थी कि रोमी हुकूमत में जितने लोग राज्य के प्रमुख पदाधिकारी समझे जाते हैं और हुकूमत की ओर से कुछ अधिकार रखते हैं उनमें से लोग बड़ी प्रचुरता में हैं जिन का चाल-चलन हुकूमत के लिए हानिप्रद है। क्योंकि उनकी क्रियात्मक हालत अच्छी नहीं है। इस भविष्यवाणी के लिखने और प्रकाशित करने का कारण जैसा कि मैंने इस विज्ञापन 24 मई 1897 ई. में विस्तारपूर्वक लिखा है यह हुआ

था कि एक व्यक्ति हुसैन बिक कामी नामक वायस क़ौन्सिल मुक़ीम कराची क़ादियान में मेरे पास आया जो स्वयं को रोम की हुकूमत की ओर से राजदूत व्यक्त करता था तथा अपने बारे में और अपने बाप के बारे में यह विचार रखता था कि जैसे ये दोनों हुकूमत के प्रथम श्रेणी के शुभ चिन्तक और दियानत एवं अमानत में दोनों मुक़द्दस अस्तित्व और सर से पैर तक नेकी, ईमानदारी और दीनदारी (धार्मिकता) का ख़मीर अपने अन्दर रखते हैं। अपितु जैसा कि पर्चा अख़बार 15 मई 1897 ई. नाज़िमुल हिन्द लाहौर में लिखा है। इस व्यक्ति की ऐसी डींगों से लोगों ने उसको हज़रत सुल्तान रोम का नायब समझा और यह प्रसिद्ध किया गया कि यह बुज़ुर्गवार केवल इस उद्देश्य से लाहौर इत्यादि इस देश के आस पास के इलाक़े में पधारे हैं ताकि इस देश के लापरवाहों को अपने पवित्र जीवन का नमूना दिखलाएं। और ताकि लोग उनके पवित्र कर्मों को देख कर स्वयं को उनके आदर्श अनुसार बनाएं। और इस प्रशंसा में यहां तक आग्रह किया गया था कि उसी एडीटर नाज़िमुल हिन्द ने अपने कथित पर्चे में अर्थात् 15 मई 1897 ई. में झूठ और बेशर्मी की कुछ भी परवाह न करके यह भी प्रकाशित कर दिया था कि यह नायब ख़लीफ़तुल्लाह सुल्तान-ए-रोम जो हृदय की पवित्रता, दियानत और अमानत के कारण सर्वथा नूर हैं यह क़ादियान में इसलिए बुलाए गए हैं ताकि क़ादियान का मिर्ज़ा अपने इफ़्तिरा से इस नाइबुल ख़िलाफ़त अर्थात् मज़हबे अनवारे इलाही (ख़ुदा तआला के प्रकाशों का द्योतक) के हाथ पर तौब: करे और भविष्य में स्वयं को मसीह मौऊद ठहराने से रुक जाए। और ऐसा ही और भी कुछ अख़बारों ने मेरी निन्दा को दृष्टिगत रख कर उस व्यक्ति की इतनी प्रशंसाएं की गईं कि करीब था कि उसे चौथे आकाश का फ़रिश्ता बना देते। परन्तु जब वह मेरे पास आया तो उसकी शक्ल देखने से ही मेरे विवेक ने यह गवाही दी कि यह व्यक्ति अमीन और दियानतदार और शुद्ध हृदय नहीं है। और साथ ही मेरे ख़ुदा ने मेरे दिल में डाला कि रोमी हुकूमत इन्हीं लोगों के पापों के परिणाम से ख़तरे में है क्योंकि यह लोग कि जो अपने पदों के अनुसार सुल्तान के सानिध्य से कुछ हिस्सा रखते हैं और उस हुकूमत की

अधिकांश संवेदनशील सेवाओं पर आदिष्ट हैं। ये अपनी सेवाओं को ईमानदारी से अदा नहीं करते, और हुकूमत के सच्चे शुभ चिन्तक नहीं हैं। अपितु अपनी भिन्न-भिन्न प्रकार की बेईमानियों से इस इस्लामी हुकूमत को जो हरमैन शरीफ़ैन के संरक्षक और मुसलमानों के लिए बचे हुए लोगों में से ग़नीमत (अच्छे) में से है कमज़ोर करना चाहते हैं। तो मैं इस इल्हाम के बाद केवल ख़ुदा के इल्का के कारण हुसैन बिक कामी से अत्यन्त विमुख हो गया। परन्तु न रोमी हुकूमत के वैर के कारण अपितु मात्र उसकी भलाई के कारण। फिर ऐसा हुआ कि कथित तुर्क ने निवेदन किया कि मैं एकान्त में कुछ बातें करना चाहता हूं। चूंकि वह मेहमान था इसलिए मेरे दिल ने शिष्टाचार के अधिकारों के कारण जो समस्त मानवजाति को प्राप्त हैं यह न चाहा कि उसके इस निवेदन को अस्वीकार कर दूं। अतः मैंने इजाज़त दी कि वह मेरे एकान्तवास में आ जाए और जो कुछ बात करना चाहता है करे। तो जब कथित राजदूत मेरे एकान्तवास में आया तो उसने जैसा कि मैंने 24 मई 1897 ई. के विज्ञापन के पहले और दूसरे पृष्ठ में लिखा है मुझ से यह निवेदन किया कि मैं उनके लिए दुआ करूं। तब मैंने उसको वही उत्तर दिया जो कथित विज्ञापन के पृष्ठ 2 में दर्ज है जो आज से लगभग दो वर्ष पूर्व समस्त ब्रिटिश इण्डिया में प्रकाशित हो चुका है। अतः 24 मई 1897 ई. के विज्ञापन पृष्ठ 2 की यह इबारत है जो मेरी ओर से कथित राजदूत को उत्तर मिला था और वह यह है जो मैं मोटी क़लम से लिखता हूं –"**सुल्तान रोम के साम्राज्य की अच्छी हालत नहीं है और मैं कश्फ़ के द्वारा उसके पदाधिकारियों की हालत अच्छी नहीं देखता। और मेरे नज़दीक इन हालतों के साथ अंजाम अच्छा नहीं।**"

देखो पृष्ठ 2 पंक्ति 5, 6, 24 मई 1897 ई. का विज्ञापन ज़ियाउल इस्लाम प्रेस क़ादियान। फिर मैंने इसी विज्ञापन के पृष्ठ 2 पंक्ति 9 के अनुसार उस तुर्क को नसीहत दी और संकेत से उसे यह समझाया कि इस कश्फ़ का प्रथम निशाना तुम हो। और तुम्हारे हालात इल्हाम की दृष्टि से अच्छे मालूम नहीं होते तौबाः करो ताकि नेक फल पाओ। अतः यही शब्द कि"तौबः करो ताकि नेक

फल पाओ" इस विज्ञापन के पृष्ठ 2 पंक्ति 9 में अब तक मौजूद है जो कथित राजदूत को सम्बोधित कर के कहा गया था। तो यह मेरा वर्णन जो इस विज्ञापन में से इस स्थान पर लिखा गया है दो भविष्यवाणियों पर आधारित था। (1) एक यह कि मैंने उसको स्पष्ट शब्दों में समझा दिया कि तुम लोगों का चाल-चलन अच्छा नहीं है तथा दियानत और अमानत की नेक विशेषताओं से तुम वंचित हो। (2) दूसरे यह कि यदि तेरी यही हालत रही तो तुझे अच्छा फल नहीं मिलेगा और तेरा अंजाम बुरा होगा।

फिर मैंने पृष्ठ 3 में बतौर भविष्यवाणी कथित राजदूत (सफ़ीर) के बारे में लिखा है –

"उसके लिए उत्तम था (अर्थात् कथित सफ़ीर के लिए) कि मेरे पास न आता। मेरे पास से ऐसी बद्गोई से वापस जाना उसका बड़ा दुर्भाग्य है।"

देखो पृष्ठ 3 पंक्ति 1 विज्ञापन 24 मई 1897 ई. फिर इसी पृष्ठ की पंक्ति 9 में यह भविष्यवाणी है –

"अल्लाह जल्ला शानहू जानता है जिस पर झूठ बांधना लानत का दाग़ खरीदना है कि उस अन्तर्यामी ने मुझे पहले से सूचना दे दी थी कि इस व्यक्ति की प्रकृति में कपट है।"

फिर मैंने 25 जून 1897 ई. के विज्ञापन के पृष्ठ 6 में कथित भविष्यवाणी की पुनरावृत्ति करके दसवीं पंक्ति से सोलहवीं पंक्ति तक यह इबारत लिखी है –

"हम ने पहले विज्ञापनों में तुर्की सरकार पर उसके कुछ बहुत बड़े हस्तक्षेप करने वाले और ख़राब आन्तरिक पदाधिकारी तथा उच्च पदाधिकारी तथा वज़ीरों की के कारण, न कि सुल्तान के के कारण, निश्चित रूप से उस ईश्वर प्रदत्त नूर और प्रतिभा तथा इल्हाम की प्रेरणा से जो हमें हुआ है, कुछ ऐसी बातें लिखीं हैं कि स्वयं उनके अर्थ के भयावह प्रभाव से हमारे दिल पर एक अद्भुत आर्द्रता और दर्द छा जाता है। अत: हमारा वह लेख, जैसा कि गन्दे विचार वाले समझते हैं किसी अहंकारपूर्ण जोश पर आधारित न था अपितु उस प्रकाश के झरने से

निकला था जो ख़ुदा की दया ने हमें प्रदान किया।''

फिर इसी विज्ञापन के पृष्ठ 4 में पंक्ति 19 से 21 तक यह इबारत है –

''क्या संभव न था कि जो कुछ मैंने रोमी हुकूमत की आन्तरिक व्यवस्था के बारे में वर्णन किया वह वास्तव में सही हो और तुर्की सरकार के ताने-बाने में ऐसे धागे भी हों जो समय पर टूटने वाले और ग़द्दार प्रकृति को प्रकट करने वाले हों।''

स्मरण रहे कि अभी मैं विज्ञापन 24 मई 1897 ई. के हवाले से वर्णन कर चुका हूं कि यह गद्दारी और कपटाचार की प्रकृति ख़ुदा के इल्हाम द्वारा हुसैन बिक कामी में मालूम कराई गई है। निष्कर्ष यह कि मेरे इस विज्ञापनों में जितनी भविष्यवाणियां हैं जो मैंने इस स्थान पर दर्ज कर दी हैं। इन सब से प्रथम स्वयं अभीष्ट कथित हुसैन कामी था। हां भविष्यवाणी से यह भी समझा जाता था कि इस तत्त्व के और भी बहुत से लोग हैं जो रोम की हुकूमत के पदाधिकारी और कर्मचारी समझे जाते हैं। परन्तु बहरहाल इल्हाम का प्रथम निशाना यही व्यक्ति हुसैन कामी था जिसके बारे में प्रकट किया गया कि वह कदापि अमीन और दियानतदार नहीं और उसका अंजाम अच्छा नहीं जैसा कि अभी मैंने अपने 24 मई 1897 ई. के विज्ञापन के सन्दर्भ से लिखा है कि हुसैन कामी के बारे में मुझे इल्हाम हुआ कि यह आदमी हुकूमत के साथ दियानत से संबंध नहीं रखता अपितु इसकी प्रकृति में कपटाचार है। और उसी को मैंने सम्बोधित करके कहा कि तौबः करो ताकि नेक फल पाओ।

ये तो मेरे इल्हाम थे जो मैंने साफ़दिली से लाखों लोगों में 24 मई 1897 ई. के विज्ञापन तथा 25 जून 1897 ई. के विज्ञापन के प्रकाशित करने पर हज़ारों मुसलमान मुझ पर टूट पड़े। कुछ को तो सोच-विचार की कमी के कारण यह धोखा लगा कि जैसे मैने रोम के सुल्तान के अस्तित्व पर कोई आक्रमण किया है। हालांकि वे मेरे विज्ञापन अब तक मौजूद है। सुल्तान के अस्तित्व से उन भविष्यवाणियों का कुछ संबंध नहीं। केवल कुछ हुकूमत के पदाधिकारी और कर्मचारी लोगों के बारे में इल्हाम प्रकाशित किया गया है कि वे आमीन और

दियानतदार नहीं हैं। और खुले-खुले तौर पर संकेत किया गया है कि इन इल्हामों का प्रथम निशान वही हुसैन कामी है और वही अमानत और दियानत की पद्धति से वंचित और अभागा है। और इन विज्ञापनों के प्रकाशित होने के बाद कुछ अखबार वालों ने हुसैन कामी की सहायता में मुझ पर आक्रमण किए कि ऐसे अमीन और दियानतदार के बारे में यह इल्हाम प्रकट किया है कि वह हुकूमत का सच्चा अमीन और दियानतदार पदाधिकारी नहीं है और उसकी प्रकृति में कपट की अतियशयोक्ति है और उसको डराया गया है कि तौब: कर अन्यथा तेरा अंजाम अच्छा नहीं। हालांकि वह मेहमान था। इन्सानियत की यह मांग थी कि उसका सम्मान किया जाता। इन समस्त आरोपों का मेरी ओर से यही उत्तर था कि मैंने अपने नफ़्स के जोश से हुसैन कामी को कुछ नहीं कहा अपितु जो कुछ मैंने उस पर आरोप लगाया था वह ख़ुदा के इल्हाम के माध्यम से था न कि हमारी ओर से। किन्तु खेद कि अधिकतर अख़बार वालों ने इस पर सहमति कर ली कि वास्तव में हुसैन कामी बड़ा अमीन और दियानतदार अपितु नितान्त बुज़ुर्गवार और ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन सुल्तान-ए-रोम का नायब था। उस पर ज़ुल्म हुआ कि उसके बारे में ऐसा कहा गया। और अधिकांश ने तो अपनी बात को अधिक रंग चढ़ाने के लिए मेरे समस्त वाक्यों को महा महिम सुल्तान की ओर सम्बद्ध कर दिया ताकि मुसलमानों में जोश पैदा करें। तो मेरे इन इल्हामों से अधिकतर मुसलमान उत्तेजित हो गए तथा कुछ ने मेरे बारे में लिखा कि यह व्यक्ति वाजिबुल क़त्ल है।

अब हम नीचे बताते हैं कि हमारी यह भविष्यवाणी सच्ची निकली या झूठी। स्पष्ट हो कि समय संभवत: दो या तीन माह का गुज़रा है कि एक प्रतिष्ठित तुर्क के माध्यम से हमें यह ख़बर मिली थी कि कथित हुसैन कामी अपनी एक आपराधिक बेईमानी के कारण अपने पद से पदच्युत किया गया है और उसकी जायदाद ज़ब्त की गई। परन्तु मैंने इस ख़बर को एक व्यक्ति की रिवायत विचार कर के प्रकाशित नहीं किया था कि शायद ग़लत हो। आज अख़बार नय्यर आसिफ़ मद्रास दिनांक 12 अक्टूबर 1899 ई. के द्वारा हमें विस्तृत तौर मालूम हो

गया कि हमारी वह भविष्यवाणी हुसैन कामी के बारे में नितान्त कामिल सफ़ाई से पूरी हो गई। और वह नसीहत जो हमने अपने एकान्त गृह में उसको की थी कि तौबः करो ताकि नेक फल पाओ। जिसको हमने अपने 24 मई 1897 ई. के विज्ञापन में प्रकाशित कर दिया था। उस पर पाबन्द न होने से अन्ततः वह अपने कर्म दण्ड को पहुंच गया। और अब वह अवश्य उस नसीहत को याद करता होगा। परन्तु खेद यह है कि वह इस देश के कुछ अख़बारों के एडीटरों को और मौलवियों को भी जो उसको नायब ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन और अमीन का पदाधिकारी समझ बैठे थे अपने साथ ही शर्मिन्दगी का हिस्सा दे गया और इस प्रकार से उन्होंने एक सच्चे की भविष्यवाणी को झुठलाने का स्वाद चख लिया। अब उनको चाहिए कि भविष्य में अपनी जीभों को संभालें। क्या यह सच नहीं कि मुझे झुठलाने के कारण बार-बार उनको शर्मिन्दी पहुंच रही है? यदि वे सच पर हैं तो क्या कारण कि प्रत्येक बात के अन्त में क्यों उनको लज्जित होना पड़ता है। अब हम कथित अख़बार में से वह चिट्ठी प्रारंभिक इबारत सहित नीचे नक़ल कर देते हैं और वह यह है -

"क्रेट और हिन्दुस्तान के कुछ पीड़ित"

"हमें आज की विलायती डाक में अपने एक योग्य और प्रतिष्ठित संवाददाता के पास से एक क़ुस्तुनतुनिया वाली चिट्ठी मिली है जिसको हम अपने दर्शकों की सूचना हेतु नीचे दर्ज किए देते हैं और ऐसा करते हुए हमें बहुत अफ़सोस होता है। अफ़सोस इस कारण से कि हमें अपनी समस्त आशाओं के विरुद्ध उस आपराधिक बेईमानी को जो सब से बड़ी और सब से अधिक सभ्य और व्यवस्थित इस्लामी हुकूमत के वायस क़ौन्सिल की ओर से बड़ी बेदर्दी के साथ की गई, अपने इन कानों से सुनना और पब्लिक पर प्रकट करना पड़ा है। जो हालात जनाब मौलवी हाफ़िज़ अब्दुल रहमान साहिब हिन्दी अप्रवासी क़ुस्तुनतुनिया ने हमें मालूम कराई है उस से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता

है कि हुसैन बिक कामी ने बड़ी बेशर्मी के साथ क्रेट के पीड़ितों के रुपए को बिना डकार के हज़्म कर लिया और कर्मचारी चन्दा कमेटी ने बड़ी प्रतिभा और कठिन परिश्रम के साथ उन से रुपया उगलवाया परन्तु यह मालूम नहीं हुआ कि कथित वायस कौन्सिल पर अदालते उस्मानिया में कोई नालिश की गई या नहीं। हमारी राय में ऐसे ख़ाइन (बद दियानत) को अदालत की कार्रवाई के द्वारा इब्रत अंगेज़ (सीख देने वाला) दण्ड देना चाहिए। बहरहाल हम आशा करते हैं कि यही एक केस ग़बन का होगा जो इस चन्दे के संबंध में घटित हुआ हो। और जो चन्दे की रकमें जनाब मुल्ला अब्दुल क़य्यूम साहिब प्रथम ताल्लुक:दार लंगस्गोर और जनाब अब्दुल्लअज़ीज़ बादशाह साहिब टर्किश क़ौन्सल मद्रास के माध्यम से हैदराबाद और मद्रास से भेजी गईं वह बिना ख़यानत क़ुस्तुनतुनिया को कमेटी "चन्दा के पास बराबर पहुंच गई होंगी।"

"क़ुस्तुनतुनिया की चिट्ठी"

"हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने जो पिछले दो सालों में क्रेट के प्रवासियों और यूनान ग्रुपें (حربِ یونان) की सेना के घायलों के लिए चन्दा उपलब्ध करके क़ौन्सल बराए दौलत-ए-अलिय्य: तुर्किया मुक़ीम हिन्द को दिया था। मालूम होता है कि प्रत्येक चन्दे का धन सर्वांगपूर्ण कुस्तुनतुनिया में नहीं पहुंचा। और इस बात के विश्वास करने का यह कारण होता है कि हुसैन बिक कामी वाईस क़ौन्सल मुक़ीम कराची को जो एक हज़ार छ: सौ रुपए के लगभग मौलवी इन्शाअल्लाह साहिब एडीटर अख़बार 'वकील' अमृतसर और मौलवी महबूब आलम साहिब एडीटर पेसा अख़बार लाहौर ने विभिन्न स्थानों से वसूल करके भेजा था वह सब ग़बन कर गया। क़ुस्तुनतुनिया में एक कौड़ी तक नहीं पहुंचाई। परन्तु ख़ुदा का धन्यवाद है कि सलीम पाशा मुलहिमा कारकुन

चन्दा कमेटी को जब ख़बर पहुंची तो उसने बड़ी जान तोड़ कोशिश से इस रुपए को उगलवाने का प्रयास किया और उसकी स्वामित्व की भूमि को नीलाम करा कर रक़म की वसूली का प्रबन्ध किया और बाब आली में ग़बन की ख़बर पहुंचाकर नौकरी से पदच्युत कराया। इसलिए हिन्दुस्तान के समस्त अख़बार वालों की सेवा में निवेदन है कि वे इस घोषणा को क़ौमी सेवा समझकर चार बार निरन्तर अपने अख़बारों में प्रसिद्ध करें और जिस समय उनको मालूम हो कि अमुक व्यक्ति के माध्यम से इतना रुपया चन्दे का भेजा गया तो उसको अपने अख़बारों में प्रसिद्ध कराएं और नाम पते सहित ऐसा स्पष्ट लिखें कि बशर्ते आवश्यकता उस से पत्राचार हो सके और उस अख़बार का एक पर्चा ख़ाकसार के पास क़ाहिरा इस पते पर रवाना करें –

हाफ़िज़ अब्दुर्रहमान अलहिन्द अल अमृतसरी सिक्का जदीद, वकाला सालेह आफ़न्दी क़ाहिरा (मिस्र)"

क्रम संख्या 68.	निशान का विवरण

और उन समस्त निशानों के जो ख़ुदा तआला की कृपा से मेरे हाथ पर प्रकटन में आए हैं कि यह है कि जब पुस्तक 'उम्महातुल मोमिनीन' ईसाइयों की ओर से प्रकाशित हुई तो अंजुमन हिमायत इस्लाम लाहौर के सदस्यों ने सरकार के इस निबंध का मेमोरियल भेजा कि इस पुस्तक का प्रकाशन बन्द किया जाए और यह कि इस लेखक से, जिस ने ऐसी गन्दी पुस्तक लिखी पूछताछ हो। परन्तु मैं उनके मेमोरियल का विरोधी था और मैंने अपने एक लेख में साफ़ तौर पर यह प्रकाशित किया कि यह पहलू ग्रहण करना अच्छा नहीं है और मुझे उन दिनों में अंजुमन हिमायत इस्लाम के विरुद्ध यह इल्हाम हुआ था –

ستذکرون ما اقول لکم وافوّض امری الی اللہ

अर्थात् शीघ्र ही तुम्हें यह मेरी बात याद आएगी कि इस तरीके को ग्रहण करने में असफ़लता है और जिस बात को मैंने ग्रहण किया है अर्थात् विरोधियों के

आरोपों का खण्डन करना और उनका उत्तर देना, इस बात को मैं ख़ुदा तआला के सुपुर्द करता हूं। अर्थात् ख़ुदा मेरे काम का संरक्षक होगा। परन्तु वह इरादा जो तुम ने किया है कि उम्महातुल मोमिनीन के लेखक को दण्ड दिलाओ इसमें तुम्हें सफ़लता कदापि नहीं होगी और तुम्हें बाद में याद आएगा कि जो समय से पूर्व बताया गया वह निश्चित और सही था। वह इल्हाम है जो समय से पूर्व अपनी जमाअत में से एक बड़े गिरोह को सुनाया गया था। फिर मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब भैरवी और मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. इत्यादि अहबाब इस बात के गवाह हैं और जैसा कि मैंने ख़ुदा का इल्हाम पाकर बहुत से लोगों पर प्रकट कर दिया था। ऐसा ही प्रकटन में आया अर्थात् अंजुमन हिमायत इस्लाम के सदस्यों ने जिस उद्देश्य से अपना मेमोरियल पुस्तक उम्महातुल मोमिनीन के बारे में जनाब लेफ्टीनेण्ट गवर्नर बहादुर ख़ान किया था, अस्वीकार हुआ और पुस्तक 'उम्महातुल मोमिनीन' का लेखक किसी गिरफ़्त के नीचे न आया।

क्रम संख्या 69.	निशान का विवरण

और उन समस्त भविष्यवाणियों में से जो ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट की एक यह है कि मेरे एक निष्कपट दोस्त मिर्ज़ा मुहम्मद यूसुफ़ बेग सामानवी जो सामाना इलाक़: रियासत पटियाला के निवासी हैं (और एक लम्बी अवधि से मुझ से प्रेम, निष्कपटता और श्रद्धा का संबंध रखते हैं तथा उन लोगों में से हैं जिन के बारे में मुझे विश्वास है कि ख़ुदा तआला ने उनके दिलों में एक सच्चा प्रेम बिठा दिया है जिसके साथ वे जीवन पर्यन्त रहेंगे और जिनके साथ वह इस संसार से गुज़रेंगे) उनका अर्थात् कथित मिर्ज़ा साहिब का लड़का मिर्ज़ा इब्राहीम बेग (स्वर्गीय) जो नितान्त ग़रीब, सौम्य, श्रीमुख और सुन्दर था, बीमार हुआ। तब उन्होंने सामाना से मेरी ओर पत्र लिखा कि मेरा लड़का बीमार है उसके लिए दुआ की जाए। तो जब इब्राहीम (स्वर्गीय) के लिए मैंने दुआ की तो मुझे तुरन्त एक कश्फ़ी हालत पैदा होकर दिखाई दिया कि इब्राहीम मेरे पास बैठा है और कहता है कि मुझे स्वर्ग से सलाम पहुंचा दो। जिसके मायने उस समय मेरे दिल में यह डाले गए कि अब इब्राहीम के लिए दुनिया की सलामती का

मार्ग बन्द है अर्थात् जीवन का अन्त है। इसलिए उसकी रूह अब स्वर्ग की सलामती चाहती है अर्थात् यह कि हमेशा के लिए स्वर्ग में दाख़िल होकर अनश्वर ख़ुशहाली पाए। अत: यद्यपि दिल नहीं चाहता था कि मिर्ज़ा इब्राहीम बेग (स्वर्गीय) के पिता श्री अर्थात् मिर्ज़ा मुहम्मद यूसुफ़ बेग साहिब को इस आने वाली घटना से सूचना दी जाए। परन्तु मैंने बहुत कुछ सोचने के बाद उचित समझा कि संक्षिप्त शब्दों में इस ग़ैब के मामले की उनको सूचना दे दूं। तो मैंने उस कश्फ़ से उनको सूचना दे दी और फिर थोड़े दिनों के बाद मिर्ज़ा इब्राहीम मृत्यु पाकर अपने संकट ग्रस्त पिता के उस महान पुण्य का कारण हुआ जो एक प्रिय पुत्र की जुदाई से जो एक ही हो और जवान, गरीब स्वभाव, आज्ञाकारी और सुन्दर हो दयालु और कृपालु ख़ुदा की ओर से संकट ग्रस्त पिता को पहुंचाता है। सारांश यह कि यह कश्फ़ जो स्वर्गीय इब्राहीम के बारे में मुझे हुआ बहुत से लोगों को समय से पूर्व सुनाया गया था और स्वयं मिर्ज़ा मुहम्मद यूसुफ़ बेग साहिब को पत्र द्वारा इस कश्फ़ से अवगत करा दिया गया था जो अब तक ख़ुदा की कृपा से ज़िन्दा मौजूद हैं। और ख़ुदा तआला की क़सम खाकर इस समस्त वर्णन की पुष्टि कर सकते हैं।

अब सोचना चाहिए कि ग़ैब (परोक्ष) का विशाल ज्ञान ग़ैर को कदापि नहीं दिया जाता और यद्यपि संभव है कि ग़ैर को भी जिसके संबंध ख़ुदा तआला से सुदृढ़ नहीं हैं, कभी सच्चा स्वप्न आ जाए या सच्चा कश्फ़ हो जाए परन्तु विलायत और स्वीकारिता की निशानियों में अनिवार्य तौर पर यह शर्त है कि ग़ैबी मामले और गुप्त बातें इतनी प्रकट हों कि वे अपनी प्रचुरता में दुनिया के समस्त लोगों से बढ़ी हुई हों और इस प्रचुरता से हों कि कोई भी उनका मुक़ाबला न कर सके। यह बात स्मरण रखने योग्य है कि जब ख़ुदा तआला अपनी महान कृपा और सार्वजनिक पर मेहरबानी से किसी व्यक्ति को अपनी विलायत की पोशाक और करामत के पद से सम्मानित और बुलन्द करता है तो चार चीज़ों में उसको समूचा उसकी प्रजाति के बेटों और समस्त समकालीन लोगों से पूर्ण अन्तर प्रदान करता है और प्रत्येक व्यक्ति जो वह अन्तर उसके साथ संलग्न होता है उसके बारे में ठोस और निश्चित तौर पर ईमान रखना अनिवार्य हो जाता है कि वह ख़ुदा तआला के उन कामिल बन्दों और उच्च स्तर के वलियों में से है जिन को उसने अपने हाथ से चुना है और

अपनी विशेष दृष्टि से उनका प्रशिक्षण किया है। और वे चार चीज़ें जो कामिल वलियों और ख़ुदा के मर्दों की निशानी है, चार कमाल (ख़ूबियां) हैं जो बतौर निशान और बतौर विलक्षण के उनमें पैदा होते हैं और प्रत्येक कमाल में वे दूसरों से स्पष्ट और व्यापक तौर पर श्रेष्ठ होते हैं। अपितु वे चारों कमाल चमत्कार की सीमा तक पहुंचे हुए होते हैं और ऐसा आदमी अनमोल होता है और इस पद पर वही व्यक्ति पहुंचाता है जिसको अनादि अनुकम्पा ने सदैव से संसार को लाभ पहुंचाने के लिए चुना हो। और वे चार कमाल जो बतौर चार निशान या चार चमत्कार के हैं जो सबसे महान वली, क़ुतुबुल अक़्ताब और वलियों के सरदार की निशानी है ये हैं –

(1) प्रथम यह कि ग़ैबी बातें स्वीकारिता के बाद अन्य रूप में प्रचुरता से उस पर खुलती रहें और बहुत सी भविष्यवाणियां ऐसी सफ़ाई से प्रकट हो जाएं कि उस मात्रा की प्रचुरता और हालत की स्पष्टता की दृष्टि से कोई व्यक्ति उनका मुकाबला न कर सके और उनकी खूबियों की मात्रा एवं गुणवत्ता में किसी ग़ैर की भागीदारी की संभावना पूर्णतया समाप्त अपितु असंभव हो। अर्थात् जितने उस पर रहस्य प्रकट हों और जितनी उस की दुआएं स्वीकार होकर उन स्वीकारिताओं से उसको सूचित किया जाए और जितनी उसके समर्थन में आकाश और पृथ्वी और लोगों और संसार में विलक्षण निशान प्रकट हों पूर्णतया असंभव हो कि उनका कोई उदाहरण दिखा सके या उन ख़ूबियों में मुकाबले पर खड़ा हो सके। और ख़ुदा के ग़ैब के ज्ञान और असीमित प्रकाशों के कश्फ़ और आकाशीय समर्थन बतौर विलक्षण तथा चमत्कार एवं करामत उसको प्रदान की जाए कि मानो एक नदी है जो बह रही है और एक महान प्रकाश है जो आकाश से उतर कर पृथ्वी पर फैल रहा है और ये बातें इस सीमा तक पहुंच जाएं कि स्पष्ट तौर पर विलक्षण और युग में सर्वोपरि दिखाई दें और यह कमाल नुबुव्वत के कमाल का नाम है।

(2) और दूसरा कमाल जो बतौर निशान के जो वलियों के इमाम और सय्यदुल अस्फ़िया (चुने हुए लोगों के सरदार) के लिए आवश्यक है वे क़ुर्आन के समझने और अध्यात्म ज्ञानों की उच्च वास्तविकता तक पहुँचना है। यह बात आवश्यक तौर पर स्मरण रखने योग्य है कि पवित्र क़ुर्आन की एक निम्नस्तर की शिक्षा है और एक दरमियानी

तथा एक उच्च। और जो उच्चशिक्षा है वह अध्यात्म ज्ञान के प्रकाश और वास्तविक सौन्दर्य और ख़ूबी से भरपूर है कि निम्न या दरमियानी योग्यता की उस तक कदापि पहुँच नहीं हो सकती अपितु वह उच्च श्रेणी के अहले सफ़्वत (वली लोग) और शुद्ध प्रकृति वाले लोग उन सच्चाइयों को पाते हैं जिनकी प्रकृति सर्वथा प्रकाश होकर प्रकाश को अपनी ओर आकृष्ट करती है। तो सच्चाई का प्रथम पद जो उन को प्राप्त होता है दुनिया से नफ़रत और प्रत्येक निरर्थक बात से स्वाभाविक घृणा है। और इस आदत के पुख़्ता हो जाने के बाद एक दूसरे दर्जे पर सच पैदा होता है जिसको स्नेह, शौक़ और ख़ुदा की ओर रुजू से ताबीर कर सकते हैं। और इस आदत के पुख़्ता हो जाने के बाद एक तीसरे दर्जे पर सच्चाई पैदा होती है जिस को तबद्दुल-ए-आज़म (बड़ा परिवर्तन) और संसार से विरक्त और व्यक्तिगत मुहब्बत में फ़ना के दर्जे से ताबीर कर सकते हैं। और इस आदत के पुख़्ता हो जाने के बाद इन्सान में रूहे हक़ प्रवेश करती है और समस्त पवित्र सच्चाइयां और उच्च श्रेणी के अध्यात्म ज्ञान, तबियत के तरीक़े पर परिस्थितियां और प्रकृति पूर्ण आत्मविस्मृति एवं प्रफुल्लता उस व्यक्ति के पवित्र नफ़्स पर आने आरंभ हो जाते हैं। और गहरे से गहरे क़ुर्आन के मआरिफ़ एवं शरीअत के रहस्य उस व्यक्ति के दिल में जोश मारते और जीभ पर जारी होते हैं। और वे शरीअत के रहस्य और आत्म शुद्धि की नेकियां उस पर खुलती हैं कि अहले रस्म और आदत की अक़्लें उन तक नहीं पहुंच सकतीं। क्योंकि यह व्यक्ति नफ़हाते इलाहिया (ऐसा पद जिसमें व्यक्ति ख़ुदा के आदेश से बोलता है) (ख़ुदा की सुगंधों) के पद पर खड़ा होता है और रूहुल क़ुदुस उसके अन्दर बोलती है और समस्त झूठ और असत्य का हिस्सा उसके अन्दर से काटा जाता है। क्योंकि यह रूह से प्राप्त करता और रूह से बोलता और रूह से लोगों पर प्रभाव डालता है। और इस अवस्था में उसका नाम सिद्दीक़ होता है। क्योंकि उसके अन्दर से झूठ का अंधकार पूर्णतया निकलता और उसके स्थान पर सच्चाई का प्रकाश एवं पवित्रता प्रवेश करती हैं। और इस पद पर उच्च श्रेणी की सच्चाइयों का प्रकटन और उच्च अध्यात्म ज्ञानों का उसकी जीभ पर जारी होना उसके लिए बतौर निशान के होता है। उस की पवित्र शिक्षा जो सच्चाई के प्रकाश से खमीर की जा चुकी होती है दुनिया को आश्चर्य में डालती है। उसके पवित्र आध्यात्म ज्ञान

जो ख़ुदा में फ़ना होने के उद्गम और सच्चाई की पहचान से निकलते हैं समस्त लोगों को आश्चर्य में डालते हैं। और इस प्रकार के कमाल को सिद्दीक़ियत के कमाल का नाम दिया जाता है।

स्मरण रहे कि सिद्दीक़ वह कहलाता है जिसको सच्चाइयों का पूर्ण रूप से ज्ञान भी हो। और फिर पूर्ण एवं स्वाभाविक तौर पर उन पर स्थापति भी हो। उदाहरणतया उसको उन अध्यात्मज्ञानों की वास्तविकता ज्ञात हो कि ख़ुदा का एकत्व क्या चीज़ है और उसका आज्ञापालन क्या चीज़ और शिर्क (अनेकेश्वरवाद) से, निष्कपटता के किस पद पर पहुँचकर छुटकारा प्राप्त हो सकता है और अब्द होने (दासता) की क्या वास्तविकता है और निष्कपटता (इख़्लास) की वासत्विकता क्या तथा तौब: की वास्तविकता क्या। और धैर्य एवं भरोसा, प्रसन्नता एवं तल्लीनता, फ़ना और सच्चाई, वफ़ा और विनम्रता, वदान्यता और रोना-धोना, दुआ और क्षमा एवं लज्जा, दियानत एवं अमानत तथा संयम इत्यादि उत्तम शिष्टाचार की क्या-क्या वास्तविकताएं हैं, फिर इसके अतिरिक्त इन समस्त विशेषताओं पर स्थापित भी हो।★

★जिन महान लोगों को बड़ी-बड़ी महान ज़िम्मेदारियों के काम मिलते हैं और किसी समय ख़ुदा तआला से ज्ञान पाकर ख़िज्र की तरह ऐसे काम भी उनको करने पड़ते हैं जिन से एक अनुदार व्यक्ति की नज़र में वह कुछ शिष्टाचार की हालतों में या मिलजुल कर रहने के तरीक़ों में निन्दनीय ठहरते हैं उनके शत्रुओं की बातों की ओर देख कर कदापि बदगुमान नहीं होना चाहिए। क्योंकि अंधे शत्रुओं ने किसी नबी और रसूल को अपनी आलोचना से पृथक नहीं रखा। उदाहरणतया वह मूसा मर्दे ख़ुदा जिसके बारे में तौरात में आया है कि वह पृथ्वी के समस्त निवासियों से सर्वाधिक जानने वाला और अमीन है। विरोधियों ने उन पर ये ऐतराज़ किए हैं कि मानो वह नऊज़ुबिल्लाह नितान्त श्रेणी का कठोर हृदय और ख़ूनी इन्सान था जिसके आदेश से कई लाख दूध पीते बच्चे क़त्ल किए गए और ऐसा ही कहते हैं कि वह न दियानत एवं अमानत से हिस्सा रखता था और न वादे का पाबन्द था। क्योंकि उसके संकेत से बनी इस्राईल ने कई लाख रुपए के सोने और चांदी के बर्तन और बहुमूल्य आभूषण मिस्त्रियों से अस्थाई तौर पर लिए और यह समझौता किया कि हम अभी कुछ दिनों के बाद आकर ये समस्त माल वापस दे देंगे। परन्तु समझौता को तोड़ा और बेगाना माल

(3) तीसरा कमाल जो बड़े वलियों को दिया जाता है शहादत का पद हैं। और शहादत के पद से वह पद अभिप्राय है कि जब मनुष्य अपने ईमान की शक्ति से अपने ख़ुदा और प्रतिफल के दिन पर इतना विश्वास कर लेता है कि जैसे ख़ुदा तआला को अपनी आंख से देखने लगता है। तब इस विश्वास की बरकत

शेष हाशिया - हज़्म किया तथा झूठ बोला। और कहते हैं कि यह मूसा का पाप था। क्योंकि उसके मशवरे और जानकारी से ऐसा किया गया और उसने इस हरकत पर बनी इस्राईल को कुछ डांट-डपट नहीं की। अपितु उसी माल से वह भी खाता रहा। ऐसा ही हज़रत मसीह पर भी उनके शत्रुओं ने ऐतराज़ किया है कि वह संयम के पाबन्द न थे। अत: एक व्यभिचारिणी स्त्री ने एक उत्तम इत्र जो दुष्कर्म के माल से खरीदा गया था उनके सर पर मला और अपने बालों को उनके पैरों पर मला। और एक जवान एवं व्यभिचारिणी स्त्री का उनके शरीर को छूना और हराम का तेल उनके सर पर मलना और उनके अंगों से अपने अंगों का लगाना। यह एक ऐसी बात है जो एक परहेज़गार और संयमी इन्सान इसको करने वाला नहीं हो सकता तथा मसीह का इजाज़त देना कि ताकि उसके शागिर्द एक ग़ैर के खेत के खोशे (गुच्छे) मालिक की इजाज़त के बिना खाएं इस बात पर संकेत न करता कि नऊज़ुबिल्लाह कि मसीह को दियानत और अमानत की परवाह न थी। ये वे ऐतराज़ हैं जो यहूदियों ने हज़रत मसीह पर किए हैं। और यहूदियों की कुछ पुस्तकें जो मेरे पास मौजूद हैं इसी प्रकार की ऐसी सख़्ती उनमें हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर की गई है जिनमें यह सिद्ध करना चाहा है कि नऊज़ुबिल्लाह कोई भी नेक सिफ़त (विशेषता) हज़रत मसीह में मौजूद न थी। ऐसा ही ईसाइयों ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकदामनी, संयम और अमानत पर ऐतराज़ किए हैं और नऊज़ुबिल्लाह आंजनाब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक नफ़्स परस्त, ख़ून बहाने वाला और दूसरों के माल लूटने वाला इन्सान समझा है। तथा ऐसा ही राफ़िज़ियों ने हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की पाकदामनी और अमानत एवं दियानत तथा अदात पर भिन्न-भिन्न प्रकार के दोष लगाए हैं और उनके नाम मनुाफ़िक, दूसरों के माल हड़प करने वाला और अत्याचारी रखते हैं। और ऐसा ही ख़वारिज हज़रत अली रज़ि. को पापी ठहराते हैं और उनकी ओर बहुत सी संयम के विरुद्ध बातें सम्बद्ध करते हैं। अपितु ईमान के हुलिए से भी उनको खाली समझते हैं तो यहां स्वाभाविक तौर पर प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब सिद्दीक़ के लिए संयम, अमानत और दियानत शर्त है तो ये समस्त बुज़ुर्ग और उच्च वर्ग के इन्सान जो रसूल, नबी और वली

से शुभ कर्मों की कड़वाहट और कटुता दूर हो जाती है और ख़ुदा तआला का प्रत्येक प्रारब्ध अनुकूलता के कारण शहद की तरह दिल में उतरता और सम्पूर्ण सीने को मिठास से भर देता है और प्रत्येक कष्ट इनाम के रंग में दिखाई देता है। तो शहीद उस व्यक्ति को कहा जाता है जो ईमान की शक्ति के कारण ख़ुदा तआला का अवलोकन करता हो और उसके कटु प्रारब्ध से मधुर शहद की तरह

शेष हाशिया -हैं ख़ुदा तआला ने क्यों उनकी परिस्थितियों को जन सामान्य की नज़र में संदिग्ध कर दिया और वे उन के कथनों एवं कार्यों के समझने से इतने असमर्थ रहे कि उनको संयम, अमानत और दियानत के दायरे से बाहर समझा और ऐसा समझ लिया कि मानो वे लोग अत्याचारी और अवैध माल खाने वाले और निर्दोष का ख़ून करने वाले, झूठ बोलना, समझौता तोड़ना, नफ़्स परस्त और अपराधी पेशा थे। हालांकि दुनिया में बहुत से ऐसे लोग भी पाए जाते हैं जो न रसूल होने का दावा करते हैं और न नबी होने का, और न स्वयं को वली, इमाम और ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन कहलाते हैं। परन्तु इसके बावजूद कोई ऐतराज़ उन के चाल चलन तथा जीवन पर नहीं होता। तो इस प्रश्न का उत्तर यह है कि ख़ुदा तआला ने ऐसा किया ताकि अपने विशेष मान्य और प्रेमियों को दुर्भाग्यशाली जल्दबाज़ों से जिन की आदत बद गुमानी है गुप्त रखे। जैसा कि स्वयं उसका अस्तित्व इस प्रकार की बदगुमानी करने वालों से गुप्त है। दुनिया में बहुत से ऐसे पाए जाते हैं जो ख़ुदा तआला को गालियां देते हैं और उसे ज़ालिम और क़द्र को न पहचानने वाला समझते हैं या उसके अस्तित्व से ही इन्कारी हैं। वह क़िस्सा जो पवित्र क़ुर्आन में हज़रत आदम सफ़ीउल्लाह के बारे में वर्णित है कि फ़रिश्तों ने उन पर ऐतराज़ किया और ख़ुदा के पास कहा कि क्यों तू ऐसे उपद्रवी और ख़ून बहाने वाले को पैदा करता है? यह क़िस्सा अपने अन्दर यह भविष्यवाणी रखता है कि अहले कमाल की हमेशा आलोचना हुआ करेगी। ख़ुदा तआला ने इसी उद्देश्य से ख़िज़्र का किस्सा भी पवित्र क़ुर्आन में लिखा है ताकि लोगों को मालूम हो कि एक व्यक्ति अकारण ख़ून करके और अनाथों के माल को जानबूझ कर हानि पहुंचाकर फिर ख़ुदा तआला के नज़दीक बुज़ुर्ग और चुना हुआ है। हां इस प्रश्न का उत्तर देना शेष रहा कि इस प्रकार से ईमान उठ जाता है और बुरे इन्सानों के लिए एक बहाना हाथ आ जाता है और वे कोई दुष्कर्म करके ख़िज़्र की तरह कह सकते हैं कि हम ने यह कार्य ख़ुदा के आदेश से किया है। और यह एक मुश्किल का स्थान है कि एक ओर तो ख़ुदा यह कहे कि मैं अत्याचार और अश्लीलता का आदेश नहीं देता और फिर मूसा के माध्यम से निर्दोष लोगों के माल

आनन्द उठाता है और इसी मायने की दृष्टि से शहीद कहलाता है। और यह पद पूर्ण मोमिन के लिए बतौर निशान के है। और इसके बाद एक चौथा पद भी है।

जो कामिल पवित्र बातिन लोगों और वलियों सर्वांगपूर्ण तौर पर मिलता है। और वह सालेहीन (सदाचारियों) का पद है और किसी को सालेह उस समय कहा जाता है जबकि प्रत्येक ख़राबी से उसका आन्तरिक रिक्त और पवित्र हो

शेष हाशिया - बनी इस्राईल के क़ब्ज़े में दे दे और नितान्त शर्म योग्य तरीक़े अर्थात् झूठ बोल कर वह माल लिया जाए और फिर वादा तोड़कर हज़्म किया जाए। ऐसा ही मसीह को इजाज़त दी कि वह हराम का इत्र मलवाने से नफ़रत न करे और ना मुहरम (जिससे विवाह सम्भव हो) स्त्री जवान सुन्दर के अंगों से अंगों को मिलाने के समय कुछ भी संयम और परहेज़गारी का ध्यान न रखे। फिर एक ओर तो ख़ुदा अकारण ख़ून को बड़े पापों में दाख़िल करे और फिर ख़िज़्र को इजाज़त दे ताकि मासूम बच्चे को बिना पाप क़त्ल कर दे। इस मुश्किल का उत्तर यही है कि ऐसे ऐतराज़ केवल बदगुमानी से पैदा होते हैं। यदि कोई सत्यभिलाषी और संयमी प्रकृति का व्यक्ति है तो उसके लिए उचित तरीक़ा यह है कि उन कामों पर अपनी राय व्यक्त न करे जो क़ुर्आन के अस्पष्ट वाक्यों में से और बहुत कम हैं क्योंकि बहुत कम में कई कारण पैदा हो सकते हैं और यह पापियों का तरीक़ा है कि आलोचना के समय में उस पहलू को छोड़ देते हैं जिसके सैकड़ों उदाहरण मौजूद हैं। और बदनीयती के जोश से एक ऐसे पहलू को लेते हैं जो नितान्त अल्प अस्तित्व और अस्पष्ट होता है और नहीं जानते कि यह अस्पष्ट वाक्यों का पहलू जो न होने के तौर पर पवित्र लोगों के अस्तित्त्व में पाया जाता है। यह दुष्ट लोगों की परीक्षा के लिए रखा गया है। यदि ख़ुदा तआला चाहता तो अपने पवित्र बन्दों का तरीक़ा और अमल प्रत्येक पहलू से ऐसा साफ़ और रोशन दिखाता कि दुष्ट इन्सान को ऐतराज़ की गुंजायश न होती। परन्तु ख़ुदा तआला ने ऐसा न किया ताकि वह अपवित्र स्वभाव लोगों की अपवित्रता प्रकट करे। नबियों, रसूलों और वलियों के कारनामों में हज़ारों नमूने उनके संयम, शुद्धता, अमानत, दियानत, सच्चाई और वचन निभाने के होते हैं। और स्वयं ख़ुदा का समर्थन उन की अन्त:शुद्धि के गवाह होते हैं। परन्तु दुष्ट इन्सान इन नमूनों को नहीं देखता और बुराई की तलाश में रहता है। अन्तत: वह क़ुर्आन के अस्पष्ट वाक्यों का हिस्सा जो पवित्र क़ुर्आन के समान उसके अस्तित्व की प्रति में भी होता है। परन्तु अत्यन्त कम दुष्ट इन्सान इसी को अपने ऐतराज़ का निशाना बनाता है और इस प्रकार तबाही का मार्ग ग्रहण करके नर्क में जाता है। इसी से।

जाए। और उन समस्त गन्दे और कटु मवाद के दूर होने के कारण इबादत और ख़ुदा के ज़िक्र का मज़ा उत्तम श्रेणी के आनन्द की अवस्था पर आ जाए। क्योंकि जिस प्रकार जीभ का मज़ा शारीरिक कटुताओं के कारण बिगड़ जाता है ऐसा ही रूहानी मज़ा रूहानी खराबियों के कारण परिवर्तित हो जाता है और ऐसे मनुष्य को इबादत और ख़ुदा के ज़िक्र का कोई आनन्द नहीं आता और न कोई स्नेह और रुचि एवं शौक़ शेष रहता है परन्तु कामिल इन्सान न केवल खराब मवाद से पवित्र हो जाता है अपितु यह योग्यता बहुत उन्नति करके बतौर एक निशान और विलक्षण बात के उसमें प्रकट होती है। निष्कर्ष यह कि कमाल के ये चार पद हैं जिनको मांगना प्रत्येक ईमानदार का कर्त्तव्य है। और जो व्यक्ति इन से पूर्णतया वंचित है वह ईमान से वंचित है। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने सूरह फ़ातिहा में मुसलमानों के लिए यही दुआ निर्धारित की है कि वे इन चार ख़ूबियों (कमालात) को मांगते रहें और वह दुआ यह है –

اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

और पवित्र क़ुर्आन के दूसरे स्थान में इस आयत की व्याख्या की गई है और प्रकट किया गया है कि मुनइम अलैहिम से अभिप्राय नबी, सिद्दीक़, शहीद और सालिहीन हैं और इन्सान-ए-कामिल इन हर चार कमालात का मज्मूआ (संग्रह) अपने अन्दर रखता है।

क्रम संख्या 70.	**निशान का विवरण**

ख़ुदा तआला के इन समस्त निशानों के जो मेरे समर्थन में प्रकट हुए एक वह भविष्यवाणी है जो मैंने 21 नवम्बर 1898 ई. को विज्ञापन में की थी। विवरण इस संक्षेप का यह है कि मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्नः ने मुझे अपमानित करने के उद्देश्य से समस्त लोगों में प्रसिद्ध किया कि यह व्यक्ति महदी माहूद और मसीह मौऊद से इन्कारी है। इसलिए धर्म विहीन, काफ़िर और दज्जाल है अपितु इसी उद्देश्य से एक फ़त्वा लिखा और हिन्दुस्तान और पंजाब के उलेमा की उस पर मुहरें अंकित कराईं ताकि सामान्य मुसलमान मुझ को

काफ़िर समझ लें और फिर इसी पर बस न किया अपितु सरकार तक घटना के विरुद्ध शिकायतें पहुंचाईं कि यह व्यक्ति अंग्रेज़ी सरकार का अशुभचिन्तक और विद्रोह के विचार रखता है और जन सामान्य को विमुख करने के लिए यह भी जगह-जगह प्रसिद्ध किया कि यह व्यक्ति अनपढ़ और अरबी के ज्ञान से वंचित है। और इन तीनों प्रकार के झूठ के इस्तेमाल से उसका उद्देश्य यह था ताकि सामान्य मुसलमान मुझ से बदगुमान होकर मुझे काफ़िर समझें और साथ ही यह भी विश्वास कर लें कि यह व्यक्ति वास्तव में अरबी ज्ञान से वंचित है और सरकार बदगुमान होकर मुझे बाग़ी ठहराए और अपना अशुभचिन्तक समझे। जब मुहम्मद हुसैन की बुरी सोच इस सीमा तक पहुंची कि अपनी जीभ से भी मेरा अपमान किया और लोगों को भी वास्तविकता के विरुद्ध काफ़िर कहकर जोश दिलाया और सरकार को भी झूठी जासूसियों से धोखा देना चाहा। और यह इरादा किया कि उपरोक्त कारणों को जन सामान्य और सरकार के दिल में जमाकर मेरा अपमान कराए। तब मैंने उसके बारे में और उसके दोस्तों के बारे में जो मुहम्मद बख़्श जाफ़र ज़टल्ली और अब्दुल हसन तिब्बती हैं वह बद्-दुआ की जो 21, नवम्बर 1898 ई. के विज्ञापन में दर्ज है, और जैसा कि कथित विज्ञापन में मैंने लिखा है मुझे यह इल्हाम हुआ –

إنّ الّذين يصدّون عن سبيل اللّٰه سينالهم غضب من ربّهم ضرب اللّٰه اشدّ من ضرب النّاس۔ انّما امرنا اذا اردنا شيئًا ان نقول لهٗ كن فيكون۔ اتعجب لأمرى انّى مع العشّاق۔ انّى انا الرّحمٰنُ ذوالمجد والعلٰى۔ ويعضّ الظّالم على يديه ويطرح بين يدىّ ۔ جزاء سيّئة بمثلها وترهقهم ذلّة۔ مالهم من اللّٰه عاصم ۔فاصبر حتّٰى يأتى اللّٰه بامرهٖ انّ اللّٰه مع الّذين اتّقوا والّذين هم محسنون

अनुवाद – इस इल्हाम का यह है कि जो लोग ख़ुदा तआला के मार्ग से रोकते हैं। उन पर शीघ्र ही ख़ुदा तआला का प्रकोप आएगा। ख़ुदा की मार इन्सानों की मार से कठोरतर है। हमारा आदेश तो इतने में ही लागू हो जाता है

कि जब हम एक चीज़ का इरादा करते हैं तो हम उस चीज़ को कहते हैं कि हो जा तो वह चीज़ हो जाती है। क्या तू मेरे से आश्चर्य करता है। मैं आशकों के साथ हूं। मैं ही वह रहमान हूं जो बुज़ुर्गी और बुलन्दी रखता है। और ज़ालिम अपना हाथ काटेगा तथा मेरे आगे डाल दिया जाएगा। बदी का बदला उतनी ही बदी है। और उनको अपमान पहुंचेगा क्योंकि बदी का बदला उतनी ही बदी है। और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा तआला के इरादे से कोई उनको बचाने वाला नहीं। अतः सब्र कर जब तक कि अल्लाह तआला अपनी बात को प्रकट करे। ख़ुदा तआला उनके साथ है जो संयम ग्रहण करते हैं और उनके साथ हैं जो नेकी करने वाले हैं।

यह भविष्यवाणी है जो ख़ुदा तआला ने मुहम्मद हुसैन और उसके दो साथियों के बारे में की थी। और इसमें प्रकट किया था कि उसी अपमान के अनुसार उन्हें अपमान पहुंच जाएगा जो उन्होंने पहुंचाया तो यह भविष्यवाणी इस प्रकार से पूरी हुई कि मुहम्मद हुसैन ने इस भविष्यवाणी के बाद गुप्त तौर पर एक अंग्रेज़ी लिस्ट अपनी उन कार्रवाइयों की प्रकाशित की जिन में सरकार के उद्देश्यों का समर्थन है। और इस लिस्ट में यह जतलाना चाहा कि मेरी समस्त सेवाओं में से एक यह भी सेवा है कि मैंने अपनी पत्रिका इशाअतुस्सुन्नः में लिखा है कि महदी की हदीसें सही नहीं हैं। और इस लिस्ट को उसने बड़ी सावधानी से गुप्त तौर पर प्रकाशित किया क्योंकि वह जानता था कि क़ौम के सामने इस लिस्ट के विरुद्ध उस ने अपनी आस्था व्यक्त की है। और इस दो-रंग के प्रकट होने से वह डरता था कि अपनी क़ौम मुसलमानों के समक्ष तो उसने यह प्रकट किया कि वह ऐसे महदी को दिल-व-जान से मानता है कि जो दुनिया में आकर लड़ाइयां करेगा और प्रत्येक क़ौम के मुक़ाबले पर यहां तक कि ईसाइयों के मुक़ाबले पर भी तलवार उठाएगा। और फिर इस अंग्रेज़ी लिस्ट के माध्यम से सरकार पर यह प्रकट करना चाहा कि वह ख़ूनी महदी के बारे में समस्त हदीसों को वर्णन में बिगड़ी हुई और अविश्वसनीय जानता है। किन्तु ख़ुदा तआला की क़ुदरत से उसकी वह गुप्त कार्रवाई पकड़ी गई और न केवल क़ौम को उस

से सूचना हुई अपितु सरकार तक यह बात पहुंच गई कि उस ने अपने लेखों में दोनों पक्षों सरकार और प्रजा को धोका दिया है। और प्रत्येक कम बुद्धि का इन्सान भी समझ सकता है कि यह छिद्रान्वेषण मुहम्मद हुसैन के अपमान का कारण था। और वही महदी का इन्कार जिसके कारण इस देश के मूर्ख मौलवी मुझे काफ़िर और दज्जाल कहते थे मुहम्मद हुसैन को अंग्रज़ी पत्रिका से इसके बारे में भी सिद्ध हो गया। अर्थात् यह कि वह भी अपने दिल में ऐसी हदीसों को बनावटी, बेहूदा और निर्रथक जानता है। अतः यह एक ऐसा अपमान था कि सहसा मुहम्मद हुसैन के अपने ही लेख के कारण सामने आ गया और कभी ऐसे अपमान का कहां अन्त है। अपितु भविष्य में भी जैसे-जैसे सरकार और मुसलमानों पर खुलता जाएगा कि कैसे इस व्यक्ति ने दोग़ली पद्धति ग्रहण कर रखी है वैसे-वैसे इस अपमान का स्वाद अधिक से अधिक महसूस करता जाएगा। और इस अपमान के साथ एक दूसरा अपमान उसके सामने यह आया कि मेरे विज्ञापन 21, नवम्बर 1898 ई. के पृष्ठ 2 की अन्तिम पंक्ति में जो यह इल्हामी इबारत थी कि اتعجب لا مری (अतअजबु लिअमरी) इस पर मौलवी मुहम्मद हुसैन ने यह ऐतराज़ किया कि यह इबारत ग़लत है। इसलिए यह ख़ुदा का इल्हाम नहीं हो सकता और इसमें ग़लती यह है कि वाक्य 'अतअजबु लिअमरी' में जो शब्द 'लिअमरी' लिखा है यह 'मिन अमरी' होना चाहिए था क्योंकि عجب (अजब) का सन्दर्भ مِن (मिन) आता है न कि لام (लाम) इस ऐतराज़ का उत्तर मैंने अपने उस विज्ञापन में दिया है जिसके शीर्षक पर मोटी क़लम से यह इबारत है –

"दिनांक 30 नवम्बर 1898 ई. के विज्ञापन के पृष्ठ 1 से संबंधित हाशिया"

इस उत्तर का सारांश यह है कि ऐतराज़ कर्ता की यह अज्ञानता, अपरिचय और अनीभज्ञता है कि वह ऐसा विचार करता है कि यद्यपि عجب (अजब) का सन्दर्भ لام (लाम) नहीं आता। इस ऐतराज़ से यदि कुछ सिद्ध होता है तो

केवल यही कि ऐतराज़कर्ता अरबी कला से बिल्कुल वंचित और भाग्यहीन है और केवल नाम का मौलवी है। क्योंक एक बच्चा भी जिसको कुछ थोड़ी सी अरबी में महारत हो समझ सकता है कि अरबी में عجب (अजब) का सन्दर्भ لام (लाम) भी बड़ी प्रचुरता से आता है और यह एक प्रसिद्ध विख्यात बात है। और यह समस्त अहले अदब और भाषा विद्वानों के कलाम में यह सन्दर्भ पाया जाता है। अत: इस प्रसिद्ध और मशहूर शेर में لام (लाम) ही सन्दर्भ वर्णन किया गया है और वह यह है

عجبتُ لمولود لیس لہٗ ابٌ   ومن ذی ولد لیس لہٗ ابوان

अर्थात् उस बच्चे से मुझे आश्चर्य है जिसका बाप नहीं अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से। और इस से अधिक आश्चर्य उस बच्चों वाले से है जिसके माता-पिता दोनों नहीं।

इस शेर में दोनों सन्दर्भों का वर्णन है لام (लाम) के साथ भी और من (मिन) का साथ भी। और ऐसा ही दीवान हिमासा में जो फ़साहत-बलाग़त में एक मान्य और मक़्बूल दीवान है और सकारी कालेज में दाख़िल है। पांच शेर (गद्य) में عجب (अजब) का सन्दर्भ لام ही लिखा है। अत: उनमें सब में से एक शेर (गद्य) यह है जो कथित दीवान के पृष्ठ 9 में दर्ज है।

عجبتُ لمسراھا واَنّٰی تخلّصت   الیّ وباب السّجن دونی مُغْلق

अर्थात् वह प्रियतमा जो कल्पना की अवस्था में मेरे पास चली आई मुझे आश्चर्य हुआ कि वह ऐसे क़ैदखाने में जिसके दरवाज़े बन्द थे मेरे पास जो मैं क़ैद में था क्योंकर चली आई। देखो इस शेर (गद्य) में भी सरस, सुबोध शाइर ने عجب का सन्दर्भ لام ही वर्णन किया है जैसा कि शब्द لمسراھا से प्रकट है और ऐसा ही वे समस्त अशआर इस दीवान के जो पृष्ठ 390, 411, 575, 511, में दर्ज हैं। उन सब में عجب (अजब) का सन्दर्भ لام (लाम) ही लिखा है। जैसा कि यह शेर है –

عجبت لسعی الدّھر بینی وبینھا   فلمّا انقضی ما بیننا سکن الدّھر

अर्थात् मुझे इस बात से आश्चर्य हुआ कि युग ने हम में जुदाई डालने के लिए क्या-क्या कोशिशें कीं। परन्तु जब वह हमारा समय इश्क़बाज़ी का गुज़र गया तो युग भी ख़ामोश हो गया।

अब देखो कि इस शेर में भी عجب (अजब) का सन्दर्भ لام (लाम) ही आया है और ऐसा है हिमासा का यह शेर है

عجبت لبرءی منک یا عزبعد ما   عمرتُ زماناً منک غیر صحیح

अर्थात् हे प्रियतम यह अद्भुत बात है कि तेरे कारण से ही मैं अच्छा हुआ। अर्थात् तेरे मिलन से तथा तेरे कारण से ही एक लम्बे समय तक मैं बीमार रहा अर्थात् तेरी जुदाई के कारण बीमार रहा। शाइर का आशय इस शेर से यह है कि वह अपनी प्रियतमा को सम्बोधित करके कहता है कि मेरी बीमारी का कारण तू ही थी और फिर मेरे अच्छा होने का कारण भी तू ही हुई।

अब देखो कि इस शेर में भी عجب (अजब) कामिला لام (लाम) ही आया है। फिर एक और शेर हिमासा में है और वह यह है –

عجبًا لاحمد والعجائب جمة   انّٰى يلوم على الزّمان تبذّلى

अर्थात् मुझ को अहमद की इस हरकत से आश्चर्य है और विचित्र से विचित्र बाते जमा हो रही हैं क्योंकि वह मुझे इस बात पर निन्दा करता है कि मैंने ज़माने की गर्दिश से बाज़ी को क्यों हार दिया। वह कब तक मुझे एसे व्यर्थ मलामत करेगा। क्या वह नहीं समझता कि ज़माना हमेशा अनुकूल नहीं रहता और बुरे भाग्य के आगे तदबीर (उपाय) की पेश नहीं जाती। अत: मेरा इसमें क्या दोष है कि ज़माने की गर्दिश (चक्कर) से मैं असफ़ल रहा।

अब देखो कि इस शेर में عجب (अजब) का सन्दर्भ لام (लाम) आया है और इसी हिमास: में एक और शेर है जो इसी प्रकार का है और वह यह है –

عَبجبْتُ لِعِبْدَانٍ هَجَوْنِی سَفاهَةً   اَنِ اصْطَبَحُوا مِنْ شاءِهِمْ وَتَقَيَّلُوا

अर्थात् मुझे आश्चर्य हुआ कि दासी पुत्रों ने सर्वथा मूर्खता से मेरी निन्दा की और इस निन्दा का कारण उनकी सुबह की शराब और दोपहर की शराब थी।

अब देखो इस शेर में भी عجب (अजब) का सन्दर्भ لام (लाम) आया है। और यदि यह कहो कि ये तो उन शाइरों के शेर हैं जो असभ्यता के युग में गुज़रे हैं। वे तो काफ़िर हैं, हम उनके कलाम को कब मानते हैं तो इसका उत्तर यह है कि वे लोग अपने कुफ्र के कारण जाहिल थे न कि अपनी भाषा के कारण अपितु भाषा की दृष्टि से तो वे इमाम माने गए हैं। यहां तक कि पवित्र क़ुर्आन के मुहावरों के समर्थन में उनके शेर तफ़सीरों में बतौर हुज्जत प्रस्तुत किए जाते हैं और इस से इन्कार करना ऐसी मूर्खता है कि कोई अहले इल्म इसको स्वीकार नहीं करेगा इसके अतिरिक्त यह मुहावरा केवल गुज़रे युग के शेरों में नहीं है अपितु हमारे सय्यद-व-मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों से भी इसी मुहावरे का समर्थन होता है। उदाहरणतया तनिक मिश्कात को खोलो और किताबुल ईमान के पृष्ठ 3 में उस हदीस को पढ़ो जो इस्लाम के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की गई है जिस को सर्वसम्मति से वर्णन किया गया है और वह यह है – عجبنا له يسئله و يصدّقه -

अर्थात् हमने उस व्यक्ति की हालत से आश्चर्य किया कि पूछता भी है और फिर मानता भी जाता है।

अब देखो इस पवित्र हदीस में भी عجبنا (अजबना) का सन्दर्भ لام (लाम) ही लिया है और عجبنا منه नहीं लिखा अपितु عجبنا له कहा है।

अब कोई मौलवी साहिब इन्साफ़ की दृष्टि से फ़रमाएं कि एक व्यक्ति जो स्वयं को मौलवी कहलाता है अपितु वह दूसरे मौलवियों का स्वयं को मुखिया और वकील ठहरा देता है। क्या उसके लिए यह अपमान नहीं है कि अब तक उसको यह ख़बर ही नहीं कि عجب (अजब) का सन्दर्भ لام (लाम) भी आया करता है। क्या इतनी अनभिज्ञता कि मिश्कात की किताबुल ईमान की हदीस की भी ख़बर नहीं। क्या यह सम्मान का कारण है और इस से मौलवियत के दामन को कोई अपमान का धब्बा नहीं लगता? फिर जब कि यह बात पब्लिक पर सामान्यतया खुल गई कि मुहम्मद हुसैन न केवल सर्फ़—नह्व के ज्ञान से अपरिचित है अपितु जो कुछ हदीसों के शब्द हैं उन से भी अनभिज्ञ है। तो क्या

यह ख्याति उसके सम्मान का कारण हुई या उसके अपमान का?

फिर तीसरा पहलू 21, नवम्बर 1898 ई. की भविष्यवाणी के पूरा होने का यह है कि मिस्टर जे.एम.डोई साहिब बहादुर भूतपूर्व डिप्टी कमिश्नर व डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ज़िला गुरदासपुर ने अपने आदेश 24 फ़रवरी 1899 ई. में मौलवी मुहम्मद हुसैन से इस इक़रार पर हस्ताक्षर कराए कि वह भविष्य में मुझे दज्जाल, काफ़िर और काज़िब नहीं कहेगा और क़ादियान को छोटे काफ़ से नहीं लिखेगा। और उसने अदालत के सामने खड़े होकर इक़रार किया कि भविष्य में वह मुझे किसी मज्लिस में काफ़िर नहीं कहेगा और न मेरा नाम दज्जाल रखेगा और न लोगों में मुझे झूठा और काज़िब करके मशहूर करेगा। अब देखो कि इस इक़रार के बाद वह उसका फ़त्वा कहां गया जिसको उसने बनारस तक जाकर तैयार किया था। यदि वह उस फ़त्वा देने में ईमानदारी पर होता तो उसको हाकिम के सामने यह उत्तर देना चाहिए था कि मेरे नज़दीक निस्सन्देह यह काफ़िर है। इसलिए मैं इसको काफ़िर कहता हूं। और दज्जाल भी है इसलिए मैं इसका नाम दज्जाल रखता हूं। और यह व्यक्ति वास्तव में झूठा है इसलिए मैं इसको झूठा कहता हूं। विशेष तौर पर जिस हालत में ख़ुदा तआला की कृपा से मैं अब तक और जीवन के अन्त तक उन्हीं आस्थाओं पर स्थापित हूं जिन को मुहम्मद हुसैन ने कुफ़्र के कलिमात ठहराया है। तो यह किस प्रकार की ईमानदारी है कि उसने हाकिम के भय से अपने समस्त फ़त्वों को बर्बाद कर लिया और हुक्काम के सामने इक़रार कर दिया कि मैं भविष्य में इनको काफ़िर नहीं कहूंगा और न इन का नाम दज्जाल एवं काज़िब रखूंगा। अत: सोचने के योग्य है कि इस से अधिक और क्या अपमान होगा कि उस व्यक्ति ने अपनी इमारत को अपने हाथों से गिराया। यदि उस इमारत की बुनियाद संयम पर होती तो संभव न था कि मुहम्मद हुसैन अपनी पुरानी आदत से रुक जाता। हां यह सच है कि उस नोटिस पर मैंने भी हस्ताक्षर किए हैं। परन्तु उस हस्ताक्षर से ख़ुदा और जजों के नज़दीक मुझ पर कुछ इल्ज़ाम नहीं आता। और न ऐसे हस्ताक्षर मेरे अपमान का कारण ठहरते हैं। क्योंकि प्रारंभ से मेरा यही मत है कि मेरे दावे के इन्कार

के कारण कोई व्यक्ति काफ़िर या दज्जाल नहीं हो सकता।★ हां गुमराह और सीधे मार्ग से विमुख अवश्य होगा। और मैं उसका नाम बेईमान नहीं रखता। हां मैं ऐसे सब लोगों को पथभ्रष्ट और सच्चे तथा सही मार्ग से दूर समझता हूं जो उन सच्चाइयों से इन्कार करते हैं जो ख़ुदा तआला ने मुझ पर खोली हैं। मैं निस्सन्देह ऐसे प्रत्येक आदमी को पथभ्रष्टता की गन्दगी से लिप्त समझता हूं जो सच और ईमानदारी से विमुख है। परन्तु मैं किसी कलिमा गो का नाम काफ़िर नहीं रखता जब तक वह मुझे काफ़िर ठहरा कर तथा झुठला कर स्वयं को स्वयं काफ़िर न बना ले। तो इस मामले में हमेशा से पहल मेरे विरोधियों की ओर से है कि उन्होंने मुझे काफ़िर कहा। मेरे लिए फ़त्वा तैयार किया। मैंने

★हाशिया - यह नुक्तः स्मरण रखने योग्य है कि अपने दावे के इन्कारी को काफ़िर कहना यह केवल न नबियों की शान है जो ख़ुदा तआला की ओर से शरीअत और नवीन आदेश लाते हैं। परन्तु साहिब शरीअत के अतिरिक्त जितने मुल्हम, मुहद्दिस हैं यद्यपि वे ख़ुदा के दरबार में कैसी ही उच्च प्रतिष्ठा रखते हों और ख़ुदा के वार्तालाप के वस्त्र से सम्मानित हों उनके इन्कार से कोई काफ़िर नहीं बन जाता। हां दुर्भाग्यशाली इन्कारी जो इन ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त लोगों का इन्कारी करता है वह अपने इन्कार के दण्ड से दिन-प्रतिदिन कठोर हृदय होता जाता है। यहां तक कि उसके अन्दर से ईमान का प्रकाश समाप्त हो जाता है और यही नबवी हदीसों से निकलता है कि वलियों का इन्कार और उन से शत्रुता रखना सर्वप्रथम इन्सान को लापरवाही और दुनिया परस्ती में डालता है और फिर उन से शुभ कर्मों, सच्चे कार्यों और निष्कपटता की सामर्थ्य उन से छीन लेता है और अन्त में ईमान के समाप्त होने का कारण होकर धार्मिकता की मूल वास्तविकता और सार से उनको वंचित और भाग्यहीन कर देता है। और यही अर्थ हैं इस हदीस के कि مَنْ عَادَا وَلِيًّا لِی فقد اٰذنتُه لِلْحَرب अर्थात् जो मेरे वली का शत्रु बनता है तो मैं उसको कहता हूं कि बस अब मेरी लड़ाई के लिए तैयार हो जा। यद्यपि प्रारंभिक शत्रुता में दयालु-कृपालु ख़ुदा के आगे ऐसे लोगों की ओर से कुछ मारिफ़त के अभाव का बहाना हो सकता है परन्तु जब उस अल्लाह के वली के समर्थन में चारों ओर से निशान प्रकट होने आरंभ हो जाते हैं और हृदय का प्रकाश उसको पहचान लेता है और उसकी स्वीकारिता की गवाही आकाश और पृथ्वी दोनों की ओर से बुलन्द आवाज़ में कानों को सुनाई देती है तो नऊज़ुबिल्लाह इस हालत में जो व्यक्ति शत्रुता

पहल करके उनके लिए कोई फ़त्वा तैयार नहीं किया। और इस बात का वे स्वयं इक़रार कर सकते हैं कि यदि मैं अल्लाह तआला के नज़दीक मुसलमान हूं तो मुझे काफ़िर बनाने से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़त्वा उन पर यही है कि वे स्वयं काफ़िर हैं। अतः मैं उनको काफ़िर नहीं कहता अपितु वे मुझ को काफ़िर कहकर स्वयं फ़त्व-ए-नबवी के नीचे आ जाते हैं। तो यदि मिस्टर डोई साहिब के सामने मैंने इस बात का इक़रार किया है कि मैं उनको काफ़िर नहीं कहूंगा तो वास्तव में मेरा यही मत है कि मैं किसी मुसलमान को काफ़िर नहीं जानता। हां यह आस्था रखता हूं कि जो व्यक्ति मुसलमान होकर एक सच्चे वली उल्लाह के शत्रु बन जाते हैं उन से शुभ कर्मों की सामर्थ्य छीन ली जाती है और दिन-प्रतिदिन उनके हृदय का प्रकाश कम

शेष हाशिया - और वैर से नहीं रुकता और संयम की पद्धति को पूर्णतया अलविदा कह कर हृदय को कठोर कर लेता है और वैर एवं शत्रुता से हर समय कष्ट पहुंचाने पर तत्पर रहता है तो इस हालत में वह पूर्वोत्तम हदीस के अधीन आ जाता है। ख़ुदा तआला बड़ा कृपालु और दयालु है वह मनुष्य को शीघ्र नहीं पकड़ता। परन्तु जब मनुष्य अन्याय और ज़ुल्म करता सीमा से गुज़र जाता और बहरहाल उस इमारत को गिराना चाहता है तथा उस बाग़ को जलाना चाहता है जिसको ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से तैयार किया है। तो इस स्थिति में सदैव से और जब से कि नुबुव्वत के सिलसिले की बुनियाद पड़ी है ख़ुदा की आदत यही है कि वह ऐसे उपद्रवी का शत्रु हो जाता है और सर्वप्रथम उस से ईमान की दौलत छीन लेता है। तब बलअम की तरह केवल वाचलता और मौखिक वाद-विवाद उसके पास रह जाता है। और जो नेक बन्दों का ख़ुदा की ओर संबंध स्नेह, रुचि, शौक, प्रेम, ख़ुदा से लौ लगाना और संयम का होता है वह उस से खोया जाता है और वह स्वयं महसूस करता है कि वर्तमान दिनों से दस वर्ष पूर्व जो कुछ उसको विनय और समझ तथा विस्तृत साफ़दिली, ख़ुदा की ओर झुकने और दुनिया तथा दुनिया वालों से विमुखता की हालत दिल में मौजूद थी और जिस प्रकार सच्चे संयम की चमक कभी-कभी उसको अवगत करती थी कि वह ख़ुदा के नेक बन्दों में से हो सकता है, अब वह चमक पूर्णतया उसके अन्दर से जाती रही है और दुनिया की अभिलाषा की एक अग्नि उसके अन्दर भड़क उठती है और वलियों के इन्कार के दण्ड से उसे यह भी ख़याल नहीं आता कि जिस युग में उसके ख़याल नेक,

होता जाता है यहां तक कि एक दिन सुबह के दीपक की तरह बुझ जाता है। अत: मेरी यह आस्था अपनी ओर से नहीं है अपितु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से है। निष्कर्ष यह कि जिस व्यक्ति ने अकारण जोश में आकर मुझे काफ़िर ठहराया और मेरे लिए फ़त्वा तैयार किया कि यह व्यक्ति काफ़िर, दज्जाल, कज़्ज़ाब है। उसने ख़ुदा तआला के आदेश तो कुछ भय न किया कि वह अहले-किब्ल: और कलिमा गो को क्यों काफ़िर बनाता है और ख़ुदा के हज़ारों बन्दों को जो ख़ुदा की किताब के अधीन और इस्लाम के आचरण व्यक्त करते हैं क्यों इस्लाम के आचरण व्यक्त करते हैं क्यों इस्लाम के दायरे से बाहर करता है। किन्तु ज़िला मजिस्ट्रेट की एक धमकी से हमेशा के लिए यह स्वीकार कर लिया कि मैं भविष्य में इनको काफ़िर, दज्जाल और

शेष हाशिया - पवित्र और संयमियों जैसे थे अब उस युग की अपेक्षा उसकी आयु बहुत अधिक हो गई है। सारांश यह कि उसको कुछ समझ नहीं आता कि मुझ को क्या हो गया और दुनिया की अभिलाषा में गिरा जाता और दुनिया की प्रतिष्ठा ढूंढता है। हालांकि मृत्यु के करीब होता है। अत: इसी प्रकार ईमान का प्रकाश उसके दिल से छीन लेते हैं, और ख़ुदा के वलियों की शत्रुता से ईमान छिन जाने का दूसरा कारण यह भी हो है कि वह ख़ुदा के उस वली का हर हालत में विरोध करता रहता है जो नुबुव्वत के उद्गम से पानी पीता है। जिसको सच्चाई पर स्थापित किया जाता है। तो चूंकि उसकी आदत हो जाती है कि अकारण प्रत्येक ऐसी सच्चाई को रद्द करता है जो उस वली के मुंह से निकलती है और उसके समर्थन में जितने निशान प्रकट होते हैं यह सोच लेता है कि ऐसा होना झूठों से संभव है। इसलिए धीरे-धीरे नुबुव्वत का सिलसिला भी उस पर संदिग्ध हो जाता है। इसलिए अन्तत: उस विरोध के पर्दे में उसकी ईमान की इमारत की ईंटें गिरनी आरंभ हो जाती हैं। यहां तक कि किसी दिन किसी ऐसे महान मामले का विरोध या निशान का इन्कार कर बैठता है, जिस से ईमान जाता रहता है। हां यदि किसी का कोई पहला शुभ कर्म हो जो ख़ुदा के यहां सुरक्षित हो तो संभव है कि अन्तत: अनादि अनुकम्पा उसको थाम ले और वह रात को या दिन को सहसा अपनी हालत का अध्ययन करे या कुछ ऐसी बातें उसकी आंख रोशन करने के लिए पैदा हो जाएं जिन से सहसा वह नींद से जाग उठे। और यह अल्लाह तआला की कृपा है जिसको चाहता है देता है। और अल्लाह तआला बहुत बड़ी कृपा करने वाला है। इसी से।

कज़्ज़ाब नहीं कहूंगा। और स्वयं ही फ़त्वा तैयार किया और ही हाकिमों के भय से निरस्त कर दिया और साथ ही जाफ़र ज़टल्ली इत्यादि की क़लमें टूट गईं और इसके बावजूद अपमान। फिर मुहम्मद हैसन ने अपने दोस्तों के पास यह प्रकट किया कि फैसला मेरी इच्छानुसार हुआ है। परन्तु सोच कर देखो कि क्या मुहम्मद हुसैन की यही इच्छा थी कि भविष्य में मुझे काफ़िर न कहे और न झुठलाए। और इन बातों से तौब: करके अपना मुंह बन्द कर ले। और क्या जाफ़र ज़टल्ली यह चाहता था कि अपने गन्दे लेखों से रुक जाए? तो यदि यह वही बात नहीं जो 21 नवम्बर 1898 के विज्ञापन की भविष्यवाणी पूरी हो गयी और ख़ुदा ने मेरे अपमान करने वाले को अपमानित किया है तो और क्या है? जिस व्यक्ति ने अपनी पत्रिकाओं में यह प्रण प्रकाशित किया था कि मैं इस आदमी को मरते दम तक काफ़िर और दज्जाल कहता रहूंगा, जब तक वह मेरा मत स्वीकार न करे। तो इसमें उसका क्या सम्मान रहा जो उस प्रण को उसने तोड़ दिया। और वह जाफ़र ज़टल्ली जो गन्दी गालियों से किसी प्रकार नहीं रुकता था यदि अपमान की मौत उस पर नहीं आई तो अब क्यों गालियां नहीं निकालता। और अब अबुल हसन तिब्बती कहां है, उसकी जीभ क्यों बन्द हो गयी, क्या उसके गुज़रे इरादों पर कोई इन्क़िलाब नहीं आया अत: यही तो वह अपमान है जो भविष्यवाणी का था कि इन सब के मुंह में लगाम दी गयी और वास्तव में इस इल्हाम की व्याख्या जो 21 नवम्बर 1898 ई. को हुआ। उस इल्हाम ने दोबारा कर दी हो दिनांक 21, फ़रवरी 1899 ई. पुस्तक 'हक़ीक़तुल महदी' में प्रकाशित किया गया, अपितु विचित्रतर बात यह है कि 21, नवम्बर 1898 ई. के इल्हाम प्रकाशित हुआ था उसमें एक यह वाक्य था कि

يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ

और फिर यही वाक्य 21, फ़रवरी 1899 ई. के इल्हाम में भी जो 21 नवम्बर 1898 के इल्हाम के लिए बतौर व्याख्या के आया है जैसा कि पुस्तक 'हक़ीक़तुल महदी' के पृष्ठ 12 से प्रकट है। इसलिए इन दोनों इल्हामों की तुलना से प्रकट होगा कि यह दूसरा इल्हाम जो 21 नवम्बर 1898 ई. के इल्हाम

से लगभग तीन महीने बाद हुआ है उस पहले इल्हाम की व्याख्या करता है और इस बात को खोल कर वर्णन करता है कि वह अपमान जिस का वादा 21 नवम्बर 1898 ई. के विज्ञापन में था वह किस रंग में पूरा होगा। इसी उद्देश्य से यह बाद में वर्णित इल्हाम जो 21 फ़रवरी 1899 ई. को हुआ पहले इल्हाम के एक वाक्य की पुनरावृत्ति करके उसके साथ एक और वाक्य बतौर व्याख्या वर्णन करता है। अर्थात् पहला इल्हाम जो 21 नवम्बर 1898 के विज्ञापन में दर्ज है जो मुहम्मद हुसैन और जाफ़र ज़टल्ली तथा अबुल हसन तिब्बती के अपमान की भविष्यवाणी करता है। उसमें यह वाक्य था कि يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ अर्थात् ज़ालिम अपने हाथ काटेगा और दूसरे इल्हाम में जो 21, फ़रवरी 1899 ई. में पुस्तक 'हक़ीक़तुल महदी' के द्वारा प्रकाशति हुआ। उसमें यही वाक्य एक अधिक वाक्य के साथ इस प्रकार से लिखा गया है

يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ و يوثق

और इस वाक्य के मायने इसी पुस्तक 'हक़ीक़तुल महदी' के पृष्ठ 12 की अन्तिम पंक्ति और पृष्ठ 13 की पहली पंक्ती में यह वर्णन किए गए हैं – **ज़ालिम अपने हाथ काटेगा और अपनी शरारतों से रोका जाएगा।** अब देखो कि इस व्याख्या में साफ़ बताया गया है कि अपमान किस प्रकार का होगा। अर्थात् यह अपमान होगा कि मुहम्मद हुसैन और जाफ़र ज़टल्ली तथा अबुल हसन तिब्बती अपनी गन्दी और निर्लज्जता के लेखों से रोके जाएंगे। और उन्होंने गालियां देने का सिलसिला और निर्लज्जता के अनुचित प्रहारों और हमारे व्यक्तिगत जीवन और ख़ानदानी सम्बन्धों के बारे में नितान्त श्रेणी की नीचता की शरारत, गालियां और इफ़्तिरा एवं झूठ से प्रकाशित किया था वह बल पूर्वक बन्द किया जाएगा। अब सोचो कि क्या वह सिलसिला बन्द किया गया या नहीं और क्यों वे शैतानी कार्रवाइयां जो अपवित्र जीवन की विशेषता होती हैं जिन के अनुचित अतिशयोक्ति से आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाक दामन पत्नियों पर गालियों के प्रहार करने की नौबत पहुंच गई थी। क्या ये गन्दे और निर्लज्जता के तरीक़े जो मुहम्मद हुसैन और उसके दोस्त जाफ़र

ज़टल्ली ने अपनाए थे, अधिकृत हाकिम से रोके गए या नहीं। और क्या यह गालियों की आदत जिसको किसी प्रकार ये लोग त्यागना नहीं चाहते थे, छुड़ाई गयी या नहीं? तो क्या एक बुद्धिमान इन्सान के लिए यह अपमान कुछ थोड़ा नहीं कि उसकी सभ्यता के विरुद्ध और निर्लज्जता तथा कमीनगी की आदतों के काग़ज़ अदालत में प्रस्तुत किए जाएं और पढ़े जाएं और सार्वजनिक इज्लास में सब पर यह बात खुले और हज़ारों लोगों में ख्याति पाए कि मौलवी कहला कर इन लोगों की यह सभ्यता और शालीनता है। अब स्वयं सोच लो कि क्या इस सीमा तक किसी व्यक्ति की गन्दी कारवाइयाँ, गन्दी आदतें, गन्दे आचरण हाकिमों और पब्लिक पर प्रकट होना क्या यह सम्मान है या अपमान? और क्या ऐसे घृणित और अपवित्र आचरण पर अदालत की ओर से गिरफ़्त होना यह कुछ बुलन्दी का कारण है या मौलवियत की शान को इस से अपमान का धब्बा लगता है। यदि हमारे ऐतराज़ कर्ताओं में वास्तविकताओं की पहचान करने की अन्तर्आत्मा कुछ शेष रहती तो ऐसा व्यापक ग़लत ऐतराज़ कदापि प्रस्तुत न करते कि 21 नवम्बर 1898 के विज्ञापन की भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई, क्योंकि यह भविष्यवाणी तो ऐसे ज़ोर शोर से पूरी हो गई कि अदालत के कमरे में ही लोग बोल उठे कि आज ख़ुदा का कथन पूरा हो गया। सैकड़ों लोगों को यह बात मालूम होगी कि जब मुहम्मद हुसैन को यह कहा गया कि भविष्य में ऐसे गन्दे लेख प्रकाशित न करे और काफ़िर, दज्जाल तथा झूठा भी न कहे। तो मिस्टर ब्रून साहिब हमारा वकील भी सहसा बोल उठा कि भविष्यवाणी पूरी हो गई। स्मरण रहे कि वर्तमान काग़ज़ों की दृष्टि से जो अदालत के सामने थे, अदालत ने यह मालूम कर लिया था कि मुहम्मद हुसैन ने जाफ़र ज़टल्ली सहित यह अत्याचार किया है कि मुझे नितान्त गन्दी गालियां दी हैं और मेरे व्यक्तिगत संबंधों में कमीनेपन से गालियां की हैं यहां तक कि चित्र छापे हैं। किन्तु अदालत ने सावधानी के तौर पर भविष्य में रोक के लिए उस नोटिस में दोनों सदस्यों को सम्मिलित कर लिया ताकि इस प्रकार पूर्णतया निवारण करे। मिस्टर जे.एम.डोई साहिब जीवित मौजूद हैं जिन के सामने ये काग़ज़ प्रस्तुत

हुए थे और अब तक वह मिस्ल मौजूद है जिसमें वे समस्त काग़ज़ नत्थी किए गए। क्या कोई सिद्ध कर सकता है कि अदालत में मुहम्मद हुसैन की ओर से भी कोई ऐसे पेपर प्रस्तुत हुए जिन में मैंने भी नीचता से गन्दे लेख प्रकाशित किए हों। अदालत ने अपने नोटिस में स्वीकार कर लिया है कि इन गन्दे लेखों के मुक़ाबले पर जो सर्वथा शर्म और सभ्यता के विरुद्ध थे, मेरी ओर से केवल यह कारवाई हुई कि मैंने ख़ुदा के दरबार में अपील की। अब स्पष्ट है कि एक सुशील व्यक्ति के लिए यह हालत मौत से अधिक बुरी है कि उसका यह आचरण अदालत पर खुल जाए कि वह ऐसी गालियां बकने की आदत रखता है जबकि एक सुशील व्यक्ति तो इस शर्मिन्दगी से जीवित ही मर जाता है कि अधिकृत हाकिम अदालत की कुर्सी पर उसको यह कहे कि क्या यह गन्दा तरीक़ा है जो तूने अपनाया। और इन कारवाई का परिणाम अपमानित होना यह तो एक छोटी बात है। स्वयं पुलिस के अफ़सर जिन्होंने मुकद्दमा उठाया था उन से पूछना चाहिए कि उस कार्रवाई के मध्य जबकि वह मुहम्मद हुसैन और जाफ़र ज़टल्ली की गालियों के काग़ज़ों को प्रस्तुत कर रहे थे क्या मेरी गालियों का भी कोई काग़ज़ उनको मिला, जिसको उन्होंने अदालत में प्रस्तुत किय। और चाहो तो मुहम्मद हुसैन को क़सम देकर पूछ कर देख लो कि क्या ये घटनाएं तुम्हारे साथ अदालत में गुज़रीं, और क्या जाफ़र ज़टल्ली से तुम्हारा कुछ संबंध है या नहीं। तो इन प्रश्नों के समय तुम्हारे दिल का क्या हाल था। क्या उस समय तुम्हारा दिल हाकिम के उन प्रश्नों को अपना सम्मान समझता था या अपमान समझकर डूबता जाता था यदि इतनी घटनाओं के जमा होने से जो हम लिख चुके हैं फिर भी अपमान नहीं हुआ और सम्मान में कुछ भी अन्तर नहीं आया तो हमें इक़रार करना पड़ेगा कि आप लोगों का सम्मान बड़ा पक्का है। फिर इसके अतिरिक्त 21 नवम्बर 1898 ई. के विज्ञापन की मीआद के अन्दर कई और ऐसी बातें भी प्रकट हुई हैं जिन से निस्सन्देह मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के विद्वतापूर्ण सम्मान में इतना अन्तर आया है कि जैसे वह ख़ाक में मिल गया है। उनमें से एक यह है कि मौलवी साहिब ने 'पैसा अख़बार'

और 'अख़बार आम' में सच को पूर्णतया छुपाने के ढंग से यह प्रकाशित कर दिया था कि वह मुक़द्दमा जो पुलिस की रिपोर्ट पर मुझ पर और उन पर दायर किया गया था जो 24 फ़रवरी 1899 ई. में फ़ैसला हुआ उसमें जैसे यह ख़ाकसार बरी नहीं हुआ अपितु डिस्चार्ज हुआ और बड़े ज़ोर-शोर से यह दावा किया था कि फ़ैसले में मिस्टर डोई साहिब की ओर से डिस्चार्ज का शब्द है और डिस्चार्ज बरी को नहीं कहते अपितु जिस पर अपराध सिद्ध न हो सके उसका नाम डिस्चार्ज है। और इस ऐतराज़ से मुहम्मद हुसैन का मतलब यह था ताकि लोगों पर यह प्रकट करे कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। परन्तु जैसा कि हम इसी पुस्तक के पृष्ठ 81 में लिख चुके हैं यह उसकी ओर से केवल इफ़्तिरा था और वास्तव में डिस्चार्ज का अनुवाद बरी है और कुछ नहीं। और उसने बुद्धिमानों के नज़दीक बरी के इन्कार से अपनी बड़ा छिन्द्रान्वेषण कराया कि इस बात से इन्कार किया कि डिस्चार्ज का अनुवाद बरी नहीं है। अतः इसी कथित पृष्ठ अर्थात् पृष्ठ 81 में विवरण सहित मैंने लिख दिया है कि अंग्रेज़ी भाषा में किसी को अपराध से बरी समझने या बरी करने के लिए दो शब्द प्रयोग होते हैं – (1) डिस्चार्ज (2) अक्विट (acquit)। डिस्चार्ज उस जगह बोला जाता है कि जहां अधिकृत हाकिम की नज़र में अपराध का आरंभ से ही कुछ सबूत न हो और जांच पड़ताल के समस्त सिलसिले में कोई ऐसी बात पैदा न हो जो उसको अपराधी ठहरा सके और अभियोग पत्र (चार्ज शीट) स्थापित करने के योग्य कर सके। सारांश यह कि उसकी अस्मत के दामन पर कोई धूल न पड़ सके और इस कारण से कि उसके अपराध करने का कुछ भी सबूत नहीं। अपराधी को छोड़ा जाए। और अक्विट उस जगह बोला जाता है जहां पहले अपराध सिद्ध हो जाए और अभियोग पत्र लगाया जाए और फिर अपराधी अपनी सफ़ाई का सबूत देकर उस आरोप से रिहाई पाए। अतः इन दोनों शब्दों में कानूनी तौर पर अन्तर यही है कि डिस्चार्ज बरीयत का वह प्रकार है जहां सिरे से अपराध सिद्ध तो हो जाए और अभियोग पत्र भी लग जाए परन्तु अन्त में अपराधी की सफ़ाई सिद्ध हो जाए। और अरबी में बरीयत का शब्द

एक थोड़े से परिवर्तन के साथ इन दोनों अर्थों पर आधारित है। अर्थात् जब एक दोषी ऐसी हालत में छोड़ा जाए कि उसकी अस्मत के दामन पर कोई अपराध का धब्बा लग नहीं सका और वह प्रारंभ से कभी इस नज़र से देखा ही नहीं गया कि वह अपराधी है। यहां तक कि जैसा कि वह निर्दोष अदालत के कमरे में आया वैसा ही निर्दोष अदालत के कमरे से निकल गया। इस प्रकार के दोषी को अरबी भाषा में बरी कहते हैं। और जब एक दोषी पर अपराधी होने का दृढ़ सन्देह गुज़र गया और अपराधियों की तरह उस पर कार्रवाई की गई और उस समस्त अपमान के पश्चात् उसने अपनी सफ़ाई की गवाहियों के साथ उस सन्देह को अपने सिर से दूर कर दिया तो ऐसे दोषी का नाम अरबी भाषा में मुबर्रा है। तो इस पड़ताल से सिद्ध हुआ कि डिस्चार्ज का अरबी में ठीक-ठीक अनुवाद बरी है और ऐक्टिट का अनुवाद मुबर्रा है। अरब का ये दो मक़ूले (लोकोक्ति) हैं कि انا برئ من ذلك وانا مبّرء من ذلك पहले कथन के यह मायने हैं कि मुझ पर कोई आरोप सिद्ध नहीं किया गया। और दूसरे कथन के यह मायने हैं कि मेरी सफ़ाई सिद्ध की गई है। और पवित्र क़ुर्आन में ये दोनों लोकोक्तियां मौजूद हैं। अतः बरी का शब्द पवित्र क़ुर्आन में ठीक डिस्चार्ज के अर्थों में बोला गया है। जैसा कि वह फ़रमाता है –

وَ مَنۡ یَّکۡسِبۡ خَطِیۡٓـَٔۃً اَوۡ اِثۡمًا ثُمَّ یَرۡمِ بِہٖ بَرِیۡٓــًٔا فَقَدِ احۡتَمَلَ بُہۡتَانًا وَّ اِثۡمًا مُّبِیۡنًا (अन्निसा-113)

अर्थात् जो व्यक्ति कोई ग़लत या कोई गुनाह करे और फिर किसी ऐसे व्यक्ति पर वह गुनाह लगा दे जिस पर वह गुनाह सिद्ध नहीं तो उसने एक खुले-खुले आरोप और गुनाह का बोझ अपनी गर्दन पर लिया और मुबर्रा का उदाहरण पवित्र क़ुर्आन में यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

اُولٰٓئِکَ مُبَرَّءُوۡنَ مِمَّا یَقُوۡلُوۡنَ (अन्नूर-27)

यह उस स्थान की आयत है कि जहां बेलौस और निर्दोष होना एक का एक समय तक संदिग्ध रहा। फिर ख़ुदा ने उसकी ओर से डिफ़ेन्स प्रस्तुत

करके उसकी बरीयत की। अब आयत يرم به بَرِيّٓا (यार्मि बिही बरीयन) से स्पष्ट तौर पर प्रकट है कि ख़ुदा तआला ने ऐसे व्यक्ति का नाम बरी रखा है जिस पर कोई गुनाह सिद्ध नहीं किया गया। और यही वह अर्थ है जिसको अंग्रेज़ी में डिस्चार्ज कहते हैं। परन्तु यदि कोई अहंकार पूर्वक यह कहे कि इस स्थान पर बरी के शब्द से अभिप्राय वह व्यक्ति है जो अपराधी सिद्ध होने के बाद अपनी सफ़ाई को गवाहों के द्वारा अपनी बरीयत प्रकट करे तो ऐसा विचार स्पष्ट तौर पर ग़लत है। क्योंकि यदि ख़ुदा तआला का बरी के शब्द से यही आशय है तो इस से यह खराबी पैदा होगी कि इस आयत से यह फ़त्वा मिलेगा कि ख़ुदा तआला के नज़दीक ऐसे व्यक्ति पर जिस का गुनाह सिद्ध नहीं, किसी गुनाह का आरोप लगाना कोई अपराध नहीं होगा। यद्यपि वह गुप्त तौर पर सज्जन लोगों की तरह जीवन व्यतीत करता ही हो और केवल यह कमी हो कि अभी उसने अदालत में उपस्थित होकर निर्दोष होना सिद्ध नहीं किया। हालांकि ऐसा समझना सर्वथा ग़लत है। और इस से पवित्र क़ुर्आन की सम्पूर्ण शिक्षा अस्त-व्यस्त हो जाती है। क्योंकि इस स्थिति में वैध होगा कि जो लोग उदाहरणतया ऐसी गुप्त हालत स्त्रियों पर व्यभिचार का आरोप लगाते है, जिन्होंने अदालत मे उपस्थित होकर इस बात का सबूत नहीं दिया कि वे हर प्रकार के व्यभिचार से जीवन पर्यन्त सुरक्षित रहे हैं। वे कुछ गुनाह नहीं करते और उनको वैध है कि सम्मानित स्त्रियों पर ऐसा आरोप लगाया करे। हालांकि ऐसा विचार करना इस निम्नलिखित आयत की दृष्टि से स्पष्ट तौर पर अवैध और गुनाह है। क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है –

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً (अन्नूर-5)

अर्थात् जो लोग ऐसी स्त्रियों पर व्यभिचार का आरोप लगाते हैं जिनका व्यभिचारिणी होना सिद्ध नहीं है अपितु सम्मानित हैं। यदि वे लोग चार गवाह से इस आरोप को सिद्ध न करें तो उनको अस्सी कोड़े मारने चाहिएं।

अब देखो कि इन स्त्रियों का नाम ख़ुदा ने बरी रखा है जिन का व्यभिचारिणी

होना सिद्ध नहीं। तो बरी के शब्द की यह व्याख्या बिल्कुल डिस्चार्ज के शब्द से अनुकूल है। क्योंकि यदि बरी का शब्द जो क़ुर्आन ने يرم به بَرِيًّا में इस्तेमाल किया है केवल ऐसी स्थिति में बोला जाता है कि जब किसी को अपराधी ठहरा कर उस पर अभियोग पत्र लगाया जाए। और फिर वह गवाहों की गवाही से अपनी सफ़ाई सिद्ध करे। और नालिश का सबूत डिफ़ेन्स के सबूत से टूट जाए तो इस स्थिति में प्रत्येक दुष्ट को आज़ादी होगी कि ऐसी समस्त स्त्रियों पर व्यभिचार का आरोप लगाए, जिन्होंने विश्वसनीय गवाहों के द्वारा अदालत में सिद्ध नहीं कर दिया कि वे व्यभिचारिणी नहीं हैं चाहे वे नबियों या रसूलों की पत्नियों हों और चाहे अहले बैत की स्त्रियां हों। और स्पष्ट है कि आयत يرم به بَرِيًّا में बरी के शब्द के ऐसे मायने करने साफ नास्तिकता है जो ख़ुदा तआला का आशय कदापि नहीं है अपितु व्यापक तौर पर मालूम होता है कि इस आयत में बरी के शब्द से ख़ुदा तआला का यही आशय है कि जो सम्मानित लोग हैं चाहे पुरुष हैं चाहे स्त्रियां हैं जिन का कोई गुनाह सिद्ध नहीं वे सब बरी के नाम के अधिकारी हैं। और सबूत कि बिना उन पर कोई आरोप लगाना पाप है जिस से ख़ुदा तआला इस आयत में मना करता है और यदि किसी को नबियों और रसूलों की कुछ परवाह न हो और अपनी हठधर्मी से न रुके तो फिर थोड़ी शर्म कर के अपनी स्त्रियों के बारे में ही कुछ इन्साफ़ करे कि क्या यदि उन पर कोई व्यक्ति उनके सतीत्त्व के विपरीत कोई ऐसा संवेदनशील आरोप लगाए जिसका कोई सबूत न हो तो क्या वे स्त्रियां आयत يرم به بَرِيًّا की चरितार्थ ठहर कर बरी समझी जा सकती हैं और ऐसा आरोप लगाने वाला दण्डनीय ठहरता है या वह केवल इस हालत में बरी समझी जाएंगी जबकि वे अपनी सफ़ाई और पाकदामनी के बारे में अदालत में गवाह गुज़ारें और जब तक वे गवाहियों के द्वारा अपने सतीत्व का अदालत में सबूत न दें तब तक जो व्यक्ति चाहे उनके सतीत्व पर आक्रमण किया करे और उनको ग़ैर बरी ठहराए। और स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला ने पवित्र आयत में सबूत का भार आरोप लगाने वाले पर रखा है। और जब तक आरोप लगाने

वाले किसी गुनाह को सिद्ध न करे तब तक समस्त पुरुषों और स्त्रियों को बरी कहलाने के योग्य ठहराया है। अत: क़ुर्आन और अरबी भाषा की दृष्टि से बरी के मायने ऐसे विशाल हैं कि जब तक किसी पर किसी अपराध का सबूत न हो वह बरी कहलाएगा। क्योंकि इन्सान के लिए बरी होना स्वाभाविक अवस्था है। और गुनाह एक रोग है जो पीछे से संयुक्त होता है।

एक और बात महान है जो 21 नवम्बर 1898 ई. को विज्ञापन की मीआद में प्रकटन में आई जिस से कथित विज्ञापन की भविष्यवाणी का पूरा होना और भी स्पष्टता से सिद्ध होता है। क्योंकि वह भविष्यवाणी जो चौथा लड़का पैदा होने के बारे में अंजाम आथम के परिशिष्ट के पृष्ठ 58 में की गई थी जिसके साथ यह शर्त थी कि अब्दुल हक़्क़ ग़ज़नवी जो अमृतसर में मौलवी अब्दुल जब्बार ग़ज़नवी की जमाअत में रहता है, नहीं मरेगा जब तक यह चौथा लड़का पैदा न हो ले। वह भविष्यवाणी जो 21 नवम्बर 1898 ई. के विज्ञापन की मीआद के अन्दर पूरी हो गई वह लड़का ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से पैदा हो गया जिसका नाम ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से **मुबारक अहमद** रखा गया। और जैसा कि भविष्यवाणी में शर्त थी कि अब्दुल हक़्क़ ग़ज़नवी उस समय तक ज़िन्दा होगा कि चौथा लड़का पैदा हो जाएगा। ऐसा ही प्रकटन में आया। और अब इस समय तक कि 5, दिसम्बर 1899 ई. है प्रत्येक व्यक्ति अमृतसर में जाकर छान बीन कर ले कि अब्दुल हक़्क़ अब तक ज़िन्दा है। फिर इसमें क्या सन्देह है कि यह साफ़-साफ़ और खुली-खुली भविष्यवाणी मुहम्मद हुसैन और उसके गिरोह के सम्मान का कारण नहीं हो सकती। क्योंकि ख़ुदा ने ऐसे इन्सान की दुआ को स्वीकार करके जो मुहम्मद हुसैन और उसके गिरोह की नज़र में काफ़िर और दज्जाल है उसकी भविष्यवाणी के अनुसार अब्दुल हक़्क़ ग़ज़नवी के जीवन में उसको चौथा पुत्र प्रदान किया और यह एक ख़ुदाई समर्थन है जो सच्चे इन्सान के अतिरिक्त अन्य किसी के लिए कदापि नहीं हो सकता। तो जब कि इस भविष्यवाणी का मीआद के अन्दर पूरा हो जाना और अब्दुल हक़्क़ के जीवन में ही उस का प्रकटन में आना मेरे सम्मान का कारण

हुआ तो निस्सन्देह मुहम्मद हुसैन और उस के गिरोह जाफ़र ज़टली इत्यादि के अपमान का कारण हुआ हो। यह और बात है कि ये लोग प्रत्येक बात में और प्रत्येक अवसर पर यह कहते रहें कि हमारा कुछ भी अपमान नहीं हुआ। परन्तु जो व्यक्ति न्यायवान होकर इन समस्त घटनाओं को पढ़ेगा उसको तो बहरहाल मानना पड़ेगा कि निस्सन्देह अपमान हो चुका।

इस स्थान पर हमें अफ़सोस के साथ यह भी लिखना पड़ा है कि 23 नवम्बर 1899 ई. के 'अख़बार आम' में एक व्यक्ति सनाउल्लाह नामक अमृतसरी ने यह निबंध छपवाया है कि अब तक मौलवी मुहम्मद हुसैन का कुछ भी अपमान नहीं हुआ। हम हैरान हैं इस खुली वास्तविकता के विरुद्ध खुली बात का क्या उत्तर लिखें। हम नहीं जानते कि सनाउल्लाह साहिब के विचार में अपमान किस को कहते हैं। हां हम यह स्वीकार करते हैं कि अपमान कई प्रकार का होता है और इन्सानों का प्रत्येक वर्ग की स्थिति के अनुसार एक प्रकार का अपमान है। उदाहरणतया ज़मींदारों में से एक वे हैं जो केवल सरकारी दस्तक जारी होने से अपना अपमान समझते हैं और उनकी तुलना में इस प्रकार के ज़मींदार भी देखे जाते हैं जो माल गुज़ारी की क़िस्त यथा समय अदा न होने के कारण तहसील के चपरासी उनको पकड़ कर ले जाते हैं और मामले की अदायगी न करने के कारण कान ऐंठते हैं। अपितु कभी-कभी उनको दो-चार जूते मार भी देते हैं और वे ज़मींदार हंसी-खुशी मार खा लेते हैं और तनिक भी नहीं सोचते कि उनका कुछ अपमान हुआ है और उनसे भी अधिक कुछ दुष्ट ...ऐसे होते हैं कि जो जेलख़ाने में जाते हैं और चूतड़ों पर बैंत भी खाते हैं और इसके बावजूद कभी नहीं समझते कि हमारे सम्मान में कुछ भी अन्तर आया है अपितु जेल में हस्ते और गाते रहते हैं मानो एक नशे में हैं। अब चूंकि सम्मान कई प्रकार के और अपमान भी कई प्रकार के हैं इसलिए यह बात मियां सनाउल्लाह से पूछने योग्य है कि वह किस बात को शेख मुहम्मद हुसैन का अपमान ठहराते हैं। और यदि इतनी लज्जाजनक बातों में से जो उसका कुछ भी अपमान नहीं हुआ तो हमें समझा दें कि वह कौन सी स्थिति थी जिस से

उनका अपमान हो सकता और वर्णन करें कि जो मौलवी मुहम्मद हुसैन जैसी शान और सम्मान का आदमी हो उसका अपमान किस प्रकार के अपमान में समझा जाता है। अब तो हम यही समझ बैठे थे कि सुशील एवं सभ्य इन्सानों का सम्मान अत्यन्त नाज़ुक होता है और थोड़ी मान हानि से सम्मान में अन्तर आता जाता है। परन्तु अब मियां सनाउल्लाह साहिब के बयान से मालूम होता है कि इन समस्त लज्जाजनक बातों से कथित मौलवी साहिब के सम्मान में कुछ भी अन्तर नहीं आया। अत: इस स्थिति में हम इस इन्कार का कुछ भी उत्तर नहीं दे सकते। जब तक कि मियां सनाउल्लाह खोल कर हमें न बता दें कि किस प्रकार का अपमान होना चाहिए था जिस से एकेश्वरवादियों के इस एडोवोकेट के सम्मान में अन्तर आ जाता। यदि वह हमें उचित तौर पर समझा देंगे कि सुशील लोगों, प्रतिष्ठित लोगों और प्रसिद्ध उलेमा का अपमान इस प्रकार का होना आवश्यक है तो इस स्थिति में यदि हमारी भविष्यवाणी की दृष्टि से वह विशेष अपमान नहीं पहुंचा जो पहुंचना चाहिए था तो हम इक़रार कर देंगे कि अभी भविष्यवाणी पूर्णरूप से प्रकटन में नहीं आई। परन्तु अब तक तो हम मौलवी मुहम्मद हुसैन की विद्वतापूर्ण हैसियत पर दृष्टि रख कर यही समझते हैं कि भविष्यवाणी उनकी हैसियत के अनुसार तथा इल्हामी★ शर्त के अनुसार पूर्णरूप से प्रकटन में आ चुकी। पर्याप्त समय हुआ कि हमने इन समस्त मौलवियों से मुलाक़ात छोड़ दी है। हमें कुछ भी मालूम नहीं कि लोग अपना अपमान किस सीमा के अपमान में समझते हैं। और किस सीमा के अपमान को हज़्म कर जाते हैं। मियां सनाउल्लाह को विमुख होने का निस्सन्देह

★ इल्हामी शर्त यह थी कि मुहम्मद हुसैन और उसके दो साथियों का अपमान केवल इस प्रकार का होगा जिस प्रकार का अपमान उन्होंने पहुंचाया था जैसा कि इल्हाम 21 नवम्बर 1898 के विज्ञापन में दर्ज इस वाक्य से प्रकट है कि

جزاء سیّئة بمثلها وترهقهم ذلّة

फिर इल्हामी शर्त की उपेक्षा कर के ऐतराज़ करना मूर्ख पक्षपातियों का काम है न कि बुद्धिमान और न्यायधीशों का। इसी से।

अधिकार है। परन्तु हम उत्तर देने से असमर्थ हैं। जब तक वह खोल कर वर्णन न करें कि अपमान तब होता था कि जब ऐसा प्रकटन में आता। हम स्वीकार करते हैं कि इन्सानों के विभिन्न वर्गों की दृष्टि से अपमान भी विभिन्न तौर पर है और प्रत्येक के लिए अपमान के कारण पृथक-पृथक हैं। परन्तु हमें क्या ख़बर है कि आप लोगों ने मौलवी मुहम्मद हुसैन को किस वर्ग का इन्साफ़ ठहराया है और उसका अपमान किन बातों में समझा गया है। हमारी समझ में तो मियां सनाउल्लाह को मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब से कोई गुप्त वैर है कि वह अब तक उनका इस श्रेणी के अपमान पर राज़ी नहीं हुए जो सुशलीलों, प्रतिष्ठित लोगों और विद्वानों के लिए पर्याप्त है।

यह तो स्पष्ट है कि दुनिया में अपमान तीन प्रकार का होता है। एक तो शारीरिक अपमान जिसके अधिकतर अपराधी अभ्यस्त होते रहते हैं। दूसरे शिष्टाचार का अपमान। यह तब होता है जबकि किसी का शिष्टाचार संबंधी हालत अत्यंत गन्दी सिद्ध हो और इस पर उसको डांट-डपट हो। तीसरे ज्ञान संबंधी छिद्रान्वेषण का अपमान। जिस से आलिमाना (विद्वत्तापूर्ण) हैसियत मिट्टी में मिलती है। अब स्पष्ट है कि शिष्टाचार का अपमान प्रकटन में आ चुका है। यदि किसी को सन्देह है तो उस मिस्ल को देखो जो मिस्टर जे.एम.डोई साहिब की अदालत में तैयार हुई है। ऐसा ही आलिमाना हैसियत का अपमान प्रकटन में आ चुका और عجبت (अजबत) के संदर्भ पर जो ऐतराज़ मुहम्मद हुसैन ने किया है और फिर जो डिस्चार्ज का अनुवाद करते हुए आपने फ़रमाया है कि डिस्चार्ज का अनुवाद बरी नहीं है। इन दोनों ऐतराज़ों से साफ़ तौर पर खुल गया कि नहव (अरबी व्याकरण) जानने और हदीस जानने की खूबियों के अतिरिक्त आप को अंग्रज़ी क़ानून के बारे में भी बहुत कुछ जानकारी है। और स्मरण रहे कि शत्रु का अपमान एक प्रकार का यह भी होता है कि उसके विरोधी को जिसको अपमानित करने के लिए हर दम यत्न करता और भिन्न-भिन्न प्रकार के षड्यन्त्र इस्तेमाल में लाता है, ख़ुदा तआला की ओर से सम्मान मिल जाए। तो इस प्रकार का अपमान भी प्रकट है क्योंकि डोई साहिब के मुक़द्दमे के बाद जो कुछ ख़ुदा

तआला की कृपा ने मेरी ओर एक दुनिया को फेर दिया और फेर रहा है। यह एक ऐसी बात है कि उस व्यक्ति का इसमें घोर अपमान है जो इसके विरुद्ध मेरे लिए चाहता था। हां मियां सनाउल्लाह के तीन ऐतराज़ और शेष हैं और वे यह कि वह पर्चा अख़बार आम में यह कहता है "कि मुहम्मद हुसैन को चार मुरब्बा भूमि मिल गई है और किसी रियासत से उसका कुछ वज़ीफ़ा निर्धारित हो गया है। और मिस्टर जे.एम.डोई साहिब ने उसकी इच्छा के अनुसार मुक़द्दमा किया है।" तीसरे ऐतराज़ के उत्तर की कुछ आवश्यकता नहीं। क्योंकि अभी हम लिख चुके हैं कि यह दावा तो सर्वथा शर्म का त्याग है कि ऐसा समझा जाए कि मुहम्मद हुसैन की इच्छानुसार मुकद्दमा हुआ है। स्वयं मुहम्मद हुसैन को क़सम देकर पूछना चाहिए कि क्या उस की इच्छा थी कि भविष्य में वह काफ़िर और दज्जाल तथा काज़िब कहने से रुक जाए और क्या उस की यह इच्छा थी कि भविष्य में गालियों और अश्लील कहने और कहाने से रुक जाए? फिर कौन मुन्सिफ़ और शर्म करने वाला कह सकता है कि यह मुक़द्दमा मुहम्मद हुसैन की इच्छा के अनुसार हुआ। हां यदि यह ऐतराज़ हो कि हमें भी भविष्य में मौत और अपमान की भविष्यवाणी करने से रोका गया है। इस का उत्तर यह है कि यह हमारी कार्रवाई स्वयं उस समय से पूर्व कि समाप्त हो चुकी थी कि जब डोई साहिब के नोटिस में यह लिखा गया अपितु हम अपनी पुस्तक अंजाम आथम में स्पष्टरूप से लिख चुके हैं कि हम इन लोगों को भविष्य में सम्बोधित करना भी नहीं चाहते जब तक यह हमें सम्बोधित न करें और हम हार्दिक तौर पर विमुख और नफ़रत करते हैं कि इन लोगों का नाम भी ले। कहां यह कि उन के हक़ में भविष्यवाणी करके इतने सम्बोधन से उनको कुछ सम्मान दें। हमारा उद्देश्य तीन फ़िर्क़ों के बारे में तीन भविष्यवाणियां थीं तो हम अपने इस उद्देश्य को पूरा कर चुके। अब हमें कुछ भी आवश्यकता नहीं कि इन लोगों की मौत और अपमान के बारे में भविष्यवाणी करें और यह आरोप कि भविष्य में सामान्यतया इल्हामों को प्रकाशित करने और हर प्रकार की भविष्यवाणियों से रोका गया है। ये उन लोगों की बातें हैं जो लानतुल्लाहे अल्ल काज़िबीन (झूठों पर ख़ुदा की लानत)

की वईद में दाख़िल हैं। हम इस मुक़द्दमे के बाद बहुत सी भविष्यवाणियां कर चुके हैं। तो यह कैसा गन्दा झूठ है जो ये लोग प्रकाशित करते हैं। रहा यह प्रश्न कि मुहम्मद हसैन को कुछ भूमि मिल गई है अर्थात् अपमान की बजाए सम्मान हो गया है। यह नितान्त बेहूदा विचार है। अपितु यह ऐतराज़ उस समय करना चाहिए था कि जब इस भूमि से मुहम्मद हुसैन कुछ लाभ प्राप्त कर लेता अभी तो वह एक आज़मायश के नीचे है कुछ मालूम नहीं कि उस भूमि से अन्त में कुछ क़र्ज़दार होगा या कुछ लाभ होगा। इसके अतिरिक्त कन्ज़ुल उम्माल की किताब अलमुज़ारिकत में अर्थात् पृष्ठ 73 में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह हदीस मौजूद है

لا تد خل سكة الحرث علىٰ قوم الا اذلهم الله (طب عن ابى امامة)

अर्थात् खेती का लोहा और उपकरण किसी क़ौम में नहीं आता जो उस क़ौम को अपमानित नहीं करता। फिर इसी पृष्ठ पर एक दूसरी हदीस है।

انّهٗ صلّى الله عليه وسلم رأى شيئاً من اٰلة الحرث فقال لايد خل هٰذا بيت قوم الّا دخله الذّل (خ عن ابى امامة)

अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खेती का एक आल: (उपकरण) देखा और फ़रमाया कि यह आल: किसी क़ौम के घर में दाख़िल नहीं होता परन्तु उस क़ौम को अपमानित कर देता है।

अब देखो इन हदीसों से व्यापक तौर पर सिद्ध है कि जहां कृषि का आल: होगा वहीं अपमान होगा। अब हम मियां सनाउल्लाह की बात मानें या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की, जो व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात पर ईमान रखते हैं उसको मानना पड़ेगा कि किसी के गले में काश्तकारी का सामान पड़ना यह भी एक प्रकार का अपमान है। तो यह तो मियां सनाउल्लाह ने हमारी सहायता की कि जिस प्रकार के अपमान की हमें ख़बर भी नहीं थी हमें ख़बर दे दी। हमें तो केवल पांच प्रकार के अपमानों की ख़बर थी। इस छठे प्रकार के अपमान पर मियां सनाउल्लाह के माध्यम से

सूचना हुई। और रही यह बात कि मुहम्मद हुसैन का किसी रियासत में वज़ीफ़ा निर्धारित हो गया है। यह ऐसी बात है कि इस को कोई बुद्धिमान सम्मान नहीं कहेगा। इन रियासतों में तो हर प्रकार के लोगों के वज़ीफ़े निर्धारित हैं जिन में से कुछ के नामों का ज़िक्र भी शर्म योग्य है। फिर यदि मुहममद हुसैन का वज़ीफ़ा भी किसी ने निर्धारित कर दिया तो किस सम्मान का कारण हुआ। अपितु इस जगह तो वह वाक्य याद आता है कि – بِئْسَ الْفَقِيْرُ عَلٰی بَابِ الْاَمِيْر सारांश यह कि यह भविष्यवाणी जो मुहम्मद हुसैन और उसके दो साथियों के बारे में थी उच्च स्तर पर पूरी हो गयी। हम स्वीकार करते हैं कि इन लोगों का इस प्रकार का अपमान नहीं हुआ जो निम्न स्तर के वर्ग से इसकी व्याख्या थी मिस्ली (समान) अपमान होगा। जैसा कि भविष्यवाणी का यह वाक्य है

جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بمثلها وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّة

अर्थात् जिस प्रकार का अपमान इन लोगों ने पहुंचाया उसी प्रकार का अपमान इनको पहुंचेगा। अब हम इस प्रश्न को ज़टल्ली और तिब्बती से तो नहीं पूछते। क्योंकि उनका अपमान और सम्मान दोनों तुफ़ैली हैं परन्तु जो व्यक्ति चाहे मुहम्मद हुसैन को पवित्र क़ुर्आन हाथ में लेकर हलफ़ देकर पूछ ले कि यह मिस्ली अपमान जो इल्हाम के समझ में आता है यह तुम्हें और तुम्हारे साथियों को पहुंच गया या नहीं? निर्लज्जता से बात को हद से बढ़ाना किसी सुशील इन्सान का काम नहीं है अपितु गन्दों और नीच लोगों का काम है। परन्तु एक न्यायप्रिय सोच सकता है कि ख़ुदा के इल्हाम में यह तो नहीं बताया गया था कि वह अपमान किस मार-पीट के द्वारा होगा या किसी अन्य शारीरिक हानी से या ख़ून करने से वह अपमान पहुंचाया जाएगा अपितु ख़ुदा के इल्हाम के साफ और व्यापक शब्द ये थे कि अपमान केवल इस प्रकार का होगा जिस प्रकार का अपमान इन लोगों ने पहुंचाया। इल्हाम मौजूद है। हज़ारों लोगों में छप कर प्रकाशित हो चुका है। फिर यहूदियों की तरह उसमें अक्षरांतरण करना उस निर्लज्ज इन्सान का काम है जिसको न ख़ुदा तआला का भय है और न इन्सानों से शर्म है।

क्रम संख्या 71.	निशान का विवरण

उन समस्त भविष्यवाणियों में से जो पूरी हो चुकी हैं और ख़ुदा तआला की ओर से मेरी सच्चाई पर एक निशान है एक यह है कि जब मेरी लड़की मुबारका पेट में थी और लगभग पच्चीस दिन उसके जन्म लेने में शेष रहते थे तो उस लड़की की मां बहुत कष्ट में ग्रस्त थी और हिसाब की ग़लती से यह ग़म भी उसे लग गया कि शायद यह गर्भ न हो कोई और बीमारी हो। क्योंकि उन्होंने ठीक-ठीक याद न रखने के कारण से यह सोचा कि यह ग्यारहवां महीना जाता है और सामान्य दस्तूर के अनुसार यह मुद्दत गर्भ की नहीं हो सकती। इसलिए दोहरा कष्ट लग गया। और जब ऐसे-ऐसे विचारों से उनका ग़म हद से बढ़ गया तो मैंने उनके लिए दुआ की। तब मुझे यह इल्हाम हुआ

آید آں روزے کہ مستخلص شود

अर्थात् वह दिन चला आता है कि छुटकारा हो जाएगा। और इस इल्हाम के अर्थों से मुझे यह समझाया गया कि लड़की पैदा होगी और इसी कारण से खुशख़बरी का कोई शब्द इस इल्हाम में प्रयोग नहीं किया गया अपितु छुटकारे का शब्द प्रयोग किया गया। अतः मैंने इस इल्हाम से अपनी जमाअत में से बहुत से लोगों को सूचना दे दी। अन्त में 27 रमज़ान 1314 हिज्री को लड़की पैदा हो गई जिसका नाम मुबारका रखा गया। क्योंकि उन्हीं दिनों में मुझे मालूम कराया गया था कि एक निशान प्रकट होगा। अतः ऐसा ही हुआ और जस दिन लड़की का अक़ीक़ः था उसी दिन हमें सूचना पहुंची कि वह लेखराम जिसके मारे जाने के बारे में भविष्यवाणी की गई थी वह 6 मार्च 1897 ई. को इस ग़द्दार दुनिया से आलमे मजाज़ात (मृत्यु लोक) की ओर खींचा गया। समस्त गवाह इस भविष्यवाणी के ज़िन्दा हैं जो हलफ़ उठा कर वर्णन कर सकते हैं।

क्रम संख्या 72.	निशान का विवरण

मेरे समस्त निशानों में जो ख़ुदा तआला ने मेरे समर्थन में प्रकट किए एक महान निशान जो नुबुव्वत के सिलसिले के समान है यह है कि बराहीन

अहमदिया में एक यह भविष्यवाणी थी

يعصكمك الله و ان لم يعصمك النّاس۔ و ان لم يعصمك النّاس يعصمك الله

इस भविष्यवाणी में उस बला और फ़ित्ने के समय की ओर संकेत था जबकि प्रत्येक मनुष्य मुझ से मुख फेर लेगा और तबाह करने और क़त्ल करने की योजनाएं सोचेंगे। फिर मेरे मसीह मौऊद और महदी मौऊद के दावे के बाद ऐसा ही प्रकटन में आया। समस्त लोग सहसा कष्ट में आ गए। और उन्होंने पहले यह ज़ोर लगाया कि किसी प्रकार क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों से मुझे दोषी कर सकें। फिर जबकि वे इसमें सफ़ल न हो सके अपितु इसके विपरीत व्यापक और सुदृढ़ आदेशों से यह सिद्ध हो गया कि वास्तव में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम मृत्यु★ पा गए हैं। तो फिर मौलवियों ने क़त्ल के फ़त्वे लिखे और अपनी पत्रिकाओं और पुस्तकों में सामान्य लोगों को उकसाया कि यदि इस व्यक्ति को क़त्ल कर दें तो बड़ा ही पुण्य होगा और फिर जबकि इस बात में भी सफ़लता नहीं मिली तो शेख मुहम्मद हुसैन एकेश्वरवादियों के एडवोकेट ने इस बात पर कमर कस ली कि हमारी उपकारी सरकार अंग्रेज़ी को हर समय वास्तविकता के विरुद्ध यह सूचना दी कि यह व्यक्ति अंग्रेज़ी सरकार के बारे में अच्छे विचार नहीं रखता। फिर एक मुद्दत तक वह ऐसा ही करता रहा और उसने वास्तविकता को विरुद्ध कई बातें मेरे बारे में अपनी इशाअतुस्सुन्नः में लिखीं और प्रकाशित कीं ताकि सरकार भड़क जाए। परन्तु वह ख़ुदा जिस के हाथ में प्रत्येक दिल है उसने

★हाशिया :- स्मरण रहे कि क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों ने यह फ़ैसला कर दिया है कि वास्तव में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं क्योंकि इस मुद्दे पर पवित्र क़ुर्आन की दो आयतें अटल गवाह हैं। (1) प्रथम यह आयत -

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(आले इमरान-56)

इस सरकार को मेरे बारे में ग़लती खाने से बचाया। और वास्तव में यह बड़ी ग़लती थी कि मुझे बाग़ी समझा जाता। क्योंकि मुझे क्या हो गया था कि मैं ऐसी सरकार के बारे में बग़ावत के विचार व्यक्त करता जिसके उपकार हमारे सर पर हैं। हम इस हुकूमत के काल से पहले भयानक अवस्था में थे। इसने शरण दी। हम सिक्खों के युग में हर समय एक कुल्हाड़ी के नीचे थे,

शेष हाशिया - अर्थात् हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने रब्ब का वह फ़ज़्ल और कृपा याद कर कि जो उसने ईसा अलैहिस्सलाम पर की तथा ईसा अलैहिस्सलाम को यह खुशख़बरी दी कि हे ईसा! मैं तुझे स्वभाविक मृत्यु दूंगा अर्थात् तू सूली पर नहीं मारा जाएगा और तुझे मृत्यु के पश्चात् अपनी ओर उठाऊंगा अर्थात् तेरे चुने होने तथा सच्चा होने के बारे में शक्तिशाली और रोशन लक्षण प्रकट करूंगा और दुनिया में तेरी शुभ चर्चा इतनी शेष रह जाएगी कि यह सिद्ध हो जाएगा कि तू ख़ुदा का सानिध्यप्राप्त है और उसके पवित्र दरबार में बुलाया गया है और जो आरोप तुझ पर लगाए जाते हैं उन सब से तेरा पवित्र होना सिद्ध कर दूंगा। और तेरे अनुयायियों को जो तेरी सही-सही शिक्षा का अनुकरण करेंगे हुज्जत और प्रमाण की दृष्टि से दूसरों पर क़यामत तक प्रभुत्त्व दूंगा, कोई उनका मुक़ाबला नहीं कर सकेगा और तेरे विरोधियों और गालियां देने वालों को अपमानित करूँगा वे हमेशा अपमान का जीवन व्यतीत करेंगे। वास्तव में ख़ुदा तआला ने इस पवित्र आयत के पर्दे में हमारे सय्यद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना देकर एक ख़ुशख़बरी दी है जिसका सारांश यह है कि ये लोग जो तेरे मारने पर तत्पर हैं और चाहते हैं कि यह प्रकाश दुनिया में न फैले ये सब असफ़ल रहेंगे। और ईसा मसीह की तरह हर तंगी के समय में ख़ुदा तेरी सहायता करेगा और तुझे शत्रुओं के षड्यन्त्र से बचाएगा और तुझ पर बहुत आरोप लगाए जाएंगे। परन्तु ख़ुदा तआला तुझे समस्त आरोपों से पवित्र ⁕ करेगा और क़यामत तक तेरे गिरोह को प्रभुत्व प्रदान करेगा। और यह वाक्य जो उपरोक्त आयत में है कि مطهرك من الذين كفروا इसमें यह संकेत है कि जिस प्रकार जब

⁕हाशिए का हाशिया - प्रत्येक रसूल या नबी या मुहद्दिस या ख़ुदा का मामूर जो दुनिया में आता है ख़ुदा तआला की यही आदत है कि दुष्ट और पापी आदमी उस पर नाना प्रकार के आरोप लगाया करते हैं और परीक्षा के लिए उनको आरोप लगाने का अवसर भी दिया जाता है। इसी आधार पर हज़रत मसीह को ख़ुदा तआला ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति प्रदान की

उस ने हमारी गर्दनें बाहर निकाली। हमारी धार्मिक आज़ादी बिल्कुल रोकी

शेष हाशिया - मसीह अलैहिस्सलाम पर यहूदियों और ईसाइयों ने बहुत से आरोप लगाए तो हज़रत मसीह को वादा दिया गया कि ख़ुदा तआला तेरे बाद एक नबी पैदा करेगा जो उन समस्त आरोपों से तेरा पवित्र होना सिद्ध कर देगा। ऐसा ही तेरे बारे में ख़ुदा तआला ने इरादा किया है कि अन्तिम युग में जबकि शत्रुओं की मीन-मेख और दोषारोपण चरम

शेष हाशिए का हाशिया - थी जिस से अभागे यहूदी यह समझते थे कि वह तौरात को छोड़ता है और नास्तिकता के मार्ग से उसके और अर्थ करता है तथा कहते थे कि इस व्यक्ति में संयम और तक़्वा नहीं। खाऊ-पियू है तथा शराबियों और दुराचारियों के साथ खाता-पिता और उन से मिलता-जुलता है तथा अजनबी स्त्रियों से बातें कहता है। अत: मूर्ख यहूदियों के ये आरोप आज तक हैं कि यसू ने, जिसको ईसाई अपना ख़ुदा ठहराते हैं, अपवित्र स्त्रियों से स्वयं को दूर नहीं रखा। अपितु जब एक व्यभिचारिणी स्त्री इत्र लेकर उसके पास आई तो उसको जान-बूझ तक यह अवसर दिया कि वह हराम की कमाई का इत्र उसके सर पर मले और उसके पैरों पर अपने सजाए हुए बाल रखे और ऐसा करना उसको वैध न था। ऐसा ही उन का यह भी आरोप है कि मसीह इल्हामी शर्त के अनुसार नहीं आया क्योंकि मलाकी नबी ने भविष्यवाणी की थी कि मसीह नहीं आएगा जब तक कि एलिया नबी दोबारा दुनिया में न आ जाए। तो जिस हालत में एलिया तो अब तक दुनिया में नहीं आया तो मसीह कैसे आ गया?

ये वे आरोप हैं जो यहूदियों की पुस्तकों में लिखे हैं जिन में से कुछ मेरे पास मौजूद हैं। अत: ख़ुदा तआला इस आयत में वादा करता है कि मैं तुझे इन समस्त आरोपों से बरी करूंगा। ऐसा ही ईसाइयों ने भी हज़रत मसीह पर झूठे आरोप लगाए थे कि जैसे नऊज़ुबिल्लाह उन्होंने ख़ुदाई का दावा किया है और ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह को सूचना दी थी कि तुझ पर ऐसे-ऐसे गन्दे आरोप लगाए जाएंगे और साथ ही वादा दिया था कि मैं तेर बाद एक अन्तिम युग का नबी भेजूंगा और उसके माध्यम से ये समस्त आरोप तेरे ऊपर से दूर कर दूंगा और वह तेरी सच्चाई की गवाही देगा तथा लोगों पर प्रकट करेगा कि तू सच्चा रसूल था। फिर ऐसा ही घटित हुआ अर्थात् जब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में आए और ख़ुदा तआला की ओर से अवतरित हुए तो आप ने हज़रत मसीह का दामन प्रत्येक आरोप से पवित्र करके दिखलाया। इसी से।

गई थी यहां तक कि हम अधिकृत न थे कि नमाज़ की बांग बुलन्द आवाज़ से कह सकें। इस उपकारी सरकार ने हमारी आज़ादी दोबारा स्थापित कर दी और हम पर बहुत से अमन और आराम के संबंध में उपकार किए। और सर्वाधिक यह कि हम पूर्ण आज़ादी से धार्मिक कर्त्तव्यों को अदा करने लगे। फिर ऐसा कौन पागल और दीवाना है कि इतने उपकार देख कर फिर नमक हरामी (कृतघ्नता) करे। हम सच-सच कहते हैं कि हमारे ख़ुदा ने हमारे लिए इस सरकार को एक शरण बना दिया है और वह अन्याय और अत्याचार का सैलाब जो शीघ्रतर हमें मारना चाहता था वह इस फ़ौलादी बांघ से रुक

शेष हाशिया - सीमा को पहुंच जाएगा तेरे सत्यापन के लिए तेरी ही उम्मत में से एक व्यक्ति जो मसीह मौऊद है, पैदा किया जाएगा।★ वह तेरे दामन को प्रत्येक आरोप से पवित्र सिद्ध कर देगा और तेरे चमत्कारों को ताज़ा करेगा। और इस भविष्यवाणी में यह भी संकेत है कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़त्ल नहीं होंगे और आप का आकाश की ओर रफ़ा अपनी नुबुव्वत की दृष्टि से सूर्य के समान चमकेगा, क्योंकि इस उम्मत में हज़ारों वली पैदा होंगे। और इस भविष्यवाणी में साफ शब्दों में बताया गया है कि हज़रत मसीह उस युग से पहले मृत्यु पा जाएंगे जब वह मान्य रसूल प्रकट होगा जो विरोधियों के आरोपों से उनके दामन को पवित्र करेगा। क्योंकि इस आयत में लफ़्फ़ो नश्र मुरत्तब (अर्थात् उपमेय और उपमान क्रम से आएं) है। पहले मृत्यु का वादा है फिर रफ़ा का फिर शुद्धिकरण का और फिर यह कि ख़ुदा तआला उनके अनुयायियों को प्रत्येक पहलू से प्रभुत्व प्रदान करके विरोधियों को क़यामत तक अपमानित करता रहेगा। यदि इस क्रम का ध्यान न रखा जाए

★वह युग जिसमें हम हैं यह वही युग है जिसमें शत्रुओं की ओर से हर प्रकार की गालियां चरम सीमा को पहुंच गई हैं। और बुरा कहना, दोष ढूंढना और इफ़्तिरा करना इस सीमा तक पहुंच चुका है कि अब उस से बढ़कर संभव नहीं तथा इसके साथ मुसलमानों की आन्तरिक स्थिति भी अत्यन्त खतरनाक हो गई है। सैकड़ों बिदअतें और नाना प्रकार के शिर्क, नास्तिकता तथा इन्कार प्रकटन में आ रहे हैं। इसलिए अटल और निश्चित तौर पर अब यह वही युग है जिसमें भविष्यवाणी مطهرك من الذين كفروا के अनुसार महान सुधारक पैदा हो। तो अल्हुम्दु लिल्लाह कि वह **मैं हूं।** इसी से।

गया है। तो फिर यह कृतज्ञता का स्थान था या शिकायत का स्थान। परन्तु मुहम्मद हुसैन पर कुछ भी अफ़सोस नहीं क्योंकि जिस स्तर पर उस ने अपनी शत्रुता और वैर को पहुंचाया है। और जिस मात्रा तक उसके अन्दर मेरे बारे में वैर और अशुभ चिन्ता का तत्त्व एकत्र है उसकी मांग ही यही थी कि वह ऐसी-ऐसी वास्तविकता के विरुद्ध बातों की ओर विवश होता। अत: इन लोगों ने जितनी शत्रुता के जोश में वे सब उपाय सोचें जो मनुष्य अपने विरोधी के तबाह करने के लिए सोच सकता है। और जितनी शत्रुता की तीव्रता के समय में दुनियादार लोग अन्दर ही अन्दर मनसूबे बनाया करते हैं वह सब बनाए और ज़ोर लगाने में कुछ भी अन्तर न किया और मुझे अपमानित करने और मारने के लिए नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया और मक्का के धर्महीनों की तरह कोई उपाय न छोड़ा। परन्तु ख़ुदा तआला ने उस समय से

शेष हाशिया - तो इसमें बड़ी खराबी यह है कि वह क्रम जो बाह्य घटनाओं ने सिद्ध कर दिया है, हाथ से जाता रहेगा और किसी का अधिकार नहीं है कि क़ुर्आनी क्रम को बिना किसी शक्तिशाली दस्तावेज़ के उठा दे। क्योंकि ऐसा करना मानो यहूदियों के क़दम पर क़दम रखना है। यह तो सच है कि यह आवश्यक नहीं कि अक्षर واؤ (वाओ) के साथ हमेशा क्रम का ध्यान रखना अनिवार्य हो। किन्तु इस में क्या सन्देह है कि ख़ुदा तआला इस आयत में वाक्य मुतवफ्फीका (तुझे मृत्यु दूंगा) को पहले लाया और फिर वाक्य राफिउका (अध्यात्मिक उन्नति प्रदान करूँगा) को उसके बाद और फिर उसके बाद वाक्य मुतह्हिरुका (तुझे पवित्र करूँगा) वर्णन किया गया है। और बहरहाल इन शब्दों में एक क्रम है जिसको अलीम (सर्वज्ञ) और हकीम ख़ुदा ने अपने बहुत सरस एवं बहुत सुबोध कलाम में ग्रहण किया है। और हमारा अधिकार नहीं है कि हम अकारण इस क्रम को समाप्त कर दें। और यदि पवित्र क़ुर्आन के अन्य स्थानों अर्थात् कुछ और आयतों में मुफ़स्सिरों ने पवित्र क़ुर्आन के वर्तमान क्रम के विपरीत वर्णन किया है तो यह नहीं समझना चाहिए कि उन्होंने स्वयं ऐसा किया है या वे ऐसा करने के अधिकृत थे अपितु कुछ हदीस के स्पष्ट आदेशों ने इसी प्रकार उन की व्याख्या की थी या पवित्र क़ुर्आन के दूसरे स्थानों के स्पष्ट प्रसंगों ने इस बात के मानने के लिए उन्हें विवश कर दिया था कि बाह्य क्रम की उपेक्षा की जाए। परन्तु फिर भी ख़ुदा तआला का अत्यन्त सरस एवं सुबोध कलाम क्रम से रिक्त नहीं होता। यदि संयोग से किसी इबारत में बाह्य क्रम न हो तो अर्थों की दृष्टि से अवश्य कोई क्रम

बीस वर्ष पूर्व उपरोक्त भविष्यवाणी में स्पष्ट शब्दों में फ़रमा दिया था कि मैं तुझे शत्रुओं की बुराई से बचाऊंगा। इसलिए उसने अपने इस सच्चे वादे के अनुसार मुझ को बचाया। विचारणीय है कि नाना प्रकार के उपायों से मुझ पर क्योंकर आक्रमण किए गए यहां तक कि क़त्ल के झूठे मुक़द्दमे बनाए गए और उन मुक़द्दमों के समय न केवल मुहम्मद हुसैन ने गुप्त तौर पर विरुद्ध उपाय सोचे अपितु खुले-खुले तौर पर पादरियों का गवाह बन कर अदालत में उपस्थित हुआ और फिर मिस्टर जे.एम.डोई साहिब की अदालत में भी मेरे लिए अशुभचिन्ता करने में कोई कसर उठा नहीं रखी और दोष ढूंढने का और मीन मेखों एक बड़ा ढेर बना कर और अंग्रेज़ी में अनुवाद करवा कर प्रस्तुत किया। जिस से यह मतलब था कि इन इफ़्तिराओं को पढ़कर अदालत के दिल पर बहुत कुछ प्रभाव पड़ेगा। परन्तु डोई साहिब की प्रतिभा

शेष हाशिया - गुप्त होता है। परन्तु बहरहाल बाह्य क्रम प्राथमिक होता है और किसी अत्यन्त सुदृढ़ सन्दर्भ के मौजूद होने के बिना इस बाह्य क्रम को छोड़ देना सर्वथा नास्तिकता, बेईमानी और अक्षरांतरण होता है। यही तो वह आदत थी जिसके ग्रहण करने से यहूदी ख़ुदा की नज़र में लानती ठहरे। किन्तु यदि कोई हम से पूछे कि इस बात पर प्रमाण क्या है कि पवित्र क़ुर्आन में आद्योपान्त (आरम्भ से अन्त तक) बाह्य क्रम का ध्यान रखा गया है। दो चार स्थान के अतिरिक्त जो न होने के समान हैं। तो यह एक प्रश्न है कि स्वयं पवित्र क़ुर्आन पर एक नज़र डालकर हल हो सकता है अर्थात् इस पर यह प्रमाण पर्याप्त है कि यदि सम्पूर्ण क़ुर्आन आद्योपान्त (आरम्भ से अन्त तक) पढ़ जाओ तो कुछ स्थानों के अतिरिक्त जो न होने के तौर पर हैं, शेष समस्त क़ुर्आनी स्थानों को बाह्य क्रम की एक सुनहरी ज़ंजीर में पिरोया हुआ पाओगे और जिस प्रकार उस हकीम (ख़ुदा) के कार्यों में क्रम दिखाई दे रहा है यही क्रम उसके कथनों में देखोगे। और यह इस बात पर कि क़ुर्आन बाह्य क्रम का ध्यान रखता है ऐसा पुख़्ता, व्यापक और नितान्त शक्तिशाली तर्क है कि इस तर्क को समझ कर और देख कर भी फिर विरोध से जीभ को बन्द न रखना स्पष्ट बेईमानी और बददियानती है। यदि हम इस तर्क को यहां विस्तृत तौर पर लिखें तो जैसे समस्त पवित्र क़ुर्आन को इस जगह दर्ज करना होगा और इस संक्षिप्त पुस्तक में यह गुंजायश नहीं। यह तो हम स्वीकार करते हैं न होने के तौर पर पवित्र क़ुर्आन में एक दो स्थान ऐसे भी हैं कि जिन में उदाहरणतया

ने मालूम कर लिया कि ये लेख झूठे और इर्ष्यालुओं जैसे विचार हैं। इसलिए उन लेखों को मिस्ल में सम्मिलित न किया और रद्दी की तरह फेंक दिया और जो लेख हमारी ओर से गए थे जिन से सिद्ध होता था कि मुहम्मद हुसैन ने विरोधपूर्ण जोश में आकर कैसी गालियों, और लज्जाजनक उपायों से काम लिया है, वे सब मिस्ल में सम्मिलित कर दिए। अतः यह ख़ुदा तआला की कृपा थी कि इन लोगों ने मुझे मारने के लिए उपाय तो हर प्रकार के कर लिए परन्तु कुछ भी पेश न गई और ख़ुदा तआला ने अपने उस वादे को पूरा किया जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 510 में दर्ज था। अर्थात् यह कि ख़ुदा तआला तुझे शत्रुओं की प्रत्येक अशुभ चिन्ता से बचाएगा यद्यपि लोग तुझे मारना चाहें। तो यह एक महान भविष्यवाणी है कि जो नुबुव्वत की पद्धति पर घटित हुई। क्योंकि मुझ से पहले जितने रसूल और नबी गुज़रे हैं सब के समक्ष यह मुसीबत आई थी कि दुष्ट लोग कुत्तों की तरह उन के चारों ओर हो गए थे। और केवल हंसी-ठट्ठे पर ही बस नहीं की थी अपितु चाहा था

शेष हाशिया - ईसा पहले आया और मूसा बाद में आया या कोई अन्य नबी जो पीछे आने वाला था उसका नाम वर्णन किया गया और जो पहले था वह पीछे वर्णन किया गया। परन्तु यह नहीं सोचना चाहिए कि ये कुछ स्थान भी क्रम से रिक्त हैं, अपितु इन में भी एक मायनों का क्रम है जो वर्णन करने के सिलसिले में कुछ हितों के कारण प्रस्तुत हुई हैं। परन्तु इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि पवित्र क़ुर्आन बाह्य क्रम का अत्यन्त अनिवार्य रखता है★ और एक बड़ा भाग क़ुर्आन की सरस्ता का इसी से संबंधित है। इसका कारण यह है कि क्रम का दृष्टिगत रखना भी बलाग़त के अस्तित्व में से है। अपितु उच्च श्रेणी की बलाग़त यही

★ पवित्र क़ुर्आन की बाह्य क्रम जो व्यक्ति हार्दिक विश्वास रखता है उस पर सैकड़ों अध्यात्म ज्ञानों के दरवाज़े खोले जाते हैं तथा सैकड़ों सूक्ष्म से सूक्ष्म रहस्यों तक पहुंचने कि लए यह क्रम उसका मार्ग-प्रदर्शक हो जाता है और क़ुर्आन जानने की एक कुंजी उस के हाथ में आ जाती है जैसे बाह्य क्रम के निशानों से क़ुर्आन स्वयं उसे बताता जाता है कि देखो मेरे अन्दर ये ख़ज़ाने हैं। परन्तु जो व्यक्ति क़ुर्आन के बाह्य क्रम से इन्कारी है वह निस्सन्देह क़ुर्आन के आन्तरिक अध्यात्म ज्ञानों से भी वंचित है। इसी से।

कि उनको फाड़ डालें और टुकड़े-टुकड़े कर दें परन्तु ख़ुदा तआला के हाथ ने उनको बचा लिया। ऐसा ही मेरे साथ हुआ कि इन मौलवियों ने परस्पर ऐसी सहमति की कि मेरे विरोध के जोश में उनके पारस्परिक मतभेद भी भूल गए और उन्होंने दूसरी क़ौमों के पंडितों और पादरियों को भी यथासंभव अपने साथ मिला लिया और पृथ्वी मेरी शत्रुता के जोश में इस प्रकार भर गई जैसा कि कोई बर्तन ज़हर से भरा जाए। परन्तु सम्मान को सुरक्षित रखा जैसा कि वह हमेशा अपने पवित्र नबियों को सुरक्षित रखता रहा है। तो यह एक महान भविष्यवाणी है जो आज से बीस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में प्रकाशित की गई थी और अब बड़े ज़ोर शोर से पूरी हुई, जिसकी आंखें हैं देखे कि क्या ये ख़ुदा के काम हैं या इन्सान के?

क्रम संख्या 73.	**निशान का विवरण**

शेष हाशिया - है जो अपने अन्दर दर्शन शास्त्रीय रंग अपने अन्दर रखती है। जिस व्यक्ति के कलाम में क्रम नहीं होता या कम होता है ऐसे व्यक्ति को हम सरस-सुबोध कदापि नहीं कह सकते। अपितु यदि कोई व्यक्ति हद से अधिक क्रम का ध्यान उठा दे तो वह अवश्य दीवाना और पागल होता है क्योंकि जिसका भाषण व्यवस्थित नहीं उसके हवास भी व्यवस्थित नहीं।★ फिर यह क्योंकर संभव है कि ख़ुदा तआला का वह पवित्र कलाम जो सरसता-सुबोधता का दावा करके सच्चाई के समस्त प्रकारों के लिए बुलाता है। ऐसा चम्तकार पूर्ण कलाम उस आवश्यक सरसता के भाग से गिरा हुआ हो कि उसमें क्रम न पाया जाए। यह बात तो प्रत्येक मनुष्य मानता है कि यद्यपि तरकीब छोड़ना वैध है परन्तु इसमें कुछ आपत्ति नहीं कि यदि उदाहरणतया दो कलाम हों और एक उनमें से दूसरे सरसता सुबोधता की

★देखो ख़ुदा तआला के शम्सी (सूर्य के) निज़ाम में कैसा क्रम पाया जाता है और स्वयं मनुष्य का शारीरिक ढांचा कैसे सुदृढ़ एवं उत्तम क्रम पर आधारित है। फिर कितना अनादर होगा यदि उस सर्वोत्तम सृष्टि कर्ता के हिकमत से भरपूर वाक्यों को अस्त-व्यस्त, अव्यवस्थित और क्रमहीन समझा जाए।

और उन सब निशानों में से जो ख़ुदा तआला ने मेरे समर्थन में प्रकट किए एक भविष्यवाणी 12 मार्च 1897 ई. है जो सय्यद अहमद ख़ान के.सी. एस.आई के बारे में मैंने की थी। उस भविष्यवाणी से पहले एक और भविष्यवाणी 20 फ़रवरी 1886 ई. के विज्ञापन में की गयी थी। जो उसी समय ख्याति पाकर हज़ारों लोगों में प्रसारित हो गयी थी, जिसका ख़ुलासा मतलब यह था कि सय्यद अहमद ख़ान साहिब को कई प्रकार की बलाएं और संकटों से दो चार होना पड़ेगा। अत: ऐसा ही प्रकटन में आया और वह एक महान आर्थिक हानि उठाकर बड़ी कटुता के साथ इस दुनिया से गुज़रे। और मैंने सैकड़ों लोगों के सामने जो उन में से बहुत से अब तक ज़िन्दा मौजूद

शेष हाशिया - श्रेणियों के अतिरिक्त बाह्य क्रम का भी ध्यान रखता हो और दूसरा कलाम इस श्रेणी की सरसता से गिरा हुआ हो और उसमें क़ुदरत न हो कि क्रम के सिलसिले को निभा सके तो निस्सन्देह एक फसीह, साहित्यकार और आलोचक उस कलाम को बहुत अधिक फसाहत की श्रेणी देगा। जो दूसरे सरसता और सुबोधता की ख़ूबियों के अतिरिक्त यह ख़ूबी भी अपने अन्दर रखता है। अर्थात् उसमें क्रम भी मौजूद है और इस से बढ़कर कोई गवाह नहीं कि पवित्र क़ुर्आन ने आद्योपान्त तक क्रम की व्यवस्था को ग्रहण किया है और इसके बावजूद अनुमप व्यवस्था और आसान इबारत को हाथ से नहीं दिया। और यह उस का एक बड़ा चमत्कार है जो हम विरोधियों के समय प्रस्तुत करते हैं और इसी व्यवस्था और क्रम की बरकत से पवित्र क़ुर्आन के हज़ारों रहस्य मालूम होते जाते हैं और यदि यह कहो कि क्रम को तो हम मानते हैं परन्तु تـوفّی (तवफ्फी) के मायने मौत नहीं मानते। तो इसके हमारी ओर से दो उत्तर हैं - (1) प्रथम यह कि स्वयं सही बुख़ारी में हज़रत इब्ने अब्बास से ये अर्थ रिवायत किए गए हैं कि मुतवफ़्फ़ीका, मुमीतुका अर्थात् हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि मुतवफ़्फ़ीका के यह मायने हैं कि मैं तुझे मृत्यु दूंगा। इसके अतिरिक्त जो मनुष्य समस्त हदीसों और पवित्र क़ुर्आन का अनुकरण करेगा और समस्त शब्दकोशों की पुस्तकों तथा साहित्य की पुस्तकों को ध्यानपूर्वक देखेगा उस पर यह बात गुप्त नहीं रहेगी कि यह अरबी भाषा का पुराना मुहावरा है कि जब ख़ुदा तआला 'कर्त्ता' होता है और मनुष्य 'कर्म' होता है तो ऐसे अवसर पर शब्द 'तवफ्फी' शब्द के अर्थ मृत्यु के अतिरिक्त और कुछ नहीं होते। और यदि कोई मनुष्य इस से इन्कार करे तो उस पर अनिवार्य

हैं इस कश्फ़ को प्रकट कर दिया था कि मुझे ख़ुदा तआला की ओर से यह ज्ञान दिया गया है कि कथित सय्यिद साहिब कुछ कठोर कष्ट सहन करने के बाद शीघ्र ही इस अस्थायी संसार से गुज़र जाएंगे। फिर ऐसा ही प्रकटन में आया और कुछ सन्तान की मौत की भी घटना उन्होंने देखी और सब से अधिक यह कि एक दुष्ट हिन्दू की बेईमानी के कारण उनको इतनी आर्थिक हानि उठानी पड़ी कि वह सख़्त ग़म का आघात उनकी अन्तरिक शक्तियों को सहसा समाप्त कर गया। यह तो प्रकट है कि दुनियादार और दुनिया चाहने वाले लोग प्राय: सांसारिक आरामों और मालों के सहारे से प्रसन्न रहते हैं और इस कारण से कि उनका ख़ुदा तआला से कोई सच्चा संबंध नहीं होता

शेष हाशिया - है कि हमें हदीस या क़ुर्आन या साहित्य की कला की किसी पुस्तक से यह दिखादे कि ऐसी स्थिति में 'तवफ्फी' के कोई और मायने भी आ जाते हैं। और यदि ऐसा सबूत आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र शब्दों से प्रस्तुत कर सके तो हम अविलम्ब उस को पांच सौ रुपए नक़द इनाम देने को तैयार है। देखो सच की अभिव्यक्ति के लिए हम कितना माल खर्च करना चाहते हैं। फिर क्या कारण है कि हमारे प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं देता? यदि सच्चाई पर होते तो इस प्रश्न का अवश्य उत्तर देते और नक़द रुपया पाते अत: जब फ़ैसला हो गया कि 'तवफ्फी' के मायने मौत हैं। यही मायने हज़रत इब्ने अब्बास की हदीस से मालूम हुए और इब्ने अब्बास का कथन जो सही बुख़ारी में दर्ज है वह कथन है जिसको स्पष्ट व्याख्याकार बुखारी ने अपनी व्याख्या में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक वर्णित किया है और यही अर्थ क़ुर्आन और हदीसों के मुहावरों में से तथा अरब के बुलग़ा (वे लोग जिन को भाषा के बोलने और लिखने में महारत होती है) के कलाम के अनुकरण से सिद्ध हुए और इसके अतिरिक्त कुछ सिद्ध न हुआ। तो फिर स्वीकार करना पड़ा कि यह वादा जो इस पवित्र आयत में दर्ज है यह हज़रत मसीह की स्वाभाविक मौत का वादा है और इसमें हज़रत मसीह को यह शुभ सन्देश दिया गया है कि वे यहूदी जो इस चिन्ता में थे कि आंजनाब (ईसा अलैहिस्सलाम) को सलीब द्वारा क़त्ल कर दें। वे क़त्ल नहीं कर सकेंगे। और इस भय से ख़ुदा तआला ने मसीह को तसल्ली दी और एक लम्बी आयु जो मनुष्य के लिए प्रकृति के नियम में दाखिल है उसका वादा दिया और यह फ़रमाया कि तू अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मृत्यु पाएगा। अब इस फैसले के बाद दूसरी

और न किसी रूहानी खुशी से उनको हिस्सा होता है। इसलिए जब कभी उन पर रूहानी आघात गुज़र जाता है तो वह साथ ही उनके प्राण भी ले जाता है। और वे लोग बहुत से अहंकार, ख़ुदपसन्दी और सांसारिक प्रतिष्ठा एवं सम्मान के बावजूद दिल के बहुत कमज़ोर तथा बोदे होते हैं। और वह कमज़ोरी, सफ़लता, हुकूमत और दौलत के समय में अहंकार और अनुचित शेख़ी के रंग में प्रकट होती है। क्योंकि वास्तव में अहंकार और अनुचित शेख़ी भी दिल की कमज़ोरी के कारण प्रकटन में आती है जिस की कमज़ोरी के कारण पवित्र आचरण और सहनशीलता की शक्ति और ईमानी विनम्रता

शेष हाशिया - प्रतिप्रश्न करने वाली बात यह है कि क्या यह वादा पूरा हो चुका या अभी हज़रत मसीह ज़िन्दा हैं। तो यह प्रतिप्रश्न भी अत्यन्त सफ़ाई से फैसला पा चुका है। और फैसला यह है कि इस पवित्र आयत का क्रम साफ तौर पर बता रही है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए हैं। क्योंकि यदि वह अब तक नहीं मरे तो फिर इस से अनिवार्य आता है कि रफ़ा भी नहीं हुआ और न अब तक उनका शुद्धिकरण हुआ और न अब तब उन के शत्रुओं का अपमान हुआ। और ज़ाहिर है ऐसा विचार स्पष्ट तौर पर ग़लत है। और यदि यहूदियों की तरह अकारण अक्षरांतरण करके ख़ुदा के वाक्यों को उनके स्थानों से न उठा लिया जाए तो यह आयत वर्तमान क्रम★ के साथ बुलन्द आवाज़ से पुकार रहा है कि रफ़ा इत्यादि वादों के पहले हज़रत मसीह का मृत्यु पाना आवश्यक है। क्योंकि जिस

★ यदि आयत يا عيسٰى انى متوفيك (आले इमरान-56) में वाक्य متوفيك को इस स्थान से जहां ख़ुदा तआला ने उसको रखा है उठा लिया जाए तो फिर इस वाक्य को रखने के लिए कोई और स्थान नहीं मिलता। क्योंकि उसको वाक्य رافعك اِلَيَّ के बाद नहीं रख सकते। कारण यह कि श्रद्धालुओं की आस्था के अनुसार शारीरिक रफ़ा के बाद बिना फ़ासला मौत नहीं है अपितु अवश्य है कि आसमान मसीह को थामे रहे जब तक कि ख़ातमुल अंबिया के प्रकटन के साथ शुद्धिकरण का वादा पूरा न हो जाए। ऐसा ही वाक्य مطهّرك के बाद भी नहीं रख सकते। क्योंकि इस आस्था वालों के विचार के अनुसार शुद्धिकरण के बाद भी बिना फ़ासला मौत नहीं है अपितु हमेशा के प्रभुत्व के बाद मौत होगी। अब रहा प्रभुत्व के वादे का वाक्य -

وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

दिल में पैदा नहीं होती। और जिन हृदयों को रूहानी शक्ति प्रदान की गई है वे न अहंकार करते हैं और न अनुचित शेख़ी दिखाते हैं। क्योंकि वे ख़ुदा से एक अनश्वर प्रकाश पाकर दुनिया और दुनिया की शानोशौकत को नितान्त तिरस्कृत समझ लेते हैं। इसलिए दुनिया के पद उनको अहंकारी नहीं बना सकते। ऐसा ही सांसारिक लोगों की कमज़ोरी विफ़लता, असफ़लता और कठोराघात एवं ग़मों की अधिकता के समय में उनमें नितान्त कायरता और उदासी के लक्षण प्रकट करती है। यहां तक कि उनमें से कुछ बड़े आघातों के सहन न करने के कारण पागल और दीवाने हो जाते हैं तथा कुछ को

शेष हाशिया - प्रकार इस आयत में ख़ुदा तआला ने वाक्यों को रखा है और कुछ को प्राथमिक तथा कुछ को बाद में वर्णन किया है और इसी प्रकार पढ़ने का आदेश दिया है। वह क्रम इसी बात को चाहता है कि रफ़ा और शुद्ध करना तथा प्रभुत्त्व से पूर्व हज़रत मसीह की मृत्यु हो जाए और इसके समर्थन में पवित्र क़ुर्आन की एक और आयत है वह भी हज़रत मसीह की मृत्यु को सिद्ध करती है। और वह यह है

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ط (अलमाइदह-118)

इस आयत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम साफ़ इक़रार करते हैं कि ईसाई मेरे मरने के बाद बिगड़े हैं। मेरे जीवन में कदापि नहीं बिगड़े। तो यदि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अब तक पार्थिव शरीर के साथ ज़िन्दा हैं तो मानना पड़ेगा कि ईसाई भी अब तक अपने सच्चे धर्म

शेष हाशिए का हाशिया- तो इस वाक्य का दामन क़यामत तक फ़ैला हुआ है। इसलिए इस जगह भी वाक्य متوفيك को नहीं रख सकते जब तक क़यामत का दिन न आ जाए और क़यामत का दिन तो हश्र (मरे हुए लोगों का उठने) का दिन होगा न कि मौत का दिन। इसलिए मालूम हुआ कि हज़रत मसीह 'तवफ़्फ़ी' अलैहिस्सलाम के हिस्से में मौत नहीं और वह मरने के बिना ही क़यामत के मैदान में पहुंच जाएंगे और विचार 'तवफ़्फ़ी' के वादे के विरुद्ध है। इसलिए वाक्य متوفيك को अपनी जगह से उठाना मिथ्या-योग★ का कारण है। और वह असंभव है।

★दो परस्पर विरोधी चीज़ों का एक स्थान पर जमा हो जाना मिथ्या-योग या इज्तिमाए क़ीज़ैन कहलाता है। (अनुवादक)

देखा गया है कि कई अन्य प्रकार के मानसिक एवं हृदय के रोगों में ग्रस्त हो जाते हैं और मूर्च्छा या मिर्गी अथवा इसी के समान अन्य गन्दे रोग उन को लग जाते हैं और कुछ इस परीक्षा में बहुत ही कमज़ोर निकलते हैं और किसी तीव्र ग़म के आक्रमण के समय या तो आत्महत्या कर लेते हैं और या स्वयं वह असहनीय दुःख दिल पर असर करके सहसा इस अस्थायी संसार से दूसरे संसार की ओर खींच ले जाता है और इस कुछ दिन के जीवन का समस्त ताना-बाना जिसको उन्होंने एक बड़ी मनोकामना समझ रखा था एक

शेष हाशिया - पर स्थापित हैं। और यह व्यापक तौर पर ग़लत है। ऐसा ही हज़रत अबू बक्र रज़ि. इस आयत से सिद्ध करना कि

مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आलइमरान-145)

साफ़ बताता है कि उनके नज़दीक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके थे। क्योंकि यदि इस आयत का यह मतलब है कि पहले नबियों में से कुछ नबी तो जनाब ख़ातमुल अंबिया के युग से पूर्व मृत्यु पा गए हैं परन्तु कुछ की उन में से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग तक मृत्यु नहीं हुई तो इस स्थिति में यह आयत सबूत योग्य नहीं रहती क्योंकि एक अपूर्ण सबूत जो एक व्यापक नियम की तरह नहीं और पहले समस्त

शेष हाशिए का हाशिया- इसलिए वाक्य का पीछे रखना भी असंभव है। यदि असंभव नहीं तो कोई हमें बता दे कि इस वाक्य को उठाकर कहां रखा जाए और यदि कहे कि رافعك के बाद रखा जाए तो हम अभी लिख चुके हैं कि इस जगह तो हम किसी प्रकार नहीं रख सकते। क्योंकि यह किसी की आस्था नहीं है कि रफ़ा के बिना फ़ासला और इस आयत में दर्ज दूसरी घटनाओं के प्रकटन के बिना मौत आ जाएगी और यही खराबी दूसरे स्थानों में है। जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं। और यदि अकारण क़ुर्आनी क्रम को उलट-पुलट करना और इसी परिवर्तन की यथास्थिति मायने कर लेना वैध है तो इस से अनिवार्य आता है कि ऐसे परिवर्नत के साथ नमाज़ भी सही हो। अर्थात् नमाज़ में इस प्रकार पढ़ना वैध हो

يا عيسٰى انى رافعك اِلَیّ ثم متوفيك

हालांकि ऐसा परिवर्तन नमाज़ को ख़राब करने वाला और क़ुर्आन के अक्षरांतरण में दाख़िल है। अत: विचार करो। इसी से।

पल में तोड़ कर उनका समस्त कारोबार ख्वाब-व-खयाल की तरह कर देता है। इसलिए दुनियादार इन्सान के दिल की कमज़ोरी हुकूमत, दौलत और ऐश व आराम और स्वास्थ्य के समय में घमण्ड, अहंकार और गर्दन काटने के रंग में प्रकट होती है। तब वह दुर्भाग्य से अपने जैसा किसी को नहीं समझता। और एक नबी भी यदि उसके समय में हो और उसके सामने उस की चर्चा की जाए तो उसे तिरस्कार और अपमानपूर्वक याद करता है और डरता है कि उसकी बुज़ुर्गी (महानता) मानने से मेरी बुज़ुर्गी में अन्तर न आ जाए। और नहीं

शेष हाशिया - लोगों पर दायरे की तरह परिधि में लिए हुए नहीं वह दलील (सबूत) की संज्ञा नहीं दी जा सकती। फिर उस से हज़रत अबू बक्र को सबूत देना निर्रथक ठहरता है। और स्मरण रहे कि यह दलील जो हज़रत अबू बक्र ने समस्त पहले नबियों की मृत्यु पर परस्तुत की किसी सहाबी से इसका इन्कार रिवायत नहीं किया गया। हालांकि उस समय सब सहाबी मौजूद थे और सब सुनकर ख़ामोश हो गए। इस से सिद्ध है कि इस पर सहाबा का इज्मा (सर्वसम्मति) हो गया था और सहाबा का इज्मा सबूत है जो कभी गुमराही पर नहीं होता। तो हज़रत अबू बक्र के उपकारों में से जो इस उम्मत पर हैं एक यह भी उपकार है कि उन्होंने इस ग़लती से बचने के लिए जो भविष्य में सामने आने वाली थी अपनी सच्ची ख़िलाफ़त के युग में सच्चाई और हक़ का दरवाज़ा खोल दिया और गुमराही के सैलाब पर एक ऐसा सुदृढ़ बांध लगा दिया कि यदि इस युग के मौलवियों के साथ समस्त जिन्न भी शामिल हो जाएं तब भी वे इस बांध को तोड़ नहीं सकते। अतः हम दुआ करते हैं कि ख़ुदा तआला हज़रत अबू बक्र की जान पर हज़ारों रहमतें उतारे जिन्होंने ख़ुदा तआला से पवित्र इल्हाम पा कर इस बात का फ़ैसला कर दिया कि मसीह मृत्यु पा चुका है।

ये तीन सूबत पर्याप्त हैं। फिर एक और सबूत इन तीन सबूतों की सहायता करता है और वह यह है कि यदि वह बात ख़ुदा की सुन्नत में दाख़िल होती कि कोई मनुष्य इतनी मुद्दत तक आकाश पर बैठा रहे और फिर पृथ्वी पर उतरे तो इसका कोई और उदाहरण भी होता। क्योंकि ख़ुदा तआला के समस्त कार्य उदाहरण रखते हैं ताकि मनुष्यों के लिए ऐसा कष्ट न हो जिसकी वह शक्ति न रखता हो। उदाहरणतया आदम को ख़ुदा ने मिट्टी से पैदा किया और अब भी हम देखते हैं कि हज़ारों कीड़े-मकोड़े

चाहता कि कोई महानता उसकी महानता के मुकाबले पर ठहर सके। और फिर वही कमज़ोरी किसी सख़्त आघात और घटना के समय में मूर्च्छा या मिर्गी अथवा आत्महत्या या पागलपन या पिघल-पिघल कर मर जाने के रंग में प्रकट हो जाती है। इसलिए यह इब्रत (सीख) का स्थान है कि दुनियादारी का अंजाम कैसा बुरा और भयावह है। और चूंकि सय्यद साहिब दुनिया की शानोशोकत के अभिलाषी थे तथा उन लोगों में से नहीं थे जिन के दिल को ख़ुदा तआला दुनिया से पूर्णतया पृथक करके रूहानी बहादुरी दृढ़ता, रूहानी

शेष हाशिया - मिट्टी से पैदा हो रहे हैं। किन्तु पवित्र क़ुर्आन ने इस रफ़ा और नुज़ूल का कोई उदाहरण वर्णन नहीं किया। हां पहली किताबों में इसी का समरूप एक मुक़द्दमा है। अर्थात् एलिया का दोबारा दुनिया में आना। परन्तु इस पुनरागमन के मायने स्वयं हज़रत मसीह ने वर्णन कर दिए हैं कि इस से अभिप्राय यह है कि कोई और मनुष्य हज़रत एलिया की आदत और स्वभाव पर दुनिया में आएगा। यह मूर्खता है कि ऐसा समझा जाए कि यह क़िस्सा झूठा है। क्योंकि इस क़िस्से पर दो क़ौमें जो परस्पर बड़ी शत्रुता रखती हैं और विश्वास रखती हैं और अब तक मलाकी नबी की किताब में यह पाया जाता है फिर झूठ क्योंकर हो सकता है? जिस बात को करोड़ों लोग और फिर विरोधी गिरोह मानते चले आए हैं और उनकी किताबों में मौजूद है वह बात असत्य कैसे ठहर सकती है? इस प्रकार तो समस्त इतिहासों से अमान उठ जाता है। हां यदि यह आरोप हो कि मसीह तो कहता है कि यह्या नबी ही एलिया है और यह्या एलिया होने से इन्कारी है। तो इसका उत्तर यह है कि इन दोनों बातों में कुछ भी विरोधाभास नहीं। क्योंकि मसीह तो यह्या को उसकी आदत और स्वभाव की दृष्टि से एलिया ठहराता है न कि वास्तविक तौर पर। और हज़रत यह्या इस बात से इन्कार करते हैं कि वह वास्तविक तौर पर एलिया हों। और आवगमन वालों की आस्थानुसार एलिया की रूह उन में आ गई हो। तो हज़रत मसीह एक रूपक प्रयोग करके यह्या को एलिया ठहराते हैं और हज़रत यह्या वासविकता पर नज़र डाल कर एलिया होने से इन्कार करते हैं

فلما اختلف الجهات لم يبق التناقض - فتدبّر

और यदि इस प्रकार से विरोधाभास हो सकता है तो फिर ख़ुदा तआला के कलाम में भी नऊज़ुबिल्लाह विरोधाभास मानना चहिए। क्योंकि एक ओर तो सम्पूर्ण क़ुर्आन इस निबंध

जीवन, स्थायित्व और नुबुव्वत के शिष्टाचार प्रदान करता है। इसलिए वह मामूली दुनियादारों की तरह इस आर्थिक आघात को सहन न कर सके और इसी ग़म से दिन-प्रतिदिन कुढ़ते हुए उनकी रूह पिघलती गई। यहां तक कि यह मुर्दार दुनिया जिस को वह बड़ा मुद्दा समझते थे एक पल में उन से जुदा हो गई। मानो वह दुनिया में कभी नहीं आए थे। परन्तु अफ़सोस यह है कि जैसा कि ग़मों और आर्थिक सदमे के समय में हार्दिक कमज़ोरी उन

शेष हाशिया -से भरा है कि जो मनुष्य ईमान लाए और संयम ग्रहण करे चाहे वह पुरुष हो या स्त्री और चाहे सुजाखा हो या अन्धा वे सब मुक्ति पाएंगे और दसूरी ओर यह आयत भी है

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝١٩ (अलबक़रह-19)

अर्थात् अंधे और गूंगे तथा बहरे ख़ुदा से दूर रहेंगे और यह भी आयत है

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (बनी इस्राईल-73)

अर्थात् जो इस दुनिया में अंधा होगा वह उस संसार (परलोक) में भी अंधा होगा। ऐसा ही एक स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता है

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ (अलअन्आम-104)

इस स्थान पर प्रत्यक्ष में दर्शन का इन्कार है और इसके विपरीत यह आयत है

الٰى ربّها (अलक़ियामत-24)

इस से दीदार (दर्शन करना) सिद्ध होता है। तो मसीह और यह्या के वाक्यों में इस प्रकार का विरोधाभास है जो वास्तव में विरोधाभास नहीं। एक ने मजाज़ को मस्तिष्क में रखा और दूसरे ने वास्तविक को। इसलिए कुछ विरोधाभास न हुआ। स्मरण रहे कि इस जगह हज़रत मसीह की यह गवाही कि यहूदी जो एलिया नबी के दोबारा आने के अब तक प्रतीक्षक हैं। यह उनकी ग़लती है कि इश भविष्यवाणी को वास्तविकता पर चरितार्थ करते हैं। अपितु आदत और स्वभाव की दृष्टि से यूहन्ना ही एलिया है जो आ चुका। यह गवाही एक मोमिन के लिए नितान्त सन्तोषजनक है और अटल विश्वास तक पहुंचाती है। इसके बाद फिर भी झगड़ा न छोड़ना और अपने पास कोई उदाहरण न होना धार्मिक लोगों का काम नहीं है। इसी से।

से प्रकटन में आई और इस संकट से मूर्च्छा भी हो गई और अन्त में इसी में निधन हो गया। ऐसा ही दूसरे पहलू के कारण अर्थात् जब उनको दुनिया का सम्मान, पद, उत्कर्ष और प्रसिद्धि प्राप्त हुई तो उन दिनों में भी उन से इस दूसरे रंग में सख़्त कमज़ोरी प्रकटन में आई। उनके समय में ख़ुदा ने यह आकाशीय सिलसिला पैदा किया। परन्तु उन्होंने अपने सांसारिक सम्मान के कारण इस सिलसिले को एक कण श्रेष्ठता की नज़र से नहीं देखा, अपितु अपने एक पत्र में अपने किसी परिचित को लिखा कि यह मनुष्य जो ऐसा दावा करता है बिल्कुल तुच्छ है और इसकी समस्त पुस्तकें निरर्थक, बेफ़ायदा और झूठी हैं। और इसकी समस्त बातें असत्य से भरी हुई हैं। हालांकि सर सय्यद साहिब इस बात से पूर्णतया वंचित रहे कि कभी मेरी किसी छोटी सी पुस्तक को भी प्रारंभ से अन्त तक देखें। वह क्रोध के समय में दुनिया के अहंकार से ऐसे मस्त थे कि प्रत्येक को अपने पैरों के नीचे कुचलते थे और यह दिखाते थे कि मानो उनकी सांसारिक हैसियत की दृष्टि से ऐसा उत्थान प्राप्त है कि उन का कोई भी उदाहरण नहीं। हंसी-ठट्ठा करना प्राय: उनका आचरण था। जब मैं एक बार अलीगढ़ में गया तो मुझ से भी इसी अहंकार के कारण जिसका स्थायी पौधा उनके दिल में सुदृढ़ हो चुका था हंसी-ठट्ठा किया और यह कहा कि आओ मैं मुरीद बनता हूं और आप मुर्शिद बने और हैदराबाद में चलें और कुछ झूठी करामत दिखाएं और मैं प्रशंसा करता फिरूंगा। तब रियासत अपनी सादगी के कारण एख लाख रुपया दे देगी। उसमें दो हिस्से मेरे और एक हिस्सा आप का हुआ। मानो इस वर्णन में वे ठग जो साधू कहलाते हैं मुझे ठहराया। ऐसा ही और कई बातें थीं जिनका अब उनकी मृत्यु के पश्चात् लिखना बे फ़ायदा है। इतने लिखने से उद्देश्य यह है कि इस पहलू की कमज़ोरी भी उनमें मौजूद थी जो दौलत और सम्मान और प्रसिद्धि तक पहुंच कर घमण्ड और अहंकार तथा अभिमान और ख़ुदपसन्दी के रंग में प्रकटन में आती है। और यह उनका दोष नहीं है अपितु प्रत्येक

दुनियादार का यही हाल है कि वह दो प्रकार की कमज़ोरी अपने अन्दर रखता है। उदाहरणतया एक मनुष्य जो मौलवी के सम्बोधन से प्रसिद्ध है वह स्वयं को मौलवी कहला कर नहीं चाहता कि दूसरे का सम्मानपूर्वक नाम भी ले। अपितु उसकी बड़ी मेहरबानी होगी यदि वह दूसरे को मुंशी भी कह दे। बहुत से धनाढ्य रईस या मुसलमान पदाधिकारी हैं वे इस बात को अपने लिए बहुत शर्म समझते हैं कि किसी को अस्सलामो अलैकुम का उत्तर दें। और यदि कोई अस्सलामो अलैकुम कहे तो बहुत बुरा मानते हैं और यदि संभव हो तो दण्ड दें। यह सब कमज़ोरी के तरीक़े हैं। और इसको नुबुव्वत के दीपक के से प्रकाश लेने वाले शिष्टाचार की कमज़ोरी की संज्ञा देते हैं। निष्कर्ष यह कि सय्यद अहमद ख़ान साहिब की मृत्यु भी अन्ततः कमज़ोरी के कारण से हुई। ख़ुदा उन पर रहम करे।

अब हम उस विज्ञापन दिनांक 12 मार्च 1897 ई. को जिसमें सय्यद अहमद ख़ान साहब की मृत्यु के संबंध में भविष्यवाणी है इस स्थान में हूबहू दर्ज कर देते हैं। और यह विज्ञापन लाखों लोगों में प्रकाशित हो चुका है, और हम बहुत से लोगों को समय से पूर्व मौखिक तौर पर कह चुके हैं कि हमें ख़ुदा तआला ने ज्ञात करा दिया है कि अब शीघ्र ही सय्यद साहिब मृत्यु पा जाएंगे और विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886 ई. में भी इसकी ओर संकेत था। किन्तु इसके पश्चात् पूर्ण स्पष्टता के साथ ख़ुदा के इल्हाम ने यह बात खोल दी और मुझे अच्छी तरह बताया गया कि सय्यद साहिब एक बहुत बड़ा ग़म उठाने के बाद शीघ्र मृत्यु पा जाएंगे। फिर जबकि सय्यद साहिब को एक हिन्दू की शरारत से आर्थिक ग़म लग गया तो मुझे विश्वास दिलाया गया कि अब सय्यद साहिब की मृत्यु का समय आ गया। तब मैंने यह विज्ञापन 12 मार्च 1897 ई. प्रकाशित करके एक पर्चा उनको भी भेज दिया। और वह विज्ञापन यह है-

नक़ल असल के अनुसार

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

"सय्यद अहमद खां साहिब के.सी.एस.आई"

सय्यद साहिब अपनी पुस्तक ''अद्दुआ वलइस्तिजाबत'' में इस बात से इन्कारी हैं कि दुआ में जो कुछ मांगा जाए वह दिया जाए। यदि सय्यद साहिब के लेख का यह मतलब होता कि प्रत्येक जिस दुआ को स्वीकार होना ज़रूरी नहीं बल्कि जिस दुआ को ख़ुदा तआला क़ुबूल करना अपने हितों के अनुसार पसन्द करता है वह दुआ स्वीकार हो जाती है अन्यथा नहीं, तो यह बात बिल्कुल सच होती। परन्तु सिरे से दुआ की स्वीकारिता से इन्कार करना तो सही अनुभवों तथा अक़्ल-व-नक़्ल के विरुद्ध है। हां दुआओं की स्वीकारिता के लिए उस रूहानी अवस्था की आवश्यकता है जिसमें मनुष्य कामवासना संबंधी भावनाओं और अल्लाह के ग़ैर की ओर झुकने का चोला उतार कर पूरी तरह गिड़गिड़ाकर ख़ुदा तआला से जा मिलता है। ऐसा आदमी चमत्कारों का द्योतक होता है और उसके प्रेम की लहरें ख़ुदा के प्रेम की लहरों से यूँ एक हो जाती हैं जैसा कि दो स्वच्छ जल, दो परस्पर झरनों से निकलकर आपस में मिलकर बहना शुरु कर देते हैं ऐसा आदमी मानो ख़ुदा का रूप देखने के लिए एक दर्पण होता है और अदृश्य ख़ुदा के विचित्र कार्यों से उसका पता मिलता है। उसकी दुआएं इस प्रचुरता से स्वीकार होती हैं कि जैसे दुनिया को अदृश्य ख़ुदा दिखा देता है। अतः सय्यद साहिब की यह ग़लती है कि दुआ स्वीकार नहीं होती। काश यदि वह चालीस दिन तक भी मेरे पास रह जाते तो नयी और पवित्र जानकारियां पा लेते। परन्तु अब शायद हमारी और उनकी क़यामत में ही मुलाक़ात होगी।★ अफ़सोस कि एक नज़र देखने का भी संयोग नहीं हुआ। सय्यद साहिब इस विज्ञापन को ध्यानपूर्वक

★ इस वाक्य में सय्यद साहिब की मृत्यु की ओर संकेत था जैसा कि प्रकट है। इसी से।

<u>पढ़ें कि अब मुलाक़ात के बदले जो कुछ है यही विज्ञापन है।</u>

अब असल मतलब यह है कि करामतुस्सादिक़ीन के टायटल पेज के अन्तिम पृष्ठ पर और बरकातुद्दुआ के टायटल पेज प्रथम पृष्ठ के सर पर मैंने यह इबारत लिखी है कि ''नमूना दुआ-ए-मुस्तजाब'' और फिर उसमें पंडित लेखराम की मृत्यु के बारे में एक भविष्यवाणी की है और करामातुस्सादिक़ीन इत्यादि में लिख दिया है कि इस भविष्यवाणी का इल्हाम दुआ के बाद हुआ है। क्योंकि वास्तविक बात यही थी कि उस मनुष्य के बारे में जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अपमान में सीमा से अधिक बढ़ गया था दुआ की गई थी और ख़ुदा तआला ने स्पष्ट रूप से कश्फ़ और इल्हाम से फ़रमा दिया था कि छः वर्ष की अवधि तक इस प्रकार से उसके जीवन का अन्त किया जाएगा जैसा कि घटित हुआ। अब इस भविष्यवाणी में सत्यभिलाषियों के लिए दो नवीन सबूत मिलते हैं। प्रथम यह कि ख़ुदा अपने किसी बन्दे को ऐसे गहरे ग़ैब की ख़बर दे सकता है जो समस्त दुनिया की नज़र में असंभव हो। दूसरे यह कि दुआएं स्वीकार होती हैं। यदि आप आईना कमालात-ए-इस्लाम का वह विज्ञापन जिसके ऊपर कुछ शैर हैं और करमातुस्सादिक़ीन का वह इल्हाम जो टायटल पेज के अन्तिम पृष्ठ पर है और 'बरकातुद्दुआ' के टायटल पेज के दो पृष्ठों के तथा अन्तिम पृष्ठ के हाशिए को एक बार पढ़ जाएं तो मैं विश्वास रखता हूं कि आप जैसा एक मुसिंफ़ मिज़ाज तुरन्त अपनी पहली राय को त्याग कर इस सच्चाई को आदरपूर्वक स्वीकार कर ले। यद्यपि यह भविष्यवाणी बहुत सी साफ़ है परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यह दिन प्रतिदिन अधिक सफ़ाई के साथ लोगों को समझ आती जाएगी। यहां तक कि कुछ दिनों के बाद अंधकारमय दिलों पर भी इसका एक महान प्रकाश पड़ेगा। इस देश का अधिकांश भाग ऐसे अंधकारमय दिलों के साथ भरा हुआ है कि जिन को ख़बर नहीं कि ख़ुदा भी है। और उस से ऐसे संबंध भी हो जाया करते हैं। अतः जैसे-जैसे मछली पत्थर को चाट कर वापस होगी वैसे-वैसे इस भविष्यवाणी पर विश्वास बढ़ता जाएगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मुझ से यह भी साफ़ शब्दों में कहा गया है कि फिर एक

बार हिन्दू धर्म इस्लाम की ओर लौटेगा। अभी वे बच्चे हैं उन्हें मालूम नहीं कि एक सर्वशक्तिमान हस्ती मौजूद है। परन्तु वह समय आता है कि उनकी आंखें खुलेंगी और ज़िन्दा ख़ुदा को उसके अद्भुत कार्यों के साथ इस्लाम के अतिरिक्त और किसी जगह नहीं पाएंगे।

आप को यह भी स्मरण कराता हूं कि मैंने एक भविष्यवाणी विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886 ई. में आप के बारे में भी की थी कि आपको अपनी आयु के एक भाग में एक बड़े ग़म का सामना करना पड़ेगा। और इस भविष्यवाणी के प्रकाशित होने से आप के कुछ दोस्त नाराज़ हुए थे और उन्होंने अख़बारों में खंडन छपवाया था। परन्तु आप को मालूम है कि वह भविष्यवाणी भी बड़े रोब के साथ पूरी हुई। और एक बार अकस्मात तौर पर एक दुष्ट इन्सान की बेईमानी से डेढ़ लाख रुपए की हानि का आप को आघात पहुंचा। इस आघात का अनुमान आप के दिल को मालूम होगा कि मुसलमानों का इतना धन नष्ट हो गया। मेरे एक दोस्त मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब, मिस्टर सय्यद महमूद साहिब से नक़ल करते हैं कि उन्होंने कहा कि यदि मैं इस हानि के समय अलीगढ़ में मौजूद न होता तो मेरे पिता जी अवश्य इस ग़म से मर जाते। यह भी मिर्ज़ा साहिब ने सुना कि आपने इस ग़म से तीन दिन रोटी नहीं खाई। और इतने क़ौमी धन के ग़म से दिल भर गया कि एक बार मूर्च्छा भी हो गयी। अत: हे सय्यद साहब यही घटना थी जिसकी इस विज्ञापन में व्यापक चर्चा है। चाहो तो स्वीकार करो। वस्सलाम 12 मार्च 1897 ई.

क्रम संख्या 74.	निशान का विवरण

उन सब निशानों के भविष्यवाणी के तौर पर प्रकटन में आए एक वह भविष्यवाणी है जो मैंने अख़्वैम क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब क़ाज़ी कोटी ज़िला गुजरांवाला के बारे में की थी। और मैं उचित समझता हूं कि इस जगह स्वयं उनके पत्र की इबारत नक़ल कर दूं। जो इस भविष्यवाणी के बारे में उन्होंने मेरी ओर भेजा है और वह यह है –

"मुझे निश्चित तौर पर याद है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने 23 मार्च 1889 ई. जब कि इस विनीत ने सच्चाई का अनुकरण करने वाले आप के हाथ पर बैअत की तो एक लम्बी दुआ के बाद उसी समय आप ने फ़रमाया था कि क़ाज़ी साहिब आप को एक बड़ा इब्तिला सामने आने वाला है। अत: इस भविष्यवाणी के बाद इस विनीत ने अपने कई प्रिय दोस्तों को इस से सूचना भी दे दी कि हुज़ूर ने मेरे बारे और मेरे हक़ में एक इब्तिला की हालत की सूचना दी थी। अब इसके बाद जिस प्रकार से वह भविष्यवाणी पूरी हुई वह घटना हूबहू लिखता हूं। कि मैं हज़रत अक़्दस से रवाना होकर अभी रास्ते में ही था कि मुझे सूचना मिली कि मेरी पत्नी गुर्दे के दर्द, आंत्रशोध और बार-बार क़ै से बहुत बीमार है। जब मैं घर पहुंचा और देखा तो वास्तव में एक नाज़ुक हालत छाई हुई थी और विचित्रतर यह कि शुरू बीमारी उसी रात से थी जिसकी शाम को हुज़ूर ने इस इब्तिला की सूचना दी थी। दर्द का यह हाल था कि जान हर पल डूबती जाती थी और बेचैनी ऐसी थी कि बहुत शर्मीली होने के बावजूद दर्द के मारे सहसा उनकी चीखें निकलती थीं और गली-कूचे तक आवाज़ पहुंचती थी। और ऐसी नाज़ुक और दर्दनाक हालत थी कि अजनबी लोगों को भी वह हालत देख कर रहम आता था। दर्द की तीव्रता लगभग तीन माह तक रही। इतने समय तक खाने का नाम तक न था। केवल पानी पीतीं और क़ै कर देतीं। दिन-रात में पचास-साठ बार निरन्तर क़ै होती फिर दर्द कुछ कम हुआ परन्तु नादान तबीबों के बार-बार फ़स्द लेने से दुबले होने की अधिकता का रोग स्थायी तौर पर लग गया। हर समय जान होठों पर रहतीं। दस-ग्यारह बार तो मरने तक पहुंच कर बच्चों और करीबी रिश्तेदारों को पूर्ण रूप से अलविदाई ग़म और कष्ट दिलाया निष्कर्ष यह कि ग्यारह महीने तक भिन्न-भिन्न प्रकार के दु:खों को झेलते हुए ख़ुशी-ख़ुशी कलिमा शरीफ़ पढ़ कर 28 वर्ष की आयु में परलोक सिधार गयीं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। और इस जानलेवा घटना के मध्य एक दूध पीता बच्चा रहमतुल्लाह नामक भी दूध न मिलने के कारण भूखा-प्यासा रहकर मर गया। अभी यह ज़ख़्म ताज़ा ही था कि विनीत

के दो बड़े बेटे अब्दुर्रहीम तथा फ़ैज़ रहीम टाइफ़ायड से बहुत बीमार हो गए। फ़ैज़ रहीम को अभी ग्यारह दिन पूरे न होने पाए थे कि उसकी मृत्यु हो गई और सात वर्ष की आयु में परलोक सिधार कर अपनी प्यारी मां से जा मिला। और अब्दुर्रहीम टायफ़ायड और सरसाम (सन्निपात) से निरन्तर दो ढाई महीने लाश की तरह पड़ा रहा। सब तबीब ला इलाज समझ चुके। कोई न कहता था कि यह बचेगा। परन्तु चूंकि जीवन के दिन शेष थे। बूढ़े बाप की गिड़गिड़ाहट ख़ुदा से सुन लीं। और केवल उसके फ़ज़्ल से सही सलामत बच निकला। यद्यपि पट्ठों में कमज़ोरी और जीभ में हक़लाना अभी शेष है। ये जान लेवा घटनाएं तो एक ओर उधर विरोधियों ने और भी शोर मचा दिया था। मान हानि और भिन्न-भिन्न प्रकार की आर्थिक हानियों की कोशिशों में कोई कसर उठा न रखी। घर में सेंध लगाने का मामला भी हुआ। अब समस्त संकटों में इकट्ठे तौर पर विचार करने से भली भांति मालूम हो सकता है कि विनीत लेखक कितने पीड़ादायक कष्टों में ग्रस्त रहा। और ये सब उन्हीं विपत्तियों एवं संकटों का प्रकटन हुआ जिसकी हुज़ूर ने पहले से ही संक्षिप्त तौर पर सूचना दे दी थी। इसी बीच हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेहरबानी करते हुए शोक के तौर पर एक तसल्ली देने वाली चिट्ठी भेजी। वह भी एक भविष्यवाणी पर आधारित थी पूरी हुई और हो रही है। लिखा था कि "वास्तव में आपको बहुत बड़ा इब्तिला पेश आया यह अल्लाह की सुन्नत है ताकि वह अपने सीधे और सब्र करने वाले बन्दों की दृढ़ता लोगों पर प्रकट करे और सब्र करने से बड़े-बड़े प्रतिफल प्रदान करे। ख़ुदा तआला इस समस्त संकटों से मुक्ति प्रदान करेगा। शत्रु अपमानित और बर्बाद होंगे जैसा कि सहाबा के युग में हुआ कि ख़ुदा तआला ने उनकी डूबती कश्ती को थाम लिया। ऐसा ही इस जगह होगा। उनकी बद्-दुआएं अन्त में उन पर ही पड़ेंगी।" सौ बार अल्हमदुलिल्लाह कि हुज़ूर की दुआ से ऐसा ही हुआ। विनीत हर हाल स्थिरता और सब्र में बढ़ता गया। मनुष्य होने के बावजूद यदि कभी चापलूसी के तौर पर विरोधियों की ओर से सुलह-सफ़ाई का सन्देश आय़ा तो इस विचार से कि फिर यह नबियों

के संकटों से हिस्सा कहां? दिल में ऐसी सुलह करने से एक संकीर्णता सी आ जाती। और मैंने स्वयं अपनी आंखों से विरोधियों की यह हालत देखी और देख रहा हूं कि उनकी वह खुश्क हावियत भी जाती रही। किताब और सुन्नत पर चलने की कोई परवाह नहीं और दुनिया भी प्रतिदिन हाथों से जा रही है जिस के घमण्ड से ग़रीबों को कष्ट दिए थे। निष्कर्ष यह कि दुनिया और धर्म दोनों खो रहे हैं। बर्बाद और लज्जित हैं। हुज़ूर की वह भविष्यवाणी जो उन के एडवोकेट के बारे में फ़रमाई थी कि

انی مھین من اراد اھانتك

अनुकूलता की दृष्टि से भाग्य के अनुसार सब उस से निरन्तर हिस्सा ले रहे हैं। जैसा कि समस्त समकालीन गवाह है।

लेखक मिस्कीन – ज़ियाउद्दीन उफ़िया अन्हु
क़ाज़ी कोटी, ज़िला गुजरांवाला

क्रम संख्या 75.	**निशान का विवरण**

समस्त अत्यन्त ज़बरदस्त निशानों के जो ख़ुदा तआला ने ग़ैब की ख़बरें बताने और उच्च अध्यात्म ज्ञानों के रंग में मेरे समर्थन में प्रकट किए एक बराहीन अहमदिया की वह भविष्यवाणी है जो उस के पृष्ठ 496 में दर्ज है। अर्थात् –

یا اٰدم اسکن انت و زوجك الجنۃ۔ اردتُّ ان استخلف فخلقت آدم

इस संक्षेप का विवरण यह है कि यह इल्हाम जो मेरे बारे में दुआ अर्थात् -

یا اٰدم اسکن انت و زوجك الجنۃ۔ اردتُّ ان استخلف فخلقت آدم

जिसके यह मायने हैं कि हे आदम! तू अपने जोड़े के साथ जन्नत में रह। मैंने चाहा कि मैं अपना द्योतक दिखलाऊं। इसलिए मैंने इस आदम को पैदा किया। यह इस बात की ओर संकेत है कि आदम सफ़ीउल्लाह के अस्तित्व का बार-बार आने वाला सिलसिला इस ख़ाकसार के अस्तित्व पर आकर समाप्त हो गया। यह बात वलियों और आरिफ़ लोगों के नज़दीक मान्य है कि मरातिब वजूद दौरिया यह हैं अर्थात् मानवजाति में से कुछ, कुछ की आदत

और स्वभाव पर आते रहते हैं जैसा कि पहली किताबों से सिद्ध है कि यह्या नबी की आदत और स्वभाव पर आ गया और जैसा कि हमारे नबी अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम की आदत और स्वभाव पर आए।★ इसी रहस्य की दृष्टि से यह मिल्लते मुहम्मदी, इब्राहीमी मिल्लत कहलाई। तो अवश्य था कि आदमिय्यत के पद की दूरी की हरकत (गति) युग के अन्त पर समाप्त होती। अतः यह युग जो अन्तिम युग है। इस युग में ख़ुदा तआला ने एक मनुष्य को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के क़दम पर पैदा किया जो यही लेखक है और उस का नाम भी आदम रखा जैसा कि उपरोक्त इल्हामों से प्रकट है। और पहले आदम की तरह ख़ुदा ने इस आदम को भी धरती के सच्चे इन्सानों से ख़ाली होने के समय में अपने दोनों जलाली

★हाशिया :- यह निश्चित बात है कि हमारे सय्यद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आदत और तबियत पर आए थे। उदाहरणतया जैसा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तौहीद (एकेश्वरवाद) से प्रेम करके स्वयं को अग्नि में डाल लिया और फिर قُلْنَا يَا نَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّسَلَامًا (अंबिया - 70) की आवाज़ से साफ़ बच गए। ऐसा ही हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं को तौहीद के प्रेम से उस फ़ित्ने की अग्नि में डाल लिया जो आंजनाब के अवतरित होने के बाद समस्त क़ौमों में मानो सम्पूर्ण संसार में भड़क उठी थी। और फिर

وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاس (अलमाइदह- 68)

की आवाज़ से जो ख़ुदा की आवाज़ थी उस अग्नि से साफ़ बचाए गए। ऐसा ही हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन बुतों को अपने हाथ से तोड़ा जो ख़ाना काबा में रखे गए थे जिस प्रकार हज़रत इब्राहीम ने मूर्तियों को तोड़ा और जिस प्रकार हज़रत इब्राहीम ख़ाना काबा के बुनियाद रखने वाले थे ऐसा ही हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ाना काबा की ओर समस्त संसार को झुकाने वाले थे। और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की ओर झुकने की बुनियाद डाली थी परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बुनियाद को पूरा किया। आपने ख़ुदा की कृपा और अनुकम्पा पर ऐसा भरोसा किया कि प्रत्येक सत्याभिलाषी को चाहिए कि ख़ुदा पर भरोसा करना आंजनाब से सीखे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस कौम में पैदा हुए थे जिन में तौहीद का नामो निशान न था और कोई किताब न थी। इसी प्रकार हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस क़ौम में पैदा हुए जो अंधकार में डूबी हुई थी और कोई

और जमाली हाथों से पैदा करके उसने अपनी रूह फूंकी। क्योंकि दुनिया में कोई रूहानी इन्सान मौजूद न था जिस से यह आदम रूहानी जन्म पाता। इसलिए ख़ुदा ने स्वयं रूहानी बाप बन कर इस आदम को पैदा किया और भौतिक पैदायश के अनुसार इसी प्रकार नर और मादा पैदा किया जिस प्रकार कि पहला आदम पैदा किया था। अर्थात् उसने मुझे भी जो अन्तिम आदम हूं जोड़ा पैदा किया जैसा कि इल्हाम يا آدم اسكن انت وزوجك الجنة में इसी ओर एक सूक्ष्म संकेत है। और कुछ पहले बुज़ुर्गों ने ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर यह भविष्यवाणी भी की थी कि वह अन्तिम आदम जो कामिल महदी और सामान्य ख़ातमुल विलायत है। अपनी शारीरिक बनावट की दृष्टि से जोड़ा पैदा होगा। अर्थात् आदम सफ़ीउल्लाह

शेष हाशिया - रब्बानी किताब उनको नहीं पहुंची थी। और यह एक समानता है कि ख़ुदा ने इब्राहीम के दिल को खूब धोया और साफ़ किया था, यहां तक कि वह अपनों और परिजनों से भी ख़ुदा के लिए विमुख हो गया और दुनिया में ख़ुदा के अतिरिक्त उसका कोई भी न रहा। ऐसा ही अपितु इस से बढ़कर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ घटनाएं घटीं और इसके बावजूद कि मक्का में कोई ऐसा घर था जिस से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई निकट संबंध न था परन्तु केवल ख़ुदा की ओर बुलाने से सब के सब शत्रु हो गए और ख़ुदा के अतिरिक्त एक भी साथ न रहा फिर ख़ुदा ने जिस प्रकार इब्राहीम को अकेला पाकर इतनी सन्तान दी जो आकाश के नक्षत्रों के समान अगणित हो गई इसी प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अकेला पाकर असंख्य कृपा की और आपकी मैत्री में वे सहाबा दिए जो आकाश के नक्षत्रों की तरह न केवल बहुत थे अपितु उन के दिल तौहीद के प्रकाश से चमक उठे थे। निष्कर्ष यह जैसा कि सूफ़ियों के नज़दीक माना गया है कि मरातिबे वजूद दौरिया हैं। इसी प्रकार इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी आदत, तबियत और हार्दिक समानता की दृष्टि से लगभग ढाई हज़ार वर्ष अपनी मृत्यु के बाद फिर अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुल मुत्तलिब के घर में जन्म लिया और मुहम्मद के नाम से पुकारा गया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अस्तित्व के पदों का दौरियः होना सदैव से और जब से दुनिया पैदा हुई ख़ुदा की सुन्नत में दाखिल है। मानवजाति में चाहे नेक हो या बद हों ख़ुदा की यही आदत है कि उनका अस्तित्व, आदत, तबियत और हार्दिक समानता की दृष्टि से बार-बार आता है जैसा कि आयत تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ (अलबक़रह-119) इसकी सत्यापनकर्ता है। और समस्त सूफ़ियों का यह विचार है कि यद्यपि अस्तित्व के पद दौरी हैं।

की तरह नर और मादा की सूरत पर पैदा होगा और ख़ातमुल औलाद होगा। क्योंकि आदम मानवजाति में से पहला नवजात था। अत: आवश्यक हुआ कि वह मनुष्य जिस पर सर्वांगपूर्ण तौर पर आदमियत की वास्तविकता का दौर समाप्त हो वह ख़ातमुल औलाद हो अर्थात् उसकी मृत्यु के पश्चात् कोई कामिल इन्सान किसी स्त्री के पेट से न निकले। अब स्मरण रहे इस ख़ुदा के बन्दे की भौतिक पैदायश इस भविष्यवाणी के अनुसार भी हुई अर्थात् मैं जुड़वां पैदा हुआ था और मेरे साथ एक लड़की थी जिसका नाम जन्नत था। और यह इल्हाम कि

يا آدم اسکن انت وزوجك الجنة

शेष हाशिया - परन्तु महदी माहूद बुरूज़ों की दृष्टि से फिर दुनिया में नहीं आएगा क्योंकि वह ख़ातमुल औलाद है। और उसकी समाप्ति के बाद मानवीय नस्ल कोई कामिल सुपुत्र पैदा नहीं करेगी, उन सुपुत्रों के अपवाद के जो उसके जीवन में हों। क्योंकि बाद में चौपायों जैसे चरित्र वाले लोगों का प्रभुत्त्व होता जाएगा। यहां तक कि ख़ुदा तआला का प्रेम हृदयों से बिल्कुल जाता रहेगा और विषय-लोलुप एवं पेटू बन जाएंगे। ये कुछ बुज़ुर्ग वलियों के कश्फ़ हैं। और यदि नबवी हदीसों को ध्यानपूर्वक देखा जाए तो उन से इन कश्फ़ों को बहुत कुछ सहायता मिलती है परन्तु यह कथन उसी हालत में सही ठहरता है जबकि महदी माहूद और मसीह मौऊद को एक ही व्यक्ति मान लिया जाए और स्मरण रहे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत की दो सीमाएं निर्धारित कर दी हैं और फ़रमा दिया है कि वह उम्मत गुमराही से सुरक्षित है जिस के प्रारंभ में मेरा अस्तित्व और अन्त में मसीह मौऊद है। अर्थात् एक ओर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अस्तित्व की पीतल की दीवार है और दूसरी ओर मसीह मौऊद के अस्तित्व की मुबारक दीवार शत्रु को मारने वाली है। इस हदीस से साफ़ तौर पर ज्ञात होता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे लोगों को अपनी उम्मत में दाख़िल नहीं समझा जो मसीह मौऊद के युग के बाद होंगे। और मसीह मौऊद का युग इस सीमा तक है जिस सीमा तक उसके देखने वाले या देखने वालों के देखने वाले और या फिर देखने वालों के देखने वाले दुनिया में पाए जाएंगे और उसकी शिक्षा पर क़ायम होंगे। निष्कर्ष यह कि तीनों सदियों का होना नुबुव्वत की पद्धति की दृष्टि से आवश्यक है और फिर नेकी तथा पवित्रता का अन्त है। और बाद में उस घड़ी, उस फ़ना के समय की प्रतीक्षा है जिसका ज्ञान ख़ुदा तआला के अतिरिक्त फ़रिश्तों को भी नहीं। इसी से।

जो आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 496 में दर्ज है। इसमें जो जन्नत का शब्द है उसमें यह एक सूक्ष्म संकेत है कि वह लड़की जो मेरे साथ पैदा हुई, उसका नाम जन्नत था। और यह लड़की केवल सात माह तक जीवित रह कर मृत्यु पा गई थी। निष्कर्ष यह कि चूंकि ख़ुदा तआला ने अपने कलाम और इल्हाम में मुझे आदम सफ़ीउल्लाह से समानता दी तो यह इस बात की ओर संकेत था कि उस प्रकृति के नियम के अनुसार जो अस्तित्व के दौरी पदों में ख़ुदा तआला की ओर से चला आता है। मुझे आदम की आदत और तबियत तथा घटनाओं की यथास्थिति पैदा किया गया है। अत: वे घटनाएं जो हज़रत आदम पर गुजरीं उनमें से एक यह है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदायश जोड़े के तौर पर थी अर्थात् एक पुरुष और एक स्त्री साथ थी और इसी प्रकार से मेरी पैदायश हुई जैसा कि मैं अभी लिख चुका हूं मेरे साथ एक लड़की पैदा हुई जिसका नाम जन्नत था और पहले वह लड़की पेट से निकली थी उसके बाद मैं निकला था और मेरे बाद मेरे माता-पिता के घर में और कोई लड़की या लड़का नहीं हुआ और मैं उनके लिए ख़ातमुल औलाद था। और यह मेरी पैदायश की वह पद्धति है जिसको कुछ अहले कश्फ़ ने ख़ातमुल विलायत महदी के लक्षणों में से लिखा है और वर्णन किया है कि वह अन्तिम महदी जिसकी मृत्यु के पश्चात् और कोई महदी पैदा नहीं होगा, ख़ुदा से सीधे तौर पर मार्ग-दर्शन पाएगा जिस प्रकार आदम ने ख़ुदा से मार्ग-दर्शन पाया और वह उन विद्याओं और रहस्यों का धारण करने वाला होगा जिनका आदम ख़ुदा से धारण करने वाला हुआ और आदम से बाह्य अनुकूलता उसकी यह होगी कि वह भी जोड़े पैदा होंगे जिस प्रकार आदम की पैदायश थी कि उन के साथ एक मादा भी पैदा हुई थी अर्थात् हज़रत हव्वा अलैहस्सलाम। और ख़ुदा ने जैसा कि प्रारंभ में जोड़ा पैदा किया मुझे भी इसलिए जोड़ा पैदा किया ताकि आरम्भ को अन्त के साथ पूर्ण अनुकूलता पैदा हो जाए। अर्थात् चूंकि प्रत्येक वजूद प्रतिरूपों के क्रम में आता रहता है और उसका अन्तिम प्रतिरूप दर्मियानी प्रतिरूपों की अपेक्षा सर्वांगपूर्ण होता है। इसलिए ख़ुदा की हिकमत ने चाहा कि

वह मनुष्य जो आदम सफ़ीउल्लाह का अन्तिम प्रतिरूप है वह उसकी घटनाओं से अत्यन्त अनुकूलता पैदा करे। अत: आदम की व्यक्तिगत घटना यह है कि ख़ुदा ने आदम के साथ हव्वा को भी पैदा किया। तो यही घटना पूर्ण प्रतिरूप के स्थान में अन्तिम आदम के सामने आई कि उसके साथ भी एक लड़की पैदा की गई और उसी अन्तिम आदम का नाम ईसा भी रखा गया ताकि इस बात की ओर संकेत हो कि हज़रत ईसा को भी आदम सफ़ीउल्लाह के साथ एक समानता थी। परन्तु अन्तिम आदम जो प्रतिरूप के तौर पर ईसा भी है, आदम सफ़ीउल्लाह से अत्यन्त समानता रखता है। क्योंकि आदम सफ़ीउल्लाह के लिए जितने प्रतिरूपों का दौर संभव था वे प्रतिरूपी वजूद के वे समस्त मर्तबे के तय करके अन्तिम आदम पैदा हुआ है। और इस में सर्वांगपूर्ण बुरूज़ी हालत दिखाई गई है। जैसा कि बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 505 में मेरे बारे में ख़ुदा का यह कलाम और इल्हाम है कि خلق آدم فاکرمہ अर्थात् ख़ुदा ने अन्तिम आदम को पैदा करके पहले आदमों पर उसको एक कारण की श्रेष्ठता दी। इस इल्हाम और ख़ुदा के कलाम के यही अर्थ हैं कि यद्यपि आदम सफ़ीउल्लाह के लिए कई प्रतिरूप थे जिनमें से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी थे। परन्तु यह अन्तिम प्रतिरूप सर्वांगपूर्ण है।

इस स्थान पर किसी को यह भ्रम न गुज़रे कि इस वर्णन में अपने नफ़्स को हज़रत मसीह पर श्रेष्ठता दी है। क्योंकि यह आंशिक श्रेष्ठता है जो ग़ैर नबी को नबी पर हो सकती है और समस्त विद्वान और विवेकवान इस श्रेष्ठता के समर्थक हैं और इस से कोई भी अनिवार्य नहीं आती। और न मैं अकेला इसका समर्थक हूं जितने बुज़ुर्ग और अध्यात्म ज्ञानी मुझ से पहले गुज़रे हैं वे सब अन्तिम आदम को सामान्य विलायत का अन्त समझते हैं और आदम की वास्तविकता के प्रतिरूपों का सम्पूर्ण दायरा इस पर समाप्त करते हैं। और अपने सही कश्फ़ों के अनुसार इसी का नाम अन्तिम आदम रखते हैं और इसी का नाम मेहदी माहूद तथा इसी का नाम मसीह मौऊद रखते हैं। हां जिन लोगों ने प्रतिरूप के मामले को अपनी मूर्खता से उपेक्षित कर दिया है और ख़ुदा की उस

सुन्नत को जो उसकी समस्त मख़्लूक़ (सृष्टि) में जारी और प्रचलित है भूल गए हैं। वे लोग एक ऊपरी विचार को हाथ में लेकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जिनकी मेराज की हदीस की गवाही से पहली रूहों में दाख़िल सिद्ध होती है। फिर दोबारा आकाश से उतारते और दुनिया में लाते हैं तथा नहीं समझते कि इस विचार से प्रतिरूप के मामले का इन्कार अनिवार्य आता है। और वह इन्कार ऐसा ख़तरनाक है कि इस से इस्लाम ही हाथ से जाता है। समस्त रब्बानी किताबें प्रतिरूप के मामले की समर्थक हैं। स्वयं हज़रत मसीह ने भी यही शिक्षा सिखाई और नबवी हदीसों में भी इस की बहुत चर्चा की है। इसलिए उसका इन्कार बहुत बड़ी मूर्खता है और इस से ईमान के समाप्त होने का ख़तरा है। और इसी ग़लती से मध्यवर्ती युग के लोगों ने जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीभ से फ़ेज़-ए-आवज़ का नितान्त बुरा सम्बोधन पाया। और उस इज्मा (सर्वसम्मति) को भूल गए जो हज़रत अबू बक्र की जीभ से مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُول पर हुआ था। निष्कर्षत: यह भविष्यवाणी एक लम्बे समय से चली आती है कि अन्तिम कामिल इन्सान आदम के क़दम पर होगा। ताकि आदम की वास्तविकता का दायरा पूरा हो जाए। और इस भविष्यवाणी को शेख़ मुहियुद्दीन इब्ने अरबी ने फ़ुसूसुल हिकम में फ़स्से शीस में लिखा है और वास्तव में यह भविष्यवाणी फ़स्से आदम में रखने योग्य थी। परन्तु उन्होंने शीस को الولد سرّ لا بِیِہ का चरितार्थ समझकर उसी के फ़स्स में उसको लिख दिया है। हम उचित देखते हैं कि इस जगह शेख़ की असल इबरत नक़ल कर दें। और वह यह है

وعلٰی قدم شیث یکون آخر مولود یولد من ھذا النوّع الانسانی وھو حامل اسرارہٖ ولیس بعدہ ولد فی ھٰذا النّوع فھو خاتم الاولاد وتولد معہٗ اختٌ لہ فتخرج قبلہ ویخرج بعدھا یکون رأسہٗ عند رجلیھا ویکون مولدہ بالصّین ولغتہ لغت بلدہ ویسری العُقم فی الرجال والنساء فیکثر النکاح من غیر ولادۃ ویدعوھم الی اللّٰہ فلا یجاب''

अर्थात् कामिल इन्सानों में से अन्तिम कामिल एक लड़का होगा कि उसका असल जन्म स्थान चीन होगा। यह इस बात की ओर संकेत है कि वह मुग़ल और तुर्क क़ौम में से होगा और आवश्यक है कि अज़म (ग़ैर अरब) में से होगा न कि अरब में से और उसको वे विद्याएं और रहस्य दिए जाएंगे जो शीस को दिए गए थे और उसके बाद कोई और लड़का न होगा और वह ख़ातमुल औलाद होगा। अर्थात् उस की मृत्यु के पश्चात् कोई कामिल बच्चा पैदा नहीं होगा। और इस वाक्य के यह मायने हैं कि वह अपने पिता का अन्तिम सुपुत्र होगा और उसके साथ एक लड़की पैदा होगी जो उस से पहले निकलेगी और वह उसके बाद निकलेगा। उस का सर उस लड़की के पैरों से मिला हुआ होगा। अर्थात् लड़की मामूली तरीक़े से पैदा होगी कि पहले सर निकलेगा और फिर पैर। और उसके पैरों के बाद अविलम्ब उस लड़के का सर निकलेगा। (जैसा कि मेरा जन्म और मेरी जुड़वां बहन का इसी प्रकार प्रकटन में आया) और फिर शेख़ की इबारत का शेष अनुवाद यह है कि उस युग में पुरुषों और स्त्रियों में बांझ का रोग दाख़िल होगा निकाह बहुत होगा। अर्थात् लोग सम्भोग से नहीं रुकेंगे परन्तु कोई नेक बन्दा नहीं होगा और वह युग के लोगों को ख़ुदा की ओर बुलाएगा परन्तु वे स्वीकार नहीं करेंगे। और उस इबारत के व्याख्याकार ने जो कुछ उसकी व्याख्या में लिखा है वह यह है –

पहला लड़का जो आदम को प्रदान किया गया वह शीस है और एक लड़की भी थी जो शीस के साथ उसके बाद पैदा हुई। फिर ख़ुदा ने चाहा कि वह संबंध जो प्रथम और अन्त में होता है वह मानवजाति में सही करे। इसलिए उसने प्रांरभ से निश्चित कर रखा था कि जन्म के तरीक़े में अन्तिम सुपुत्र प्रथम से मार्ग दर्शन के ढंग में समानता रखे। अतः अन्तिम पुत्र जो ख़ातमुल ख़ुलफ़ा था और उस भविष्यवाणी के अनुसार जो शेख़ ने अपनी पुस्तक अन्क़ा मग़रिब में लिखी है वह ख़ातमुल ख़ुलफ़ा और ख़ातमुल औलिया अजम में से पैदा होने वाला था न कि अरब से। और वह हज़रत शीस की विद्याओं का धारण करने वाला था। और भविष्यवाणी में यह भी शब्द हैं कि उसके बाद अर्थात्

उसके मरने के पश्चात् मानवजाति में बांझ होने का रोग, दाख़िल हो जाएगा। अर्थात् पैदा होने वाले प्राणियों और वहशियों से समानता रखेंगे। और वास्तविक मानवता दुनिया से समाप्त हो जाएगी। वे वैध को वैध नहीं समझेंगे और न अवैध को अवैध। अत: उन पर क़यामत क़ायम होगी।

अब स्पष्ट हो कि कथित शेख़ की यह भविष्यवाणी यद्यपि किसी व्यापक हदीस से अब तक सिद्ध नहीं हुई परन्तु क़ुर्आन की आयत हमें इस बात की ओर ध्यान दिलाती है कि यह भविष्यवाणी क़ुर्आन में मौजूद है क्यों कि पहले तो क़ुर्आन ने बहुत से उदाहरण वर्णन करके हमारे मस्तिष्क में बैठा दिया है कि संसार की बनावट दौरी है। और नेकों तथा बदों की जमाअतें हमेशा प्रतिरूपी तौर पर दुनिया में आती रहती हैं। वे यहूदी जो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के समय में मौजूद थे ख़ुदा ने दुआ (फ़ातिहा-7) غير المغضوب عليهم सिखा कर संकेत फ़रमा दिया कि वे प्रतिरूपी तौर पर इस उम्मत में भी आने वाले हैं। ताकि प्रतिरूपी तौर पर वे भी उस मसीह मौऊद को कष्ट दें। जो इस उम्मत में प्रतिरूपी तौर पर आने वाला है। अपितु यह फ़रमाया कि तुम नमाज़ों में सूरह फ़ातिहा को आवश्यक तौर पर पढ़ो। यह सिखाता है कि मसीह मौऊद का आगमन आवश्यक तौर पर प्रारब्ध है। ऐसा ही पवित्र क़ुर्आन में इस उम्मत के दुष्ट लोगों को यहूदियों से समानता दी गई है। और केवल इतना ही नहीं अपितु ऐसे मनुष्य को जो मरयमी विशेषता से केवल ख़ुदा की फूंक से ईस्वी विशेषता प्राप्त करने वाला था, उसका नाम सूरह तहरीम में इब्ने मरयम रख दिया है। क्योंकि फ़रमाया है कि जब मिसाली मरयम ने भी संयम धारण किया तो हमने अपनी ओर से रूह फूंक दी। इसमें संकेत था कि मसीह इब्ने मरियम में कलिमातुल्लाह होने की कोई विशेषता नहीं अपितु अन्तिम मसीह भी कलिमातुल्लाह है और रूहुल्लाह भी। अपितु इन दोनों विशेषताओं में वह पहले से अधिक कामिल है। जैसा कि सूरह तहरीम, सूरह फ़ातिहा और सूरह अन्नूर तथा आयत كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ (आले इमरान- 111) से समझा जाता है।

फिर इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में यह भी

फ़रमाया है هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ (अल हदीद 4) इस आयत से साफ़ प्रकट है कि एक इन्सान ख़ुदा की प्रथमता का द्योतक था और एक इन्सान ख़ुदा की अन्तिम का द्योतक होगा। और अनिवार्य था कि दोनों इन्सान एक विशेषता में विशेषताओं की दृष्टि से संयुक्त हों। तो जबकि आदम नर और मादा पैदा किया गया और ऐसा ही शीस को भी चाहिए था कि अन्तिम इन्सान भी नर और मादा के रूप पर पैदा हो। इसलिए क़ुर्आन के आदेशानुसार वह वादे का ख़लीफ़ा और ख़ातमुल खुलफ़ा जिसको दूसरे शब्दों में मसीह मौऊद करना चाहिए। इसी प्रकार से पैदा होना आवश्यक था कि वह जुड़वां की तरह जन्म ले। इस प्रकार से कि उस से पहले लड़की निकले और उसके बाद लड़का निकले ताकि वह ख़ातिमुल वलद हो।

अत: स्पष्ट हो कि कथित शेख की यह भविष्यवाणी संभवत: उसका कश्फ़ होगा। परन्तु पवित्र क़ुर्आन पर दृष्टि डालकर इसका सत्यापन पाया जाता है। और क्योंकि शेख की यह पुस्तक अन्तिम पुस्तक है जिसमें शेख़ ने यह स्वीकार नहीं किया कि वह ख़ातुम खुलफ़ा ईसा है जो आकाश से उतरेगा। अपितु उस को पैदा होने वाला माना है। किन्तु जुड़वां के तौर पर और शेख़ की क़ुर्आन की तफ़्सीर से भी मालूम होता है कि वह इस बात का समर्थक नहीं है कि आकाश से ईसा अलैहिस्सलाम उतरेगा। इसलिए सिद्ध होता है कि शेख़ ने यदि किसी पहली पुस्तक में ईसा के उतरने की आस्था वर्णन की है तो शेख ने अन्तत: उस से रूजू कर लिया है। और सूफ़ियों की पुस्तकों में ऐसा बहुत होता है। अत: बराहीन अहमदिया में निश्चित ज्ञान से पूर्व जो ख़ुदा से प्रकट हुआ अपने विचार से यही लिखा गया था कि स्वयं ईसा दोबारा आएगा। परन्तु ख़ुदा ने अपनी निरन्तर वह्यी से इस आस्था को दूषित ठहराया और मुझे कहा कि **तू ही मसीह मौऊद है**।

और स्मरण रहे कि यदि शेख इस भविष्यवाणी मैं शीष की बजाए मसीह मौऊद को आदम से समानता देता तो उत्तम था। क्योंकि क़ुर्आन और तौरात से सिद्ध है कि आदम बतौर जुड़वां पैदा हुआ था। और बराहीन अहमदिया में

आज से बाईस वर्ष पूर्व मेरे बारे में ख़ुदा तआला की यह वह्यी प्रकाशित हो चुकी है कि

اَرَدْتُّ اَنْ اَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ آدم

इसमें भी संकेत था कि प्रथम मैं भी जुड़वां था और अन्त में भी जुड़वां। और मेरा जुड़वां पैदा होना तथा पहले लड़की और बाद में उसी गर्भ से मेरा पैदा होना समस्त गांव के बुज़ुर्ग लोगों को मालूम है और जनाने वाली दाई की लिखित गवाही मेरे पास मौजूद है। अब हम पुस्तक को इसी जगह समाप्त करते हैं और ख़ुदा से बरकत एवं हिदायत की दुआ मांगते हैं। आमीन पुनः आमीन।

स्पष्ट हो कि इस पुस्तक का वह भाग जिसमें भविष्यवाणियां हैं पूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं हुआ। क्योंकि पुस्तक 'नुज़ूलुल मसीह' ने इस से निस्पृह कर दिया जिसमें डेढ़ सौ भविष्यवाणियां दर्ज हैं। ख़ुदा ने जो चाहा वही हुआ।

समाप्त

लेखक मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद

क़ादियान 25 अक्टूबर 1902 ई.

परिशिष्ट न. 3 पुस्तक तिर्याक़ुल क़ुलूब

महान सरकार की सेवा में एक विनयपूर्वक निवेदन

जबकि हमारी यह उपकारी सरकार प्रत्येक वर्ग और श्रेणी के इन्सानों की अपितु ग़रीब से गरीब और ख़ुदा के निराश्रय से निराश्रय बन्दों की हमदर्दी कर रही है। यहां तक कि इस देश के परिन्दों और चरिन्दों और बेज़ुबान पशुओं के बचाव के लिए भी उसके न्याय फैलाने वाले क़ानून मौजूद हैं और प्रत्येक क़ौम और फ़िर्क़ों को समान आंख से देखकर उन के अधिकार दिलाने में व्यस्त है। तो इस इन्साफ़, न्याय फैलाने और न्यायप्रियता की आदत पर दृष्टि डालकर यह ख़ाकसार भी अपने एक कष्ट के निवारण के लिए महान सरकार के समक्ष यह विनयपूर्ण निवेदन प्रस्तुत करता है। और इस से पूर्व कि मूल उद्देश्य को प्रकट किया जाए इस उपकारी और क़द्र पहचानने वाली सरकार की सेवा में इतनी वर्णन करना बे मौक़ा न होगा कि यह ख़ाकसार सरकार के उस पुराने शुभ चिन्तक ख़ानदान में से है जिसकी शुभ चिन्ता का सरकार के उच्च अधिकारियों इक़रार किया है और अपने पत्रों द्वारा गवाही दी है कि वह ख़ानदान प्रारंभिक अंग्रेज़ी शासन से आज तक सरकार की शुभ चिन्ता में निरन्तर तन्मय रहा है। मेरे स्वर्गीय पिता श्री मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा इस उपकारी सरकार के ऐसे प्रसिद्ध शुभ चिन्तक और हार्दिक तौर पर प्राण न्योछावर करने वाले थे। वे समस्त अधिकारी जो उनके समय में इस ज़िले में आए सब ही इस बात के गवाह हैं कि उन्होंने मेरे पिता श्री को आवश्यकता के समयों में सरकार की सेवा करने में कैसा पाया। और इस बात के वर्णन करने की आवश्यकता नहीं कि उन्होंने 1857 के उपद्रव के समय अपनी थोड़ी सी हैसियत के साथ पचास घोड़े पचास जवानों सहित इस उपकारी सरकार की सहायता के लिए दिए और हर समय सहायता और सेवा के लिए कटिबद रहे यहां तक कि इस दुनिया से गुज़र गए। पिता श्री महान सरकार की नज़र में एक सम्मानीय और लोक प्रिय रईस थे जिन को गवर्नर के दरबार में कुर्सी मिलती थी और वह मुग़ल ख़ानदान में से एक तबाह हो चुकी थी के शेष

थे जिन्होंने बहुत से संकटों के पश्चात् अंग्रेज़ी सरकार के काल में आराम पाया था। यही कारण था कि वह दिल से सरकार से प्रेम करते थे और इस सरकार की शुभ चिन्ता एक लोहे की कील की तरह उनके दिल में धंस गई थी। उन के निधन के बाद मुझे ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की तरह दुनिया से बिल्कुल अलग करके अपनी ओर खींच लिया मैंने उस की कृपा से आकाशीय पद और सम्मान के अपने लिए पसन्द कर लिया। परन्तु मैं इस बात को फ़ैसला नहीं कर सकता कि इस उपकारी अंग्रेज़ी सरकार की शुभ चिन्ता और हमदर्दी में मैं अधिक हूं या मेरे स्वर्गीय पिता श्री को बीस वर्ष की अवधि से मैं अपने हार्दिक जोश से ऐसे पुस्तकें फारसी भाषा, अरबी, उर्दू और अंग्रेज़ी में प्रकाशित कर रहा हूं जिन में बार-बार यह लिखा गया है कि मुसलमानों का कर्त्तव्य है जिसे छोड़ने से वे ख़ुदा तआला के गुनहगार होंगे कि इस सरकार के सच्चे शुभ चिन्तक और हार्दिक तौर पर प्राण न्योछार करने वाले हो जाएं। जिहाद और ख़ूनी महदी की प्रतीक्षा इत्यादि व्यर्थ विचारों से जो पवित्र क़ुर्आन से कदापि सिद्ध नहीं हो सकते पृथक हो जाएं यदि वे उस ग़लती को त्यागना नहीं चाहते तो कम से कम यह उनका कर्त्तव्य है कि इस उपकारी सरकार के कृतघ्न न बनें और नमक हरामी से ख़ुदा के गुनाहगार न ठहरें। क्योंकि यह सरकार हमारे माल, खून और सम्मान की रक्षक है और इसके मुबारक क़दम से हम जलते हुए तन्दूर में से निकाले गए हैं। ये पुस्तकें हैं जो मैंने इस देश में और अरब, शाम, फारस तथा मिस्र इत्यदि देशों में प्रकाशित की हैं। अत: शाम देश के कई ईसाई विद्वानों ने भी मेरी पुस्तकें प्रकाशित होने की गवाही दी है और मेरी कुछ पुस्तकों की चर्चा की है।★ अब मैं अपनी उपकारी सरकार की सेवा में साहस

★ खरीसतफ़ूर जबारह नामक दमिश्क का रहने वाला ईसाई विद्वान अपनी पुस्तक है ख़ुल्लासतुल अदियान के पृष्ठ 44 में मेरी पुस्तक हमाम तुलबुश्रा की चर्चा करता है।और हमामतुल बुश्रा में से कुछ पंक्तियां नक़ल करके लिखता है तथा मेरे बारे में लिखता है कि यह पुस्तक एक हिन्दी विद्वान की है जो समस्त हिन्द में प्रसिद्ध है। देखो ख़ुलासतुल अदियान ज़ब्दतुलईमान पृष्ठ 24 पंक्ति 14 से 21 की पंक्ति तक। इसी से।

से कह सकता हूं कि यह वह बीस वर्षीय सेवा है जिस का उदाहरण ब्रिटिश इण्डिया में एक भी इस्लामी ख़ानदान प्रस्तुत नहीं कर सकता। यह भी स्पष्ट है कि इतने लम्बे समय तक जो बीस वर्ष का समय है एक निरन्तर तौर पर उपरोक्त शिक्षा पर ज़ोर देते जाना किसी कपटाचारी और स्वार्थ परायण का कार्य नहीं है अपितु ऐसे व्यक्ति का कार्य है जिस के दिल में इस सरकार की सच्ची हमदर्दी है। हां मैं इस बात का इक़रार करता हूं कि मैं नेक नीयत से दूसरे धर्म के लोगों से मुबाहसे भी किया करता हूं। और ऐसा ही पादरियों के मुक़ाबले पर भी मुबाहसे की पुस्तकें प्रकाशित करता रहा हूं। और मैं इस बात का भी इक़रारी हूं कि जब कुछ पादरियों और ईसाई मिशनरियों के लेख अत्यन्त कठोर हो गए और संतुलन की सीमा से बढ़ गए और विशेष तौर पर पर्चा नूर अफ़्शां में जो एक ईसाई अख़बार लुधियाना से निकलता है नितान्त गन्दे लेख प्रकाशित हुए और उन लेखकों ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में नऊज़ुबिल्लाह ऐसे शब्द प्रयोग किए कि यह व्यक्ति डाकू था, चोर था, व्यभिचारी था और सैकड़ों पर्चों में यह प्रकाशित किया कि यह व्यक्ति अपनी लड़की पर बुरी नीयत से आशिक़ था। इसके बावजूद झूठा था लूट मार और ख़ून करना उसका काम था। तो मुझे ऐसी पुस्तकों और अख़बारों के पढ़ने से हृदय में यह आशंका पैदा हुई कि शायद मुसलमानों के दिलों पर जो एक जोश रखने वाली क़ौम है इन बातों का कोई तीव्र भड़काने वाला प्रभाव पैदा हो। तब मैंने उन जोशों को ठण्डा करने के लिए अपनी सही और पवित्र नीयत से यही उचित समझा कि इस बड़े जोश के दबाने के लिए कूटनीति यही है कि उन लेखों का कुछ कठोरता से उत्तर दिया जाए। ताकि शीघ्र क्रोध में आ जाने वाले लोगों के जोश कम हो जाएं और देश में कोई अशान्ति पैदा न हो।★ तब मैंने ऐसी पुस्तकों के मुक़ाबले पर जिनमें बड़ी कठोरता से गालियां दी गई थीं कुछ ऐसी पुस्तकें लिखीं जिन में तुलनात्मक

★ इन मुबाहसों की पुस्तकों से एक यह भी मतलब था कि ब्रिटिश इण्डिया दूसरे देशों पर भी इस बात को स्पष्ट किया जाए कि हमारी सरकार प्रत्येक क़ौम को मुबाहसों के लिए आज़ादी दी है। पादरियों की कोई विशेषता नहीं है। इसी से।

तौर पर कुछ कठोरता थी। क्योंकि मेरी अन्तर्आत्मा ने अटल तौर पर मुझे फ़त्वा दिया कि इस्लाम में जो बहुत से उग्र स्वभाव वाले आदमी मौजूद हैं उनके क्रोध और कोप की अग्नि बुझाने के लिए यह तरीक़ा पर्याप्त होगा क्योंकि बदले के बाद कोई शिक्वा शेष नहीं रहता। तो मेरी यह दूरदर्शिता का उपाय सही निकला और इन पुस्तकों का यह प्रभाव हुआ कि हज़ारों मुसलमान जो पादरी इमामुद्दीन इत्यादि लोगों के तेज़ और गन्दे लेखों से भड़क चुके थे अचानक उनका भड़कना दूर हो गया क्योंकि मनुष्य की यह आदत है कि जब कठोर शब्दों के मुकाबले पर उसका बदला देख लेता है तो उसका वह जोश नहीं रहता। इसके बावजूद मेरे लेख पादरियों की तुलना में बहुत नर्म थे जैसे कुछ भी तुलना न थी। हमारी उपकारी सरकार ख़ूब समझती है कि मुसलमान से यह कदापि नहीं हो सकता कि यदि कोई पादरी हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गाली दे तो एक मुसलमान उसके बदले में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को गाली दे। क्योंकि मुसलमानों के दिलों में दूध के साथ ही यह प्रभाव पहुचांया गया है। वे जैसा कि अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम रखते हैं ऐसा ही वे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से प्रेम रखते हैं। तो किसी मुसलमान का यह हौसला ही नहीं कि तीव्र ज़ुबानी को इस सीमा तक पहुंचाए जिस सीमा तक एक पक्षपाती ईसाई पहुंचा सकता है। और मुसलमानों में यह एक उत्तर चरित्र है जो गर्व करने योग्य है कि वे समस्त नबियों का जो हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले हो चुके हैं एक सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से कुछ कारणों से एक विशेष प्रेम रखते हैं जिस के विवरण के लिए इस स्थान पर अवसर नहीं। तो मुझ से पादरियों के मुकाबले पर जो कुछ घटित हुआ यही है कि कूटनीति से कुछ वहशी मुसलमानों को प्रसन्न किया गया और मैं दावे से कहता हूं कि मैं समस्त मुसलमानों में से प्रथम श्रेणी का शुभचिन्तक अंग्रेज़ी सरकार का हूं। क्योंकि मुझे तीन बातों ने शुभ चिन्ता में प्रथम श्रेणी का बना दिया है।

(1) प्रथम स्वर्गीय पिता श्री के प्रभाव ने

(2) इस महान सरकार के उपकारों ने

(3) ख़ुदा तआला के इल्हाम ने।

अब मैं इस उपकारी सरकार की छत्र छाया में हर प्रकार से प्रसन्न हूं। केवल एक रंज, दर्द और ग़म मुझे हर समय लगा रहता है जिस की नालिश प्रस्तुत करने के लिए अपनी उपकारी सरकार की सेवा में उपस्थित हुआ हूं। और वह यह है कि इस देश के मौलवी मुसलमान और उनकी जमाअतों के लोग मुझे सीमा से अधिक सताते और दुख देते हैं। मेरे क़त्ल के लिए इन लोगों ने फ़त्वे दिए हैं। मुझे काफ़िर और बेईमान ठहराया है और कुछ उनमें से शर्म और लज्जा को त्याग कर मेरे मुक़ाबले पर इस प्रकार के विज्ञापन प्रकाशित करते हैं कि यह व्यक्ति इस कारण से भी काफ़िर है कि इसने अंग्रेज़ी हुकूमत को रोम की हुकूमत पर प्राथमिकता दी है और हमेशा अंग्रेज़ी हुकूमत की प्रशंसा करता है। और एक कारण यह भी है कि ये लोग मुझे इस कारण से भी काफ़िर ठहराते हैं कि मैंने ख़ुदा तआला के सच्चे इल्हाम से मसीह मौऊद होने का दावा किया है और उस ख़ूनी मेहदी के आने से इन्कार किया है जिस के ये लोग प्रतीक्षक हैं। निस्सन्देह मैं इक़रार करता हूं कि मैंने इन लोगों की बड़ी हानि की है कि ऐसे खूनी महदी का आना सर्वथा झूठ सिद्ध कर दिया है जिसके बारे में इन लोगों का विचार था कि वह आकर इन को असंख्य रुपया देगा। परन्तु मैं विवश हूं। क़ुर्आन और हदीस से यह बात सबूत तक नहीं पहुंचती कि दुनिया में कोई ऐसा महदी आएगा जो पृथ्वी को ख़ून से भर देगा। अत: मैंने इन लोगों का इसके अतिरिक्त कोई गुनाह नहीं किया कि लूटमार के काल्पनिक रुपए के विचार से इनको वंचित कर दिया है। मैं ख़ुदा से पवित्र इल्हाम पाकर यह चाहता हूं कि इन लोगों के आचरण अच्छे हो जाएं और उजड्ड आदतें दूर हो जाएं और कामवासना संबंधी भावनाओं से इनके सीने धोए जाएं और इनमें आहिस्तगी, गंभीरता, सहनशीलता, म्यान:रवी और न्यायप्रिय पैदा हो जाए। और दूसरों के लिए नमूना बन जाएं। और ये ऐसे हो जाएं कि उनमें कोई भी उपद्रव की रंग शेष न रहे। अत: मुझे किसी सीमा तक यह उद्देश्य मुझे प्राप्त भी हो गया है। और मैं देखता हूं कि दस हज़ार या इस से भी अधिक ऐसे लोग पैदा हो गए

हैं जो मेरी इन पवित्र शिक्षाओं के दिल से पाबन्द हैं।★ और नया फ़िर्क़ा परन्तु सरकार के लिए अत्यन्त मुबारक फ़िर्क़ा ब्रिटिश इण्डिया में ज़ोर से उन्नति कर रहा है। यदि मुसलमान इन शिक्षाओं के पाबन्द हो जाएं तो मैं क़सम खा कर कह सकता हूं कि वे फ़रिश्ते बन जाएं। और यदि वे इस सरकार के सब क़ौमों से बढ़कर शुभ चिन्तक हो जाएं तो समस्त क़ौमों से अधिक भाग्यशाली हो जाएं। यदि वे मुझे स्वीकार कर लें और विरोध न करें तो यह सब कुछ उन्हें प्राप्त होगा और एक नेकी और पवित्रता की रूह उनमें पैदा हो जाएगी और जिस प्रकार एक इन्सान खोजा होकर गन्दी काम भावनाओं से पृथक हो जाता है इसी प्रकार मेरी शिक्षा से इनमें परिवर्तन पैदा होगा। परन्तु मैं नहीं कहता कि महान सरकार बलात् उनको मेरी जमाअत में दाख़िल करे। और न मैं इस समय यह नालिश करता हूं कि क्यों वे हर समय मेरे क़त्ल पर तत्पर हैं। और क्यों मेरे क़त्ल के लिए झूठे फ़त्वे प्रकाशित कर रहे हैं। मैं जानता हूं कि ये बुरे इरादे उनके व्यर्थ हैं। क्योंकि कोई चीज़ पृथ्वी पर नहीं हो सकती जब तक आकाश पर न हो ले। और मैं उनकी बुराई के बदले में उनके पक्ष में दुआ कता हूं कि ख़ुदा तआला उनकी आंखें खोले और वह ख़ुदा और सृष्टि के अधिकारों के पहचानने वाले हो जाएं। परन्तु चूंकि इन लोगों की शत्रुता सीमा से बढ़ गई है। इसलिए मैंने इनके सुधार के लिए तथा इन की भलाई के लिए अपितु समस्त सृष्टि की शुभ चिन्ता के लिए एक प्रस्ताव सोचा है जो हमारी सरकार की अमनप्रिय नीति के अनुकूल है जिसका लागू करना सरकार के हाथ में है और वह यह है कि यह उपकारी सरकार जिसके उपकार सब से अधिक मुसलमानों पर हैं एक यह उपकार करे कि इस प्रतिदिन के काफ़िर ठहराने, झुठलाने और क़त्ल के फ़त्वों तथा योजनाओं

★ मैंने अपनी किसी पुस्तक में लिखा था कि मेरी जमाअत में तीन सौ आदमी है परन्तु अब वह गणना बहुत बढ़ गई है क्योंकि ज़ोर से उन्नति हो रही है। अब मैं विश्वास रखता हूं कि मेरी जमाअत के लोग दस हज़ार से भी कुछ अधिक होंगे और मेरी प्रतिभा यह भविष्यवाणी करती है कि तीन वर्ष तक मेरी इस जमआत की संख्या एक लाख तक पहुंच जाएगी। इसी से।

के रोकने के लिए स्वयं बीच में होकर यह निर्देश दे कि इस विवाद का फ़ैसला इस प्रकार से हो कि मुद्दई अर्थात् यह ख़ाकसार जिसको मसीह मौऊद होने का दावा है और जिसको यह दावा है कि जिस प्रकार नबियों से ख़ुदा तआला बातें करता था उसी प्रकार मुझ से करता है और ग़ैब के रहस्य मुझ पर प्रकट किए जाते हैं तथा आकाशीय निशान दिखाए जाते हैं। यह मुद्दई अर्थात् यह ख़ाकसार सरकार के आदेश से एक वर्ष के अन्दर एक ऐसा आसमानी निशान दिखाए या ऐसा निशान जिसका मुक़ाबला कोई क़ौम और कोई फ़िर्क़ा जो पृथ्वी पर रहते हैं न कर सके और मुसलमानों की क़ौमों या दूसरी क़ौमों में से कोई ऐसा मुल्हम और स्वप्न देखने वाला तथा चमत्कार दिखाने वाला पैदा न हो सके जो उस निशान का एक वर्ष के अन्दर उदाहरण प्रस्तुत करे। और ऐसा ही उन समस्त मुसलमानों अपितु प्रत्येक क़ौम के पेशवाओं को जो ख़ुदा से इल्हाम पाने और ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त होने का दावा करते हैं चेतावनी और सूझ हो कि यदि वे स्वयं को सच पर और ख़ुदा का मान्य समझते हैं तथा उनमें कोई ऐसा पवित्र हृदय है जिसे ख़ुदा ने संवाद पाने का सम्मान प्रदान किया है और ख़ुदाई शक्ति के नमूने उसको दिए गए हैं तो वे भी एक वर्ष तक कोई निशान दिखालावें। तत्पश्चात यदि एक वर्ष तक इस ख़ाकसार ने कोई ऐसा निशान न दिखाया जो इन्सानी शक्तियों से श्रेष्ठतर और इन्सानी हाथ की मिलौनी से भी बुलन्दतर हो। या यह कि निशान तो दिखाया परन्तु इस प्रकार के निशान मुसलमानों या अन्य क़ौमों से भी प्रकटन में आ गए तो यह समझा जाए कि मैं ख़ुदा की ओर से नहीं हूं और इस स्थिति में मुझ को कोई कड़ा दण्ड दिया जाए चाहे मृत्युदण्ड ही क्यों न हो। क्योंकि इस स्थिति में फ़साद की सम्पूर्ण बुनियाद मेरी ओर से होगी। और फ़साद फैलाने वाले को दण्ड देना न्यायसंगत है। ख़ुदा पर झूठ बोलने वाले को दण्ड देना न्यायसंगत है। ख़ुदा पर झूठ बोलने से अधिक बुरा कोई गुनाह नहीं। परन्तु यदि ख़ुदा तआना ने एक वर्ष की मीआद के अन्दर मेरी सहायता की और पृथ्वी के रहने वालों में से कोई मेरा मुक़ाबला न कर सका, तो फिर मैं यह चाहता हूं कि यह उपकारी सरकार मेरे विरोधियों को नर्मी से निर्देश दे

कि क़ुदरत के इस दृश्य के बाद शर्म और लज्जा से काम लें और समस्त पौरुष और बहादुरी सच्चाई के स्वीकार करने में है।

इतना निवेदन कर देना पुनः आवश्यक है कि निशान इस प्रकार का होगा कि जो मानवीय शक्तियों से श्रेष्ठतर हो और उसमें मीनमेख की एक कण भर गुंजायश न हो कि संभव है कि इस व्यक्ति ने अवैध सामानों से काम लिया हो। अपितु जिस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा के उदय अस्त होने में यह गुमान नहीं हो सकता कि किसी मनुष्य ने समय से पूर्व अपनी कूटनीति से उनको चढ़ाया है या अस्त कर दिया है। इसी प्रकार उस निशान में भी ऐसा गुमान करना असंभव हो। इस प्रकार का फ़ैसला सैकड़ों अच्छे परिणाम पैदा करेगा और संभव है कि इस से समस्त क़ौमें एक हो जाएं। तथा अनुचित विवाद और झगड़े और क़ौमों की फूट और सीमा से अधिक वैर जो सडीशन के कानून के उद्देश्य के भी विरुद्ध है यह समस्त फूट ब्रिटिश इण्डिया से समाप्त हो जाए। इमें सन्देह नहीं कि सरकार की यह पवित्र कार्रवाई इस देश में हमेशा यादगार रहेगी और सरकार के लिए यह कार्य बहुत प्राथमिक और आवश्यक है तथा इन्शा अल्लाह इस से अच्छे परिणाम पैदा होंगे। चूंकि आजकल यूरोप की कुछ सरकारें इस बात की ओर भी झुकी हुई हैं कि विभिन्न धर्मों की खूबियां मालूम की जाएं कि उन सब में से खूबियों में बढ़ा हुआ कौन सा धर्म है। और इस उद्देश्य से यूरोप के कुछ देशों में जल्से किए जाते हैं। जैसा कि इन दिनों में इटली में ऐसा जल्सा हो रहा है और फिर पेरिस में भी होगा। तो जबकि यूरोप के बादशाहों का झुकाव स्वाभाविक तौर पर इस ओर हो गया है तथा बादशाहों की इस प्रकार की पूछ ताछ सरकार के अनिवार्य कार्यों में गिनी गई है। इसलिए उचित नहीं है कि हमारी यह उच्च श्रेणी की सरकार दूसरों से पीछे रहे। और इस कार्रवाई की भूमिका इस प्रकार हो सकती है कि हमारी उच्च साहसी सरकार एक धार्मिक जल्से की घोषणा करके इस प्रस्ताव के अन्तर्गत जल्से की ऐसी तिथि निर्धारित करे जो दो वर्ष से अधिक न हो, और समस्त क़ौमों के पेशवा, उलेमा, फ़ुक़रा और मुल्हमों को इस उद्देश्य से बुलाया जाए कि वे जल्से की तिथि पर उपस्थित हो कर

अपने धर्म की सच्चाई के दो सबूत दें।

(1) प्रथम ऐसी शिक्षा प्रस्तुत करें जो अन्य शिक्षाओं से उच्चतर हो जो मानवीय वृक्ष की समस्त शाखाओं की सिंचाई कर सकती हो।

(2) दूसरे यह सबूत दें कि उनके धर्म में रूहानियत और उच्च शक्ति वैसी ही मौजूद है जैसा कि प्रारंभ में दावा किया गया था। और वह घोषणा जो जल्से से पहले प्रकाशित की जाए उसमें स्पष्ट तौर पर यह निर्देश हो कि क़ौमों के पेशवा इन दो सबूतों के लिए तैयार होकर जल्से के मैदान में क़दम रखें। और शिक्षा की खूबियां वर्णन करने के पश्चात् ऐसी उच्चतम भविष्यवाणियां प्रस्तुत करें जो केवल ख़ुदा के ज्ञान से विशिष्ट हों तथा एक वर्ष के अन्दर पूरी भी हो जाएं। निष्कर्ष यह कि ऐसे निशान हों जिन से धर्म की रूहानियत (अध्यात्मिकता) सिद्ध हो। फिर एक वर्ष तक प्रतीक्षा करके विजयी और पराजित के हाल प्रकाशित कर दिए जाएं। मेरे विचार में है कि हमारी बुद्धिमान सरकार इस तरीक़े पर कार्य करे और आज़माए कि किस धर्म और किस व्यक्ति में रूहानियत और ख़ुदा की शक्ति पाई जाती है तो यह सरकार दुनिया की समस्त क़ौमों पर उपकार करेगी और इस प्रकार से एक सच्चे धर्म को उसके सम्पूर्ण रूहानी जीवन के साथ दुनिया पर प्रस्तुत करके सम्पूर्ण दुनिया को सद्मार्ग पर ले आएगी। क्योंकि वह समस्त शोर और कोलाहल जो किसी ऐसे धर्म के लिए किया जाता है जिसके साथ विलक्षण ज़िन्दा निशान नहीं और केवल क़िस्से कहानियों पर भरोसा है वे सब तुच्छ हैं। क्योंकि कोई धर्म निशान के बिना मनुष्य को ख़ुदा के निकट नहीं कर सकता और न गुनाह से घृणा दिला सकता है। धर्म, धर्म हर एक चिल्लाता है, परन्तु कभी संभव नहीं कि वास्तव में पवित्र जीवन तथा हार्दिक पवित्रता और ख़ुदा का भय उपलब्ध हो सके जब तक कि मनुष्य धर्म के दर्पण में किसी विलक्षण दृश्य का अवलोकन न करे। नवीन जीवन कदापि प्राप्त नहीं कर सकता जब तक एक नवीन विश्वास पैदा न हो और कभी नवीन विश्वास पैदा नहीं हो सकता जब तक मूसा और मसीह और इब्राहीम और याक़ूब तथा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरह नवीन चमत्कार न दिखाए जाएं। नवीन जीवन उन्हीं को मिलता है जिन का ख़ुदा नया

हो, विश्वास नवीन हो, निशान नवीन हों और दूसरे समस्त लोग किस्सों-कहानियां के जाल में गिरफ़्तार हैं, दिल लापरवाह हैं और जीभों पर ख़ुदा का नाम है। मैं सच-सच कहता हूं कि ज़मीन के कोलाहल और शोर सब किस्से और कहानियां हैं और प्रत्येक व्यक्ति जो इस समय कई सौ वर्ष के पश्चात् अपने किसी पैग़म्बर या अवतार के हज़ारों चमत्कार सुनाता है वह स्वयं अपने दिल में जानता है कि वह एक क़िस्सा वर्णन कर रहा है जिस को न उस ने और न उसके बाप ने देखा है और न उस के दादे को उसकी ख़बर है। वह स्वयं नहीं समझ सकता कि उसका यह वर्णन कहां तक सही और दुरुस्त है क्योंकि यह दुनिया के लोगों की आदत है कि एक तिनके का पहाड़ बना दिया करते हैं। इसलिए ये सब क़िस्से जो चमत्कारों के रंग में प्रस्तुत किए जाते हैं उनका प्रस्तुत करने वाला चाहे कोई मुसलमान हो या ईसाई हो जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा जानता है या कोई हिन्दू हो जो अपने अवतारों के करिश्मे पुस्तकें खोल कर सुनाता है यह सब कुछ तुच्छ और कुछ नहीं है और उनका मूल्य एक कौड़ी नहीं हो सकता जब तक कि कोई ज़िन्दा नमूना उनके साथ न हो और सच्चा धर्म वही है जिस के साथ ज़िन्दा नमूना है। क्या कोई दिल और कोई अन्तर्आत्मा इस बात को स्वीकार कर सकती है कि धर्म तो सच्चा है परन्तु उसकी सच्चाई की चमकें और सच्चाई के निशान आगे नहीं अपितु पीछे रह गए हैं और उन हिदायतों के भेजने वाले के मुंह पर हमेशा के लिए मुहर लग गई है। मैं जानता हूं कि प्रत्येक इन्सान जो सच्ची भूख और प्यास ख़ुदा तआला की अभिलाषा में रखता है वह ऐसा विचार कदापि नहीं करेगा। इसलिए आवश्यक है कि सच्चे धर्म की यही निशानी हो कि ज़िन्दा ख़ुदा के ज़िन्दा नमूने और उसके निशानों के चमकते हुए प्रकाश उस धर्म में ताज़ा से ताज़ा मौजूद हों। यदि हमारी उच्चतम सरकार ऐसा जल्सा करे तो यह बहुत ही शुभ इरादा है और इस से सिद्ध होगा कि यह सरकार सच्चाई की सहायक है। और यदि ऐसा जल्सा हो तो प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकार से और हंसी-खुशी इस जल्से में शामिल हो सकता है। क़ौमों के पेशवा जिन्होंने मुक़द्दस कहला कर क़ौमों का करोड़ों रुपया खा लिया है उन की पवित्रता को परखने के

लिए इस से बढ़कर अन्य कोई उत्तम उपाय नहीं कि जो उन का या उनके धर्म का ख़ुदा के साथ रिश्ता है उस रिश्ते का ज़िन्दा सबूत मांगा जाए। यह ख़ाकसार अपने हार्दिक जोश से जो एक पवित्र जोश है यही चाहता है कि हमारी उपकारी सरकार के हाथ से यह फ़ैसला हो। हे ख़ुदा इस उच्च सरकार को यह इल्हाम कर ताकि वह इस प्रकार के जल्सों में सब से पीछे आकर सब से पहले हो जाए। और मैं चूंकि मसीह मौऊद हूं इसलिए हज़रत मसीह की आदत का रंग मुझ में पाया जाना आवश्यक है। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम वह इन्सान थे जो मख़्लूक़ (सृष्टि) की भलाई के लिए सलीब पर चढ़े। यद्यपि ख़ुदा के रहम ने उन को बचा लिया और मरहम-ए-ईसा★ ने उन के ज़ख़्मों को अच्छा करके अन्ततः स्वर्ग के समान कश्मीर में उनको पहुंचा दिया। तो उन्होंने सच्चाई के लिए सलीब से प्यार किया और उस पर इस प्रकार चढ़ गए जैसा कि एक बहादुर सवार अच्छी लगाम वाले घोड़े पर चढ़ता है। अतः ऐसा ही मैं भी मख़्लूक़ की भलाई के लिए सलीब से प्यार करता हूं। और मैं विश्वास रखता हूं कि जिस प्रकार ख़ुदा तआला की कृपा और उपकार ने हज़रत मसीह को सलीब से बचा लिया और उनकी सम्पूर्ण रात की दुआ जो बाग़ में की गई थी, स्वीकार करके उनको सलीब और सलीब के परिणामों से मुक्ति दी ऐसा ही मुझे भी बचाएगा और हज़रत मसीह सलीब से मुक्ति पाकर नसीबैन की ओर आए और फिर अफ़ग़ानिस्तान देश में होते हुए कोह-नोमान में पहुँचे और जैसा कि उस स्थान पर शहज़ादा नबी का चबूतरा अब तक गवाही दे रहा है वह एक अवधि तक कोहे नोमान में रहे और तत्पश्चात् पंजाब की ओर आए। अन्त में कश्मीर की ओर गए और कोह सुलेमान पर एक समय

★ मरहम-ए-ईसा एक अत्यन्त मुबारक मरहम है जिस से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़ख़्म अच्छे हुए थे। जबकि आपने ख़ुदा तआला की कृपा से सूली से मुक्ति पाई। तो सलीब की कीलों के जो ज़ख़्म थे जिन को आप ने हवारियों को भी दिखाया था, वह उसी मरहम से अच्छे हुए थे। यह मरहम तिब्ब की हज़ार पुस्तकों में दर्ज है और कानून 'बू अली सीना' में दर्ज है। रोमियों, यूनानियों, ईसाइयों, यहूदियों और मुसलमानों अपितु समस्त फ़िर्क़ों के तबीबों ने इस मरहम को अपनी पुस्तकों में लिखा है। इसी से।

तक इबादत करते रहे तथा सिक्खों के युग तक उनकी यादगार का कोह सुलेमान पर शिलालेख मौजूद था। अन्ततः श्रीनगर एक सौ पच्चीस वर्ष की आयु में मृत्यु पाई और मुहल्ला ख़ानयार के निकट आप का मुक़द्दस मज़ार है। अतएव जैसा कि उस नबी ने सच्चाई के लिए सलीब को स्वीकार किया ऐसा ही मैं भी स्वीकार करता हूं। यदि इस जल्से के बाद जिसकी उपकारी सरकार को प्रेरणा देता हूं एक वर्ष के अन्दर मेरे निशान समस्त संसार पर विजयी न हों तो मैं ख़ुदा की ओर से नहीं हूं। मैं सहमत हूं कि इस अपराध के दण्ड में सूली दिया जाऊं और मेरी हड्डियां तोड़ी जाएं। किन्तु वह ख़ुदा जो आकाश पर है जो दिल के विचारों को जानता है, जिसके इल्हाम से मैंने इस पत्र को लिखा है वह मेरे साथ होगा और मेरे साथ है। वह मुझे इस उच्च सरकार और क़ौमों के सामने शर्मिन्दा नहीं करेगा। उसी की रूह है जो मेरे अन्दर बोलती है। मैं न अपनी ओर से अपितु उसकी ओर से यह सन्देश पहुँचा रहा हूँ ताकि सब कुछ जो समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए चाहिए पूरा हो। यह सच है कि मैं अपनी ओर से नहीं अपितु उसकी ओर से कहता हूं और वही है जो मेरा सहायक होगा।

अन्ततः मैं इस बात का कृतज्ञ हूं कि ऐसे पत्र को प्रस्तुत करने के लिए इस उपकारी सरकार के अतिरिक्त अन्य किसी सरकार को उच्च शिष्टाचारी नहीं पाता। और यद्यपि इस देश के मौलवी मुझ पर कुफ्र का एक और फ़त्वा भी लगा दें, परन्तु मैं कहने से रुक नहीं सकता कि ऐसे पत्रों को प्रस्तुत करने के लिए उच्च साहस, उच्च शिष्टाचारी केवल अंग्रेज़ी सरकार है। मैं इस सरकार के मुकाबले पर रोम की सरकार को भी नहीं पाता जो इस्लामी सरकार कहलाती है। अब मैं इस दुआ पर समाप्त करता हूं कि ख़ुदा तआला हमारी उपकारी महामिहम महारानी क़ैसरा हिन्द को लम्बी आयु देकर प्रत्येक सौभाग्य से सौभाग्यशाली करें और वे समस्त दुआएं जो मैंने अपनी पुस्तक सितार-ए-क़ैसरा और तुहफ़ा क़ैसरिया ने महामहिम महारानी को दी हैं स्वीकार करे, मैं आशा रखता हूं कि उपकारी सरकार इसके उत्तर से मुझे सम्मानित करेगी। और दुआ।

विनीत का पत्र

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान से, 27 सितम्बर 1899 ई.

तिर्याक़ुल क़ुलूब का परिशिष्ट न. 4

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रीम नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

एक इल्हामी भविष्यवाणी का विज्ञापन

चूंकि मुझे इन दिनों में कुछ निरन्तर इल्हाम हुए हैं जिन से ज्ञात होता है कि ख़ुदा तआला शीघ्र ही आकाश से कोई ऐसा निशान दिखाएगा जिस से मेरी सच्चाई प्रकट हो। इसलिए मैं इस विज्ञापन के द्वारा सच के प्रत्याशियों को आशान्वित करता हूं कि वह समय निकट है जब आकाश से कोई ताज़ा गवाही मेरे समर्थन के लिए उतरेगी। यह स्पष्ट है कि संसार में ख़ुदा तआला कि जितने माअमूर आए हैं यद्यपि उनकी शिक्षा बहुत उच्च थी और उनके आचरण अत्युत्तम थे और उनकी प्रतिभा और दक्षता भी उच्च कोटि की थी, परन्तु उनका ख़ुदा तआला से परस्पर वार्तालाप करना लोगों ने स्वीकार न किया जब तक कि उनके समर्थन में आकाश से कोई निशान नहीं उतरा। इसी प्रकार ख़ुदा तआला यहां भी वर्षा के समान अपने निशान प्रकट कर रहा है ताकि देखने वाले देखें और सोचने वाले सोचें। और अब मुझे बताया गया है कि एक बरकत और रहमत और सम्मान का निशान प्रकट होगा जिस से अधिकतर लोग सांत्वना पाएंगे। जैसा कि 14 सितम्बर 1899 को यह इल्हाम हुआ –

एक सम्मान की उपाधि – एक सम्मान की उपाधि

लका ख़िताबुल इज्ज़: एक बड़ा निशान उसके साथ होगा

यह समस्त कलाम शक्तिशाली पवित्र ख़ुदा का कलाम है जिसको मैंने मोटी क़लम से लिख दिया है। यद्यपि मनुष्यों को बादशाहों और समय के शासकों से भी उपाधियां मिलती हैं परन्तु वे केवल शाब्दिक उपाधियां होती हैं जो बादशाहों की मेहरबानी, कृपा और हमदर्दी के कारण या अन्य कारणों से किसी को प्राप्त होती हैं और बादशाह उसके ज़िम्मेदार नहीं होते कि जो उपाधि उन्होंने दी है उसके अर्थानुसार वह व्यक्ति स्वयं को हमेशा रखे जिसको ऐसी उपाधि दी गई है। उदाहरणतया किसी बादशाह ने किसी को 'शेर बहादुर' की उपाधि दी तो वह

बादशाह इस बात का ज़िम्मेदार नहीं हो सकता कि ऐसा व्यक्ति हमेशा अपनी बहादुरी दिखाता रहेगा बल्कि संभव है कि ऐसा व्यक्ति हृदय की कमज़ोरी के कारण एक चूहे की तीव्र गति से भी कांप उठता हो, कहां यह कि वह किसी मैदान में शेर के समान बहादुरी दिखलाए। परन्तु वह व्यक्ति जिस को ख़ुदा तआला से शेर बहादुर की उपाधि मिले उसके लिए आवश्यक है कि वास्तव में बहादुर ही हो। क्योंकि ख़ुदा इन्सान नहीं है कि झूठ बोले या धोखा खाए या किसी राजनीतिक हित से ऐसी उपाधि दे दे जिसके बारे में वह अपने दिल में जानता है कि वास्तव में वह व्यक्ति इस उपाधि के योग्य नहीं है। इसलिए यह बात सिद्ध है कि गर्व-योग्य वही उपाधि है जो ख़ुदा तआला की ओर से मिलती है। और वह उपाधि दो प्रकार की है –

प्रथम – वह जो वह्यी और इल्हाम के माध्यम से ख़ुदा तआला की ओर से प्राप्त होता है। जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने पवित्र नबियों में से किसी को सफ़ीउल्लाह की उपाधि दी और किसी को कलीमुल्लाह की और किसी को रूहुल्लाह की तथा किसी को मुस्तफ़ा और हबीबुल्लाह की इन समस्त नबियों पर ख़ुदा तआला का सलाम और रहमतें हों। और

द्वितीय – प्रकार उपाधि का यह है कि अल्लाह तआला ने कुछ निशानों औ समर्थनों द्वारा अपने कुछ मान्यों का इतना प्रेम लोगों के हृदयों में सहसा डाल देता है कि या तो उनको झूठा, काफ़िर और मुफ़्तरी कहा जाता है और भिन्न-भिन्न प्रकार की आलोचनाएं की जाती हैं हर बुरी आदत और दोष उनकी ओर सम्बद्ध किया जाता है और या ऐसा प्रकटन में आता है कि उनके समर्थन में कोई ऐसा पवित्र निशान प्रकट हो जाता है जिसके बारे में कोई मनुष्य कोई कुधारणा न कर सके और एक मोटी बुद्धि का आदमी भी समझ सके कि यह निशान मानवीय हाथों और मानवीय योजनाओं से पवित्र है और ख़ुदा तआला की विशेष रहमत और कृपा के हाथ से निकला है। तब ऐसा निशान प्रकट होने से प्रत्येक नेक प्रकृति का व्यक्ति किसी सन्देह एवं आशंका के बिना उस इन्सान को स्वीकार कर लेता है और लोगों के हृदयों में यह बात ख़ुदा तआला की ओर

से ही पड़ जाती है कि यह व्यक्ति वास्तव में सच्चा है। तब लोग उस इल्हाम के माध्यम से जो ख़ुदा तआला लोगों के हृदयों में डालता है उस व्यक्ति को सच्चा होने की उपाधि देते हैं।★ क्योंकि लोग उसको सादिक़-सादिक़ कहना आरंभ कर देते हैं। और लोगों की यह उपाधि ऐसी होती है जैसे ख़ुदा तआला ने आकाश से उपाधि दी है। क्योंकि ख़ुदा तआला स्वयं उन के हृदयों में यह विषय उतारता है कि लोग उसे सादिक़ कहें। अब जहां तक मैंने सोच-विचार किया है मैं अपने विवेचन से न कि किसी इल्हामी व्याख्या से उस इल्हाम के जिस का अभी मैंने वर्णन किया है यही अर्थ करता हूं। क्योंकि इन अर्थों के लिए उस इल्हाम का अन्तिम वचन एक बड़ा संदर्भ है। क्योंकि अन्तिम वचन यह है कि एक बड़ा निशान उसके साथ होगा। इसलिए मैं अपने विवेचन✳ से उसके ये अर्थ

★इस उपाधि का उदाहरण यह है जैसा कि मिस्र के बादशाह फ़िरऔन ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को सिद्दीक़ की उपाधि दी। क्योंकि बादशाह ने जब देखा कि इस व्यक्ति ने सच और पवित्र दिल तथा संयम को सुरक्षित रखने के लिए अपने लिए बारह वर्ष की जेल स्वीकार की परन्तु व्यभिचार के निवेदन को स्वीकार न किया अपितु एक पल के लिए भी हृदय मलिन न हुआ। तब बादशाह ने उस ईमानदार को सिद्दीक़ की उपाधि दी जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में सूरह यूसुफ़ में है (सूरह यूसुफ़ : 47) – يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْق मालूम होता है कि मानवीय उपाधियों में से प्रथम उपाधि वही थी जो हज़रत यूसुफ़ को मिली। इसी से।

✳ जिसके साथ ख़ुदा तआला का वह्यी और इल्हाम का मामला हो वह ख़ूब जानता है कि मुल्हमों को कभी विवेचना के तौर पर अपने इल्हाम के मायने करने पड़ते हैं। इस प्रकार के इल्हाम बहुत हैं जो मुझे कई बार हुए हैं और कभी ऐसा इल्हाम होता है कि आश्चर्य होता है कि इसके क्या अर्थ हैं और एक समय के बाद उसके अर्थ खुलते हैं। उदाहरणतया 19 सितम्बर 1899 को ख़ुदा तआला ने मुझ सम्बोधित करके अपना क़लम मुझ पर उतारा انا اخرجنا لك زروعًا يا اِبْرَاهيم अर्थात् हे इब्राहीम हम तेरे लिए रबीअ की खेतियां उगाएंगे। زروع (ज़रू) زرع (ज़रअ) का बहुवचन है। और زرع अरबी भाषा में रबीअ की खेती अर्थात् गेहूं और जौ इत्यादि को कहते हैं परन्तु लक्षण ऐसे नहीं हैं कि यह इल्हाम अपने ज़ाहिरी अर्थों के अनुसार पूरा हो। क्योंकि रबीअ के बीज बोने के दिन गुज़र गए। इसलिए मुझे केवल विवेचन से यह मायने मालूम होते हैं कि तुझे क्या ग़म है तेरी खतियां

समझता हूं कि ख़ुदा तआला इस झगड़े का निर्णय करने के लिए जो किसी सीमा तक पुराना हो गया है और सीमा से बढ़कर झुठलाया और काफ़िर ठहराया जा चुका है कोई बरकत, रहमत, कृपा और मैत्री का ऐसा निशान प्रकट करेगा कि वह मानवीय हाथों से श्रेष्ठतर और पवित्रतर होगा। तब ऐसी खुली-खुली सच्चाई को देख कर लोगों के विचारों में एक परिवर्तन आएगा और नेक स्वभाव के वैर सहसा दूर हो जाएगें। परन्तु जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है यह मेरा ही विचार है अभी कोई इल्हामी व्याख्या नहीं है। मेरे साथ ख़ुदा तआला की आदत यह है कि कभी किसी भविष्यवाणी में मुझे अपनी ओर से कोई व्याख्या प्रदान करता है और कभी मुझे मेरी समझ पर ही छोड़ देता है। परन्तु यह व्याख्या जो अभी मैंने की है उसका एक स्वप्न भी समर्थक है जो अभी 21, अक्टूबर 1899 ई० को मैंने देखा है वह यह है कि मैंने स्वप्न में मेरे प्रिय भाई मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ को देखा है और इससे पूर्व कि मैं अपने स्वप्न का विवरण वर्णन करूं इतना लिखना हित से ख़ाली न होगा कि मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ मेरी जमाअत में से तथा मेरे निष्कपट मित्रों में से हैं जिन का घर भेरा ज़िला शाहपुर में है। परन्तु इन दिनों में उनकी नौकरी लाहौर में है। यह अपने नाम की तरह एक सच्चे प्रेमी हैं। मुझे अफ़सोस है कि मैं 16 अक्टूबर 1899 ई० के अपने विज्ञापन में उनका वर्णन करना भूल गया। वह हमेशा मेरी धार्मिक सेवाओं में बड़े जोश से व्यस्त हैं। ख़ुदा उनको अच्छा प्रतिफल दे। अब स्वप्न का विवरण यह है – कि मैं ने कथित मुफ़्ती साहिब को स्वप्न में देखा कि उनका चेहरा अत्यन्त प्रकाशमान और चमकता हुआ है और एक बहुमूल्य लिबास जो सफेद है पहने हुए हैं और

शेष हाशिया- तो बहुत निकलेंगी। अर्थात् हम तेरी समस्त आवश्यकताओं के अभिभावक हैं। ऐसा ही एक अन्य इल्हाम बहुअर्थकों में से है जो 4 अक्तूबर 1899 ई. को मुझे हुआ और वह यह है कि **क़ैसर हिन्द की ओर से शुक्रिया।** अब यह ऐसा शब्द है जो आशचर्य में डालता है। क्योंकि मैं एक एकान्तवासी आदमी हूं और प्रत्येक पसंद योग्य सेवा से रिक्त। और मृत्यु से पूर्व स्वयं को मुर्दा समझता हूं। मेरा शुकरिया कैसा। तो ऐसे इल्हाम बहुअर्थ में से होते हैं जब तक ख़ुदा स्वयं उनकी वास्तविकता प्रकट न करे। इसी से।

हम दोनों एक बग्घी में सवार हैं और वह लेटे हुए हैं और मैंने उनकी कमर पर हाथ रखा हुआ है। यह स्वप्न है और इसकी ताबीर जो ख़ुदा तआला ने मेरे हृदय में डाली है यह है कि सच जिस से मैं प्रेम रखता हूं एक चमक के साथ प्रकट होगा। और जैसा कि मैंने सादिक़ को देखा है कि उसका चेहरा चमकता है इसी प्रकार वह समय निकट है कि मैं सादिक़ (अर्थात सच्चा) समझा जाऊंगा और सच की चमक लोगों पर पड़ेगी और ऐसा ही 20 अक्टूबर 1899 ई० को स्वप्न में मुझे यह दिखाया गया कि एक लड़का है जिसका नाम अज़ीज़ है और उसके बाप के नाम के आरम्भ में सुल्तान का शब्द है। वह लड़का पकड़ कर मेरे पास लाया गया और मेरे सामने बैठाया गया। मैंने देखा कि वह एक पतला सा लड़का गोरे रंग का है। मैंने इस स्वप्न की यह ताबीर की है कि 'अज़ीज़' सम्मान पाने वाले को कहते हैं और सुल्तान जो स्वप्न में उस लड़के के बाप को समझा गया है। यह शब्द अर्थात् सुल्तान अरबी भाषा में उस तर्क को कहते हैं जो ऐसा असंदिग्ध हो जो अपने अत्यन्त प्रकाशमान होने के कारण हृदयों पर अपना अधिकार जमा ले। जैसे सुल्तान का शब्द तसल्लुत से किया गया है। और सुल्तान अरबी भाषा में प्रत्येक प्रकार के तर्क को नहीं कहते अपितु ऐसे तर्क को कहते हैं कि जो अपनी स्वीकारिता और रोशनी के कारण दिलों पर क़ब्ज़ा कर ले और स्वस्थ प्रकृतियों पर उसका पूर्ण क़ब्ज़ा हो जाए। अतः इस दृष्टि से कि स्वप्न में अज़ीज़ जो सुल्तान का लड़का मालूम हुआ इसकी यह ताबीर हुई कि ऐसा निशान जो लोगों के दिलों पर क़ब्ज़ा करने वाला होगा प्रकट होगा और उन निशान के प्रकट होने का परिणाम जिसे दूसरे शब्दों में उस निशान का बच्चा कह सकते हैं दिलों में मेरा अज़ीज़ होना होगा। जिसको स्वप्न में अज़ीज़ के उदाहरण से प्रकट किया गया। तो ख़ुदा ने मुझे यह दिखाया है कि क़रीब है कि सुल्तान प्रकट हो अर्थात दिलों पर क़ब्ज़ा करने वाला निशान जिस से सुल्तान का शब्द बना है। और इसका अनिवार्य परिणाम जो उसके बेटे की तरह है, अज़ीज़ है। और यह स्पष्ट है कि जिस मनुष्य से वह निशान प्रकट हो जिसे सुल्तान कहते हैं जो दिलों पर ऐसा तसल्लुत और क़ब्ज़ा रखता है जैसा कि ज़ाहिरी सुल्तान

जिसको बादशाह कहते हैं प्रजा पर क़ब्ज़ा रखता है तो अवश्य है कि ऐसे निशान के प्रकट होने से उस का प्रभाव भी प्रकट हो। अर्थात् उस निशान का दिलों पर क़ब्ज़ा हो कर निशान प्राप्त करने वालों की नज़र में प्रिय बन जाए। और जबकि प्रिय बनने का कारण और संदर्भ सुलतान ही हुआ अर्थात् ऐसी रोशन दलील जो दिलों पर कब्ज़ा करती है तो इसमें क्या सन्देह है कि सुल्तान के लिए अज़ीज़ होना बतौर बेटे के हुआ। क्योंकि अज़ीज़ होने का कारण सुल्तान ही है जिसने दिलों पर क़ब्ज़ा किया और फिर तसल्लुत से फिर यह अज़ीज़ की हालत पैदा हुई। अतः ख़ुदा तआला ने मुझे दिखलाया कि ऐसा ही होगा। और एक निशान दिलों को पकड़ने वाला तथा दिलों पर क़ब्ज़ा करने वाला और दिलों पर प्रभुत्व रखने वाला प्रकट होगा जिसे सुल्तान कहते हैं। और इस सुल्तान से पैदा होने वाला अज़ीज़ होगा अर्थात् अज़ीज़ होना सुल्तान का अनिवार्य परिणाम होगा क्योंकि परिणाम भी अरबी भाषा में बच्चे को कहते हैं। इति

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियान से

22 अक्टूबर 1899 ई.

संख्या एक हज़ार प्रकाशित- ज़ियाउल इस्लाम प्रेस

क़ादियान

तिर्याक़ुल क़ुलूब का परिशिष्ट न. 5

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

कभी नुसरत नहीं मिलती दरे मौला से गन्दों को,
कभी ज़ाए नहीं करता वह अपने नेक बन्दों को।
वही उसके मुक़र्रब हैं जो अपना आप खोते हैं,
नहीं राह उसकी आली बारगाह तक ख़ुद पसंदों को।
यही तदबीर है प्यारो कि मांगो उससे क़ुरबत को,
उसी के हाथ को ढूंढो जलाओ सब कमन्दों को।

इस विनीत ग़ुलाम अहमद क़ादियानी की आकाशीय गवाही मांगने के लिए एक दुआ और ख़ुदा तआला से अपने संबंध में आकाशीय फ़ैसले का निवेदन

हे मेरे हज़रत आला तेजस्वी, सर्वशक्तिशाली, पवित्र, जीवित रहने वाले और सदैव क़ायम रहने वाले जो हमेशा सच्चों की सहायता करता है, तेरा नाम रहती दुनिया तक मुबारक है। तेरे क़ुदरत के कार्य कभी रुक नहीं सकते। तेरा शक्तिशाली हाथ अद्‌भुत कार्य दिखलाता है, तू ने इस चौदहवीं सदी के आरम्भ में मुझे अवतरित किया और फ़रमाया कि "उठ कि मैंने तुझे इस युग में इस्लाम की हुज्जत पूर्ण करने के लिए तथा इस्लामी सच्चाइयों को संसार में फैलाने के लिए और ईमान को ज़िन्दा और सुदृढ़ करने के लिए चुना।" और तूने ही मुझे कहा कि "तू मेरी नज़र में स्वीकार है मैं अपने अर्श पर तेरी प्रशंसा करता हूं।" और तू ने ही मुझे सम्बोधित करके कहा कि "तू वह मसीह मौऊद है जिसके समय को नष्ट नहीं किया जाएगा।" और तू ने ही मुझे फ़रमाया कि" तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरी तौहीद और तफ़रीद" और तूने ही मुझे फ़रमाया कि "मैंने लोगों को बुलाने के लिए तुझे चुना। उनको कह दे कि मैं तुम सब की ओर भेजा गया

हूं और सबसे पहला मोमिन हूँ" और तूने ही मुझे कहा कि "मैंने तुझे इसलिए भेजा है ताकि इस्लाम को समस्त क़ौमों के सामने प्रकाशमान करके दिखाऊं और कोई धर्म उन समस्त धर्मों में से जो पृथ्वी पर हैं बरकतों में, अध्यात्म ज्ञानों में, शिक्षा की उत्तमता में, ख़ुदा की सहायताओं में, ख़ुदा के अद्भुत एवं विलक्षण निशानों में इस्लाम से बराबरी न कर सके।" और तू ने ही मुझे फ़रमाया कि "तू मेरी दरगाह में रोबदार चेहरे वाला है, मैंने अपने लिए तुझे ग्रहण किया।"

परन्तु हे मेरे शक्तिमान ख़ुदा तू जानता है कि अधिकतर लोगों ने मुझे स्वीकार नहीं किया और मुझे झूठ गढ़ने वाला (मुफ़्तरी) समझा और मेरा नाम काफ़िर, कज़्ज़ाब और दज्जाल रखा गया। मुझे गालियां दी गईं और भिन्न-भिन्न प्रकार की दिल दुखाने वाली बातों से मुझे सताया गया तथा मेरे बारे में यह भी कहा गया कि "हराम खोर, लोगों का माल खाने वाला, वादे के विरुद्ध करने वाला, अधिकारों का नष्ट करने वाला, लोगों को गालियां देने वाला, प्रतिज्ञाओं को भंग करने वाला, अपने नफ़्स के लिए माल को एकत्र करने वाला, दुष्ट और ख़ूनी है।"

ये वे बातें हैं जो स्वयं उन लोगों ने मेरे बारे में कहीं जो मुसलमान कहलाते हैं और स्वयं को अच्छे, बुद्धिमान तथा संयमी समझते हैं। और उनके दिल में यही बसा हुआ है कि वास्तव में जो कुछ वे मेरे बारे में कहते हैं सच कहते हैं। और उन्होंने सैकड़ों आकाशीय निशान तेरी ओर से देखे परन्तु फिर भी स्वीकार नहीं किया। वे मेरी जमाअत को अत्यन्त तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। उनमें से प्रत्येक जो गालियां देता है वह समझता है कि बड़े पुण्य का कार्य कर रहा है। तो हे मेरे मौला, शक्तिमान ख़ुदा ! अब मुझे रास्त बता और कोई ऐसा निशान प्रकट कर जिससे तेरे नेक प्रकृति वाले बन्दे अत्यन्त सुदृढ़ तौर पर विश्वास करें कि मैं तेरा माया हूं और जिस से उनका ईमान दृढ़ हो और वे तुझे पहचानें तथा तुझ से डरें। और तेरे इस बन्दे के निर्देशों के अनुसार उनके अन्दर एक पवित्र परिवर्तन पैदा हो तथा पृथ्वी पर पवित्रता और संयम का उच्च आदर्श दिखाएं तथा प्रत्येक सत्याभिलाषी को नेकी की ओर खींचे और इस प्रकार से समस्त क़ौमें जो

पृथ्वी पर हैं तेरी क़ुदरत और तेरे प्रताप को देखें और समझें कि तू अपने इस बन्दे के साथ है और संसार में तेरा प्रताप चमके और तेरे नाम की रोशनी उस बिजली की तरह दिखाई दे कि जो एक पल में पूरब से पश्चितम तक स्वयं को पहुंचाती तथा उत्तर-व-दक्षिण में अपनी चमकारें दिखाती है। किन्तु हे प्यारे मौला मेरी रफ़्तार तेरी नज़र में अच्छी नहीं है तो मुझे इस संसार से मिटा दें ताकि मैं बिदअत और गुमराही का कारण न ठहरूं।

मैं इस विनती के लिए जल्दी नहीं करता ताकि मैं ख़ुदा की परीक्षा करने वालों में न गिना जाऊं, परन्तु मैं विनयपूर्वक तथा हज़रत प्रतिपालक सादर निवेदन करता हूं कि यदि मैं उस अत्रभवान (आली जनाब) का कृपा पात्र हूं तो तीन वर्ष के अन्दर किसी समय मेरी इस दुआ के अनुसार मेरे समर्थन में कोई ऐसा आकाशीय निशान प्रकट हो जिसको मानवीय हाथों तथा मानवीय उपायों के साथ कुछ भी संबंध न हो। जैसा कि सूर्य के उदय और अस्त होने का मानवीय उपायों से कुछ भी संबंध नहीं। यद्यपि हे मेरे ख़ुदा वन्द! यह सच है कि तेरे निशान इन्सानी हाथों से भी प्रकट होते हैं। परन्तु इस समय मैं इसी बात को अपनी सच्चाई का मापदण्ड ठहराता हूं कि वह निशान मनुष्यों के हस्तक्षेपों से सर्वथा दूर हो ताकि कोई शत्रु उसे मानवीय योजना न ठहरा सके। अत: हे मेरे ख़ुदा तेरे आगे कोई बात अनहोनी नहीं। यदि तू चाहे तो सब कुछ कर सकता है। तू मेरा है जैसा कि मैं तेरा हूं। तेरे सामने मैं गिड़गिड़ा कर दुआ करता हूं कि यदि यह सच है कि मैं तेरी ओर से हूं। और यदि यह सच है कि तू ने ही मुझे भेजा है तो तू मेरे समर्थन में अपना कोई ऐसा निशान दिखा कि जो पब्लिक की नज़र में मनुष्यों के हाथों तथा उनकी योजनाओं से श्रेष्ठतर विश्वास किया जाए ताकि लोग समझें कि मैं तेरी ओर से हूँ।

हे मेरे शक्तिमान ख़ुदा! हे मेरे सुदृढ़ और समस्त शक्तियों के मालिक ख़ुदा वन्द ! तेरे हाथ के बराबर कोई हाथ नहीं और किसी जिन्न तथा भूत को तेरी हुकूमत में भागीदारी नहीं। संसार में हर एक धोखा होता है और मनुष्यों को शैतान भी अपने झूठे इल्हामों से धोखा देते हैं परन्तु किसी शैतान को यह शक्ति

नहीं दी गई कि वह तेरे निशानों और तेरे भयावह हाथ के आगे ठहर सके या तेरी क़ुदरत के समान कोई क़ुदरत दिखा सके। क्योंकि तू वह है जिसकी शान لا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ है और اَلْعَلِیُّ الْعَظِیْم है। जो लोग शैतान से इल्हाम पाते हैं उनके इल्हामों के साथ कोई शक्तिमान जैसी ग़ैब (परोक्ष) की बातें बताने का प्रकाश नहीं होता जिसमें ख़ुदाई की कुदरत, प्रतिष्ठा और भय भरा हुआ हो। वह तू वही है जिसकी शक्ति से तेरे समस्त नबी ललकार के साथ अपने चमत्कारपूर्ण निशान दिखाते रहे हैं और बड़ी-बड़ी भविष्यवाणियां करते रहे हैं जिनमें अपनी विजय और विरोधियों का दीनता पहले से प्रकट की जाती थी। तेरी भविष्यवाणियों में तेरे प्रताप की चमक होती है और तेरी ख़ुदाई की क़ुदरत, प्रतिष्ठा और हुकूमत की खुशबू आती है और तेरे मुर्सलों के आगे फ़रिश्ता चलता है ताकि उनके मार्ग में कोई शैतान मुकाबले के लिए ठहर न सके। मुझे तेरे सम्मान और प्रताप की क़सम है कि मुझे तेरा फ़ैसला स्वीकार है। अतः यदि तू तीन वर्ष के अन्दर जो जनवरी 1900 ई. से आरंभ होकर दिसम्बर 1902 ई. तक पूरे हो जाएंगे, मेरे समर्थन और मेरे सत्यापन में कोई आकाशीय निशान न दिखाए और अपने इस बन्दे को उन लोगों की तरह अस्वीकार कर दे जो तेरी नज़र में दुष्ट, अपवित्र और नास्तिक, कज़्ज़ाब, दज्जाल, ख़यानत करने वाले और उपद्रवी हैं तो मैं तुझे गवाह करता हूं कि मैं स्वयं को सच्चा नहीं समझूंगा और उन समस्त आरोपों और इल्ज़ामों तथा कटाक्षों का स्वयं को चरितार्थ समझ लूंगा जो मुझ पर लगाए जाते हैं। देख! मेरी रूह अत्यन्त भरोसे के साथ तेरी ओर ऐसी उड़ रही है जैसा कि पक्षी अपने घोंसले की ओर आता है। तो मैं तेरी क़ुदरत के निशान का अभिलाषी हूं परन्तु न अपने लिए और न अपने सम्मान के लिए अपितु इसलिए कि लोग तुझे पहचानें और तेरे पवित्र मार्गों को ग्रहण करें और जिसको तू ने भेजा है उसे झुठला कर हिदायत से दूर न पड़ जाएं। मैं गवाही देता हूं कि तू ने मुझे भेजा है और मेरे समर्थन में बड़े-बड़े निशान प्रकट किए हैं, यहां तक कि सूर्य और चन्द्रमा को आदेश दिया कि वह रमज़ान में भविष्यवाणी की तिथियों के अनुसार ग्रहण में आएं। और तू ने वे समस्त निशान जो एक सौ से अधिक हैं मेरे समर्थन

में दिखाए जो मेरी पुस्तक तिर्याक़ुल क़ुलूब में दर्ज हैं।

तू ने मुझे वह चौथा लड़का प्रदान किया जिसके बारे में मैंने भविष्यवाणी की थी कि अब्दुल हक़ ग़ज़नवी हाल अमृतसरी नहीं मरेगा जब तक वह लड़का पैदा न हो ले, तो वह लड़का उसके जीवन में ही पैदा हो गया। मैं उन निशानों को गिन नहीं सकता जो मुझे मालूम हैं। मैं तुझे पहचानता हूं कि तू ही मेरा ख़ुदा है। इसलिए मेरी रूह तेरे नाम से ऐसी उछलती है जैसा कि दूध पीता बच्चा मां के देखने से। परन्तु अधिकतर लोगों ने मुझे नहीं पहचाना और न स्वीकार किया। इसलिए न मैंने अपितु मेरी रूह ने इस बात पर ज़ोर दिया कि मैं यह दुआ करूं कि यदि मैं तेरे सामने सच्चा हूं और तेरा क्रोध मुझ पर नहीं है और यदि मैं तेरे दरबार में दुआओं को स्वीकार होने वाला हूं तो ऐसा कर कि जनवरी 1900 ई. से दिसम्बर 1902 के अन्त तक मेरे लिए कोई अन्य निशान दिखा और अपने बन्दे के लिए गवाही दे जिस को जीभों से कुचला गया है।

देख! मैं तेरे आगे विनयपूर्वक हाथ उठाता हूं कि तू ऐसा ही कर। यदि मैं तेरे दरबार में सच्चा हूं और जैसा कि समझा गया है काफ़िर और झूठा नहीं हूं तो जैसा कि समझा गया है काफ़िर और झूठी नहीं हूं तो इन तीन वर्ष में जो दिसम्बर 1902 ई. के अन्त तक समाप्त हो जाएंगे कोई ऐसा निशान दिखा जो इन्सानी हाथों से श्रेष्ठतर हो जबकि तू ने मुझे सम्बोधित करके कहा कि मैं तेरी प्रत्येक दुआ को स्वीकार करूंगा परन्तु भागीदारों के बारे में नहीं। तभी से मेरी रूह दुआओं की ओर दौड़ती है। और मैंने अपने लिए यह ठोस फ़ैसला कर लिया है कि यदि मेरी यह दुआ स्वीकार न हो तो मैं ऐसी ही धिक्कृत, मलऊन, काफ़िर, नास्तिक और ख़यानत करने वाला हूं जैसा कि मुझे समझा गया है। यदि मैं तेरा मान्य हूं तो मेरे लिए आकाश से इन तीन वर्षों के अन्दर गवाही दे ताकि देश में अमन और मैत्री फैले और ताकि लोग विश्वास करें कि तू मौजूद है और दुआओं को सुनता और उनकी ओर जो तेरी ओर झुकते हैं झुकता है। अब तेरी ओर तेरे फैसले की ओर प्रतिदिन मेरी आंख रहेगी जब तक आकाश से तेरी सहायता उतरे। और मैं किसी विरोधी को इस विज्ञापन में सम्बोधित नहीं

करता और न उनको किसी मुकाबले के लिए बुलाता हूं।

मेरी यह दुआ तेरे ही दरबार में है क्योंकि तेरी नज़र से कोई सच्चा या झूठा ग़ायब नहीं है। मेरी रूह गवाही देती है कि तू सच्चे को नष्ट नहीं करता और झूठा तेरे दरबार में कभी सम्मान नहीं पा सकता। और वे जो कहते हैं कि झूठे भी नबियों की तरह ललकारते हैं और उनका समर्थन तथा सहायता भी ऐसी ही होती है जैसा कि सच्चे नबियों की, वे झूठे हैं और चाहते हैं कि नुबुव्वत के सिलसिले को संदिग्ध कर दें अपितु तेरा प्रकोप तलवार के समान मुफ़्तरी पर पड़ता है और तेरे क्रोध की बिजली झूठे को भस्म कर देती है, परन्तु सच्चा तेरे दरबार में जीवन और सम्मान पाते हैं। तेरी सहायता और समर्थन और तेरी कृपा और दया हमेशा हमारे साथ रहे। आमीन पुनः आमीन

विज्ञापनदाता

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियान से

5 नवम्बर 1899 ई.

अपनी जमाअत के लिए सूचना

स्मरण रहे कि यह विज्ञापन केवल इसलिए प्रकाशित किया जाता है ताकि मेरी जमाअत ख़ुदा के आसमानी निशानों को देखकर ईमान और नेक कार्यों में उन्नति करे और उन्हें मालूम हो कि वे एक सच्चे का दामन पकड़ रहे हैं न कि झूठे का और ताकि वे ईमानदारी के समस्त कार्यों में आगे बढ़ें और उनका पवित्र नमूना संसार में चमके।

इन दिनों में वे चारों ओर से सुन रहे हैं कि हर एक ओर से मुझ पर आक्रमण होते हैं और बड़े आग्रह से मुझे काफ़िर दज्जाल और कज़्ज़ाब कहा जाता है और क़त्ल करने के लिए फ़त्वे लिखे जाते हैं। तो उनको चाहिए कि सब्र करें और गालियों का गालियों के साथ कदापि उत्तर न दें और अपना नमूना अच्छा दिखाएं। क्योंकि यदि वे भी ऐसी ही दरिन्दगी प्रकट करें जैसा कि उन के मुकाबले पर की जाती है तो फिर उनमें और दूसरों में क्या अन्तर है। इसलिए मैं सच-सच कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल कदापि नहीं पा सकते जब तक सब्र, संयम, क्षमा, और माफ़ करने की आदत सर्वाधिक उनमें न पाई जाए।

यदि मुझे गालियां दी जाती हैं तो क्या यह नई बात है? क्या इस से पूर्व ख़ुदा के पवित्र नबियों को ऐसा ही नहीं कहा गया? यदि मुझ पर आरोप लगाए जाते हैं तो क्या इस से पहले ख़ुदा के रसूलों और ईमानदारों पर आरोप नहीं लगाए गए? क्या हज़रत मूसा पर यह ऐतराज़ नहीं हुए कि उसने धोखा देकर अकारण मिस्त्रियों का माल खाया और झूठ बोला कि हम इबादत के लिए जाते हैं और शीघ्र वापस आएंगे। और वादा तोड़ा तथा कई दूध पीते बच्चों को क़त्ल किया? और क्या हज़रत दाऊद के बारे में नहीं कहा गया कि उसने एक अजनबी की स्त्री से दुष्कर्म किया और धोखे से औरिया नामक एक सेनापति को क़त्ल करा दिया और बैतुलमाल में अवैध खुर्द-बुर्द की? और क्या हारून के बारे में यह ऐतराज़ नहीं किया गया कि उसने बछड़े की इबादत कराई? और क्या यहूदी अब तक नहीं कहते कि यसू मसीह ने दावा किया था कि मैं दाऊद का तख़्त स्थापित

करने आया हूं और यसू के इस शब्द से इसके अतिरिक्त क्या अभिप्राय था कि उस ने अपने बादशाह होने की भविष्यवाणी की थी जो पूरी न हुई? और क्योंकर संभव है कि सच्चे की भविष्यवाणी झूठी निकले? यहूदी यह ऐतराज़ भी करते हैं कि मसीह ने कहा था कि अभी कुछ लोग जीवित मौजूद होंगे कि मैं वापस आऊंगा परन्तु यह भविष्यवाणी भी झूठी सिद्ध हुई और वह अब तक वापस नहीं आया। ऐसा ही हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ मामलों पर मूर्खों के ऐतराज़ हैं। जैसा कि हुदैबिया की घटना पर कुछ मूर्ख मुर्तद हो गए थे। और क्या अब तक पादरियों और आर्यों की क़लमों से वे समस्त झूठे आरोप हमारे सय्यद-व-मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में प्रकाशित नहीं होते जो मुझ पर लगाए जाते हैं?

अतः विरोधियों का मुझ पर कोई भी ऐसा ऐतराज़ नहीं जो मुझ से पहले ख़ुदा के पवित्र नबियों पर नहीं किया गया। इसलिए मैं तुम्हें कहता हूं कि जब तुम ऐसी गालियां और ऐसे ऐतराज़ सुनो जो संतृप्त और दुखी मत हो क्योंकि तुम से और मुझ से पहले ख़ुदा के पवित्र नबियों के बारे में यही शब्द बोले गए हैं। तो अवश्य था कि ख़ुदा की वे समस्त सुन्नतें और आदतें जो नबियों के बारे में घटित हो चुकी हैं हम में पूरी हों।

हां यह सही बात है और यह हमारा अधिकार है जो ख़ुदा ने हमें दिया है जब हम दुख दिए जाएं और सताए जाएं और हमारी सच्चाई लोगों पर संदिग्ध हो जाए और हमारे मार्ग के सामने सैकड़ों ऐतराज़ के पत्थर पड़ जाएं तो हम अपने ख़ुदा के आगे रोएं और उसके दरबार में गिड़गिड़ाएं और पृथ्वी पर उसके नाम का सम्मान चाहें और उस से कोई ऐसा निशान मांगें जिस की ओर सत्य-प्रिय लोगों की गर्दनें झुक जाएं। तो इसी आधार पर मैंने यह दुआ की है। मुझे ख़ुदा तआला अनेकों बार सम्बोधित करके फ़रमा चुका है कि जब तू दुआ करे तो मैं तेरी सुनूंगा। अतः मैं नूह नबी की तरह दोनों हाथ फैलाता हूं और कहता हूं رَبِّ اِنِّیْ مَغْلُوْبٌ (अर्थात् हे मेरे रब्ब मैं पीड़ित हूँ- अनुवादक) परन्तु बिना فَانْتَصِرْ (अर्थात् तू उनसे बदला ले- अनुवादक) के। और मेरी

रूह देख रही है कि ख़ुदा मेरी सुनेगा और मेरे लिए अवश्य कोई ऐसा रहमत और अमन का निशान प्रकट कर देगा कि जो मेरी सच्चाई पर गवाह हो जाएगा।

मैं इस समय किसी दूसरे को मुक़ाबले के लिए नहीं बुलाता और न किसी व्यक्ति के अन्याय और अत्याचार की ख़ुदा के दरबार में अपील करता हूं अपितु जैसा कि मैं उन समस्त लोगों के लिए भेजा गया हूं जो पृथ्वी पर रहते हैं। चाहे वे एशिया के रहने वाले हैं, चाहे वे यूरोप के और चाहे अमरीका के। ऐसा ही मैं सामान्य उद्देश्यों के आधार पर इसके बिना कि किसी ज़ैद या बकर की मेरे हृदय में कल्पना हो ख़ुदा तआला से एक आकाशीय गवाही चाहता हूं जो इन्सानी हाथों से श्रेष्ठतर हो। और यह केवल दुआ का विज्ञापन है जो मैं ख़ुदा तआला की गवाही मांगने के लिए लिखता हूं। मैं जानता हूं कि यदि मैं उसकी नज़र में सच्चा नहीं हूं तो इस तीन वर्ष के समय तक जो 1902 ई. तक समाप्त होंगे, मेरे समर्थन में एक निम्न प्रकार का निशान भी प्रकट नहीं होगा और इस प्रकार से मेरा झूठ प्रकट हो जाएगा और लोग मेरे हाथ से छुटकारा पाएंगे और यदि इस अवधि तक मेरा सच प्रकट हो जाए जैसा कि मुझे विश्वास है तो बहुत से पर्दे जो दिलों पर हैं, उठ जाएंगे। मेरी यह दुआ बिदअत नहीं है अपितु ऐसी दुआ करना इस्लाम की इबादतों में से है जो नमाज़ों में हमेशा पांच समय मांगी जाती है। क्योंकि हम नमाज़ में यह दुआ करते हैं कि

اِهۡدِ نَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ (अलफ़ातिहा-6-7)

इससे यही मतलब है कि ख़ुदा से हम अपने ईमान की उन्नति और मानवजाति की भलाई के लिए चार प्रकार के निशान चार कमाल के रंग में चाहते हैं। (1) नबियों का कमाल (2) सिद्दीक़ों का कमाल (3) शहीदों का कमाल (4) सुलहा (नेकों) का कमाल। तो नबी का विशेष कमाल यह है कि ख़ुदा से ऐसा ग़ैब का ज्ञान पाए जो बतौर निशान के हो और सिद्दीक़ का कमाल यह है कि सच के ख़ज़ाने पर ऐसा पूर्ण रूप से क़ब्ज़ा करे अर्थात् ऐसे सर्वांग तौर पर ख़ुदा की किताब की सच्चाइयां उसे मालूम हो जाएं कि वह विलक्षण होने के कारण निशान के रूप में हों और उस सिद्दीक़ की सच्चाई पर गवाही दें। और

शहीद का कमाल यह है कि संकटों और दुखों तथा परीक्षाओं के समय में ऐसी ईमानी शक्ति, नैतिक शक्ति और दृढ़ता दिखाए कि जो विलक्षण होने के कारण बतौर निशान के हो जाए। और सालेह (नेक) मर्द का कमाल यह है कि प्रत्येक प्रकार की ख़राबी से ऐसा दूर हो जाए और साक्षात् 'सलाह' (नेकी) बन जाए कि वह उसकी पूर्ण योग्यता, विलक्षण होने के कारण बतौर निशान मानी जाए। तो ये चारों प्रकार के कमाल (ख़ूबियां) जो हम पांच समय ख़ुदा तआला से नमाज़ में मांगते हैं। यह दूसरे शब्दों में हम ख़ुदा तआला से आकाशीय निशान मांगते हैं और जिसमें यह मांग नहीं उसमें ईमान भी नहीं। हमारी नमाज़ की वास्तविकता यही मांग है जो हम चार रंगों में पांच समय ख़ुदा तआला से चार निशान मांगते हैं और इस प्रकार से पृथ्वी पर ख़ुदा तआला की पवित्रता चाहते हैं ताकि हमारा जीवन इन्कार, सन्देह और लापरवाही का जीवन होकर पृथ्वी को गन्दा न करे और प्रत्येक व्यक्ति ख़ुदा तआला की पवित्रता का वर्णन तभी कर सकता है कि जब वह ये चारों प्रकार के निशान ख़ुदा तआला से मांगता रहे। हज़रत मसीह ने भी संक्षिप्त शब्दों में यही सिखाया था। देखो मती अध्याय-8 आयत-9

"अतः तुम इसी प्रकार दुआ मांगो कि हे हमारे बाप जो आकाश पर है तेरे नाम की तक़्दीस हो।"

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान

ज़िला – गुरदासपुर (पंजाब)

5 नवम्बर 1899 ई.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

अभिव्यक्त करने योग्य विज्ञापन

अपनी जमाअत के लिए और सरकार के ध्यानाकर्षण हेतु

चूंकि अब जनगणना के अवसर पर सरकारी तौर पर इस बात का प्रबंध किया गया है कि प्रत्येक समुदाय जो दूसरे समुदायों से अपने सिद्धान्तों की दृष्टि से अन्तर रखता है पृथक ख़ाने में उसकी ख़ाना पूर्ति की जाए और जिस नाम को उस समुदाय ने अपने लिए पसन्द और प्रस्तावित किया है उसका वही नाम सरकारी काग़ज़ों में लिखा जाए। इसलिए ऐसे समय में हित में समझा गया है कि अपने समुदाय (फ़िर्क़ा) के बारे में इन दोनों बातों को सरकार की सेवा में स्मरण कराया जाए। और अपनी जमाअत को निर्देश किया जाए कि वह निम्नलिखित शिक्षा के अनुसार पूछ-ताछ के समय लिखवाएं और जो व्यक्ति बैअत करने के लिए तैयार है यद्यपि अभी बैअत नहीं की उसे भी चाहिए कि इस निर्देश के अनुसार अपना नाम लिखवाए और फिर मुझे किसी समय अपनी बैअत की सूचना दे दे।

स्मरण रहे कि मुसलमानों के समुदायों में से यह फ़िर्क़ा जिस का ख़ुदा ने मुझे इमाम और पेशवा तथा पथ-प्रदर्शक नियुक्त किया है एक बड़ा स्पष्ट निशान अपने साथ रखता है और वह यह कि इस समुदाय में तलवार का जिहाद बिल्कुल नहीं और न उसकी प्रतीक्षा है अपितु यह मुबारक समुदाय न प्रत्यक्ष तौर पर न गुप्त तौर पर जिहाद की शिक्षा को कदापि वैध नहीं समझता और इस बात को निश्चित तौर पर अवैध जानता है कि धर्म के प्रसार के लिए लड़ाइयां की जाएं या धर्म के वैर और शत्रुता के कारण किसी को क़त्ल किया जाए या किसी अन्य प्रकार का कष्ट दिया जाए या किसी इन्सानी हमदर्दी का अधिकार किसी अजनबी धर्म का होने के कारण छोड़ दिया जाए या किसी

प्रकार की निर्दयता, अहंकार, और लापरवाही दिखाई जाए। अपितु जो व्यक्ति सामान्य मुसलमानों में से हमारी जमाअत में सम्मिलित हो जाए उसका प्रथम कर्त्तव्य यही है कि जैसा कि पवित्र क़ुर्आन की सूरह फ़ातिहा में पांच समय अपनी नमाज़ में यह इक़रार करता है कि ख़ुदा समस्त लोकों का प्रतिपालक है और ख़ुदा कृपालु है और ख़ुदा दयालु है और ख़ुदा ठीक-ठीक न्याय करने वाला है। यही चारों विशेषताएं अपने अन्दर भी स्थापित करे अन्यथा वह उस दुआ में जो इसी सूरह में पांच समय अपनी नमाज़ में कहता है कि اِيَّاكَ نَعْبُدُ अर्थात् कि हे इन चारों विशेषताओं वाले अल्लाह मैं तेरी ही इबादत करने वाला हूं और तू ही मुझे पसन्द आया है सरासर झूठा है। क्योंकि ख़ुदा का प्रतिपालन अर्थात् मानवजाति और ग़ैर इन्सान का अभिभावक बनना और छोटे से छोटे जानवर को भी अपनी अभिभावकतापूर्ण व्यवहार से वंचित न रखना यह एक ऐसी बात है कि यदि एक ख़ुदा की इबादत का दावा करने वाला ख़ुदा की इस विशेषता को प्रेम-दृष्टि से देखता है और उसे पसन्द करता है यहां तक कि पूर्ण प्रेम से उस ख़ुदाई व्यवहार का उपासक बन जाता है तो आवश्यक होता है कि वह स्वयं भी उस विशेषता और व्यवहार को अपने अन्दर प्राप्त कर ले ताकि अपने प्रेम के रंग में आ जाए।

ऐसा ही ख़ुदा की रहमानियत (कृपालुता) अर्थात् किसी सेवा के बदले के बिना सृष्टि पर रहम करना यह भी एक ऐसी बात है कि सच्चा इबादत करने वाला जिसको यह दावा है कि मैं ख़ुदा के पदचिन्हों पर चलता हूं यह आचरण भी अपने अन्दर अवश्य पैदा करता है।

ऐसा ही ख़ुदा की रहीमियत (दयालुता) अर्थात् किसी के नेक काम में उस काम को पूर्ण करने के लिए सहायता करना। यह भी एक ऐसी बात है कि सच्चा इबादत करने वाला जो ख़ुदा की विशेषताओं की आशिक़ है इस विशेषता को अपने अन्दर प्राप्त करता है। ऐसा ही ख़ुदा का इन्साफ़ जिसने प्रत्येक मुदृढ़ अदालत की मांग से दिया है न कि नफ़्स के जोश से। यह भी एक ऐसी विशेषता है कि नफ़्स के जोश से। यह भी एक ऐसी विशेषता है

कि सच्ची इबादत करने वाला जो ख़ुदाई विशेषताएं अपने अन्दर लेना चाहता है इस विशेषता को छोड़ नहीं सकता। और ईमानदार की स्वयं भारी निशानी यही है कि जैसा कि वह ख़ुदा के लिए इन चार विशेषताओं को पसन्द करता है ऐसा ही अपने नफ़्स के लिए भी यही पसन्द करे। इसिलए ख़ुदा ने सूरह फ़ातिहा में यही शिक्षा दी थी जिसको इस युग के मुसलमान छोड़ बैठे हैं। मेरी राय यह है कि दुनिया में अधिकतर मुसलमान अल्प संख्या के अपवाद के साथ दो प्रकार के हैं

(1) एक वे उलेमा जो आज़ाद देशों में रह कर जिहाद की शिक्षा देते और इसके लिए मुसलमानों को उकसाते हैं। और उनके नज़दीक धार्मिक बड़ा कार्य यही है कि मानवजाति का धर्म के लिए संहार किया जाए और वे इस बात को सुनते ही नहीं कि ख़ुदा फ़रमाता है لَا اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ (अलबक़रह-257) अर्थात् धर्म को जब्र से नहीं फैलाना चाहिए।

(2) दूसरा फ़िर्क़ा मुसलमानों का यह भी पाया जाता है कि वह गुप्त तौर पर उस पहले फ़िर्क़े के समरंग हैं परन्तु किसी सरकार को प्रसन्न करने के लिए मौखिक या लिखित तौर पर प्रकट करते रहते हैं कि हम जिहाद के विरोधी हैं। इन की परीक्षा एक आसान तरीक़ा है परन्तु यहां उसके उल्लेख का अवसर नहीं। जिस व्यक्ति को ख़ुदा ने अन्तरात्मा की शक्ति प्रदान की है और हृदय का प्रकाश प्रदान किया है वह ऐसे लोगों को इस प्रकार से पहचान लेगा कि उनके सामान्य संबंध किस प्रकार के लोगों से हैं। किन्तु यहां हमारा उद्देश्य केवल अपना मिशन वर्णन करना है और वह यह है कि हम ऐसे जिहादों के घोर विरोधी और अत्यन्त घोर विरोधी हैं। हमारे इस ख़ुदाई फ़िर्क़े की संक्षिप्त लाइफ़ यह है कि ख़ुदा ने पहली क़ौमों को दुनिया से उठा कर दुनिया को सीख देने के लिए इब्राहीम की नस्ल से दो सिलसिले आरंभ किए। एक सिलसिला-ए-मूसा जिस को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से शुरू करके हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर समाप्त किया गया। दूसरा सिलसिला मसीले मूसा अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो ख़ुदा के

उस वादे के अनुसार है जो तौरात इस्तिस्ना अध्याय-18 आयत-18 में किया गया था। यह सिलसिला मूस्वी सिलसिले की एक पूरी नक़ल है जो मसीले मूसा से शुरू होकर मसीले मसीह तक समाप्त हुआ। और विचित्रतर यह कि जो मुद्दत (अवधि) ख़ुदा ने मूसा से लेकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक रखी थी अर्थात् चौदह सौ वर्ष उसी मुद्दत के समान इस सिलसिले की मुद्दत भी रखी गई। और मूस्वी ख़िलाफ़त का सिलसिला जिस नबी पर समाप्त हुआ अर्थात् मसीह पर, न वह बनी इस्राईल में से पैदा हुआ क्योंकि उसका कोई बाप न था और न वह मूसा और यशूआ की तरह तलवार के साथ प्रकट हुआ और न वह ऐसे देश और समय में जिसमें इस्राईली हुकूमत होती पैदा हुआ। अपितु वह रोमी शासन काल में उन इस्राईली आबादियों में उपदेश देता रहा जो पैलातूस के क्षेत्र में थीं।

अब जबकि पहले मसीह ने न तलवार उठाई और बाप न होने के कारण बनी इस्राईल में से था और न इस्राईली सरकार को उसने अपनी आंख से देखा। इसलिए दूसरा मसीह जो इंजील मती अध्याय-17, आयत 10,11,12 के अनुसार पहले मसीह के रंग और तरीक़े पर आना चाहिए था। जैसा कि यूहन्ना नबी एलिया के रंग पर आया था। अवश्य था कि वह भी क़ुरैश में से न होता जैसा कि यसू मसीह बनी इस्राईल में से नहीं था। और अवश्य था कि दूसरा मसीह इस्लामी हुकूमत के अन्दर पैदा न होता और ऐसी हुकूमत के अधीन अवतरित होता जो रोमी हुकूमत के समान होती। अतः ऐसा ही प्रकटन में आया। क्योंकि जहां तक हमें मालूम है हम जानते हैं कि हमारी यह बर्तानवी हुकूमत (ख़ुदा इस पर धर्म और संसार में कृपा करे) रोमी हुकूमत से अत्यन्त समान है।

और अवश्य था कि दूसरा मसीह भी तलवार के साथ न आता और उसकी बादशाहत केवल आकाश में होती। तो ऐसा ही प्रकटन में आया और ख़ुदा ने मुझे तलवार के साथ नहीं भेजा और न मुझे जिहाद का आदेश दिया, अपितु मुझे सूचना दी कि तेरे साथ शान्ति और मैत्री का प्रसार होगा। एक दरिन्दा बकरी के साथ सुलह करेगा और एक सांप बच्चों के साथ खेलेगा। यह

ख़ुदा का इरादा है यद्यपि लोग आश्चर्यपूर्वक देखें।

अतः मैं इसलिए प्रकट नहीं हुआ कि युद्ध और लड़ाई का मैदान गर्म करूं अपितु इसलिए प्रकट हुआ हूं कि पहले मसीह के समान सुलह और शान्ति के दरवाज़े खोल दूं। यदि सुलह करने की बुनियाद मध्य में न हो तो फिर हमारा सम्पूर्ण सिलसिला व्यर्थ है और उस पर ईमान लाना भी व्यर्थ।

वास्तविकता यह है कि पहला मसीह भी उस★ समय आया था जब

★ पहले मसीह को जो ख़ुदा बनाया गया यह कोई सही और निश्चित बात नहीं थी, ताकि दूसरे मसीह में इसकी समानता तलाश की जाए अपितु इन्सानी गलतियों में से यह भी एक ग़लती थी और मामले में असल फ़िलास्फ़ी यह है कि नबियों में से कोई नबी ख़ुदा का प्यारा नहीं हो सकता और न वलियों में से कोई वली उसका प्रेमी ठहर सकता है जब तक कि एक बार मौत का भय या मौत के समान एक घटना उस पर न गुज़रे। और इसी पर हमेशा से ख़ुदा की सुन्नत जारी है। जब इब्राहीम आग में डाला गया तो क्या यह दृश्य सलीब की घटना से कुछ कम था। और जब उसे आदेश हुआ कि तू अपने प्रिय पुत्र को अपने हाथ से ज़िब्ह कर। तो क्या यह घटना इब्राहीम के लिए और उसके उस पुत्र के लिए जिस पर छुरी चलाई गई सूली के भय से कुछ कम स्तर पर थी? और याक़ूब के भय का वह दृश्य जबकि उस को सुनाया गया कि तेरा प्रिय पुत्र यूसुफ़ भेड़िए का निवाला बन गया और उसके सामने यूसुफ़ का बनावटी तौर पर ख़ून से सना हुआ कुर्ता डाल दिया गया और फिर लम्बे समय तक याक़ूब को एक निरन्तर संताप में डाला गया। क्या यह दृश्य भी कुछ कम था? और जब यूसुफ़ को मुश्कें बांध कर कुएं में फेंक दिया गया तो क्या वह पीड़ादायक दृश्य उस दृश्य से कुछ कम था जब मसीह को सलीब पर चढ़ाया गया? और फिर क्या अन्तिम युग के नबी के संकट का वह दृश्य कि जब सौर गुफ़ा का नंगी तलवारों के साथ घिराव किया गया कि वह व्यक्ति इसी गुफ़ा में है जो नुबुव्वत का दावा करता है उसे पकड़ो और क़त्ल करो। तो क्या यह दृश्य अपनी भयावह अवस्था में सलीबी दृश्य से कुछ कम था? और क्या अभी इसी युग का यह दृश्य कि जब मार्टिन क्लार्क न मसीले मसीह पर जो यही ख़ाकसार है इक्दामे क़त्ल का एक झूठा दावा किया और तीनों क़ौमों हिन्दुओं, मुसलमानों और ईसाइयों में से प्रतिष्ठित एवं सम्मानित उलेमा कोशिश करते थे कि यह दण्ड पाए। तो क्या यह दृश्य मसीह के सलीबी दृश्य से कुछ समानता नहीं रखता था? अतः सच बात यह है कि प्रत्येक जो ख़ुदा के प्रेम का दावा करता है एक समय में एक अवस्था मौत के समान उस पर अवश्य आ जाती है। तो ख़ुदा की इसी सुन्नत के अनुसार मसीह पर भी वह

यहूदियों में प्राय: गृह-युद्ध फैल गए थे और उनके घर अन्याय एवं अत्याचार से भर गए थे और निर्दयता उनकी आदत में हो गयी थी और सरहदी अफ़ग़ानों की तरह वे लोग भी दूसरों को क़त्ल करके बड़ा पुण्य समझते थे। मानो स्वर्ग की कुंजी निष्पाप लोगों को क़त्ल करना था। तब ख़ुदा ने हज़रत मूसा से चौहद सौ वर्ष बाद अपना मसीह उन में भेजा जो लड़ाइयों का घोर विरोधी था वह वास्तव में सुलह का शहज़ादा था और सुलह का सन्देश लाया। परन्तु भाग्यहीन यहूदियों ने उस की क़द्र न की। इसलिए ख़ुदा के प्रकोप ने ईसा मसीह को इस्राईली नुबुव्वत के लिए अन्तिम ईंट कर दिया और उसको बिन बाप पैदा करके समझा दिया कि अब नुबुव्वत इस्राईल में से गई। तब ख़ुदावन्द ने यहूदियों को अयोग्य पाकर इब्राहीम के दूसरे पुत्र की ओर मुहं किया अर्थात् इस्माईल की सन्तान में से अन्तिम युग का पैग़म्बर पैदा किया। यही मसीले मूसा था जिसका नाम मुहम्मद स. है इस नाम का अनुवाद यह है कि अत्यन्त प्रशंसा किया गया। ख़ुदा जानता था कि बहुत से मूर्ख निन्दा करने वाले पैदा होंगे। इसलिए उसने उसका नाम मुहम्मद स. रख दिया जबकि आंहज़रत पवित्र आमिना के पेट में थे तब फ़रिश्ते ने आमिना पर प्रकट होकर कहा था कि तेरे पेट में एक लड़का है जो महान नबी होगा उसका नाम मुहम्मद रखना।

अत: आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मूसा की तरह अपनी क़ौम के ईमानदारों को दरिन्दों और खूनियों से मुक्ति दी और मूसा के समान उनको मक्का से मदीना की ओर खींच लाया और अबू जहल को जो उस उम्मत

शेष हाशिया -अवस्था आ गई। परन्तु जितने उदाहरण हम ने प्रस्तुत किए हैं वे गवाही दे रहे हैं कि उन समस्त नबियों में से ऐसी परीक्षा के समय कोई भी नबी नहीं मरा। अन्त में मृत्यु के करीब पहुंचकर जब कि उनकी रूहों से 'ईली ईली लियासबकतनी' का नारा निकला तब सहसा ख़ुदा की कृपा ने उनको बचा लिया। तो जिस प्रकार इब्राहीम आग से और यूसुफ़ कुएं से और इब्राहीम का एक प्रिय बेटा ज़िब्ह से और इस्माईल प्यास की मौत से बच गया। इसी प्रकार मसीह भी सलीब से बच गया। वह मौत का आक्रमण मारने के लिए नहीं था अपितु एक निशान दिखलाने के लिए था। इसी से।

का फ़िरऔन था बद्र के युद्ध-स्थल में मार दिया। और फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तौरात अध्याय-18, आयत-18 के वादे के अनुसार मूसा के समान उन लोगों को एक नई शरीअत प्रदान की जो कई सौ वर्ष से अनपढ़ और वहशी चले आ रहे थे। और जैसे बनी इस्राईल चार सौ वर्ष तक फिरऔन की दासता में रहकर वहशियों के समान हो गए थे। ये लोग भी अरब के जंगलों में रह कर उन से कम न थे, बल्कि वहशियाना हालत में बहुत बढ़ गए थे, यहां तक कि वैध-अवैध में भी कुछ अन्तर नहीं कर सकते थे। तो उन लोगों के लिए पवित्र क़ुर्आन बिल्कुल एक नई शरीअत थी और उसी शरीअत के अनुसार थी जो सीना पर्वत पर बनी इस्राईल को मिली थी।

तीसरी समानता हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हज़रत मूसा से यह थी कि जैसा कि हज़रत मूसा ने फ़िरऔन को मार कर अपनी क़ौम को हुकूमत प्रदान की थी उसी प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़िरऔन के समरूप अर्थात् अबू जहल को जो मक्का का शासक समझा जाता था और अरब के आस-पास का राजा था, मार कर अपनी क़ौम को हुकूमत प्रदान की और जैसा कि मूसा ने किसी पहले नबी से बपतस्मा नहीं पाया स्वयं ख़ुदा ने उसे सिखाया। ऐसा ही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस्ताद भी ख़ुदा था, किसी नबी की मुरीदी ग्रहण नहीं की।

अतः इन चार बातों में मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मूसा अलैहिस्सलाम में समानता थी और मैं अभी वर्णन कर चुका हूं कि जैसा कि हज़रत मूसा का सिलसिला एक ऐसे नबी पर समाप्त हुआ जो चौदह सौ वर्ष के समाप्त होने पर आया और बाप की दृष्टि से बनी इस्राईल में से नहीं था और न जिहाद के साथ प्रकट हुआ था और न इस्राईली हुकूमत के अन्दर पैदा हुआ।

यही समस्त बातें ख़ुदा ने मुहम्मदी मसीह के लिए पैदा कीं। मुझे चौदहवीं सदी के आरम्भ पर अवतरित करना इसी हिकमत के लिए था ताकि इस्राईली मसीह और मुहम्मदी मसीह उस दूरी के अनुसार जो उनमें और उनके वंश प्रवर्तक में है, परस्पर समान हों और ख़ुदा ने मुझे क़ुरैश में से भी पैदा नहीं किया ताकि

पहले मसीह से यह समानता भी प्राप्त हो जाए क्योंकि वह भी बनी इस्राईल में से नहीं। और मैं तलवार के साथ भी प्रकट नहीं हुआ और मेरी बादशाहत आकाशीय है। और यह भी इसलिए हुआ ताकि वह समानता क़ायम रहे और मैं अंग्रेज़ी हुकूमत के अधीन अवतरित किया गया और यह हुकूमत रोमी हुकूमत के समान है। और मुझे आशा है कि इस हुकूमत के मेरे साथ शाहाना व्यवहार शेमी साम्राज्य से उत्तम प्रकट होंगे। और मेरी शिक्षा वही है जो मैं 12 जनवरी 1899 ई. के विज्ञापन में देश में प्रकाशित कर चुका हूं। और वह यह कि

उसी ख़ुदा को मानो जिसके अस्तित्त्व पर तौरात, इंजील और क़ुर्आन तीनों सहमत हैं। कोई ऐसा ख़ुदा अपनी ओर से मत बनाओ जिसका अस्तित्व इन तीनों किताबों की सहमति पूर्ण गवाही से सिद्ध नहीं होता। वह बात मानो जिस पर बुद्धि और अन्तर्आत्मा की गवाही है। और ख़ुदा की किताबें उस पर सहमति रखती है। ख़ुदा को इस प्रकार से न मानो जिस से ख़ुदा की किताबों में फूट पड़ जाए, ज़िना (व्यभिचार) न करो, झूठ न बोलो, बुरी नज़र से न देखो, और प्रत्येक दुराचार, अत्याचार, बेईमानी, उपद्रव और विद्रोह के मार्गों से बचो और कामवासना संबंधी जोशों से पराजित न हो और पांच समय नमाज़ अदा करो कि मानवीय प्रकृति पर पांच प्रकार से ही इन्क़िलाब आते हैं और अपनी नबी करीम के कृतज्ञ रहो, उस पर दरूद भेजो। क्योंकि वही है जिस ने अंधकार के युग के बाद नए सिरे से ख़ुदा को पहचानने का मार्ग सिखलाया।

(4) ख़ुदा की मख़्लूक़ (सृष्टि) से हमदर्दी करो और अपने कामवासना के जोशों से मुसलमान हो या ग़ैर मुस्लिम किसी को कष्ट मत दो। न बात से, न हाथ से, न किसी अन्य प्रकार से।

(5) बहरहाल कष्ट और आराम में ख़ुदा तआला के वफ़ादार बन्दे बने रहो और किसी संकट के आने पर उस से मुंह न फेरो अपितु आगे क़दम बढ़ाओ।

(6) अपने रसूल का अनुकरण करो और क़ुर्आन की हुकूमत अपने सर पर ले लो कि वह ख़ुदा का कलाम और तुम्हारा सच्चा सहायक है।

(7) इस्लाम की हमदर्दी अपनी समस्त शक्तियों से करो और पृथ्वी पर

ख़ुदा के प्रताप और तौहीद (एकेश्वरवाद) को फैलाओ।

(8) मुझ से इस उद्देश्य से बैअत करो ताकि तुम्हें मुझ से रूहानी संबंध पैदा हो और मेरे अस्तित्त्व रूपी वृक्ष की एक शाखा बन जाओ। और बैअत के अहद (प्रतिज्ञा) पर मरते दम तक क़ायम रहो।

मेरे सिलसिले के ये वे सिद्धान्त हैं जो इस सिलसिले के लिए विशिष्ट निशान की तरह हैं। जिस इन्सानी हमदर्दी और मानव-जाति को कष्ट न पंहुचाना और शासकों के विरोध के त्याग की यह सिलसिला बुनियाद डालता है। दूसरे मुसलमानों में इसका अस्तित्व नहीं। उनके सिद्धान्त अपनी असंख्य ग़लतियों के कारण अन्य प्रकार के हैं जिनके विवरण की आवश्यकता नहीं और न यह उन का अवसर है।

वह नाम जो इस सिलसिले के लिए उचित है जिसको हम अपने लिए और अपनी जमाअत के लिए पसन्द करते हैं वह नाम मुसलमान फ़िर्क़ा अहमदिया है और वैध है कि इसको अहमदी मज़्हब के मुसलमान के नाम से भी पुकारें। यही नाम है जिस के लिए हम बड़े सम्मान से अपनी आदरणीय सरकार में निवेदन करते हैं कि अपने काग़ज़ों और सम्बोधनों में इस फ़िर्क़े को इसी नाम से पुकारे। अर्थात् मुसलमान फ़िर्क़ा अहमदिया

जहां तक मेरे ज्ञान में है मैं विश्वास रखता हूं कि आज तक तीस हज़ार के लगभग पंजाब और हिन्दुस्तान के विभिन्न स्थानों के लोग इस अहमदिया फ़िर्क़े में सम्मिलित हो चुके हैं। और जो लोग हर प्रकार नए-नए आडम्बरों तथा शिर्क से विमुख हैं और हृदय में यह निर्णय भी कर लेते हैं कि हम अपनी बर्तानवी सरकार से कपटाचारियों जैसा व्यवहार करना नहीं चाहते और सुलह एवं सहन शीलता की प्रकृति रखते हैं वे लोग प्रचुरता से इस फ़िर्क़े में सम्मिलित होते जाते हैं और सामान्यतया बुद्धिमान इस ओर तेज़ी से आ रहे हैं और ये लोग केवल सामान्य लोगों में से नहीं हैं अपितु कुछ बड़े-बड़े प्रतिष्ठित ख़ानदानों में से हैं, और हर प्रकार के व्यापारी, कर्मचारी, शिक्षित, इस्लाम के उलेमा और नवाब लोग इस फ़िर्क़े में दाखिल हैं। यद्यपि बहुत कुछ सामान्य मुसलमानों की ओर से

यह फ़िर्क़ा कष्ट भी पा रहा है, परन्तु चूंकि बुद्धिमान लोग देखते हैं कि ख़ुदा से पूरी सफ़ाई और उसकी मख़्लूक़ से पूरी सहानुभूति और शासकों के आज्ञापालन में पूर्ण तैयारी की शिक्षा इस फ़िर्क़े में दी जाती है। इसलिए वे लोग स्वाभाविक तौर पर इस फ़िर्क़े की ओर झुकते जाते हैं। और यह ख़ुदा की कृपा है कि विरोधियों की ओर से बहुत सी कोशिशें भी हुईं कि इस फ़िर्क़े को किसी प्रकार से मिटा दें परन्तु वे सब कोशिशें व्यर्थ गईं। क्योंकि जो कार्य ख़ुदा के हाथ से हो मनुष्य उसे नष्ट नहीं कर सकता और इस फ़िर्क़े का नाम मुसलमान फ़िर्क़ा अहमदिया इसलिए रखा गया कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो नाम थे। एक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, दूसरा अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। और मुहम्मद प्रतापी नाम था और उसमें यह गुप्त भविष्यवाणी थी कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन शत्रुओं को तलवार द्वारा दण्ड देंगे जिन्होंने तलवार के साथ इस्लाम पर आक्रमण किया और सैकड़ों मुसलमानों को क़त्ल किया परन्तु अहमद नाम जमाली नाम था जिस से यह मतलब था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में शान्ति और सुलह फैलाएंगे।

अतः ख़ुदा ने इन दो नामों का इस प्रकार से विभाजन किया कि प्रथम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मक्का के जीवन में अहमद नाम का प्रकटन था और हर प्रकार से सब्र और धैर्य की शिक्षा थी और फिर मदीना के जीवन में मुहम्मद नाम की विशेषता का प्रकटन हुआ और विरोधियों का दमन करना ख़ुदा की युक्ति और हित ने आवश्यक समझा। परन्तु यह भविष्यवाणी की गई थी कि अन्तिम युग में फिर अहमद नाम का प्रकटन होगा और ऐसा मनुष्य प्रकट होगा जिस के द्वारा अहमदी विशेषताएं प्रकट होंगी और लड़ाइयों का अन्त हो जाएगा।

अतः इसी कारण से उचित मालूम हुआ कि इस फ़िर्क़े का नाम फ़िर्क़ा अहमददिया रखा जाए ताकि इस नाम को सुनते ही प्रत्येक व्यक्ति समझ ले कि यह फ़िर्क़ा दुनिया में शान्ति और सुलह फैलाने आया है तथा युद्ध एवं लड़ाई से इस फ़िर्क़े को कोई सरोकार नहीं। इसलिए हे दोस्तो! आप लोगों को यह नाम

मुबारक हो और प्रत्येक को जो अमन और सुलह का अभिलाषी है यह फ़िर्क़ा ख़ुशख़बरी देता है। नबियों की किताबों में पहले से इस मुबारक फ़िर्क़े की ख़बर दी गई है और इसके प्रकटन के लिए बहुत से संकेत हैं। अधिक क्या लिखा जाए। ख़ुदा इस नाम में बरकत डाले। ख़ुदा ऐसा करे कि समस्त संसार के मुसलमान इसी मुबारक फ़िर्क़े में दाख़िल हो जाएं ताकि इन्सानी रक्त बहाने का ज़हर उनके हृदयों से पूर्णतया निकल जाए और वे ख़ुदा के हो जाएं और ख़ुदा उन का हो जाए। हे शक्तिमान-व-कृपालु ख़ुदा तू ऐसा ही कर। आमीन

और अंत में हमारा यही कहना है कि समस्त प्रसंशाएं अल्लाह ही के लिए हैं

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियान

4 नवम्बर 1900 ई.